स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ

(प्रथम खण्ड)

समिति का अर्द्ध-शताब्दी इतिहास एवं परिचय

लेखक

डा० कुंजबिहारी लाल गुप्त

एम० ए० (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान), पी-एच० डी,

तमसोमाज्योतिर्गमय

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

स्थापित १९१२ ई०

प्रकाशक

मदनलाल बजाज, प्रधान मंत्री

हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

संवत् २०१७

आभार प्रदर्शन

आज स्वर्ण जयन्ती के इस सुअवसर पर समिति के गत ५० वर्षो के इतिहास का सिहावलोकन करने में विशेष प्रकार का आनन्द तथा गौरव का अनुभव हो रहा है। अपने स्वल्प साधनों से अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी 'समिति' ने जो अपना वर्तमान रूप ग्रहण किया है, वह आज आपके सम्मुख है। प्रारम्भ काल से ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रचार एवं प्रसार का कार्य ही समिति का मुख्य ध्येय रहा है, और इस कार्य में 'समिति' ने सफलता भी प्राप्त की है। यह ग्रन्थ भी इसी ध्येय की पूर्ति की एक कड़ी है। 'समिति' के पिछले एवं वर्तमान साहित्य-सेवियों के प्रति जिनके अहर्निशि परिश्रम एवं लगन के फलस्वरूप 'समिति' आज इस स्वरूप को प्राप्त कर सकी है, आभार प्रदर्शन करते हुए मुझे परम हर्ष हो रहा है।

इस ग्रन्थ के लेखन में 'समिति' के अध्यक्ष डा० कुजबिहारी लाल गुप्त, एम० ए० (हिन्दी एव राजनीति विज्ञान), पी-एच० डी० ने जो अथक परिश्रम किया है उनका मै परम आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ के प्रकाशन एवं अन्तिम रूप देने में श्री राम-दत्तजी शर्मा, एम० ए०, वी० एड्०, साहित्यरत्न, शास्त्री, भूतपूर्व प्रधान मंत्री एव वर्तमान केन्द्र-व्यवस्थापक ने जो मूल्यवान योग देकर इस कार्य को सफल बनाया है, उसके लिये भी मै उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

मेरे अन्य समस्त सहयोगियो एवं कार्यकर्त्ताओ का भी मै आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। इस सहज एवं सामयिक सहायता के लिये समिति उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर
१२ फरवरी, १९६१

मदनलाल बजाज
प्रधान मंत्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के जन्मदाता :
समिति के संस्थापक (सन् १९१२)

श्री गंगाप्रसाद जी शास्त्री

श्री अधिकारी जगन्नाथ दास जी विद्यारत्न (राज्यगुरु)

विषय-सूची

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

संस्थापक

१—श्री अधिकारी जगन्नाथदास जी विद्यारत्न

२—श्री प० गंगाप्रसादजी शास्त्री

३—श्री ठा० ओंकारसिंह प्रमार, एल. एम. एस. (मैडीकल ऑफीसर)

४—श्री प० नारायनदास सुपरिन्टेन्डेण्ट पी. डब्ल्यू. डी.

संरक्षक

१—श्री महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा नवरत्न, राजगुरु, झालरापाटन

२—श्री सेठ सन्तोषीलाल महगाये वाले

३—श्री सेठ हरिचरनलाल नई मण्डी

४—श्री सेठ जगन्नाथप्रसाद दीपक, गुरु नानक आइरन स्टील कं०, भरतपुर

वर्तमान पदाधिकारी

१—डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त, एम. ए. (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान), पी-एच. डी., अध्यक्ष

२—श्री मोतीलाल जी अरोडा (उपाध्यक्ष)

३—श्री मदनलाल जी बजाज (प्रधान मत्री)

४—श्री ओमप्रकाश जी दुबे (उप-मत्री)

५—श्री रामदत्त जी शर्मा, एम. ए., बी. एड्., साहित्यरत्न (केन्द्र-व्यवस्थापक)

६—श्री प्रभूदयाल जी 'दयालु', साहित्यरत्न (पुस्तकालयाध्यक्ष)

७—श्री भगवानदास जी गोठी (कोषाध्यक्ष)

८—श्री रामनारायण जी वकील, बी. ए., एल-एल. बी. (आय-व्यय-निरीक्षक)

सदस्य वर्तमान कार्यकारिणी (१९५८ से १९६१)

(१) डा० कुंजबिहारीलाल गुप्ता

(२) श्री मोतीलाल जी अरोडा

(३) श्री मदनलाल जी बजाज

(४) श्री ओमप्रकाश जी दुबे

(५) श्री रामदत्त जी शर्मा

(६) श्री प्रभूदयालजी 'दयालु'

(७) श्री भगवानदास जी गोठो
(८) श्री रामनारायण जी वकील
(९) श्री मदनमोहन जी पोद्दार
(१०) श्री भारतभूषण जी भार्गव
(११) श्री गिर्राजप्रसाद जी सर्राफ
(१२) श्री प्रो० हरसहाय जी
(१३) श्री मा० श्रीचन्दजी गुप्त
(१४) श्री मा० बद्रीप्रसाद जी शर्मा
(१५) श्रीमती शान्तीदेवी शर्मा
(१६) श्री मा० अयोध्याप्रसाद जी महेश्वरी
(१७) श्री सेठ सन्तोषीलाल जी सहगाये वाले
(१८) श्री प० नत्थनलाल जी शर्मा फोटोग्राफर
(१९) श्री प० सावलप्रसाद जी चतुर्वेदी
(२०) श्री मा० राधेलाल जी शर्मा
(२१) श्री वैद्य रामशरण जी शास्त्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की कार्य-कारिणी (सत्र १९५८-६१)
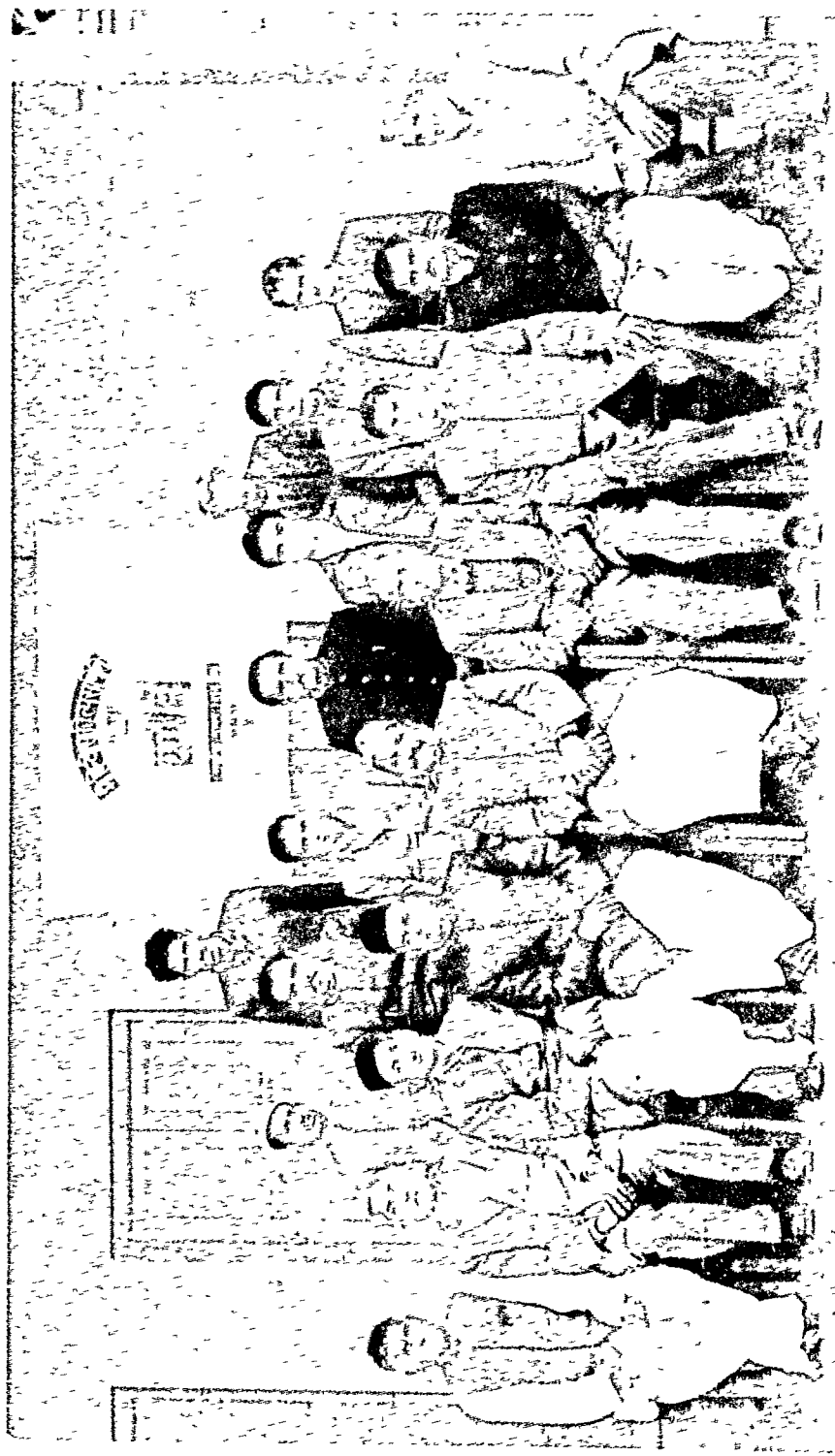
प्र० प०—श्री सावल प्र० चतु०, श्री राम ना० वकील (आ० निरीक्षक), श्री नल्पन लाल शर्मा, श्री मदनलाल बजाज (प्र. म.)
श्री से० सतोषीलाल (संरक्षक), डा० कु० विहारीलाल गुप्त (अध्यक्ष), श्री मोतीलाल अरोडा (उपाध्यक्ष)
श्री भगवानदास गोठी (कोषाध्यक्ष), श्री प्रभूदयाल (पुस्तकालयाध्यक्ष)
द्वि० प०—श्री प्रभूलाल (ला० वैत०), श्री रामदत्त शर्मा (केन्द्र व्यवस्थापक), श्री गिर्राज प्रसाद स०, वैं० रामशरण शास्त्री
श्री ओमप्रकाश दुबे (उप मंत्री), श्री राधेलाल शर्मा ...

वक्तव्य

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, का स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ (प्रथम खण्ड) आपके सम्मुख है। समिति की कार्यकारिणी के नियमानुसार बहुत कुछ प्रयत्न करते हुए भी, सम्पूर्ण ग्रन्थ एक वार मुद्रित न होकर, दो खण्डों मे विभाजित करना पड़ा, इसके लिये क्षमा-याचना करता हूँ। जिस समय इस ग्रन्थ के लेखन तथा प्रकाशन की योजना बनाई गई थी, उस समय मैने उन कठिनाइयों की कल्पना भी न की थी जो लेखन-कार्य प्रारम्भ करने के बाद सामने आई। सोचा यह था कि दो तीन मास मे ही यह ग्रन्थ प्रकाशित हो जायेगा, किन्तु पीछे ज्ञात हुआ कि स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अति व्यस्त कार्य-क्रम के साथ-साथ लगभग ५०० पृष्ठो का ग्रन्थ लिखकर प्रकाशित करना सरल कार्य नही है। पाठकों को यह जानकर सन्तोष होगा कि सम्पूर्ण ग्रन्थ की पांडुलिपि तो बनकर तैयार हो चुकी है, किन्तु समयाभाव के कारण मुद्रित न हो सकी है। इस समय केवल प्रथम खण्ड प्रकाशित हो सका है। ग्रन्थ का विभाजन निम्न प्रकार दो खण्डों मे किया गया है :—

(१) प्रथम खण्ड में समिति के विगत लगभग ५० वर्षो का सिहावलोकन है।

(२) दूसरे खण्ड में भरतपुर के विगत २५० वर्षो मे होने वाले कवियों का संक्षिप्त जीवनवृत्त है।

इस ग्रन्थ को लिखते समय मेरे सामने प्रमुखतः दो उद्देश्य थे :—

एक तो यह कि ग्रन्थ में हिन्दी साहित्य समिति के विगत जीवन का विस्तृत सर्वेक्षण किया जाये जिससे यहाँ के नागरिकों को समिति के संस्थापकों, कर्णधारों एवम् उत्साही कार्यकर्ताओं के साहित्यानुराग से समिति की सेवा करने की प्रेरणा मिले।

दूसरा यह कि हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर के विगत २५० वर्षों में होने वाले सभी कवियों एवं साहित्यिकों का संक्षिप्त जीवन-वृत्त प्रकाशित कर उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करे, जिन्होंने अपना समस्त जीवन हिन्दी में ज्ञानवर्द्धक वाङ्मय की सृष्टि में व्यतीत किया। इससे न केवल भावी कवियों को नूतन काव्य-सृजन की प्रेरणा ही मिलेगी, अपितु समिति अपने उत्तरदायित्व को भी पूरा करेगी।

समिति के इस इतिहास में अधिकतर तथ्यों का ही संग्रह किया गया है। मैंने प्रत्येक विषय को यथास्थान, यथावश्यक और यथार्थ रूप में सामने लाने का प्रयास किया है। ग्रन्थ के अन्त में दिये गये परिशिष्टों में यथासाध्य उन सभी हिन्दी प्रेमियों के नाम उद्धृत किये हैं, जिन्होंने आर्थिक सहायता देकर समिति के विशाल भवन के निर्माण में सहायता दी अथवा अपना अमूल्य समय देकर उसके उद्देश्यों की पूर्ति में योग दिया। ११वें परिशिष्ट में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का जिसका उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् करेंगे, कार्यक्रम दिया गया है। इस महोत्सव का विस्तृत वर्णन दूसरे खण्ड में दिया जायेगा।

इतिहास के दुहराने में मेरे पुराने मित्र श्री प्रेमनाथजी चतुर्वेदी बी० ए०, सहायक सम्पादक, नवभारत टाइम्स, नई देहली, ने मेरा हाथ बँटाया। इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में उन सभी साथियों तथा समिति के लाइब्रेरियन श्री प्रभूलाल गोयल का जो सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिये अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ।

वसन्त पंचमी
२१-१-६१

कुंजबिहारीलाल गुप्ता

स्थापना

भरतपुर व्रजभाषा का प्रमुख गढ़ है। यह स्थापन-काल से ही व्रजभाषा के उच्चकोटि के कवियों का निवास-स्थान रहा है। महाकवि सोमनाथ और सूदन आदि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इस क्षेत्र की ख्याति को भारत के कोने कोने तक पहुँचा दिया था। अनेक महाकवियो के आश्रयदाता भरतपुर के नरेशों ने व्रजभाषा के प्रचार और प्रसार में सदैव से योग दिया, पर काल की गति का राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भाषा पर भी पड़े बिना न रहा। मुगलों और अंग्रेजों से टक्कर लेने वाले फारसी, उर्दू और अंग्रेजी से अप्रभावित न रह सके। शासन पर इन दोनों भाषाओं का क्रमशः दबदबा रहने की वजह से नौकरी की भूखी जनता अपनी मातृभाषा के महत्व को भूल सी गई। ऐसा समय भी आया जब व्रजभाषा (हिन्दी) का प्रभाव केवल घरो की चारदीवारी तक ही सीमित रह गया, किन्तु इस स्थिति को ज़न-मानस ने स्वीकार नही किया। समय ने करवट वदली। हिन्दी के हितैषी मातृभाषा की हीनावस्था से तिलमिला उठे। २०वीं शताब्दी के आरम्भ काल में उत्तर भारत के नगर नगर मे हिन्दी के प्रति स्नेह और आदर उत्पन्न करने के लिये सभा और समितियों की स्थापना होने लगी। राष्ट्रभाषा प्रेम की इस लहर से भरतपुर के नागरिकों का मानस भी प्रभावित हुआ। मातृभाषा के कुछ उत्साही नागरिकों ने समाचार-पत्र और पुस्तक पठन-पाठन के कार्यक्रम को जारी करने की चेष्टाएँ आरम्भ की। पंडित रामचन्द्र और मुंशी जानकीबल्लभ ने एक स्थान पर समाचार-पत्रों और पुस्तको के पठन की व्यवस्था की। कहा जाता है कि वह प्रयास अपनी तरह का अनूठा था। नये जोश मे कार्य चलने भी लगा परन्तु कुछ कारणों से वह अकाल मृत्यु को प्राप्त हो अपने अस्तित्व को ही खो बैठा। पर जागा जन-मानस आसानी से

मोने वाला नहीं था, अधिक उत्साही और जीवट के हिन्दी-प्रेमियो का उदय हुआ। अनेक कठिनाइयो का सामना करते हुए भी कतिपय हिन्दी प्रेमियो ने १३ अगम्त १६१२ को श्री हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना कर दी। नवस्थापित हिन्दी सम्था के प्रथम मत्री पडित सुन्दरलाल जानी की प्राप्त प्रथम विज्ञप्ति (१३-८-१६१२) का मूल अश अविकल रूप मे नीचे उद्धृत किया जाता है —

प्रिय हिन्दी हितैषीगण,

कदाचित् आपको अविदित न होगा कि हमारी मातृभाषा सर्व गुण आगरी नागरी के प्रचार के लिये प्राय भारतवर्ष के सभी नगर निवासी उन्नति कर रहे हैं परन्तु खेद है कि हमारा भरतपुर व्रजभाषा का केन्द्र होने पर भी इस ओर से सर्वथा पीछे हटा हुआ है। अवश्य ही हम लोगो का कर्त्तव्य है कि इस त्रुटि को दूर करने का प्रयत्न करें। हम सहर्ष आपको सवाद देते हैं कि यहाँ के कतिपय हिन्दी हितैषी सज्जनो ने यहाँ पर हिन्दी प्रचार के लिये एक हिन्दी साहित्य समिति स्थापित करदी है जिसका स्थान धर्मसभा में है। आप जानते हैं कि समस्त कार्य अर्थमूलक हुआ करते हैं फिर इसके लिये द्रव्य होना अत्यन्त आवश्यक है किन्तु यो कह सकते हैं कि इस पौधे को आप द्रव्य जल से सिंचित न करेंगे तो यह कुम्हला ही न जायगा किन्तु नष्ट-भ्रष्ट भी हो जायगा। इसमे निश्चित हो चुका है कि हिन्दी प्रचार के विशेष साधन समाचार-पत्र मगाये जाँय। अत हिन्दी की सहायता के साथ-साथ हमे सासारिक समाचार तथा उत्तम लेख पढने को मिलेगे, इससे हमारे ज्ञान मे वृद्धि का होना भी स्वयसिद्ध है, फिर इस स्वार्थ और परमार्थ के साधक कार्य मे कौन महानुभाव होंगे जो सहायता न देंगे। हम आपकी सेवा मे सविनय सादर प्रार्थी हैं कि आप भी इसमें सहायक बन इस लोक और परलोक मे यशो-भागी बनें।

पडित सुन्दरलाल जानी की इस मार्मिक अपील का गहरा प्रभाव पडा। ६ सितम्बर १६१२ को एक वृहद् सभा का आयोजन किया गया, जिसमे लगभग १५० व्यक्ति उपस्थित हुए। सब ने

एक स्वर से संस्था की स्थापना का स्वागत किया और नामकरण हुआ श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर।

समिति के जन्मदाताओं में पंडित गंगाप्रसाद शास्त्री और अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्ही दो व्यक्तियो की कल्पना, भावना और उत्साह के परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना हुई तथा अनेकानेक योग्य और प्रभावशाली व्यक्तियों का आरम्भ से ही संस्था को सहयोग प्राप्त होने लगा। उपरोक्त सभा में संस्था के सचालन के लिये निम्नलिखित महानुभावो को पदाधिकारी निर्वाचित किया गया :—

श्री डा० ओकारसिह प्रमार, एल०एम०एस०, मैडिकल औफीसर (प्रधान)

श्री पं० नारायनदास, सुपरिन्टेन्डेट पी० डब्ल्यू० डी० (उप-प्रधान)

श्री अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न (मंत्री)

श्री प० गगाप्रसाद शास्त्री, साहित्याचार्य (सहायक मंत्री)

श्री प० गुलाबजी मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष)

श्री खोखनलाल पोद्दार, आनरेरी मजिस्ट्रेट (कोषाध्यक्ष)

श्री प० सुन्दरलाल त्रिपाठी, एकाउन्टेन्ट पी० डब्ल्यू० डी० (आय-व्यय-निरीक्षक)

दिनाक १५ सितम्बर १६१२ को पुनः एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई, जिसमें समिति के उद्देश्य एवं नियम निर्धारित किये गये तथा कार्यकारिणी का संगठन किया गया जिसमें निम्न महानुभावों को निर्वाचित किया गया :—

श्री भट्ट मधुसूदन शर्मा, सरदार राज्य

श्री प० तोताराम शास्त्री, संस्कृत अध्यापक, सदर हाई स्कूल

श्री पं० सुन्दरलाल जानी

श्री प० गगाशंकर पंचोली, हैडमास्टर, सदर हाई स्कूल

श्री पं० व्रजबिहारीलाल, हैडमास्टर, नोबिल्स स्कूल

श्री चौबे हरिशंकर, एकाउन्टेन्ट जनरल, भरतपुर राज्य
श्री प० मयाशंकर याज्ञिक, सुपरिन्टेन्डेंट कस्टम्स, भरतपुर
श्री प० बलदेवप्रसाद, नाजिम एवं डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट
श्री प० रामशरन शर्मा दिल्ली वाले, निरीक्षक वर्नोवालान

प्रारम्भिक काल मे श्री हिन्दी साहित्य समिति का स्थान सनातन धर्म सभा भवन मे बाजार की ओर का केवल एक छोटा कमरा था।

नाम, उद्देश्य और अधिकार

पहिले बतलाया जा चुका है कि १५ सितम्बर १९१२ को समिति के उद्देश्य निर्धारित करने के लिये एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई थी। समिति ने आरम्भ में ही जिन कार्यों को अपने हाथ में लेने का विचार किया वे ये है :—

१. हिन्दी भाषा के महत्व का प्रचार व प्रसार करना।
२. व्यावहारिक और न्यायालय आदि के कार्यों में देवनागरी लिपि की सुगमता, मनोरमता, तथा वैज्ञानिकता आदि गुणो का सर्वसाधारण में प्रचार करना।
३. उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने एवं बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।
४. हिन्दी भाषा मे आवश्यक उत्तम विषयों के ग्रन्थ तैयार कराकर प्रकाशित करना।
५. हिन्दी के ग्रंथकारों, लेखको, प्रकाशकों, प्रचारकों और सहायको को उत्साहित करने के लिये उन्हे पुरस्कार, पदक आदि से सम्मानित करना।

उपर्युक्त कार्यो को लक्ष्य बनाते हुए यह भी निश्चय किया गया कि इस समिति में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि की उन्नति तथा प्रचार के अतिरिक्त अन्य किसी राजनीतिक अथवा साम्प्रदायिक विषय पर विचार नही किया जायगा।

दिनाक २६–११–५० को कार्यकारिणी समिति ने पुराने नियमों और उद्देश्यों पर पुन. विचार कर निम्नलिखित नाम, उद्देश्य एवं अधिकार स्वीकृत किये जो आज तक प्रचलित है :—

नाम

(अ) इस संस्था का नाम श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर होगा।

(ब) इस ममिति का कार्यक्षेत्र भरतपुर जिला होगा। इस जिले के अतिरिक्त यदि किसी अन्य स्थान की सस्था समिति से सम्बन्धित होना चाहेगी तो उस पर भी विचार किया जा सकेगा।

उद्देश्य

(क) हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि की उन्नति एव प्रचार करना।

(ख) हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिये आवश्यक विषयो के ग्रथो से उसे अलकृत करना, प्राचीन ग्रथो की खोज करना तथा उन्हे सग्रहीत कर सुरक्षित रखना।

अधिकार

१ इस सस्था को अधिकार होगा कि अपने उद्देश्यो की पूर्ति के निमित्त स्थावर एवम् जगम सम्पत्ति एकत्रित करे, तथा स्थायी सम्पत्ति मे वृद्धि करने के लिये उसके रूप मे परिवर्तन करे। स्थायी सम्पत्ति जैसे दुकानादि क्रय करे, धन सम्बन्धी पत्रको का लेन-देन करे, तथा अन्य ऐसे व्यवहार करे जिससे आर्थिक उन्नति के साथ-साथ इसके उद्देश्यो की पूर्ति मे किसी प्रकार की बाधा न पडे।

२ समिति की समस्त आय और सम्पत्ति इसके उद्देश्यो की पूर्ति में लगाई जायगी। इसकी कोई सम्पत्ति अथवा उसका कोई अश इसके किसी सभासद् अथवा पदाधिकारी के किसी प्रकार के लाभ व आय के लिये नही दिया जायगा, किन्तु समिति के किसी कर्मचारी अथवा सभासद् या किसी अन्य व्यक्ति को जो समिति का कोई कार्य करे, वेतन या पुरस्कार देने मे यह नियम बाधा न डालेगा। सकटकालीन स्थिति मे समिति के कर्मचारियो को ऋण दिया जा सकेगा।

३ समिति का एक स्थायी कोष होगा, जिसमे वर्ष के अत मे

बचत का वह अंश, जिसे समिति की कार्यकारिणी स्वीकार करे, प्रति वर्ष जमा हुआ करेगा ।

४. स्थायी कोष की धन-राशि में से कोई व्यय तथा स्थावर सम्पत्ति का रूपान्तर तब तक नही किया जायेगा जब तक समिति की कार्यकारिणी के कम से कम दो-तिहाई सदस्यों की स्वीकृति प्राप्त न हो जाये ।

५. समिति के आय-व्यय का वार्षिक लेखा आय-व्यय-निरीक्षक के प्रमाण-पत्र देने के पश्चात् प्रति वर्ष कार्य-कारिणी के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा । तदुपरान्त यह लेखा समिति के सदस्यो के सूचनार्थ प्रकाशित किया जायेगा ।

नियम

समिति की पूर्ण नियमावली प्रथक् से प्राप्त है ।

संगठन

मार्वजनिक सस्था का शरीर उसके सभासद होते है। जिम प्रकार मनुष्य के जीवन मे अनेक उतार-चढाव होते है उसी प्रकार सस्था के मदस्यो की मख्या एकसी नही रहती, उसमे घटा-वढी होना स्वाभाविक है। जिस दिन समिति की स्थापना हुई उस समय केवल ५ महानुभाव उपस्थित थे और वही इसके मर्वप्रथम सदम्य थे, किन्तु प्रथम माम के अन्त मे ही ७०-७५ सदम्य हो गये और वष की ममाप्ति तक यह मख्या २०२ पहुँच गई। फिर यह मख्या ४ वर्ष तक निरन्तर वढती ही गई। मन् १९१६ मे २२५ सभामद थे किन्तु इसके वाद यह सख्या घटने लगी और १९२६ ई० तक वरावर घटती गई। इसका मुख्य कारण भरतपुर नगर पर प्रथम महायुद्ध की महगाई, इन्फ्लूएन्जा, महामारी और पानी की वाढ आदि के प्रकोप थे जो क्रमश एक पर एक इस प्रकार आते रहे जैसे पानी मे लहरो का आवेग होता है। दूसरा कारण यह भी था कि १९१८ में मासिक सहायता वढाकर ४ आने करदी गई। सन् १९२७ से यह सख्या वढने लगी और १९४१ मे २९१ तक पहुँच गई। मन् १९४५ के वाद इस मख्या मे और भी वृद्धि होने लगी जो वरावर वढ रही है।

समिति के सदस्य तीन प्रकार के हैं —

१ साधारण,

२ आजीवन, और

३ सरक्षक।

अव तक के सभासदो की सख्या, आजीवन सदस्यो तथा सरक्षको की नामावली, और पदाधिकारियो की नाम-सूची परिशिष्ट (२, ३, ७) मे दी गई है।

पुस्तकालय

हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना के पश्चात् पुस्तकालय की आवश्यकता का अनुभव होना स्वाभाविक ही था। स्थापना के १८ दिन बाद श्रावण शुक्ला ८ सवत् १९६९ विक्रम मंगलवार (२० अगस्त १९१२) को समिति के तत्वावधान में पुस्तकालय की स्थापना की गई। पं० गंगाप्रसाद शास्त्री के यहाँ से श्री देवकीनन्दन आचार्य ने ११ पुस्तकें लाकर श्री सनातन धर्म सभा की १ कोठरी में रखकर पुस्तकालय का श्रीगणेश किया। इसके तुरन्त वाद ही अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न आदि उत्साही व्यक्तियों ने लगभग २५० पुस्तके एकत्रित कर पुस्तकालय की श्रीवृद्धि का प्रयास आरम्भ कर दिया।

खड़्कविलास प्रेस, बाकीपुर के अध्यक्ष कुँ० रामदीनसिंह ने अपने प्रेस की तथा राजपूत औरिएन्टल प्रेस के स्वामी कुँ० हनुमन्त सिंह ने अपनी पुस्तके अर्धमूल्य मे देकर पुस्तकालय को परिपुष्ट किया। प्रथम वर्ष की समाप्ति होते होते पुस्तकालय मे इतिहास, जीवन-चरित्र, वेद, नाटक, चिकित्सा, स्त्री-शिक्षा, साहित्य, वेदान्त, शिल्पकला, उपन्यास, कहानी, अर्थशास्त्र, विज्ञान, कृषि, भूगोल, धर्म, काव्य आदि आदि सभी प्रमुख विषयों की लगभग १,४०० पुस्तके संग्रहीत हो गई। इनमें अधिकाश पुस्तकें दानदाताओं द्वारा प्रदत्त थी, जिनमें धाऊ रामशरण की धर्मपत्नी, पं० भोलानाथ, पं० नारायनदास, लाला किशोरीलाल व्यानियाँ, पं० गंगाप्रसाद शास्त्री, जगन्नाथदास अधिकारी, शकरलाल वर्मा, पं० सुन्दरलाल त्रिपाठी, बाबू चक्खनलाल, गोकुलचन्द दीक्षित, पं० गुलाब मिश्र, पं० बालाप्रसाद, पं० द्वारकाप्रसाद, पं० बालकृष्ण दुबे, रामनारायण शर्मा, सचीकान्त भट्ट, डा० ओंकारसिह, पं० नन्दकिशोर, नन्नेमल,

गोस्वामी हरिनारायण, प्यारेलाल शर्मा, गिर्राजप्रसाद शर्मा (कुम्हेर), प० मदनलाल मिश्र ज्योतिषी एव निरजन शर्मा अजित आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार पुस्तको की सख्या तो उत्तरोत्तर बढने लगी किन्तु समिति के पास उन्हे रखने के लिए उपयुक्त स्थान का अभाव था। पुस्तकालय के साथ ही वाचनालय भी आरम्भ कर दिया गया। यद्यपि स्थान छोटा था, किन्तु जनता की साहित्यिक अभिरुचि के कारण प्रथम वर्ष ही ५,००० पुस्तकों का आदान-प्रदान हुआ। इसी बीच हिन्दी साहित्य समिति के कर्णधारो और सनातन धर्म सभा के सचालको मे कुछ मनमुटाव हो गया। परिणामस्वरूप समिति का पुस्तकालय २४ नवम्बर १६१३ को सभा से हटाकर निकट के मकान मे ले जाया गया। नये स्थान मे भी पुस्तकालय पर्याप्त प्रगति करता रहा। दिनाक २७, २८ एव २६ सितम्बर, १६१३ को हिन्दी साहित्य समिति का प्रथम वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह मे जनता ने पूर्ण सहयोग दिया।

इस प्रकार समिति का पुस्तकालय उत्तरोत्तर वृद्धि करने लगा। सन् १६३७ मे चतुर्वेदी उमरावसिह मिश्र ने अपने पूर्वज कविवर सोमनाथ के हस्तलिखित ग्रन्थ भेंट किये। सन् १६४३ मे हीराशकर पचोली ने श्री गगाशकर पचोली की स्मृति मे १४१ पुस्तको का सग्रह पुस्तकालय को भेंट किया। १६५२ मे भरतपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान् प० रामचन्द्र (महाराज जी) ने १७५ पुस्तको का सग्रह अपने पूज्य पितामह श्री प० घासीराम के नाम पर समिति को प्रदान किया। यह दोनो सग्रह पृथक् पृथक् अलमारियो मे सजाकर रख दिये गये हैं।

कुछ समय बाद हिन्दी प्रेमी जनता की माँग तथा विद्यार्थियो की सुविधा को ध्यान मे रखते हुए यह आवश्यक प्रतीत होने लगा कि समिति नवीन उच्चस्तरीय पुस्तको का क्रय करे। गत तीन वर्षो मे प्रति वर्ष कार्यकारिणी समिति ने १,५०० रुपया पुस्तक क्रय के

श्री हिन्दी साहित्य समिति के त्यागी एवं कर्मठ सेवी :

(जिनके समय मे समिति ने आशातीत प्रगति की)

श्री पं० बालकिशन जी दुबे एस० डी० ओ०
नमन्त्री :१९२१ से ३४ तक सभापति सन १९३८ से ५० तक
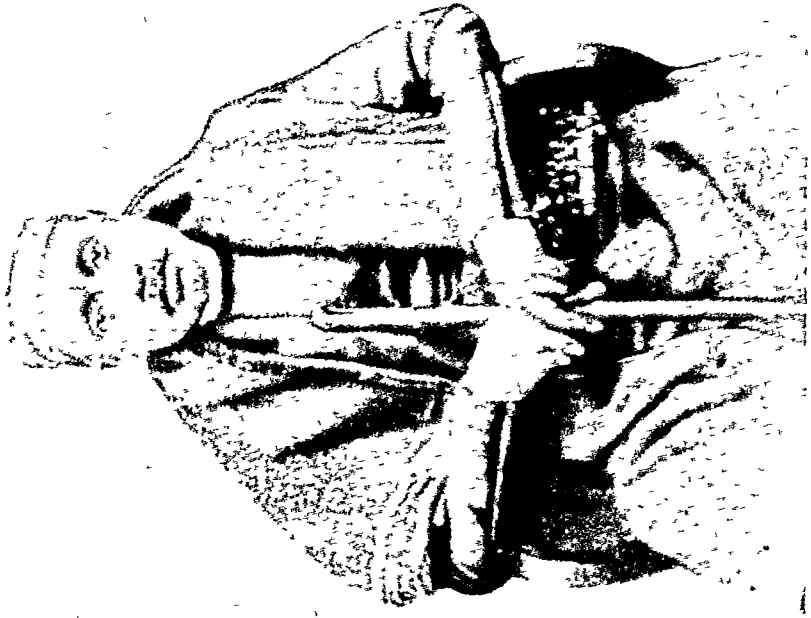
श्री पं० गुलाब जी मिश्र (पुस्तकालय के कर्णधार)

लिए स्वीकृत किये है। सन् १९५१ से १९६० तक ३,१११ पुस्तके क्रय की गई, जिनमे शोध सम्वन्धी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में है। इस समय समिति में लगभग १२,३०० पुस्तकें है जिनमें हस्तलिखित भी है (देखिए परिशिष्ट ४)। हमें खेद है कि कुछ हस्तलिखित पुस्तके सन् १९५५ के वाद से, जब से जैनमुनी श्री कान्तीसागरजी महाराज ने उनका वर्गीकरण किया है, समिति में दिखाई नहीं देतीं।

सन् १९४३ में समिति ने एक चलता फिरता पुस्तकालय खोला जिसका उद्देश्य नगर की पर्दानशीन महिलाओं को लाभ पहुँचाना था। इस कार्य के लिये एक महिला को रखा गया जो घर घर जाकर पुस्तके वितरित करती और पुन. एक सप्ताह वाद उन्हे ले आती थी। यह पुस्तकालय एक वर्ष तक चलता रहा, किन्तु अधिक सफलता न मिलने पर बन्द कर देना पड़ा। इसका समस्त व्यय सेठ मनोहरलाल कलकत्ता वालों ने दिया।

पुस्तकालय का कार्य पुस्तकालयाध्यक्ष की देख-रेख में होता है जो समिति की कार्यकारिणी के सदस्य है। पुस्तकालय के लिये सर्व श्री गुलाबजी मिश्र तथा प्रभूलाल गोयल एवं पं० प्रभूदयाल दयालु तथा पं० देवकीनन्दन आचार्य (वैतनिक कर्मचारी) की सेवाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सन् १९६० से इस पुस्तकालय में कार्ड प्रणाली आरम्भ की गई जिससे पुस्तकों के आदान प्रदान में सुगमता हो और इस पुस्तकालय की गणना आधुनिक ढंग के पुस्तकालयों में हो सके। यद्यपि इस नवीन (कार्ड) प्रणाली के प्रचलन मे अनेक कठिनाइयाँ आई किन्तु समिति के प्रधान मत्री श्री मदनलाल वजाज के धैर्य, योग्यता तथा परिश्रम ने उन पर विजय पाई और इस नवीन प्रणाली का प्रचलन सफल हुआ।

इस वर्ष पुस्तकालय में एक भी पुस्तक ऐसी नही जिसकी जिल्द न वँधी हो। पुस्तकों की सूची के मुद्रण का कार्य शेप है जो धनाभाव के कारण पूर्ण नही हो सका है। विपय-क्रम से सूची की कई हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार करा ली गई हैं।

राज्य सहायता

सन् १९२५ मे स्वर्गीय महाराजा किशनसिंह के राज्यकाल मे पुस्तकें खरीदने के लिए ४० रुपये की मासिक सहायता समिति को मिलने लगी। सन् १९४७-४८ मे मत्स्य सरकार ने १०० रुपये मासिक सहायता मिली। राजस्थान सरकार ने १९५६-५७ मे ३,००० रुपये वार्षिक सहायता देकर समिति पुस्तकालय को प्रोत्साहित किया। इस सहायता के मिलने का बहुत कुछ श्रेय जिला शिक्षा निरीक्षक श्री हरिहरलाल गुप्ता, एम० ए०, बी० टी० को है। कुछ समय पश्चात् उक्त सहायता को घटाकर १२४७ रुपया कर दिया जिससे पुस्तकालय पर आर्थिक सकट आ गया। बहुत प्रयत्न तथा पत्र-व्यवहार करने पर अब राजस्थान सरकार ने १९६० मे १९०६ रुपया की सहायता प्रदान करना स्वीकार किया है। इस सम्बन्ध मे समिति के सदस्य श्री राजबहादुर (केन्द्रीय जहाजरानी मत्री) बहुत प्रयत्नशील हैं।

आरम्भ मे स्थानीय नगरपालिका ४ रुपया मासिक सहायता देती थी। सन् १९५६ मे यह सहायता बढाकर ३० रुपया मासिक कर दी गई है जो अब तक मिल रही है। इसके अतिरिक्त मकर सक्रान्ति के दिन समिति के उत्साही कार्यकर्ता नगर मे भ्रमण कर समिति के लिए पुस्तकों एव रुपयो की भिक्षा मांगते हैं। हमे हर्ष है कि विगत तीन चार वर्षों मे यह भिक्षावृत्ति प्रति वर्ष लगभग ८००) रुपये हो जाती है।

सन् १९५६ मे श्री हुमायूं कबीर (केन्द्रीय सास्कृतिक एव वैज्ञानिक अनुसन्धान मत्री) की प्रेरणा से केन्द्रीय सरकार के शिक्षा विभाग की ओर से नई पुस्तके खरीदने के लिए पुस्तकालय को १,००० रुपये का अनुदान मिला। इसी वर्ष राजस्थान शिक्षा विभाग ने भी ६१८ रुपये की सहायता पुस्तक क्रय करने के लिए विशेष रूप से प्रदान की गई।

पुस्तको को सुरक्षित रखने के लिए पुस्तकालय मे ७० कांच की अलमारियां है।

इस पुस्तकालय का प्रयोग प्रति वर्ष बढ़ता ही जा रहा है। शोध-कार्य के लिए समय-समय पर बाहर के विद्वान् समिति में पधार कर लाभ उठाते रहते है।

१९५९ में सुधीन्द्र कवि सोमनाथ पर खोज और अनुशीलन के लिए दिल्ली से आये और यथेष्ठ लाभ उठाया। समिति अनुसन्धान करने वाले ऐसे विद्यार्थियों को यथासम्भव हर प्रकार की सुविधाएँ देती है।

हस्तलिखित एवं मुद्रित पुस्तकों का विशाल भण्डार होने के कारण यह समिति सदैव से हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वानों को आकर्षित करती रही है। परिशिष्ट (१२) मे कुछ सम्मतियाँ उद्धृत की गई है।

समिति भवन मे वाचनालय भी है। पुस्तकालय में प्रथम वर्ष २६ समाचार-पत्र दानस्वरूप आये जिनमें २० मासिक, ४ साप्ताहिक, १ अर्ध-साप्ताहिक और १ दैनिक था। इन पत्रों के पढने वालों की संख्या प्रथम वर्ष मे ७९०० रही। दूसरे वर्ष समाचार-पत्रों की संख्या ३० हो गई। यह संख्या उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। सन् १९६० में आने वाले पत्रों की संख्या ५३ है जिनमें दैनिक ४, साप्ताहिक १४, मासिक २९, पाक्षिक ३ और त्रैमासिक ३ है। परिशिष्ट (५) को देखने से ज्ञात होगा कि गत १० वर्षो से कितने पाठक इससे लाभ उठाते रहे हैं ?

समिति भवन (प्राचीन)

श्री हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना श्री सनातन धर्म सभा भवन के एक छोटे से कमरे मे की गई थी। यह कमरा इतना छोटा था कि समिति की वृहत् बैठकें अधिकारी श्री जगन्नाथदास के स्थान विरक्त मन्दिर पर सम्पन्न करनी पडती थी। समिति के सचालको को यह बात बहुत अखरती थी किन्तु धनाभाव के कारण वे कुछ कर सकने मे असमर्थ थे। कुछ समय पश्चात् सभा के निश्चयानुसार समिति पुस्तकालय को सभा भवन मे हटा लिया गया और सभा भवन के पार्श्ववर्ती मकान मे श्री सुदर्शन भडारी कुम्हेर वालो से २।।।) मासिक किराये पर लेकर मिति भाद्रपद शुक्ला ११ सवत् १९७० वि० दिनाक २४-११-१३ ई० को पुस्तकालय स्थानान्तरित कर दिया गया। जनवरी १९१४ की मकर सक्रान्ति के दिन श्री धाऊ बख्शी रघुवीरसिंह सी० आई० की अध्यक्षता मे एक महती सभा का आयोजन किया गया जिसमे समिति के सरक्षक श्री प० गिरधर शर्मा 'नवरत्न' (झालरापाटन) ने उपस्थित जनता के सामने समिति भवन निर्माण की आवश्यकता को मार्मिक एव प्रभावोत्पादक शब्दो मे प्रतिपादित किया। फलस्वरूप उसी समय ६००) के वचन जनता से प्राप्त हुए। निर्माण कार्य को सम्पादित करने के लिए कुछ उत्साही एव प्रभावशाली व्यक्तियो की एक समिति का गठन कर लिया गया जिसने उत्साह व लगन मे अपना कार्य आरम्भ कर दिया। समिति के पुस्तकालय से पुस्तको के आदान-प्रदान और पाठको की सख्या दिन-प्रतिदिन इतनी अधिक बढती जा रही थी कि वर्तमान स्थान भी अपर्याप्त प्रतीत होता था अत समिति भवन के लिए स्थान की खोज होने लगी और दिनाक २७-२-१७ को ६३०=) मे दो दुकानें तथा कुछ भूमि, जहाँ समिति का वतमान भवन स्थित है, क्रय कर ली गई।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के भवन के दोनों रूप

वर्तमान विशाल भवन
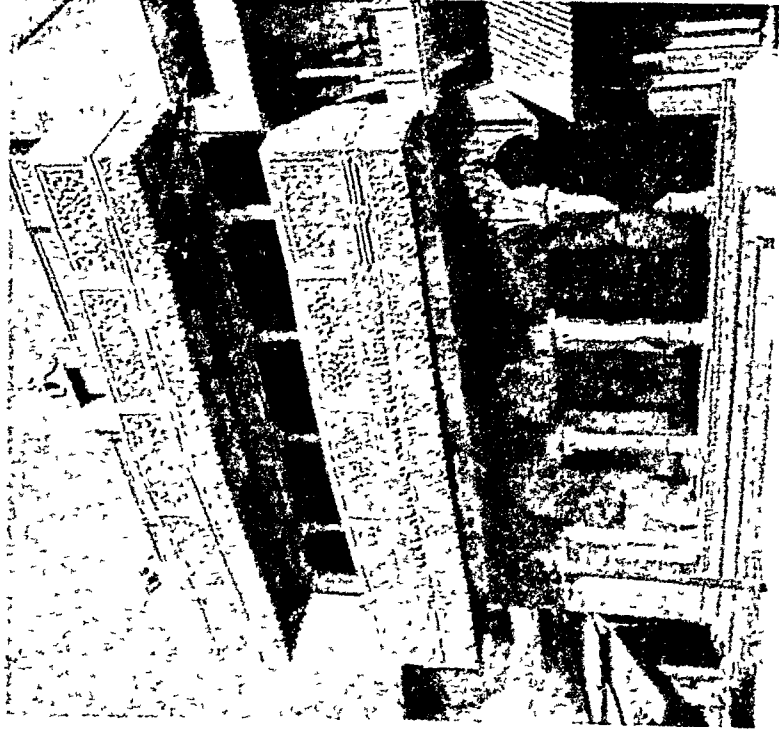
पुन निर्मित सन् १९५७ ई०

प्राचीन भवन
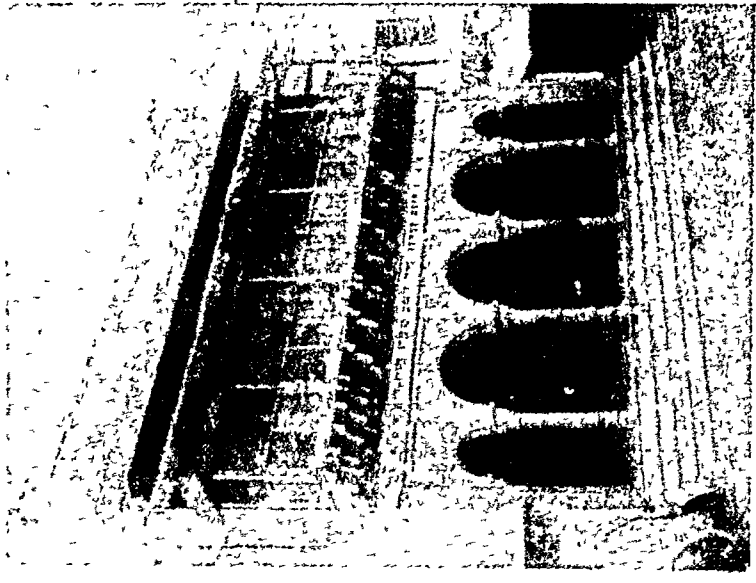
निर्मित सन् १९१८ ई०

समिति भवन बनवाने के लिए चन्दा एकत्रित करने का उद्योग आरम्भ हुआ जिसके लिये दिनांक १८-३-१७ को कार्यकारिणी की बैठक में दो उप-समितियाँ बनाई गई। इन समितियों मे निम्न-लिखित महानुभाव निर्वाचित हुए—

सर्वश्री सुन्दरलाल त्रिपाठी, पं० गुलावजी मिश्र, अधिकारी जगन्नाथदास, पं० वालकृष्ण दुबे, खोंखनलाल पोद्दार, गंगाप्रसाद शास्त्री, पं० द्वारकाप्रसाद एव वैद्य सदानन्द।

यह समिति सर्वसाधारण से चन्दा एकत्रित करने का कार्य करती रही तथा विशिष्ट जनो से चन्दा प्राप्त करने के लिए सर्वश्री डा० ओंकारसिह प्रमार, नारायणदास, कन्हैयालाल, कर्नल जुगल-सिह, बाबू बल्देवप्रसाद एवं अधिकारी जगन्नाथदास को चुना गया। दोनो समितियों ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में १२००) की धनराशि एकत्रित करली। ज्येष्ठ शुक्ला १२ सं० १९७४ को समिति भवन का शिलान्यास श्री गंगाप्रसाद शास्त्री के कर कमलों द्वारा उल्लास सहित सम्पन्न हुआ। भवन का निर्माण-कार्य श्री नारायणदास सुपरिन्टेन्डेण्ट पी० डव्ल्यू० डी०, तथा शास्त्रीजी की देखरेख में होने लगा। अभी समिति का हॉल तथा सामने का भाग ही बन पाया था कि अचानक शास्त्रीजी का असामयिक स्वर्गवास हो गया। समिति को अपने ऐसे कर्मठ कार्य-कर्ता और संस्थापक की मृत्यु से अपार क्षति पहुँची। निर्माण-कार्य कुछ समय के लिये अवरुद्ध हो गया। पुस्तकालय एवं वाचनालय का कार्य नवीन भवन में सुचारु रूप से चल मके इसे ध्यान में रखते हुए साधारण निर्माण-कार्य पूरा करा लिया गया।

यद्यपि समिति भवन का जो नक्शा प्रारम्भ में सोचा गया था वह पूरा न बन पाया था किन्तु समिति का हॉल पुस्तकालय एव वाचनालय के लिए पर्याप्त था। दिनांक २३-११-१८ को समिति का पुस्तकालय तथा वाचनालय अपने नवीन निजी भवन में आ गया। यह गृह-प्रवेशोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। भरतपुर के गण्यमान व्यक्तियों के अतिरिक्त सरकारी अधिकारीगण तथा

बाहर से आमन्त्रित व्यक्ति एवं अपार जन-समूह उत्सव में सम्मिलित हुआ।

भवन के इस निर्माण कार्य में ५१६७॥-)। व्यय हुआ जिसमें ३४२६॥)। चन्दा द्वारा एकत्र हुआ। शेष १७३८।-) समिति पर ऋण रहा जिसके लिए समिति ने सरकार से निवेदन किया किन्तु उसमें सफलता न मिली और यह धन शनैं शनैं चुकाया जाता रहा। इस निर्माण काय में धन द्वारा सहायता देने वालो के नाम परिशिष्ट (६) में दिये गये हैं।

समिति के निजी भवन मे जाने के पश्चात् इसके पीछे की भूमि, जो खाली पडी थी और जिसकी समिति को अत्यन्त आवश्यकता थी, किराये पर ले ली गई। कुछ समय बाद २३-६-४२ को यह जमीन भी २५४-)॥। म क्रय करली गई। समिति भवन का जो भाग अभी तक पूरा होने को शेप था उसे पूरा करने के लिए सतत् प्रयत्न जारी थे। अत १६२५ ई० मे २३ नवम्बर को भरतपुर नगर के सेठ दामोदरलाल ने २५००) दान देकर इस कार्य को पूरा कराया। समिति भवन के पीछे वाला भाग दक्षिण की ओर मे कुछ टेढा तथा कुरूप था। इसको सन् १६५४ मे तत्कालीन सभापति श्री चिरञ्जीलाल पोद्दार ने बडे प्रयत्न तथा साहस से सीधा कराया।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के मुख्य संरक्षक

श्री सेठ मन्नोषीलाल जी गोयल
(जिनके अनुदान से समिति के विशाल भवन का सुन्दर फर्श निर्मित हुआ)
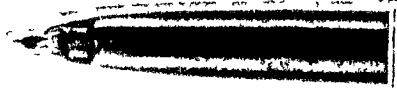
श्री सेठ हरिचरणलाल जी
(जिनके अनुदान से समिति का अग्रिम उच्च भाग पुन निर्मित हुआ)

नवीन भवन

समिति भवन के पूर्ण बन जाने पर उसके वाचनालय, पुस्तकालय तथा कवि-कोष्ठी का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा। लगभग २५ वर्ष हो पाये थे कि पुस्तकालय का विस्तार इतना बढ गया कि समिति हॉल तथा अन्य कक्षों में पुस्तकों के लिये पर्याप्त स्थान नहीं रहा। दूसरे सभाओं, सम्मेलनों आदि के समय बहुत अड़चनें आती थी। स्थान की संकीर्णता का अनुभव दिन-प्रतिदिन होने लगा। वाचनालय तथा पुस्तकालय की उत्तरोत्तर वृद्धि को देखकर यह बात निश्चित रूप से मान ली गई कि भवन का विस्तार किये बिना काम न चलेगा। समिति के ४१वें वार्षिकोत्सव पर श्री पं० बालकिशन दुबे ने समिति भवन के विस्तार की आवश्यकता को जनता के सामने मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया किन्तु सफलता नही मिली। १६५६ में ४४वें वार्षिकोत्सव के समय यह प्रश्न फिर जनता के समक्ष रखा गया। इस समय कुछ आशा दिखाई देने लगी। दिनांक १२-१-५७ की कार्यकारिणी के अधिवेशन के समय पर तय किया गया कि समिति भवन का पुनर्निर्माण कार्य शीघ्रातिशीघ्र आरम्भ कर दिया जाय। दिनांक २१-२-५७ की कार्यकारिणी की बैठक में बाबू गोविन्दप्रसाद ओवरसीयर द्वारा निर्मित भवन के पुनर्निर्माण की योजना प्रस्तुत की गई जिसमे अनुमानित १२०००) रु० का व्यय बतलाया गया। इस योजना को सर्वसम्मति से स्वीकृत कर लिया गया और निम्नलिखित महानुभावों की एक उप-समिति बनाई गई जिसकी देख-रेख में १-३-५७ से यह कार्य आरम्भ कर दिया गया :—

श्री प्रो० कुजविहारीलाल गुप्ता	अध्यक्ष
श्री मदनलाल बजाज	उपाध्यक्ष
श्री मदनमोहनलाल पोद्दार	संयोजक

श्री भारतभूपण भार्गव
श्री भगवानदास गोठी
श्री बाबू गोविन्दप्रसाद ओवरसीयर

निर्माण को आरम्भ हुए कुछ ही दिन व्यतीत हुए होंगे कि विघ्न उपस्थित होने लगे। सवप्रथम सनातन धर्म सभा के पदाधिकारियो ने भवन निर्माण की भूमि पर बहुत बडी आपत्ति उठाई, किन्तु श्री सेठ सन्तोशीलाल और श्री हरिदत्त वकील की मध्यस्थता से यह झगडा शान्त हो गया। दूसरी बाधा समिति के दक्षिणी भाग के, जो सेठ चिरजीलाल साढौनी वालो के गृह की तरफ है, सीधे करने की थी, किन्तु यह समस्या भी उक्त सेठ जी की उदारता एव योग के कारण बडी सरलता से हल हो गयी। समिति के हॉल मे दक्षिणी भाग मे श्री रावेलाल सर्राफ के मकान की मोरी समिति भवन के अन्दर आती थी जिससे भवन को भारी क्षति पहुँचती थी और भवन निर्माण मे बडी बाधक थी। श्री रावेलाल जी ने उसे बन्द कराकर अपनी उदारता का परिचय दिया।

निर्माण काय पुन द्रुतगति से चलने लगा किन्तु रुपया इकट्ठा करने की समस्या पूर्ववत् विघ्न-बाधाओ मे कही अधिक जटिल मालूम होने लगी। ऐसे गाढे समय मे समिति के उत्साही कार्यकर्त्ताओ ने अहर्निशि नगर में भ्रमण करके जो धन-राशि इकट्ठी की वह कल्पना से कही अधिक थी। इस कार्य मे सर्व श्री डा० कुजबिहारी लाल गुप्ता, मोतीलाल बजाज, मदनलाल बजाज, रामदत्त शर्मा मन्त्री, भगवानदास गोठी, गिरिजप्रसाद सर्राफ, मदनमोहनलाल पोद्दार, भारतभूपण भार्गव, गोपालदास गोयल, प० सुरेशकुमार सूर्यद्विज, सीताराम खूटेटिया, गौरीशकर दलाल, लक्ष्मीकान्त शर्मा, कु० वनेसिह, चम्पालाल कविशेखर, के नाम विशेष उल्लेखनीय है। सबसे अधिक सहायता श्री विष्णुदत्त शर्मा जिलाधीश भरतपुर ने विश्राम खण्ड मे बडी धनराशि दिला कर की।

इस प्रसग मे सर्व श्री विद्याव्रत शास्त्री और शकरलाल ठेकेदार के नाम भी विशेष रूप मे लिखना उचित है जिन्होने अपना

श्री हिन्दी साहित्य समिति के वर्तमान विशाल भवन के निर्माणकर्त्ता :

(जिनके निरीक्षण एवं अहर्निश परिश्रम से समिति का वर्तमान भवन निर्मित हुआ)

श्री ला० मदनमोहन लाल जी पोद्दार
(संयोजक नवीन भवन निर्माण समिति सन.
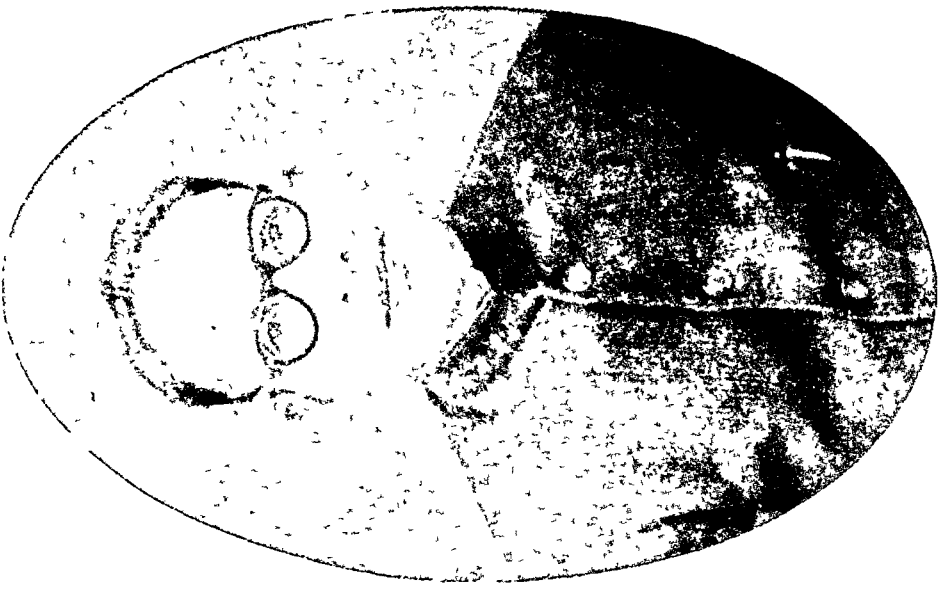
श्री बाबू गोविन्द प्रसाद जी ओवरसीयर
(नवीन भवन निर्माण योजना के निर्माता)
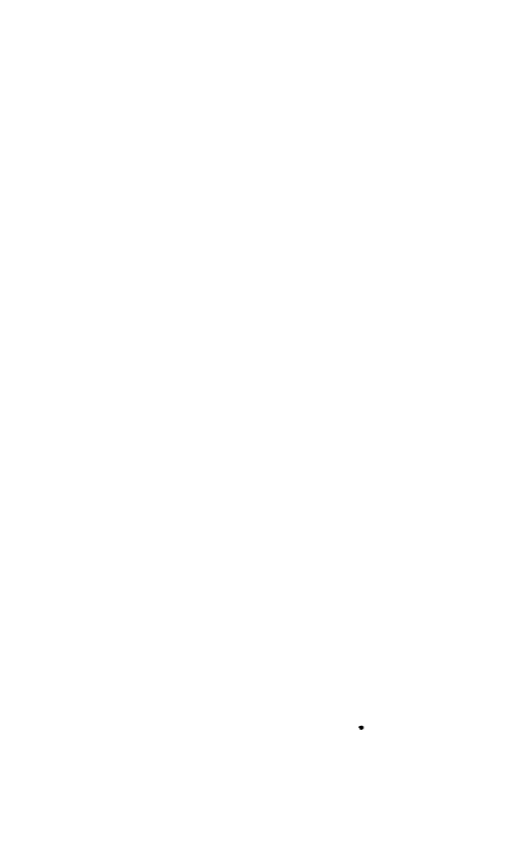
अमूल्य समय देकर समिति को पत्थर व ईंट विशेष कमीशन के साथ दिलाने में सहायता की।

केवल सात, आठ महीने के अथक परिश्रम के फलस्वरूप भवन तो बन कर तैयार हो गया किन्तु भवन के अनुरूप फर्श नहीं बन पा रहा था जिसको श्री मदनलाल बजाज उपाध्यक्ष के सद्प्रयत्नों से सेठ श्री सन्तोशीलाल जी मंहगाया वालो ने पूरा करा कर समिति भवन में चार चांद लगा दिये। समिति के बाहरी हिस्से को सेठ श्री हरिचरनलाल जी नई मंडी ने अपने स्वर्गीय पिताजी की स्मृति में नवीन रूप देकर रहे सहे कार्य को पूरा करा दिया।

भवन निर्माण मे कुल लगभग २७०००) रु० व्यय हुए जब कि आरम्भ मे केवल १२०००) रु० ही व्यय आँका गया था। इस बड़ी राशि को देने वाले दाताओं के नाम परिशिष्ट (८) में दिये गये है।

इस भवन के नव-निर्माण का समस्त कार्य श्री मदनमोहन लाल पोद्दार तथा बाबू गोविन्दप्रसाद ओवरसीयर को सौपा गया था जिसको उन्होंने बड़ी योग्यता, परिश्रम और लगन के साथ पूरा किया। समिति के कर्मचारी पं० कुन्दनलाल ने भी रात दिन उत्साह व परिश्रम से कार्य किया जिसके लिये समिति ने उन्हें १००) रु० पारितोषिक प्रदान किया।

मुख्य भवन के अतिरिक्त ममिति की अचल सम्पिति में तीन दुकाने और है जो भवन के निकट ही शहर के मुख्य बाजार मे स्थित है। इन दुकानो को श्री शान्तिस्वरूप जी बौहरे (दही गली) ने अपने पूज्य पिता श्री हीरालालजी बौहरे की पुण्य स्मृति मे समिति को भेट किया। इस कार्य में समिति तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री डा० गोपाललाल शर्मा का प्रयत्न उल्लेखनीय है।

हिन्दी प्रचार और जन-सेवा

इस समिति का लक्ष्य राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार एव प्रसार करना रहा है। इसका समस्त इतिहास इसका साक्षी है। सब प्रकार से हिन्दी की प्रगति हो इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये निम्न प्रकार के प्रयास किये गये है —

१ अधिवेशन
२ परीक्षा
३ प्रौढ-शिक्षा
४ नागरी पाठशाला
५ कवि-गोष्ठी
६ नाट्य समिति
७ राज्यस्तर पर हिन्दी की मान्यता की चेष्टाएँ

१ अधिवेशन

आरम्भ से ही इस समिति द्वारा मासिक एव वार्षिक अधिवेशनो की व्यवस्था की गई। इनके अतिरिक्त समय-समय पर हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवियो की स्मृति मे एव वसत, होली आदि पर्वों पर भी अधिवेशन होते रहते है।

मासिकोत्सव

प्रत्येक मास के अन्तिम शनिवार को समिति का साधारण अधिवेशन हुआ करता था, जिसमे लिखित निवन्ध एव कविताओ का पठन होता था। इसका लक्ष्य लेखन-कला का अभ्यास एव भाषण देने की योग्यता प्राप्त कराना था। प्रतिभाशाली विद्वानो के सम्मिलित होने से ये अधिवेशन और भी आकर्षक वन जाते थे। इन अवसरो पर स्टेट कौंसिल के मेम्बर साहिवान भी समिति मे पधारते और सभापति का आसन ग्रहण करते थे। सन् १९१२

मे काजी अजीजुद्दीन अहमद साहब मेम्बर कौंसिल भी इन भाषणों में पधारे और इतने प्रभावित हुए कि समिति के सदस्य भी बन गये। सन् १९१४ से साहित्यिक भाषणों के अतिरिक्त विज्ञान पर भी भाषणों की व्यवस्था की गई।

वार्षिक उत्सव

समिति का प्रथम वार्षिक उत्सव २७, २८ और २९ सितम्बर, १९१३ को वडी धूमधाम से मनाया गया। समस्त नगर वहुरंगी पताकाओ एव झडियों से सुसज्जित किया गया। जनता में एक नवीन उत्साह था। एक स्थान पर अधिवेशन पण्डाल का निर्माण किया गया। पण्डाल के दरवाजे पर जो वोर्ड लगाया गया उसका प्रथम अक्षर दस बाई छः फुट रंगीन कागजों का वनाया गया था, इसके निर्माण का श्रेय स्वर्गीय लाला नारायणलाल मुनीम को था। दूर-दूर से सहस्रों दर्शक एवं अनेक विद्वान् उसमें भाग लेने के लिये पधारे। राज्य की ओर से सब प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की गई। बाहर से पधारे हुए प्रतिनिधियों मे निम्नलिखित महानुभाव विशेष उल्लेखनीय है :—

१. रायबहादुर बाबू वैजनाथ बी० ए०, भूतपूर्व जज आगरा
२. गोस्वामी मकसूदन लाल वृन्दावन
३. श्री स्वामी सत्यदेव परिव्राजक
४. प० माधव शुक्ल
५. पं० पन्नालाल शर्मा, सम्पादक, स्वदेश बान्धव, आगरा
६. पं० मिट्ठनलाल आगरा
७. पं० जीवानन्द काव्यतीर्थ
८. पं० सत्यनारायण, कविरत्न, आगरा
९. पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी आर्यमित्र

यद्यपि यह अधिवेशन तीन दिन तक चला किन्तु दर्शको की भीड़ इतनी अधिक रही कि पण्डाल प्रातःकाल से ही भरा रहता था। अधिवेशन के साथ-साथ समिति ने सावित्री सत्यवान् नाटक के अभिनय का भी आयोजन किया था जिसने उत्सव की शोभा

को द्विगुणित कर दिया। जब तीन दिन के कार्यक्रम से जनता सन्तुष्ट न हुई तो अधिवेशन एक दिन के लिये और बढ़ा दिया गया। इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्री राज्यपुरोहित प० कृष्णवल्लभ जी थे। जिन महानुभावो ने सभापति पद ग्रहण किया था उनके नाम निम्न प्रकार हैं —

प्रथम दिन—रायबहादुर श्री धाऊ वन्शी रघुवीरसिंह जी
द्वितीय दिन—प० श्री रघुनाथसहाय जी
तृतीय दिन—गोडेश्वराचार्य गोस्वामी श्री मधुसूदनलाल जी
चतुर्थ दिन—स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक

द्वितीय वार्षिकोत्सव सन् १९१६ मे मनाया गया। वह भी अद्वितीय रहा। सम्मिलित होने वाले महानुभावो मे से निम्नलिखित के नाम विशेष उल्लेखनीय है —

१ श्री प० श्रीकृष्ण शास्त्री प्रोफेसर पटियाला
२ श्री प० गौरीशकर हीराचद ओझा, अजमेर
३ श्री प० गिरधर शर्मा नवरत्न, राजगुरु, झालरापाटन
४ श्री प० लक्ष्मीधर वाजपयी कानपुर
५ श्री प० सत्यनारायण जी कविरत्न, धाधूपुरा, आगरा
६ श्री प० श्रीदामाजी सामवेदी आगरा।

इस प्रकार वार्षिक उत्सव मनाने की पद्धति चल निकली। अब तक समिति मे चवालीस वार्षिक उत्सव मनाये जा चुके हैं। वैसे तो सभी अधिवेशन बडी धूमधाम मे मनाये गये, किन्तु तेतीसवे और चवालीसवे अधिवेशन के समय विशेष जनोत्साह देखा गया। तेतीसवाँ वार्षिक उत्सव १९४५ मे आगरा के बाबू गुलाबराय के सभापतित्व मे मनाया गया। इस अवसर पर कवि कौसिल का अभिनय अत्यत रोचक रहा जिसका श्रेय स्वर्गीय गोकुलचन्द जी दीक्षित को है। इसके अतिरिक्त रसदरबार, हिन्दी उर्दू समानार्थक परीक्षा व कवि सम्मेलन का कार्यक्रम भी अधिक आकर्षक रहा। इस अधिवेशन के सयोजक तत्कालीन उप-मन्त्री श्री मदनलाल बजाज थे।

समिति के इतिहास मे सबसे अधिक आकर्षक ४४वा अधिवेशन

श्री हिन्दी साहित्य समिति के कर्णधार

(जिनके भागीरथ प्रयत्नों से समिति का विशाल भवन १९५७ में पुनर्निर्मित हुआ)

वर्तमान अध्यक्ष (सन् १९५५ से १९६२ तक)

वर्तमान उपाध्यक्ष (सन् १९५८ से १९६२ तक)

श्री डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त,
एम. ए. (हिन्दी एवम् राजनीति विज्ञान) पी-एच. डी.
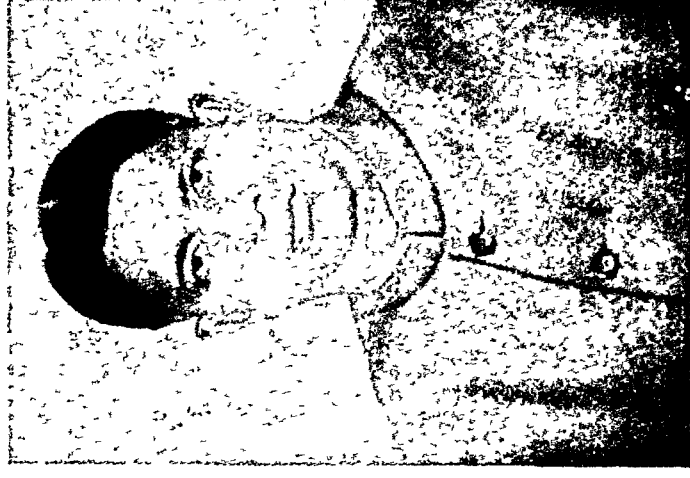
श्री मोतीलालजी बजाज

था जो १६, १७ व १८ सितम्बर, १९५६ ई० को डा० रामविलास शर्मा के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। यह अधिवेशन १६ सितम्बर को बालरवि रश्मियो के प्रस्फुटित होते ही शांति एव उल्लासपूर्ण वातावरण में समिति के घेर मे प्रारम्भ किया गया। वाद्ययन्त्रो की मनोहारी ध्वनि के वीच हिन्दी साहित्य समिति का पीताम्वरी ध्वज स्वच्छ आकाश में भरतपुराधीश श्री बृजेन्द्रसिह जी के कर कमलों द्वारा फहराया गया। स्वागताध्यक्ष श्री डा० कुजविहारीलाल गुप्ता ने भरतपुर नगर के महत्त्व का वर्णन करते हुए वताया कि यह स्थान व्रजभाषा साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और इस व्रज भू-खंड को व्रजभाषा के उच्चकोटि के कवि सोमनाथ और सूदन ने जन्म लेकर गौरवान्वित किया है। अन्त मे अधिवेशन मे पधारे हुए सभी हिन्दी प्रेमियों का स्वागत करते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि हिन्दी की वहुमुखी प्रगति जगत की भाषाओं के बीच सर्वोच्च आसन ग्रहण करने में समर्थ होगी।

सांयकाल को डा० कमलेश जी का प्रभावपूर्ण भाषण तथा एक विराट् कवि-सम्मेलन हुआ। व्रजभाषा और खड़ीवोली के कवियों की सरस, सुन्दर एवं प्रभावोत्पादक कविताओ ने जनमानस को मंत्र-मुग्ध कर दिया। इस वृहत् कवि-सम्मेलन के अतिरिक्त दूसरे व तीसरे दिन गीता प्रवचन, अतांक्षरी, वादविवाद, गायन आदि का भी आयोजन किया गया। सबसे अधिक आकर्षक संसदीय रूपक था जिसमे संसदीय परम्पराओं पर पूर्ण प्रकाश डाला गया। इस रूपक मे राष्ट्रपति का भाषण, प्रश्नोत्तर, सरकारी विधेयक, गैरसरकारी विधेयक, स्थगत प्रस्ताव सभी आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किये गये थे। सरकारी पक्ष और विरोधी पक्ष के उत्तर-प्रत्योत्तर एवं अन्य वाते दिल्ली मे होने वाली ससद की कार्यवाही से किसी प्रकार कम न थीं। इस प्रदर्शन मे निम्नलिखित महानुभावों के भाषण विशेष सराहनीय रहे :—

सर्व श्री डा० कुंजविहारीलाल, प्रो० हरसहाय, प्रो० किशन किशोर महर्षि, मा० उत्तमगोपाल, मा० नत्थीलाल, मा० अनूपसिह,

प० सुरेशकुमार सुरध्वज, श्री रामदत्त शास्त्री, श्री मुकुटबिहारीलाल वकील।

विशेष अधिवेशन

समिति का मुख्य लक्ष्य जनता मे हिन्दी का प्रचार करना रहा है। इसके लिये उपर्युक्त वार्षिक अधिवेशनो के अतिरिक्त मार्च १९४४ मे विक्रम द्विसहस्राब्दि समारोह का भी आयोजन किया गया। समिति के इस वृहद् कार्यक्रम को सफल बनाने मे समस्त स्थानीय सस्थाओ ने पूर्ण सहयोग दिया। राज्य की ओर से भी राजकीय कार्यालयो मे पूरे दिवस का अवकाश रहा।

नगर मे एक वृहद् जलूस निकाला गया जिसमे समस्त स्थानीय सस्थाओ के झण्डे थे। यह जुलूस समिति के अहाते मे बने विशाल पडाल मे पहुँचकर सभा के रूप मे परिवर्तित हो गया। श्री गोकुलचन्द दीक्षित द्वारा आयोजित विक्रम दरबार का रूपक प्रदर्शित किया गया। इस रूपक मे कविरत्नो का परिचय दीक्षित जी द्वारा (वन्दीजन स्वरूप मे) दिया गया। यह अभिनय इतना सुन्दर बन पडा कि उपस्थित जनता मन्त्र-मुग्ध सी हो गई।

इस उत्सव मे सम्मिलित होने वाले विशिष्ट व्यक्तियो मे भरत-पुर नरेश श्री बृजेन्द्रसिंह जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

इस वर्ष दिनाक १२-२-६१ से १४-२-६१ तक समिति स्वर्ण जयन्ती महोत्सव बडी धूमधाम से मना रही है। इसी अवसर पर साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा आयोजित मत्स्य क्षेत्रीय एक उपनिषद् समिति के तत्वावधान मे होगा जिसका विषय है लोक-रुचि और साहित्य। इस महोत्सव का उद्घाटन भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के कर कमलो द्वारा होगा (इसका कार्यक्रम परिशिष्ट में देखिये)।

२ परीक्षा

समिति ने हिन्दी भाषा के प्रचार एव ज्ञानवृद्धि के हेतु जो

अनेक प्रयत्न किये उनमें सम्मेलन की परीक्षाओं का केन्द्र स्थापित करना भी एक है। दिनाक १४-७-२६ को हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने इस समिति को प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं का केन्द्र स्वीकार किया। सितम्वर १९२६ में प्रथम वार परीक्षाएँ आरम्भ हुई जिनमें केवल दो परीक्षार्थी प्रविष्ट हुए और दोनों उत्तीर्ण भी हुए। राज्यभाषा उर्दू होने से उन दिनों इन परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने से कोई राजकीय नौकरी प्राप्त नही होती थी अतः परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या वहुत कम थी। ऐसी स्थिति में समिति शुल्क देकर भी विद्यार्थियों को परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए उत्साहित करती थी। धीरे-धीरे विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने लगी जो १९४३ के वाद उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई। सन् १९४७ में हिन्दी राज्यभाषा घोषित करदी गई। सन् १९५० में प्रो० कुंजबिहारीलाल गुप्ता केन्द्र-व्यवस्थापक नियुक्त हुए और उनके प्रयत्नों से हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने १९५१ से समिति को उत्तमा का केन्द्र भी स्वीकार कर लिया। तव से परीक्षार्थियों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती ही गई। सन् १९६० की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या २२२ है जिसका विवरण इस प्रकार है :—

उत्तमा ५३, मध्यमा ४२, प्रथमा ६, वैद्य विशारद ८६, कृषि-विशारद ८ एवं उप-वैद्य २४। यह संख्या पिछले ४ वर्षों में रही संख्या में सबसे अधिक है जिसके लिए समिति केन्द्र के वर्तमान केन्द्र-व्यवस्थापक श्री रामदत्तजी शर्मा, एम० ए०, बी० एड्० की व्यवस्था सराहनीय है। परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए परीक्षा होने से लगभग २ मास पूर्व रात्रि पाठशाला की व्यवस्था की जाती है जिनका संचालन इस वर्ष वैद्य रामशरन जी शास्त्री तथा श्री रामदत्त जी शास्त्री, एम० ए०, वी० एड्०, केन्द्र-व्यवस्थापक ने किया। इस वीच परीक्षार्थियों को पाठ्य-पुस्तकों की विशेष सुविधा भी दी जाती है।

३. प्रौढ़-शिक्षा

अक्टूबर १९४४ मे समिति का शिष्ट मण्डल राजकीय सहायता

प्राप्त करने के लिये भरतपुर राज्य के तत्कालीन दीवान साहब से मिला। विचारों के आदान-प्रदान के समय दीवान साहब ने सुझाव रखा कि समिति को हिन्दी प्रचार के लिए नगर के प्रौढों को साक्षर बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। इस सुझाव पर विचार करने के लिए १२-१०-४४ को कार्यकारिणी का अधिवेशन बुलाया गया और यह निश्चय किया गया कि बड़े जोरों से 'साक्षर बनो' आन्दोलन आरम्भ होना चाहिये। इस कार्य के लिये १६०) रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई तथा निम्नलिखित महानुभावों की समिति बनाई गई —

१ बाबू अयोध्याप्रसाद डी० पी० आई० (परामर्शदाता)
२ प० नन्दकुमार शर्मा विशारद (संयोजक)
३ प० गोकुलचन्द दीक्षित
४ प्रो० मोतीलाल
५ प्रो० हरसहाय
६ ला० चिरंजीलाल पोद्दार
७ प० बालकृष्ण दुबे

योजना स्वीकृत हो जाने के पश्चात् कार्य आरम्भ कर दिया गया। भरतपुर नगर में ३ स्थानों पर प्रौढ शिक्षा के लिए पाठशालाएँ स्थापित कर दी गईं (१) समिति भवन (२) वीरनारायण दरवाजा (३) कुम्हेर दरवाजा। तीनों केन्द्रों के लिये ३ अध्यापक २७ रु० मासिक पर रखे गये। शिक्षा निरीक्षक का कार्य श्री दिनेशचन्द्र चतुर्वेदी तथा छेदालाल चतुर्वेदी को सौंपा गया। ता० १२-१०-४४ को ब्याने के आर्य समाज के मन्त्री श्री गनेशीलाल आर्य की देख रेख में वहाँ के बमनपुरा नामक एक मोहल्ला में भी एक केन्द्र स्थापित हुआ। अल्पकाल में ही ये केन्द्र आशातीत उन्नति करने लगे और अशिक्षित जनता के आकर्षण-बिन्दु बन गये। प्रौढों को आकर्षित करने के लिए पुस्तक, स्लेट, पेन्सिल आदि समिति से दी जाती थी। यह कार्यक्रम चार मास तक चलता रहा। लगभग ६५ विद्यार्थियों ने इससे लाभ उठाया। थोड़े समय में ही उनको अक्षरों और मात्राओं

का ज्ञान हो गया । आगे धनाभाव के कारण मार्च १९४५ मे सभी केन्द्र वन्द कर देने पड़े ।

समिति इस योजना को सफल बनाने के लिये निरन्तर प्रयत्न करती रही । १२ जनवरी १९५४ को पुन: दो केन्द्र स्थापित किये गये : (१) समिति भवन (२) गुलालकुण्ड हरिजन बस्ती । श्री सुरेश-चन्द्र खन्ना और श्री उमाशकर शर्मा ने सफलतापूर्वक अध्यापन कार्य किया । लगभग ७५ विद्यार्थियों को साक्षर वनाया गया । १६ अप्रैल १९५४ को धनाभाव के कारण यह कार्य पुन: वन्द कर देना पड़ा ।

४. नागरी पाठशाला

हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए इस संस्था ने १९१४ में एक पाठशाला खोलने की योजना बनाई जिसके दो विभाग खोले गये । पहिला आरम्भिक शिक्षा विभाग जिसमे अपर प्राइमरी कक्षाएँ थीं और दूसरा उच्च साहित्यिक शिक्षा विभाग जिसमें इतिहास, विज्ञान, भूगोल, गणित, साहित्य और अर्थशास्त्र आदि की शिक्षा रखी गई । दोनों भागो के लिये दस अध्यापकों को २४१) रु० मासिक वेतन भी स्वीकार किया गया । स्त्रियों को भी शिक्षित करने के लिए व्यवस्था सोची गई, किन्तु अर्थाभाव के कारण यह योजना अधिक दिन न चल सकी ।

५. कवि-गोष्ठी

भरतपुर के कवि-समाज की कृतियों को प्रकाश में लाने तथा उनकी प्रतिभा को विकसित करने के लिये सन् १९३४ में एक साहित्य गोष्ठी की स्थापना की गई, जिसके संयोजक श्री गोपाललाल जी महेश्वरी थे । इस गोष्ठी की एक वर्ष तक प्रति मास बैठकें होती रही, फिर साप्ताहिक कर दी गई । इन वैठकों में स्थानीय कवियो द्वारा जो रचनाएँ सुनाई जाती थीं, उनकी अगली वैठक में आलोचना भी प्रस्तुत की जाती और श्रेष्ठ रचना पर पुरस्कार भी दिया जाता था । इन गोष्ठियों में कविता पाठ के अतिरिक्त निवंध, अन्ताक्षरी तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ भी होती थी । सन् १९३७

मे सयोजक महोदय का आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने के कारण यह कार्य-क्रम कुछ काल के लिए स्थगित हो गया। सन् १६८१ व ५३ मे इनको पुन चालू किया गया परन्तु कवियो मे उत्साह की कमी के कारण कार्य अधिक न चल सका। अब केवल विशेष अवसरो पर ही कवि-गोष्ठियाँ होती है। इन अवसरो पर रस दरबार, कवि ससद तथा कवि दरबार आदि भी किये जा चुके हैं। लोकनृत्य एव सास्कृतिक कार्यक्रम भी समय-समय पर होते रहे है।

इस गोष्ठी के अन्तर्गत सन् १६५४ से जसवन्त प्रदर्शनी के अवसर पर एक वृहत् कवि-सम्मेलन प्रदर्शनी पडाल मे प्रति वष होता रहा है जिसमे सर्वोत्कृष्ट रचनाओ पर पुरस्कार दिया जाता है। सन् १६५७ से इस कवि-सम्मेलन का आयोजन सरकार द्वारा किया जाता है।

साहित्य-गोष्ठी मे भाग लेने वाले कुछ सज्जनो के नाम इस प्रकार है —

सर्व श्री नन्दकुमार शर्मा, सूयनारायण शास्त्री, चम्पालाल मजुल, गोपाललाल महेश्वरी, श्री गोकुलचन्द दीक्षित, कविकुल शेखर, जयशकर चतुर्वेदी, रामचन्द विद्यार्थी, राधारमण वैद्य मोहन, छोटेलाल ब्रह्मभट्ट, गिरीजप्रसाद मिश्र, कृष्णचन्द्र शास्त्री एम० ए०, देवकीनन्दन आचार्य, रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी, प्रो० प्रेमनिधि शास्त्री, इन्द्रभूषण महर्षि, तुलसीराम चतुर्वेदी, दिनेशचन्द चतुर्वेदी, सूरजप्रसाद शर्मा, प्रभूदयाल जी दयाल, तोताराम शुक, शिवदत्त शर्मा, प्रो० कुजविहारीलाल गुप्ता, मा० भम्मनलाल, जगन्नाथ-प्रसाद कम्पाउण्डर, हरीशचन्द हरीश, बृजेन्द्रविहारी शर्मा कौशिक, बालस्वरूप शर्मा, गौरीशकर मयक, रमेशचन्द चतुर्वेदी और रामदत्त शर्मा एम० ए०।

६ नाट्य-समिति

जो काय अनेको पुस्तको के पढने और सैकडो व्याख्यानो के सुनने से नही होता वह नाटको के देखने मे सहज मे हो जाता है। दृश्य साहित्य का जनता पर जितना प्रभाव पडता है उतना श्रव्य

एवं पाठ्य का नहीं। इस विचारधारा से प्रेरित होकर भरतपुर के कुछ उत्साही युवक एक ऐसी नाट्य समिति की आवश्यकता प्रतीत करने लगे जो भरतपुर में सुन्दर एवं शिक्षाप्रद नाटकों का अभिनय कर सके।

समिति के प्रथम वार्षिकोत्सव के समय कुछ सज्जनों द्वारा अभिनीत नाटक सावित्री सत्यवान का जनता पर इतना प्रभाव पड़ा कि यह माँग की जाने लगी कि एक नाट्य समिति की स्थापना की जाय जो समय-समय पर अभिनय द्वारा सदाचार का प्रचार करे। उपर्युक्त माँग को लेकर दिनांक २८ नवम्वर १९१३ को एक असाधारण सभा बुलाई गई जिसमें नगर के गण्यमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए। सभा का सभापतित्व मा० बृजबिहारीलाल ने किया। बहुत विचार-विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से हिन्दी नाट्य समिति की स्थापना की गई जिसके संचालन हेतु निम्न समिति बनाई गई :—

१. श्री ओंकारसिह प्रमार	प्रधान
२. श्री बालकृष्ण दुबे	मन्त्री
३. श्री बाला प्रसाद	उपमन्त्री
४. श्री ला० हजारीलाल पोद्दार	कोषाध्यक्ष
५. श्री छोटेलाल	आय-व्यय-निरीक्षक

नाट्य समिति के लक्ष्य को कार्यान्वित करने के लिये धन की आवश्यकता थी, अतः उसी समय उपस्थित व्यक्तियों द्वारा १०१) रु० का चन्दा एकत्रित किया गया और एक हारमोनियम की व्यवस्था भी कर दी गई।

यह नाट्य समिति श्री हिन्दी साहित्य समिति का एक अंग थी समिति की कार्यकारिणी ने तारीख ४ जनवरी १९१४ की बैठक में इसकी स्थापना को स्वीकार करते हुए निम्न नियम निर्धारित किये—

१. किसी नाटक के अभिनय करने से पूर्व नाट्य समिति को कार्यकारिणी समिति से आज्ञा प्राप्त करनी होगी।

२. प्रत्येक मास मे नाट्य समिति के आय-व्यय का लेखा

समिति के कार्यालय मे भेजा जायेगा और उसका जमा-खर्च भी समिति के हिसाब मे किया जायेगा ।

३ हिन्दी साहित्य समिति, नाट्य समिति को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नही देगी, प्रत्युत नाट्य समिति का कर्त्तव्य होगा कि वह अपने प्रत्येक खेल की आय का कम से कम १०वॉं अश समिति को दे ।

४ आवश्यकता पडने पर समिति का कर्त्तव्य होगा कि वह नाट्य समिति को शारीरिक एव प्राविधिक सहायता दे ।

५ नाट्य समिति का यह कर्त्तव्य ठहराया गया कि वह प्रत्येक वर्ष अपने अभिनयो का पूर्ण विवरण समिति को भेजे ।

ज्योही इस समिति की स्थापना हुई, इसके उत्साही कार्यकर्त्ता इसके कार्य मे जुट गये । जिन नाटकों का अभिनय किया गया वे सब शुद्ध हिन्दी मे लिखे हुए थे । अभिनयो को देखने के लिये भरतपुर की जनता इतनी उत्सुक रहती थी कि पडाल मे बैठने को स्थान बडी कठिनता से मिलता था । तत्कालीन भरतपुर नरेश श्री कृष्णसिहजी इस नाट्य समिति मे विशेष सहानुभूति रखते थे । थोडे समय मे ही इस समिति ने आशातीत सफलता प्राप्त करली और अपने ध्येय के अतिरिक्त सैकडो रुपये का आवश्यक सामान भी एकत्रित कर लिया । वार्षिक अधिवेशनो पर तो नाटक होते ही थे किन्तु अन्य अवसरो पर भी शिक्षाप्रद नाटको के अभिनय की व्यवस्था-की जाती । प्रथम विश्व युद्ध मे आर्थिक सहायता देने के लिये समिति ने कई नाटक खेले और उनसे प्राप्त आय को युद्ध की सहायता हेतु भेज दिया गया । इन नाटको को देखने के लिए भरत-पुर नरेश बाहर से आने वाले अग्रेजो एव भारतीय अतिथियो सहित सम्मिलित होते थे । इन सभी अतिथियो ने नाट्य समिति के कार्यों की मुक्तकठ से प्रशसा की ।

स्व० श्री दादीजी साहिबा श्री गिर्राज कौर नाट्य समिति मे पूर्ण सहानुभूति रखती थी और प्रत्येक अभिनय मे पधार कर समिति का उत्साहवर्द्धन करती थीं । -

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के उत्साही एवं कर्मठ पदाधिकारी

वर्तमान प्रधान मंत्री

जिनकी कार्य प्रणाली के फलस्वरूप समिति ने अभूतपूर्व उन्नति की है।

भूतपूर्व प्रधान मंत्री

जिनके मंत्रित्व काल में समिति का विशाल भवन पुनर्निर्मित हुआ।

श्री रामदत्तजी शर्मा एम.ए.बी.एड., साहित्य रत्न, शास्त्री

प्रधान मंत्री (१९५६ से ५८ तक)

केन्द्र व्यवस्थापक (१९५६ से ६१ तक)

नाट्य समिति द्वारा अभिनीत नाटकों में निम्नलिखित अभिनय विशेष आकर्षक बन पड़े—

१. सावित्री सत्यवान
२. स्वामिभक्त
३. वीर अभिमन्यु
४. रणधीर प्रेम मोहनी
५. वसन्त सुन्दरी
६. सत्यवादी हरिश्चन्द्र
७. शकुन्तला

सन् १९२० में यह नाट्य समिति इतनी अधिक लोकप्रिय हो गई कि भरतपुर नरेश महाराजा श्री कृष्णसिहजी ने इसको समिति से पृथक कर अपने आश्रय में ले लिया।

७. राज्य-स्तर पर हिन्दी की प्रगति के लिए प्रयास

जनवरी १९१९ में स्वर्गीय भरतपुर नरेश श्री कृष्णसिह को राज्याधिकार प्राप्त हुए। अभी तक राजकीय भाषा उर्दू थी। समिति ने एक शिष्टमंडल भेज कर महाराजा से राज्यभाषा हिन्दी घोषित करने के लिए निवेदन किया। भरतपुर नरेश ने जो स्वभावतः ही हिन्दी के बड़े प्रेमी थे, राज्याधिकार प्राप्त होते ही हिन्दी को राज्यभाषा घोषित कर दिया और आज्ञा प्रदान की कि ३ मास की अवधि में सभी राज्यकर्मचारी हिन्दी सीख ले, अन्यथा, वह राज्य-कार्यालय में नहीं रह सकेंगे। इस कार्य की सिद्धि के लिए समिति ने पूर्ण सहयोग दिया और हिन्दी से नितान्त अनविज्ञ सज्जनों को भी हिन्दी के पठन-लेखन योग्य बनाया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राज्यभाषा हिन्दी घोषित तो कर दी गई किन्तु व्यवहार अंग्रेजी का ही चल रहा है, इसके लिये समिति ने समय-समय पर भारत सरकार से विशेषकर १९५६ के अधिवेशन पर एक प्रस्ताव द्वारा निवेदन किया है कि भारत में हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सुगम और सरल है और प्रत्येक प्रान्त में बोली और समझी जा सकती है इसके लिये हिन्दी को सर्वत्र शीघ्रातिशीघ्र प्रचलित किया जाय।

८. समाज-सेवा

समिति का कार्यक्षेत्र जनता में केवल साहित्यिक अभिरुचि

उत्पन्न करने तथा सस्कृति की रक्षा करने तक ही सीमित न रहा अपितु जब जब दैवी प्रकोप के कारण जनता पर इन्फलूएन्जा, जलप्लावन एव महामारी आदि की विपत्तियाँ आई, तब ही तब समिति के कार्यकर्त्ताओ ने अपनी जान की बाजी लगा कर जनता की सेवा की । यही कारण है कि यह सस्था सेवा समिति के नाम से अधिक विश्रुत है ।

सन् १९१८ मे भरतपुर मे इन्फलूएन्जा का भयकर प्रकोप हुआ नित्यप्रति सैकडो मनुष्य मृत्यु के मुख मे जाने लगे । यह एक ऐसा सकट-काल था जब एक दूसरे की सेवा सुश्रूषा करना तो दूर रहा, मृतको को श्मशान भूमि तक पहुँचाने वाला भी कोई नही मिलता था । यह परिस्थिति समिति के उत्साही कार्यकर्त्ताओ से नही देखी गई । स्व० श्री माजी साहिबा श्री गिरिराज कौर जी को उन्होंने नगर की वास्तविक परिस्थिति से अवगत कराया । जनता की सच्ची राजमाता और परम हितैषिनी माजी साहिबा ने तत्काल ५०००) रु० जनता की सेवार्थ समिति को प्रदान किये और वैद्यो एव चिकित्सको को इस सेवा-कार्य मे समिति की पूर्ण सहायता प्रदान करने का आदेश दिया । कर्नल श्री गरोशीलाल जी की अध्यक्षता मे समिति के स्वयसेवको ने दृढतापूर्वक सेवा-कार्य किया और अन्न, दूध, खिचडी, व रजाई आदि रोगियो को वितरित की । इस सेवा के फलस्वरूप सैकडो असहाय रोगियो की जीवन-रक्षा हो सकी ।

इसी प्रकार प्लेग के समय सन् १९२१ मे तथा १९२४ के जलप्लावन के समय मे समिति ने जनता की सेवा कर सैकडो जाने बचाईं ।

स्व० भरतपुर नरेश कृष्णसिंह जी के राज्यकाल मे भरतपुर के न्यायालयो मे इधर उधर से अपहरित महिलाओ को किसी भी व्यक्ति की सरक्षणार्थ जमानत पर दे दिया जाता था । मुसलमान और ईसाई ऐसे अवसरो की ताक मे रहते थे और उससे अनुचित लाभ उठाते थे । हिन्दू लोक-लाज के कारण ऐसी स्त्रियो को सरक्षण मे लेने से हिचकते थे पर इस दुव्यवस्था की टीस उनके हृदय मे भी

वनी रहती थी। अतः कुछ उत्साही नवयुवकों ने समिति की देख-रेख मे एक विधवाश्रम की स्थापना की जिसमें स्त्रियों को न्यायालय से लेकर रखा जाता था। कुछ काल तक यह आश्रम ठीक प्रकार चलता रहा परन्तु महिलाओं के विवाह कर लेने के पश्चात् आश्रम रिक्त हो गया और समिति को धनाभाव के कारण भी इसे वद कर देना पडा।

सन् १९२६ मे हिन्दी साहित्य समिति के संरक्षण मे श्री गिर्राज सेवादल नामक एक दल की स्थापना की गई। इस दल का उद्देश्य राज्य और जनता की सेवा करना था जैसे पीड़ित जनता मे औषधि वितरण, आग बुझाना, पानी में डूवे व्यक्तियों को निकालना, सफाई सप्ताहो का आयोजन, श्रावण मास में होने वाली स्थानीय मंदिरों की रासलीला के अवसरों पर उचित प्रवन्ध एव खोये-बिछुडे वालको को उचित स्थानों पर पहुँचाने का प्रवन्ध आदि।

सन् १९२७ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के १७ वे अधिवेशन पर भी इस दल ने विशेष सेवा की यद्यपि उत्साही युवकों के वाहर चले जाने के कारण यह दल एक वर्ष की अल्पावधि के पश्चात् ही छिन्न-भिन्न हो गया। किन्तु समिति समाज-सेवा के लक्ष्य को भुला न सकी और ऐसे दल की स्थापना के लिये निरन्तर प्रयत्न-शील रही।

दिनांक १० अप्रेल १९४३ को तत्कालीन दीवान कु० श्री हीरासिह के इंगित पर इस दल को पुनर्जीवित किया गया। इस समय इस दल के सभापति स्वयं श्री कु० साहव ही निर्वाचित किये गये। स्थापित होते ही यह दल समाज-सेवा में तल्लीन हो गया किन्तु किन्हीं कारणो से दल का कार्य अधिक न चल सका।

परिशिष्ट १

वार्षिक सदस्य-संख्या-सूचक

क्रमांक	सत्र	सदस्य संख्या	क्रमांक	सत्र	सदस्य संख्या
१	१९१२-१३	२०२	२३	१९३९-४०	२१४
२	१९१३-१४	३४१	२४	१९४०-४१	२६०
३	१९१४-१५	३००	२५	१९४१-४२	२८५
४	१९१५-१६	२८५	२६	१९४२-४३	२६१
५	१९१६-१७	१७०	२७	१९४३-४४	२६३
६	१९१७-१८	१५३	२८	१९४४-४५	२१६
७	१९१८-१९	१४५	२९	१९४५-४६	३३७
८	१९१९-२०	१३०	३०	१९४६-४७	३६७
९	१९२०-२१	१७७	३१	१९४७-४८	४८२
१०	१९२६-२७	२२८	३२	१९४८-४९	३६०
११	१९२७-२८	२०४	३३	१९४९-५०	२६४
१२	१९२८-२९	१६४	३४	१९५०-५१	३७४
१३	१९२९-३०	१००	३५	१९५१-५२	४३३
१४	१९३०-३१	१७४	३६	१९५२-५३	३९९
१५	१९३१-३२	१९९	३७	१९५३-५४	३८९
१६	१९३२-३३	१७०	३८	१९५४-५५	३५५
१७	१९३३-३४	२१८	३९	१९५५-५६	४०८
१८	१९३४-३५	२३५	४०	१९५६-५७	२९६
१९	१९३५-३६	२३४	४१	१९५७-५८	४३०
२०	१९३६-३७	२२८	४२	१९५८-५९	४५६
२१	१९३७-३८	२३८	४३	१९५९-६०	५०१
२२	१९३८-३९	२०७	४४	१९६०-६१	५५०

परिशिष्ट २

आजीवन सदस्य-सूची

१. श्री श्यामलाल वीया
२. श्री हीराशंकर पंचोली
३. श्री चतुर्भुजदास चतुर्वेदी
४. श्री मास्टर प्रभूलाल गोयल
५. श्री चिरंजीलाल पोद्दार
६. श्री जवाहरलाल नाहटा
७. श्री फूलचन्द जैन ठेकेदार व्याना
८ श्री रायबहादुर सेठ भागचन्द सौनजी अजमेर
९. श्री श्यामलाल गुप्ता सुपुत्र श्री किरोड़ीलाल मुनीम
१० श्री डा० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
११. श्री नत्थीलाल शर्मा टाटानगर
१२. श्री भम्मनलाल रिटायर्ड स्टेशन मास्टर
१३. श्री हरीराम श्रीराम एजेन्ट बर्मा शैल
१४. श्री रामजीलाल मँहगाये वाले
१५. श्री मेजर धीरीसिह चौहान
१६. श्री रामस्वरूप मोतीलाल बजाज
१७. श्री वल्लाराम वद्रीप्रसाद व्याना
१८. श्री मुरारीलाल चतुर्वेदी
१९. श्री लक्ष्मीदेवी गुप्ता धर्मपत्नी वाबू हरिदत्तजी एडवोकेट
२०. श्री गगासहाय मदनमुरारी ठेकेदार

परिशिष्ट ३

संरक्षक सूची

१ श्री महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा नवरत्न, राजगुरु, झालरापाटन
२. श्री सेठ सतोगीलाल महगाये वाले
३. श्री सेठ हरिचरनलाल नई मण्डी
४. श्री सेठ जगन्नाथप्रसाद, दीपक, गुरु नानक आइरन स्टील कं०

परिशिष्ट ४

विषयानुसार पुस्तक-संख्या

विषय	संख्या
१ वेद	३९
२ उपनिषद्	४३
३ कर्मकाण्ट	१०
क कर्मकाण्ड	४९
४ दर्शन	१९४
५ स्मृति	२१
६ पुराण महात्म्य	१५४
ख स्तोत्र	१००
७ गीता	७०
८ रामायण	८०
९ महाभारत	१८
१० अन्य धार्मिक ग्रन्थ	३८६
११ तन्त्र-मन्त्र	३०
१२ व्याकरण	७६
१३ कोश	४३
१४ चिकित्सा	१९२
१५ ज्योतिष	९९
१६ गणित	२५
१७ राजनीतिक	३६३
ग विधान-कानून	४६
घ उपदेश	११०
१८ अर्थशास्त्र	६३
१९ ग्रामोपयोगी	८९
२० व्यापार	१६
२१ उद्योग	६५
२२ विज्ञान	६०
२३ व्यायाम, युद्ध, खेल	१७
त प्राकृतिक चिकित्सा	१२८
२४ शिक्षा विज्ञान-मनोविज्ञान	५२
थ विभिन्न भाषा	३१
२५ बाल साहित्य	५१९
२६ महिला साहित्य	१६५
२७ गार्हस्थ्य शास्त्र	११३
२८ समाज-रचना	५४
न समाज-सुधार	१८७
२९ काव्य-रचना	८९
प काव्य-संग्रह	८३४
३० गद्य काव्य निबंध	१७६
३१ आलोचना	३४७
फ साहित्य-इतिहास	१५२
३२ भूगोल	३५
३३ यात्रा	७३
३४ इतिहास-भारतीय	२११
ब ,, अन्य देशीय	६१
३५ जीवन-चरित्र	४०५
३६ नाटक	४६३
३७ आख्यायिका	१३७
भ कहानी	४३३
३८ उपन्यास-ऐति०पौरा०	३०३
च ,, सामाजिक	१०७२
छ ,, जासूस ऐयारी	३४६
ज ,, फुटकर	१०४
३९ संगीत शास्त्र	१८०

४०	संग्रह	५०	४४	पंचोली संग्रह	८०
४१	परीक्षोपयोगी	१०५	४७	सर्वोदय साहित्य	४४
४२	चित्रावली	१०	४८	पुस्तकालय साहित्य	६
४३	प्रेमचन्द-साहित्य	३८		हस्तलिखित	६६८
					१२३३७

परिशिष्ट ५

पाठक विवरण

सत्र	पाठक-सख्या
सन् १६५०-५१	१७२१७
,, १६५१-५२	११३३८
,, १६५२-५३	१०६११
,, १६५३-५४	१८२०६
,, १६५४-५५	२१७४४
,, १६५५-५६	२६४३३
,, १६५६-५७	२२२५५ भवन निर्माण के कारण वाचनालय अधिकांश वन्द रहा।
,, १६५७-५८	३६६७५
,, १६५८-५६	५४५४२
,, १६५६-६०	६६३४३
,, १६६०-६१	६८२५६ (दिसम्वर तक)

टिप्पणी—मन् १६५० से पूर्व का विवरण प्राप्त नही है।

परिशिष्ट ६

भवन-निर्माण के लिए दान देने वालों की सूची

(सन् १९१७-१९)

१	श्री गिरधरजी शर्मा झालरापाटन	२)
२.	श्री छोटेलाल जी घीया	२५१)
३	श्री खोखनलाल पोद्दार	२२५)
४.	श्री प० नारायनदास २०१), १०१)	३०२)

५	श्री गुरदयाल ठेकेदार	१०१)
६	श्री नत्थीलाल ठेकेदार नीग	१०१)
७	श्री बाबू रतनलाल	३०)
८	श्री नन्नेमल	६०)
९	श्री ला० कन्हैयालाल	५१)
१०	श्री ला० गनेशीलाल	५१)
११	श्री प० नारायनलाल जानी	२५)
१२	श्री प० फतेहसिंह वकील आबू	२०)
१३	श्री प० चतुर्भुजी पुरोहित	५१)
१४	श्री अधिकारी जगन्नाथदास ४०) ५)	४५)
१५	श्री प० गगाप्रसाद शास्त्री	५)
१६	श्री प० गुलाबजी मिश्र	३५)
१७	श्री वैद्य गोपीलालजी	१०)
१८	श्री भट्ट मधसूदन जी	१४)
१९	श्री प० हीराशकर पचोली	२०)
२०	श्री प० सुखलाल जोशी	५)
२१	श्री ला० सुन्दरलाल नाजिर	३०)
२२	श्री श्यामलाल जानी सब-ओवरसीयर	२१)
२३	श्री प० प्यारेलाल सूर्यद्विज	१७)
२४	श्री प० हरभजनलाल मास्टर	११)
२५	श्री प० बालकिशन दुबे	१५)
२६	श्री एक हिन्दी-प्रेमी १५) २५)	४०)
२७	श्री एक महिला	२५)
२८	श्री भट्ट श्रीकान्त शचीकान्त	१३)
२९	श्री प० द्वारकाप्रसाद	११)
३०	श्री प० हनुमानदास शर्मा	१६)
३१	श्री ला० रगबहादुर सेवर	१८)
३२	श्री गुसाई गगाचरन सदाव्रत	८)
३३	श्री प० नत्थीलाल शर्मा	७)
३४	श्री मा० जगन्नाथप्रसाद (नारायनलाल जी)	११)
३५	श्री वैद्य सदानन्द	११)
३६	श्री प० तोताराम शास्त्री	१०)
३७	श्री मा० अशरफीलाल कायस्थ	३)
३८	श्री गगाप्रसाद पाडय	६)

३९.	श्री नारायनप्रसाद पांडेय	५)
४०.	श्री मुरलीधर शास्त्री चक्रपाणि	५)
४१.	श्री पं० रामप्रसाद जी गोवरधन वाले	५)
४२.	श्री सीताराम कोतू	५)
४३.	श्री पं० प्यारेलाल शर्मा लाइब्रेरियन समिति	४)
४४.	श्री ला० नारायनप्रसाद सदाव्रत	१)
४५.	श्री ला० किशोरीलाल व्यानिया	५)
४६.	श्री ला० गोपीलाल वार्डस	५)
४७.	श्री नत्थीलाल जी मिश्र पापटे वाले	५)
४८.	श्री जगन्नाथप्रसाद, नारायनजी सूबेदार	३)
४९.	श्री ला० श्यामीराम जी मुनीम	२)
५०.	श्री वाबू जानकीशरण कायस्थ	१)
५१	श्री पं० जनककिशोर काश्मीरी	१)
५२.	श्री ला० श्रीकृष्ण (नन्नेमल)	११)
५३.	श्री मदनलाल वौहरे	२)
५४.	श्री वावू कन्हैयालाल जैन	२४)
५५.	श्री दुर्गाप्रसाद वौहरे नीमदरवाजा	२५)
५६.	श्री ज्वालाप्रसाद चतुर्वेदी हैडक्लर्क	११)
५७.	श्री वावू मदनमोहनलाल सव-ओवरसीयर	३१)
५८.	श्री सुन्दरलाल त्रिपाठी	८०)
५९.	श्री हजारीलाल, चुन्नीलाल	२१)
६०.	श्री दुर्गाप्रसाद, केला वर्क्स	२१)
६१.	श्री नारायनदास रामस्वरूप खत्री वजाज	३१)
६२.	श्री प्रतापसिंह वकील	११)
६३.	श्री महन्त नारायनदास	१५)
६४.	श्री ला० किशोरीलाल नाजिर	२)
६५.	श्री बुद्धालाल सर्राफ गंगा मन्दिर	५)
६६.	श्री श्यामलाल वाँस वाले	५)
६७.	श्री विहारीलाल शंकरलाल सर्राफ	५)
६८.	श्री मंगलराम सर्राफ	३)
६९.	श्री शेख वूँदेखाँ	५)
७०.	श्री गोपालदास खत्री	२१)
७१.	श्री रामशरण ओवरसीयर	३१)
७२.	श्री मोतीलाल दरोगा	११)

७३	श्री कन्हैयालाल स्टोरकीपर	५)
७४	श्री मक्खनलाल सदाव्रत	१)
७५	श्री गणेशराम टेलीफोन इन्सपेक्टर	५)
७६	श्री पूज्यचरण वल्लभाचार्य जी महाराज का भेंट	१०१)
७७	श्री ठाकुर स्वामी रघुवीरसिंह जी	१२५)
७८	श्री चतुर्भुज गिरधर	५)
७९	श्री सेठ मूलचन्द नेमीचन्द	१०१)
८०	श्री बाबू चुन्नीलाल	५१)
८१	गुप्तदान	४००)
८२	श्री प० लोकमन प्रसाद	५)
८३	श्री प० सीताराम	५)
८४	श्री बाबू गोविन्दस्वरूप	५)
८५	श्री बाबू गोविन्दप्रसाद	५)
८६	श्री बाबू चमनलाल	१)
८७	श्री मिस्त्री गोपाललाल	५)
८८	श्री बाबू बिहारीलाल	२)
८९	श्री प० किशनलाल	५)
९०	श्री मुन्नीलाल ठेकेदार	११)
९१	श्री प० दीनदयाल	१)
९२	श्री बाबू मोतीलाल सब-आवरसीयर	५)
९३	श्री गडर चपरासी	२)
९४	श्री मुहम्मद अफ़ज़ल	२)
९५	श्री हरप्रसाद पुलिस	१५)
९६	श्री राधाचरन ओवरसीयर	११)
९७	श्री बालमुकन्द मोटर ड्राइवर	२७)
		३०१३)

परिशिष्ट ७

समिति के पदाधिकारी (१९१२ से १९६१ तक)

१९१२ से १९३४ तक

प्रधान

(१) श्री डा० ओंकारसिंह प्रमार (१९१२-१९)

(२) ,, भट्ट मधुसूदन लाल (१९१९-२३)

(३) श्री चौवे हरीशकर जी (१९२३-२५)
(४) ,, कर्नल घमण्डीसिंह जी (१९२५-३४)

उपप्रधान

(१) श्री पं० नारायनदास जी (१९१२-१९)
(२) ,, कर्नल जुगलसिंह जी (१९२३-२५)
(३) ,, पं० मयाशंकर जी याज्ञिक (१९२५-२८)
(४) ,, सेठ दामोदरलाल जी (१९२५-२८)
(५) ,, वा० कन्हैयालाल जी (१९२९-३४)

प्रधान मन्त्री

(१) श्री सुन्दरलाल जी जानी
(२) ,, अधिकारी जगन्नाथदास जी (१९१२-२१)
(३) ,, प० वालकृष्ण जी दुवे (१९२१-३४)

उप-मन्त्री

(१) श्री गंगाप्रसाद जी शास्त्री (१९१२-१७)
(२) ,, वालकृष्ण जी दुवे (१९१७-२१)
(३) ,, हरीशकर जी पचोली (१९२०-२१)
(४) ,, हरभजनलाल जी (१९२१-२५)
(५) ,, द्वारकाप्रसाद जी शर्मा (१९२५-२८)
(६) ,, चौवे युधिष्ठिरप्रसाद जी (१९३३-३४)

पुस्तकाध्यक्ष

(१) श्री प० गुलावजी मिश्र (१९१२-२९)
(२) ,, पं० रामस्वरूप जी मिश्र (२९-३४)

उप-पुस्तकाध्यक्ष

(१) श्री प० वालकृष्ण जी दुवे (१९१२-१९)
(२) ,, प० शचीकात जी भट्ट (१९१९-२१)
(३) ,, अधिकारी जगन्नाथदास जी (१९२१-२८)
(४) ,, पावनीप्रसाद जी

कोषाध्यक्ष

(१) श्री खोखनलाल जी पोद्दार (१९१२-२९)
(२) ,, हजारीलाल जी पोद्दार (१९२०-३५)

आय-व्यय-निरीक्षक

(१) श्री मुन्दरलाल जी त्रिपाठी (१६१२-२०)
(२) ,, बा० कन्हैयालाल जी (१६२०-२६)

सन् १६३४-३६

श्री बाबू रघुवीरसहाय जी पी० डब्ल्यू० डी० (प्रधान)
,, वैद्य गोपीलाल जी (उप-प्रधान)
,, डा० काशीप्रसाद जी (उप-प्रधान)
,, जगन्नाथप्रसाद जी अरोड़ा (मन्त्री)
,, रमाकान्त जी शर्मा (३५) (मन्त्री)
,, युधिष्ठिरप्रसाद जी चतुर्वेदी (उप-मन्त्री)
,, प० रामस्वरूप जी मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष)
,, ला० प्रभुलाल गोयल (उप-पुस्तकालयाध्यक्ष)
,, कोठारी जगन्नाथदास जी (आय-व्यय निरीक्षक)

सन् १६३६-३८

श्री बा० रघुवीरसहाय जी प्रधान
,, डा० काशीप्रसाद जी उप-प्रधान
,, कन्हैयालाल जी ,,
,, रमाकान्त जी शर्मा मन्त्री
,, युधिष्ठिर प्रसाद जी चतुर्वेदी उप-मन्त्री
,, पुरुषोत्तमलाल जी ,,
,, वैद्य देवीप्रकाश जी अवस्थी पुस्तकालयाध्यक्ष
,, प० प्रेमनिधि जी शास्त्री उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, रामस्वरूप जी मिश्र उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, कोठारी जगन्नाथदास जी आय-व्यय निरीक्षक

सन् १६३८-४०

श्री बालकृष्ण जी दुबे प्रधान
,, सुन्दरलाल जी जानी उप प्रधान
,, चिरंजीलाल जी पोद्दार ,
,, कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय निरीक्षक
,, मा० चम्पाराम जी मन्त्री
,, युधिष्ठिरप्रसाद जी चतुर्वेदी उप-मन्त्री
,, प० नन्दकुमार जी ,,

श्री चम्पालाल जी कवीश्वर पुस्तकालयाध्यक्ष
,, प्रभुलाल गोयल उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, जयशकर जी चतुर्वेदी ,,

सन् १९४०-४३

श्री वालकृष्ण जी दुवे प्रधान
,, सुन्दरलाल जी जानी उप-प्रधान
,, चिरजीलाल जी पोद्दार ,,
,, पं० नत्थनलाल जी शर्मा मन्त्री
,, युधिष्ठिरप्रसाद जी उप-मन्त्री
,, मदनलाल जी बजाज ,,
,, प्रेमनिधि जी शास्त्री पुस्तकालयाध्यक्ष
,, प्रभुदयाल जी उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, तुलसीराम जी ,,
,, कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९४३-४६

श्री बालकृष्ण जी दुवे प्रधान
,, चिरजीलाल जी पोद्दार उप-प्रधान
,, चतुर्भुजदास जी चतुर्वेदी ,,
,, पुरुषोत्तमलाल जी मन्त्री
,, प्रभुदयाल जी दयालु उप-मन्त्री
,, प्रेमनाथ जी चतुर्वेदी पुस्तकालयाध्यक्ष
,, प्रभुलाल गोयल उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९४६-४९

श्री वालकृष्ण जी दुवे (प्रधान)
, चिरंजीलाल जी पोद्दार (उप-प्रधान)
,, चन्द्रशेखर जी शर्मा ,,
,, पुरुषोत्तमलाल जी मन्त्री
,, प्रो० हरसहाय जी उप-मन्त्री
,, प्रभुलाल गोयल पुस्तकालयाध्यक्ष
,, श्रीचन्द्र जी उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, बनवारीलाल जी आय-व्यय-निरीक्षक

१६	१६५७-५८	१२६६१
१७	१६५८-५६	१४८५७
१८	१६५६-६०	१७८५१
१६	१६६०-६१	२१८५७

टिप्पणी—सन् १६४२ से पूर्व का विवरण उपलब्ध नहीं है।

परिशिष्ट ८ (व)

सूची दानदाता—नवीन भवन निर्माण हेतु (सन् १६५७)

१	विकास विभाग राजस्थान	३५००)
२	नगरपालिका भरतपुर	३०००)
३	श्री सन्तोषीलाल जी मैंहगाये वाले	समिति भवन का फर्श
४	श्री हरिचरनलाल जी नई मण्डी	१५५१)
५	महन्त श्री नारायणदास जी मन्दिर श्री मोहनजी किला	७०१)
६	श्री रामजी जगन्नाथ जी दीपक गुरु नानक स्ट्रीट नई मण्डी	५०१)
७	श्री मुरारीलाल जी चतुर्वेदी	१५२)
८	श्री तोताराम, रामजीलाल जी मैंहगाये वाले	१५१)
६	कोठी हरभानसिंह जी	१५१)
१०	श्री घीरीसिंह जी चौहान	१५१)
११	श्री मुरलीधर महेन्द्रकुमार जी मथुरा	१५१)
१२	श्री भरतपुर आइरन एण्ड सिन्डीकेट गंगामन्दिर	१५१)
१३	श्री हरीराम, श्रीराम वर्मा शैल	१५१)
१४	श्री बल्लीराम, बद्रीप्रसाद जी बयाना	१५१)
१५	श्री रामस्वरूप मोतीलाल जी अरोड़ा	१५१)
१६	श्री रामचन्द जी माथुर	१५१)
१७	श्री भगवानदास जी गोठी	१५१)
१८	श्री लक्ष्मीदेवी गुप्ता धर्मपत्नी बा० हरिदत्त जी एडवोकेट	१५१)
१६	श्री रामजीलाल, बद्रीप्रसाद सर्राफ	१०१)
२०	श्री रामशरन, गोविन्दशरन जी सर्राफ	१०१)
२१	श्री भजनलाल जी प्रेसीडेण्ट नई मण्डी	१०१)
२२	श्री प्राहिन विद्याधर जी	१०१)
२३	श्री मदनलाल जी वकील	१०१)
२४	श्री सूरजमल, प्रभूलाल जी छापाकार	१०१)
२५	श्री साधूराम जी ठेकेदार	५१)

१६	,,	१९२७-२८	११०७·९३	,,	१३९३·६८	,,
१७	,,	१९२८-२९	६७६·७५	,,	५५७·१७	,,
१८	,,	१९२९-३०	३११·२५	,,	३२४·०५	,,
१९	,,	१९३०-३१	३८३·२५	,,	२८९·५६	,,
२०	,,	१९३१-३२	४१७·५०	,,	४३३·२३	,,
२१	,,	१९३२-३३	५२५ ८०	,,	३७५·९४	,,
२२	,,	१९३३-३४	६६३·१६	,,	८३०·९१	,,
२३	,,	१९३४-३५	५४१·८८	,,	५५२·९०	,,
२४	,,	१९३५-३६	६६१·६०	,,	४८८·६०	,,
२५	,,	१९३६-३७	६७१·२७	,,	६९३·३४	,,
२६	,,	१९३७-३८	६२०·७५	,,	५४५·०५	,,
२७	,,	१९३८-३९	५२४·२५	,,	५३२·७५	,,
२८	,,	१९३९-४०	७१६ ४३	,,	५५२ ४२	,,
२९	,,	१९४०-४१	८२३·३९	,,	७७६ ५६	,,
३०	,,	१९४१-४२	८८२ १६	,,	७२६·५०	,,
३१	,,	१९४२-४३	८६८·४१	,,	८३५·३३	,,
३२	,,	१९४३-४४	२०३७·८१	,,	१४३१·५६	,,
३३	,,	१९४४-४५	२२५०·८१	,,	१७९८·५०	,,
३४	,,	१९४५-४६	२२७९·१६	,,	१९७३·७३	,,
३५	,,	१९४६-४७	२६५५ ६९	,,	२२८२·६४	,,
३६	,,	१९४७-४८	३२०८·१७	,,	२५९०·००	,,
३७	,,	१९४८-४९	३११२·७८	,,	२२२४·७८	,,
३८	,,	१९४९-५०	३६०८·८७	,,	३१४२·११	,,
३९	,,	१९५०-५१	३०५९·३१	,,	३१११ ९८	,,
४०	,,	१९५१-५२	३०४१·३१	,,	२५३१·०३	,,
४१	,,	१९५२-५३	३७५५·७८	,,	३७५४·७२	,,
४२	,,	१९५३-५४	४५६८·९१	,,	३९६२·७८	,,
४३	,,	१९५४-५५	५७४१·२८	,,	५९४९·५८	,,
४४	,,	१९५५-५६	५०७१·६२	,,	४९८४ ९३	,,
४५	,,	१९५६-५७	१०२९९ ९१	,,	८५६७·८३	,,
४६	,,	१९५७-५८	२४०८२·४१	,,	२४१२४ ३६	,,
४७	,,	१९५८-५९	७४७०·३७	,,	७९०५·५९	,,
४८	,,	१९५९-६०	८०५३·७४	,,	६४१६·७९	,,
४९	,,	१९६०-६१				

परिशिष्ट १०

परीक्षार्थी विवरण, परीक्षा केन्द्र स्थापित १ सितम्बर १९२६

प्रथमा, मध्यमा, (उत्तमा १९५१)

सन्	प्रथमा	मध्यमा	उत्तमा	वै वि	उ वि	उपवद्य
१९२६	१	१				
१९२७	१	२				
१९३०	२	१				
१९३४	×	२				
१९३५	×	१	×	४	×	×
१९३६	×	×	×	४	×	×
१९३७	१	२	×	२	×	×
१९३८	×	१	×	१	×	×
१९३९	×	६	×	×	×	×
१९४०	१	१	×	×	×	×
१९४१	१	४	×	१	×	×
१९४२	१	८	×	१	×	×
१९४३	×	१०	×	१	×	×
१९४४	३	२	×	×	×	×
१९४५	३	१	×	×	×	×
१९४६	×	१२	×	×	×	×
१९४७	१०	१४	×	×	×	×
१९४८	२७	४०	×	×	×	×
१९४९	२३	५२	×	१८	×	×
१९५०	८	४२	×	१३	×	×
१९५१	१८	७१	४३	९	१	×
१९५२	२८	९८	६८	१८	३	९
१९५३	९	५१	५३	२९	२	७
१९५४	३	३०	४२	१९	×	३
१९५५	१२	३७	३९	१९	६	९
१९५६	९	१९	३५	२८	३	६
१९५७	७	२५	३१	२४	३	६
१९५८	२	१९	१९	३६	१	९
१९५९	×	१०	२३	६४	२	२९
१९६०	४	३२	४३	६८	८	२२

रामदत्त शर्मा, एम० ए०, बी० एड्०, साहित्यरत्न,
केन्द्र-व्यवस्थापक

परिशिष्ट ११

समिति में समय-समय पर आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों की कतिपय

सम्मतियाँ

भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति का अवलोकन किया। चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। इसका पुस्तकालय भी देखा। पुस्तको का सग्रह भी खासा है। इससे हिन्दी का प्रचार मजे मे हो रहा है। इसके सचालक वडे उत्साही और कार्यकुशल है। भगवान करे इसकी दिन-दिन उन्नति हो।

जेठ कृष्णा २ स० १६७२ —**जगन्नाथ चतुर्वेदी कलकत्ता**

भरतपुर की "हिन्दी साहित्य समिति" उन उत्साहियों से सचलित संस्था है जिनमे प्राण है, जिन्हे भाव है और हृदय है। भारत के इस प्रात मे इस संस्था का होना आवश्यक है यह वात केवल इस सस्था की सफलता से प्रमाणित होती है। इसकी अधिक सफलता की आशा करना तो हमारा कर्त्तव्य ही है परन्तु उससे मूल्यवान कर्त्तव्य यहाँ के उत्साही विद्वानो का है जिनके प्रयत्न पर हमारी आशा की पूर्ति है।

आसा-कृ० १२–७२ वि० —**साहित्याचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री**
'शारदा' सम्पादक प्रयाग

मैने स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति का निरीक्षण किया और कार्यकर्त्ताओ के स्वाभाविक उत्साह और कार्यनिष्ठता देखकर मै वहुत संतुष्ट हुआ हूँ। इस 'समिति' द्वारा हिन्दी देवनागरी जगत की वहुत कुछ आशा उन्नति के लिये रखता हुआ ईश्वर से इसकी दृढता के लिये प्रार्थी हूँ।

दि० २०-६-१५ —**गणेशदत्त शास्त्री**

हिन्दी साहित्य-समिति-भरतपुर का पुस्तकालय देखने का आज मुझको सौभाग्य प्राप्त हुआ-देख कर वडा आनन्द हुआ—सभासदो का उत्साह अत्यत प्रशसनीय एव अनुकरणीय है। भरतपुर राज्य मे अनेक उत्तमोत्तम हिन्दी कवि हुए हैं—उनके हस्तलिखित वहुमूल्य ग्रन्थो की खोज और उनके संग्रह व प्रकाशन से हिन्दी ससार को वहुत लाभ पहुँच सकता है। आशा है कि समिति यथा-

शक्ति इस कार्य को भी हाथ मे लेगी—ईश्वर से प्रार्थना है कि समिति की उत्तरोत्तर उन्नति हो और हिन्दी की सेवा में इसका पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

दि० ३१-१०-१६ —जीवनशङ्कर याज्ञिक

एम० ए०, एल एल०बी०, अलीगढ़

हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के सभ्यो का यत्न बडा ही प्रशसनीय है। राजपूताने म यह पहली साहित्य समिति है। उत्साही सभ्यो ने बडी उदारता के साथ द्रव्य-दान कर समिति का सुदर मकान भी बना दिया है। पुस्तको की सख्या भी अच्छी है। मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्रो की सख्या भी अच्छी है। यहाँ के पुस्तक आदि के पढने वालों की सख्या बहुत बडी है। ऐसी समितिया से जनता का बहुत लाभ पहुँच सकता है। चार वर्ष पहले मैंने इस सस्था को देखा था। उसमे और आज की दशा मे बहुत अतर है, और आशा है कि इसके उत्साही सभासद इसको और भी उन्नति देकर जनता के ज्ञान-सपादन मे सहायक होंगे। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को इसकी सहायता करनी चाहिए। इस समिति की वर्तमान उन्नत दशा देखकर मुझे बडा हर्ष हुआ।

दि० ३-२-२१ —गौरीशकर हीराचन्द ओझा

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई और इसके इतिहास को जानकर इसके सचालकों के प्रति मेरे मन मे श्रद्धा का आविर्भाव हुआ। उनके हिन्दी प्रेम, लगन और सत्साहस के लिये मैं उनके चरणों मे श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

समिति निस्सन्देह राजपूताने की श्रेष्ठ सस्थाओ म से ह। इसके द्वारा जो काम हुआ है, वह अभिनन्दनीय है, और अब, भविष्य म, उसके द्वारा जो हिन्दी साहित्य की सेवा होन वाली है, आशा है, वह हिन्दी ससार के लिए प्रेममय गर्व की चीज होगी।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि समिति उत्तरोत्तर उन्नति करे और इसके सचालकगण अपने सौभाग्य के दिनो मे उन दिव्य गुणो को न भूलें, जिनके बल पर वह समिति को इस रूप मे लाने मे समर्थ हुए हैं।

समिति का प्रबन्ध अच्छा है। प्रबन्धक स्वय विद्यारसिक हैं, इसलिये वे वैसे ही प्रेम से काम करते हैं जैसे माली अपने लगाये हुए वृक्षो की ममता के साथ देखरेख करता है।

भरतपुर
२-४-२७ —क्षमानन्द राहत

भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति का निरीक्षण करने पर यह पता चला कि समिति का कार्य ठोस है। पुस्तकालय और वाचनालय का प्रवन्ध जिस उत्तमता से किया जाता है वह एक आदर्श की वस्तु है। यहाँ समिति को शहर के वडे-वडे धनीमानी सज्जनो का सहयोग प्राप्त है और वे लोग बडे सेवाभाव से उसके प्रत्येक कार्य मे योग देते हैं। मुझे यह जानकर वड़ी प्रसन्नता हुई कि समिति में मासिक सभाएँ होती है और उनके द्वारा साहित्य की समस्याओ पर विचार होता है। समिति को अपनी इन सभाओ मे कुछ रचनात्मक कार्य भी जोडना चाहिए। विभिन्न व्यक्तियों के जिम्मे साहित्य के प्रमुख अगो का अध्ययन और परिशीलन का कार्य सुपुर्द करके स्थायी कार्य का प्रयत्न भी करना चाहिए। साथ ही आगरा और मथुरा के निकट होने का लाभ भी, वहाँ के साहित्यिकों से सदैव रचनात्मक कार्य के लिये आमन्त्रित करके, प्राप्त करना चाहिये। भगवान समिति के कार्य को उत्तरोत्तर वढावे, यही कामना है।

भरतपुर
१४-४-४१

—पद्मसिंह शर्मा

भरतपुर साहित्य समिति का कार्य देखकर मुझे वडी प्रसन्नता हुई। यहाँ के कार्यकर्त्ताओ का सद्भाव, स्नेह और सेवा का आदर्श भी वस्तु है। समिति को भी एक सजीव सस्था के रूप मे पिछले ३९ वर्षो से कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसके पास अपना भवन है, पुस्तकालय है, वाचनालय है। २०० से अधिक सदस्य है और सबसे अधिक जनता की सहानुभूति प्राप्त है। भरतपुर राज्य मे साहित्य सेवा का जो सराहनीय कार्य समिति कर रही है, उसकी अधिक प्रशसा न कर मै यही कहना चाहूँगा कि वह अपना कार्यक्षेत्र वढावे। राज्य के स्थान-स्थान, ग्राम-ग्राम मे साहित्य के केन्द्र स्थापित करे और अपने सम्पर्क को राज्य के बाहर भी स्थापित रखे। मैं समिति की पूरी सफलता चाहता हूँ।

भरतपुर
१४-४-४१

—जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
व्रज साहित्य मंडल, मथुरा

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के वार्षिकोत्सव पर मेरा यहाँ आना हुआ। समिति का कार्य देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। समिति की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए हृदय से शुभाकांक्षी हूँ। यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि समिति सम्मेलन की परीक्षाओ को लोकप्रिय वनाने मे योग दे रही है। आशा है कि यह समिति हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार तथा अभिवृद्धि में योग देगी।

१४-४-४१

—गुलाबराय एम० ए०
प्रो० सेट जोन्स कालिज आगरा, रिटायर्ड
प्राइवेट सेक्रेटरी, छतरपुर दरवार

आज हिन्दी साहित्य समिति के वार्षिक समारोह के अवसर पर उसके कार्यालय तथा पुस्तकालय को देखने का अवसर मिला। समिति अत्यन्त उपयोगी कार्य कर रही है और यह प्रसन्नता की बात है कि उसका सचालन सुयोग्य हाथो मे है। कार्याधिकारीगण उचित समझें, और सम्भव हो तो यहा ब्रज साहित्य के अध्ययन-अध्यापन का और प्राचीन ब्रज-साहित्य के प्रकाशन का भी प्रबन्ध कर। इसके लिए भरतपुर बहुत ही उपयुक्त स्थान है क्योकि यह मथुरा और आगरा के निकट और तथा ब्रजभूमि के केन्द्र म स्थित है।

—महेन्द्र

१४-४-४१ सम्पा० 'साहित्य सन्देश'

भरतपुर से स्वर्गीय मयाशकर जी याज्ञिक ने प्राचीन पुस्तको के खोज-कार्य मे अच्छा प्रयत्न किया है। समिति उसे ध्यान मे रख कर कार्य करे तो शुभ है।

—गोपालप्रसाद व्यास

मैंने सौभाग्यवश श्री भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति को देखा। मैं समझता हूँ, समस्त प्रान्त मे यही एक ऐतिहासिक हिन्दी का स्थान है राजस्थान (राजपूताने) मे तो हिन्दी का यही एक सुन्दर सुघड मन्दिर है। हिन्दी के इस आश्रम को देखकर किस हिन्दी भक्त की आँख शीतल न होगी ? राजस्थान के इस हिन्दी निकेत मे मैंने एक स्थाई प्रेरणा प्राप्त की है, प्रत्येक रियासत मे हिन्दी के ऐसे भरेपूरे आश्रम स्थापित होने चाहिये। जहा तक राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सवाल है, उसे हम उस समिति के कार्यकर्ताओ के अथक तथा अविराम उत्साह तथा प्रयत्न से उदाहरण ग्रहण करना चाहिये।

आज जब हिन्दी पर चतुर्मुखी प्रहार हो रहा है, समिति के सदस्यो की हिन्दी भक्ति देखकर यह विश्वास होता है, कि राजस्थान म तो हिन्दी का बाल बाका न होगा। समृद्ध पुस्तकालय, विस्तृत वाचनालय तथा एक सजीव वातावरण एक सार्वजनिक सस्था के लिए स्थायी प्राणधाराएँ है। मैं समिति के कर्मनिष्ठ अधिकारियो तथा सजीव उत्साही सदस्यो से नम्रतापूर्वक प्रार्थना करूँगा कि वे समिति के अधीन रात्रि-पाठशालाएँ खोलें, जहाँ निरक्षर पढाये जायें। समिति के पास प्राचीन साहित्य का अच्छा सग्रह भी है। क्या अच्छा हो, उनकी एक बिब्लिओग्राफी बन जाय।

बाकी तो मैं सीखकर ही जा रहा हूँ। मैं समिति के अतीत और आज के सभी तपस्वी कार्यकर्ताओ को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता तथा उन सबका अभिनन्दन करता हूँ।

—जनार्दनराय नागर

२७ ६-४१ प्रधान मन्त्री, राजस्थान हि० सा० सम्मेलन

बहुत दिनो की बात है; जब मैं अपने परम सुहृद श्री अधिकारी जी के यहाँ भरतपुर में अतिथि हुआ था, उस समय भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति नवजात शिशु थी। उस घटना के ऊपर से ढाई दशक से भी अधिक वर्षों का प्रवाह प्रवाहित हो चुका है। आज मुझे पुन: इस संस्था के जिसमे अनेक तेजस्वी आत्माओं का सर्वस्व ओत-प्रोत है—इस समिति के माननीय मन्त्री पडित श्री नत्थनलाल जी शर्मा के साथ अवलोकन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। समिति के अपने सुन्दर भवन मे सुन्दर वृहत् पुस्तकालय को देखकर परमानन्द हुआ। वह पुस्तकालय जो राष्ट्र, धर्म, समाज के पवित्र और ओजपूर्ण तत्त्वो के साथ खडे है, अवश्य ही प्रजा के उत्कर्ष के सम्पादक है। मैंने देखा कि समिति के इस पुस्तकालय मे पुस्तको का संग्रह विचारपूर्ण उदारता के साथ हुआ है। वैदिक साहित्य का भी सग्रह है लौकिक साहित्य का भी सग्रह है। हिन्दी के प्राचीन और नवीन कवियो के काव्यो का अधिक मात्रा मे सग्रह है। पुस्तकालय राष्ट्र की एक बड़ी भारी सम्पत्ति होती है। पुस्तकालय राष्ट्रीय कवियों, लेखको और वक्ताओ का चिरस्थायी स्मारक होता है। अत: इसके प्रति श्रद्धापूर्ण भक्ति का होना स्वाभाविक है। पुस्तकों के अतिरिक्त यहाँ दैनिक, साहित्यिक, मासिक पत्रों का भी समावेश है जिससे भरतपुर की जनता को अत्यधिक लाभ उठाने का सुअवसर मिलता है। यहाँ हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकों का भी सग्रह है। पुस्तकालय की सुव्यवस्था को देखकर यह निर्व्याजि प्रतीत होता है कि इसके कार्यकर्त्ता उत्साही और महानुभाव है। इनके उत्साह की वृद्धि हो और यह समिति अनेक लोकोपयोगी कार्यो के सम्पादन करने मे सफल हो, यह मेरी शुभेच्छा है।

फा० शु० १२-१९९८ वि०

—**स्वामी भगवदाचार्य**
चम्पा गुफा, माउन्ट आबू

भरतपुर मे आज प्रसगवश आकर जो सबसे अद्भुत वस्तु मुझे मालुम हुई वह स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति है। राजस्थान की यह अद्वितीय सस्था राजस्थान के प्रगतिहीन वातावरण को चुनौती सी देती हुई भूत और भविष्य को वर्तमान आशावाद के सूत्र से सयोजित कर रही है और कर्मण्यता का जीवित उदाहरण उपस्थित कर रही है। इस संस्था के सचालको से भेट कर मुझे उस अध्यवसायशीलता तथा अदम्य उत्साह का परिचय मिला जिसे होने पर ही महत् कार्यो को सम्पन्नता प्राप्त होती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति उत्तरोत्तर उन्नति करती हुई राजस्थान के अन्य प्रान्तो में भी जीवन-सचार कर सकेगी।

दि० २-५-४२

—**रामकृष्ण शुक्ल**

भरतपुर सदा से हिन्दी साहित्य की भूमि है, व्रज से सम्बन्ध होने के कारण तो यह महत्त्व और भी बढ़ जाता है। यहा एक बार अखिल भारतवर्षीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन भी तो हो चुका है—ऐसे नगर मे हिन्दी साहित्य के अच्छे वाचनालय का होना परमावश्यक था ही,—हर्ष की बात है कि स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति ने इसकी अधिकाश मे पूर्ति की है। मुद्रित तथा हस्तलिखित पुस्तको का यहाँ यथेष्ट सग्रह है। फिर भी इस सग्रह की उत्तरोत्तर वृद्धि ही करते रहना चाहिये। जहाँ पाठको की पुस्तकें पढते-पढते तृप्ति होती नही है, वहा ही तो सरस्वती रहती है मूर्त्तिमान। वाचनालय मे स्वर्गीय नरेश, अधिकारी जी और भाई सत्यनारायण कविरत्न के मैंने चित्र भी देखे, सभी की मुझे याद आ गई क्योंकि इन सभी से मेरा अच्छा परिचय था। समिति का भवन अभी बनना बाकी है—आशा है यहाँ के दानवीर सज्जन शीघ्र ही इसे पूरा करेंगे। अन्त मे यही लिखना है कि समिति को देखकर मुझे बडा आनन्द प्राप्त हुआ। जगन्नियन्ता इसकी उत्तरोत्तर उन्नति करें, यही मेरी शुभकामना है।

९-५-४३ —राधेश्याम कथावाचक (वानप्रस्थी)

आज अकस्मात् ही हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय व हिन्दी समिति के सदस्यो का दर्शन कर चित्त प्रसन्न हुआ। समिति के कार्यकर्त्ताओ व सदस्यो मे हिन्दी के प्रति अनुराग है, समिति का अपना भवन तथा समिति का पुस्तकालय इसका प्रभाव है। मुझे विश्वास है कि यह समिति अवश्य उन्नति करेगी और समस्त भरतपुर राज्य मे हिन्दी साहित्य के प्रचार मे सफल होगी।

—कृष्णचन्द्र
दि० ५-१०-४३ सम्पादक 'अर्जुन'

भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय व वाचनालय देखने का मुझे प्रसग मिला। मुझे प्रसन्नता है कि इस समिति द्वारा हिन्दी की सेवा की जा रही है। मुझे अनुमान है कि इसके कार्यकर्त्ता उत्साही और त्यागशील सज्जन हैं। तभी तो इसकी उन्नति इतनी है। परमात्मा इसकी दिनादिन उन्नति करे।

—घनश्याम सिह गुप्त
२०-५-४६ स्पीकर, मध्यप्रान्तीय विधान सभा

आज मुझे श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर का दर्शन-लाभ हुआ। इस संस्था ने न केवल राजस्थान मे परन्तु भारतवर्ष मे हिन्दी की जो सेवा की है वह गौरवप्रद बात है। इस सस्था की ओर से एक समृद्ध पुस्तकालय और

सर्वांगीण वाचनालय चल रहा है। भरतपुर की यह एक विशिष्ट सस्था है। संस्कार दान का यह उत्तम साधन है। भरतपुर के नागरिको को ऐसी सस्था चलाने के लिये धन्यवाद दिये विना नही रहा जाता। आशा है कि इस संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति होती रहेगी। सब सचालको का परिश्रम सुफलित हुआ है। भगवान संस्था पर दया वरसाता रहे।

भरतपुर
५-१-५४

—गोकुलभाई भट्ट

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर को आज मुझे देखने का अवसर मिला। यो तो मेरा भरतपुर से बहुत पुराना घनिष्ठता का सम्वन्ध है परन्तु समिति के सचालको ने मुझे पहले यहाँ आने का अवसर नही दिया। आज इस संस्था की विशालता को देखते हुए यह मेरी शिकायत का कारण वन गई, ऐसा मै मानता हूँ।

सचमुच ही यह एक गौरव की वात है कि यह सस्था पिछले ४५ वर्ष मे काम कर रही है और दिनोदिन उन्नति करती जा रही है। यह स्वयं मे इस संस्था की लोकप्रियता का एक सवूत है। सचालकों ने मुझे वताया कि इस सस्था ने कई प्रकार के उतार-चढाव देखे है, परन्तु अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा के कारण अपनी प्रगति जारी रखने मे सफल हुई है। आज इसे राज्य से भी ठीक सी सहायता मिलने लगी है इसीलिए सस्था के सचालको को शायद यह उत्साह हुआ है कि इसके लिये सुन्दर भवन वनाये। इसके लिये प्रयास भी शुरू हो गये है। मै ऐसी पुरानी और लोकप्रिय सस्था की उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूँ। पूर्व सेवा-कार्य और इतिहास दानी महानुभावो को इस सस्था को और भी उपयोगी वनाने के कार्य मे सहायता करने के लिये प्रभावित करेगा, ऐसी मेरी पूर्ण आशा है ?

भरतपुर
१०-४-५४

—भोलानाथ तिवारी
शिक्षा-मन्त्री, राजस्थान

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की प्रमुख सास्कृतिक सस्था है। यहाँ एक ही हाईस्कूल है, एक ही कालेज है, एक ही सिनेमा है और एक ही साहित्यिक सस्था है। समिति के पास अच्छा पुस्तकालय है और उत्साही कार्यकर्त्ता है। यहाँ की जनता का सास्कृतिक स्तर ऊँचा करने के लिये यह सराहनीय प्रयत्न कर रही है। मै उसकी निरन्तर सफलता चाहता हूँ।

१५ अगस्त १९५४

—रामविलास शर्मा

मैंने इस पुस्तकालय को देखा। चित्त प्रसन्न हुआ। लगभग ४५ वर्ष से यह संस्था जनता की अनुपम सेवा कर रही है। इस संस्था को राजस्थान की प्राचीनतम संस्थाओं में समझा जा सकता है। पुस्तकालय समाज के बौद्धिक जीवन का प्राण है। इसमें सर्वोपयोगी ग्रन्थ हैं। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस पुस्तकालय के लिये भवन निर्माण का प्रश्न है। संस्था के कार्यकर्ताओं का उत्साह देखकर यह प्रतीत होता है कि यह कल्पना मूर्तरूप धारण कर लेगी।

—रामचन्द्र वामन कुमार

११-१-५५ डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा विभाग, जयपुर

समिति बहुत समय से लगातार साहित्य प्रचार का काम करती रही है। पुस्तकालय और वाचनालय का कार्य उत्तरोत्तर प्रगति पर है। जो भाई इसमें योग दे रहे हैं वे धन्य हैं। कार्य बहुत उत्तरदायित्व का है। किस पाठक को कैसी चीज पढ़ने को दी जाय और कौनसी सामग्री पुस्तकालय में रखने योग्य है, इस विषय में सदैव सतर्क रहने की आवश्यकता है। पुस्तकाध्यक्ष का अध्ययन और मनोवैज्ञानिक ज्ञान बहुत उच्च स्तर का होना ही चाहिए। आशा है, राज्य और समाज का इस संस्था को यथेष्ट सहयोग मिलता रहेगा।

भारतीय ग्रन्थमाला —भगवानदास केला

दारागंज (प्रयाग) १६-६-५५

मैंने आज इस संस्था को देखा। वास्तव में यह एक ठोस सेवा कर रही है। मैं आशा करता हूँ कि थोड़े समय में यह एक विशाल रूप धारण कर लेगी।

—विक्रमप्रसाद सूद

१४-१२-५५

डिप्टी सेक्रेटरी, शिक्षा विभाग

मुझे आज इस पुरानी और प्रतिष्ठित साहित्य संस्था और इसके वाचनालय को देखकर बहुत हर्ष हुआ। कई पुरानी स्मृतियाँ ताजी हुई। यही खेद रहा कि अधिक समय यहां नहीं दे सका। इसमें नई से नई हिन्दी पुस्तकों का संग्रह है—यह इस बात का सबूत है कि यहां के निवासी समय के साथ हैं। साहित्य केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का ही अच्छा साधन नहीं है, बल्कि समाज को नई चेतना देने और निर्माण का भी जबर्दस्त प्रेरक साधन है। आशा है, भरतपुर के निवासी इससे पूरा लाभ उठाते होंगे। मैं इसकी हर तरह उन्नति चाहता हूँ।

—हरिभाऊ उपाध्याय

दि० १७-२-५६

वित्त मन्त्री, राजस्थान

आज भरतपुर नगर की श्री हिन्दी साहित्य समिति के वाचनालय और उसके पदाधिकारियों और कर्मचारियो के उत्साह को देखकर मुझे बहुत हर्ष हुआ। किसी भी देश के लिये उसका पुराना इतिहास और सस्कृति एक गौरव की बात होती है। बिना अपने साहित्य को जाने कोई भी व्यक्ति देश-भक्त और देश-सेवक होने का अधिकारी नही हो सकता। यह जानकर मुझे और अधिक प्रसन्नता हुई कि यह सस्था ५० वर्ष से मातृ-भाषा की सेवा कर रही है। मुझे पूरी आशा है कि नगर-निवासी और राष्ट्रीय कर्मचारीगण इस सस्था को उचित सहायता करेगे।

—महावीर त्यागी
रक्षा-मन्त्री, केन्द्रीय सरकार

दि० १-३-५६

आज समिति की मुलाकात ली। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। भारतवासियो की हिन्दी साहित्य द्वारा सेवा करने का समिति के संचालकों तथा सदस्यो की मनोकामना पूरी हो।

—उच्छृङ्गराय नवलशंकर ढेबर
कांग्रेस अध्यक्ष

२७-२-५७

आज मुझे हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर के देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। समिति का भवन एक सुन्दर स्थान है, पुस्तको के रखने का ढग बहुत अच्छा है। पुस्तकालय मे पुस्तको का सग्रह बहुत लाभप्रद है।

समिति एक बहुत ही प्रशसनीय कार्य कर रही है और उसे भरतपुर के सभी वर्गो से सहयोग व सहायता मिल रही है।

—जे० डी० वैश्य
डिप्टी डायरेक्टर, शिक्षा-विभाग, कोटा

११-११-५७

आज मैंने हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के कार्य को देखा। मुझे यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि इस समिति के पास अच्छे कार्यकर्त्ता है और उन्होने सुन्दर भवन का निर्माण किया है। आशा है शेष कार्य भी सब के सहयोग से सम्पूर्ण हो जायगा और यह स्थान हिन्दी की सेवा का प्रमुख कारण बनेगा।

—मोहनलाल सुखाड़िया
मुख्य मन्त्री, राजस्थान

२-१२-५७

अच्छी सस्था, अच्छे कार्यकर्त्ता और अच्छा काम। हिन्दी की सेवा विशेष रूप से सराहनीय, ईश्वर से प्रार्थना कि सस्था के विकास मे सहायता करे।

—शम्भूलाल शर्मा
डिप्टी डायरेक्टर

४-१२-५७

मैं आज हिन्दी साहित्य समिति का भवन देख सका। बड़ा अच्छा लगा। बड़ा सुन्दर प्रयास है। जो सज्जन इस संस्था को चलाने में लगे हैं, बड़े उत्साही और धुन के पक्के मालूम हुए। मुझे आशा है उनके इन प्रयत्नों से जनता को पूरा लाभ मिलेगा और हिन्दी की उन्नति होगी।

—डा० राममनोहर लोहिया

यहा Andio-Visual Education का केन्द्र बड़ा अच्छा बन सकता है और चल सकता है। मैं जो सहायता दिलवा सकता हूँ, दिलवाने की कोशिश करूँगा।

—आर० पी० श्रीवास्तव

२६-३-५८ संयुक्त शिक्षाध्यक्ष, राजस्थान सरकार

मैं अपने दो वर्ष के कार्यकाल में इस संस्था की गतिविधि को निकट से देखता रहा हूँ। समिति के पुस्तकालय में विविध विषयों की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है और समिति भवन भी अब सुन्दर बन गया है। समिति के पास साहित्य-साधना की दीर्घकालीन परम्परा भी है और देश की हिन्दी सेवी संस्थाओं में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

मैं समिति की उत्तरोत्तर उन्नति की शुभकामना करता हूँ।

—विष्णुदत्त शर्मा

२५ अप्रैल ५८ जिलाधीश एवं जिला न्यायधीश, भरतपुर

मैंने बहुत समय से यह सुन रखा था कि भरतपुर में हिन्दी साहित्य समिति है। पर मैं अवकाश के अभाव में इस संस्था की प्रवृत्तियों से परिचय न प्राप्त कर सका था। आज मैंने समिति के नये भवन में स्थान पाने वाले संग्रहालय (पुस्तक) को देखा। नया भवन जितना सुन्दर है उतना ही यहाँ का पुस्तक-संग्रह है। राष्ट्रभाषा पद पर आसीन होने वाली हिन्दी भाषा का यह मन्दिर हम सब भारतीयों के लिये गौरव का द्योतक है। आशा है इस मन्दिर को साहित्यिक ही नहीं वरन् अन्य भी अपनायेंगे। प्रजातन्त्रीय युग में ऐसी संस्था का निजी स्थान है। इसकी तन-मन-धन से सेवा करना हम सब का पुनीत कर्त्तव्य है।

मैं इस संस्था की उत्तरोत्तर वृद्धि का आकांक्षी हूँ।

—सत्य प्रकाश

१२-६-५८ निर्देशक, पुरातत्त्व संग्रहालय विभाग,
राजस्थान सरकार

आज मैं हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के भवन मे आया। भवन को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ। वास्तव में इस क्षेत्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति के लिये जो भी सेवाएँ समिति कर रही है वे अत्यन्त सराहनीय हैं। यह एक वहुत पुरानी संस्था है। इसकी प्रगति के लिये मैं हृदय से कामना करता हूँ।

—डा० कालूलाल श्रीमाली
शिक्षा-मन्त्री, भारत सरकार

आज हिन्दी साहित्य समिति भवन को मुझे देखने और उसके कार्यकर्त्ताओ से इसके सक्षिप्त इतिहास व वर्तमान स्थिति के विवरण सुनने का सुअवसर मिला। मुझे इस सुन्दर भवन व इसमे सुसज्जित पुस्तक-भण्डार को देखकर बड़ा हर्ष हुआ। वास्तव मे यह सस्था हिन्दी-जगत् की व भरतपुर की जनता की बड़ी सेवा कर रही है और इसको सव हिन्दी-प्रेमियो व राज्य सरकार द्वारा उत्साहवर्धन के हेतु समुचित सहायता देना श्रेयस्कर ही होगा।

१-११-५८ —अजितप्रसाद जैन
खाद्य एवं कृषि मन्त्री, केन्द्रीय सरकार

आज हिन्दी साहित्य समिति-भवन आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह समिति गत ४७ वर्षो से हिन्दी-प्रसार और साहित्य-विस्तार के लिये प्रशंसनीय कार्य कर रही है। इस समिति का देश के अनेक महान् साहित्य-महारथियो से सम्वन्ध रहा है। समिति का पुस्तकालय वड़ा सुन्दर है, उसमें पचासो हस्तलिखित प्रतियाँ है जो, आशा है, शीघ्र ही प्रकाश मे आयेगी। यह समिति सरकारी साहाय्य और जनता के सहयोग की पूर्ण अधिकारिणी है। मै समिति की सफलता के लिए शुभ कामना करता हूँ।

६-११-५९ —हरिशंकर शर्मा, कविरत्न, डी० लिट्

हिन्दी साहित्य-समिति-पुस्तकालय भरतपुर एक साहित्यिक तीर्थ है। स्वच्छ स्वस्थ वातावरण मे लगभग वारह हजार छपी पुस्तके और साढे छ: सौ के आसपास हस्तलिखित ग्रन्थ यहाँ केवल आलमारियो की शोभा नही वढाते, लोग उनका उपयोग भली-भाँति करते है। सम्मेलन की परीक्षाओ का केन्द्र भी यहाँ है। श्रीमन्तो की सदेच्छा से हस्तलिखित ग्रन्थों की वृद्धि व रक्षा की आवश्यकता है। राजस्थान मे हस्तलिखित ग्रन्थ बिखरे पडे है विदेशो से लोग आ आकर उन्हे खरीद ले जाते है।

सबमें बड़ी बात जो यहाँ देखी वह है सौजन्य और सद्व्यवहार। भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति व पुस्तकालय फले फूले।

—शम्भुप्रसाद बहुगुणा

३०-११-५६ हिन्दी अध्यापक, आर्ट्० टी० कालेज, लखनऊ

आज मैंने हिन्दी साहित्य समिति का भवन एवं पुस्तकालय देखा। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि व्रजभूमि के इस साहित्य केन्द्र में आज भी साहित्य-साधना के लिये उपयुक्त स्थान विद्यमान है और उसकी दिनादिन उन्नति की होती जा रही है। इस केन्द्र द्वारा यदि इस भरतपुर क्षेत्र के विगत साहित्यकारों की खोज एवं उनकी कृतियों के संरक्षण और उद्धार का काम किया जावेगा तो एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण कार्य होगा। मैं हृदय से इस समिति की उन्नति चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि साहित्य-प्रचार एवं ज्ञान प्रसार के साथ ही प्राचीन साहित्य की खोज तथा संरक्षण की भी ओर समिति पूरा-पूरा ध्यान देती रहेगी।

—रघुवीरसिंह

१२-६-६० सदस्य, राज्य-सभा

मैंने आज हिन्दी साहित्य समिति का भवन तथा पुस्तकालय देखा। भरतपुर जैसे स्थान में इतना सुव्यवस्थित पुस्तकालय तथा वाचनालय देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। समिति के पास पुस्तकों तथा हस्तलिखित पुस्तकों का एक बहुमूल्य संग्रह है। समिति के कार्यकर्त्ता इसके लिये बधाई के पात्र हैं। पुस्तकालय तथा वाचनालय के अतिरिक्त समिति सम्मेलन परीक्षाओं का केन्द्र है तथा परीक्षाओं के लिये प्रशिक्षण की सुविधा भी यहाँ है। यह संस्था भरतपुर की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकता को पूरा करती है। ऐसी उपयोगी साहित्यिक संस्था को राज्य तथा जनता का आश्रय मिलना ही चाहिये।

—शंकरसहाय सक्सेना

१८-१२-६० शिक्षा-संचालक, राजस्थान

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

का

संक्षिप्त कार्य विवरण

रविवार दि० १२-२-६१

प्रात. १० बजे—

१. ध्वजा-रोहण
२. ध्वज-वन्दना
३. मंगलाचरण
४. स्वागत गायन
५. स्वागताध्यक्ष का भाषण
६. उद्घाटन भाषण
७. धन्यवाद

रात्रि ७॥ बजे से—

१. गायन
२. कवि सम्मेलन (कविताएँ स्वतन्त्र होंगी)

सोमवर दि० १३-२-६१

प्रातः ८ बजे से—

१. उपनिषद्
२. अन्ताक्षरी

मध्याह्न ३ बजे से—

१. गायन
२. उपनिषद्

रात्रि ७॥ बजे से—

गीता प्रवचन

मंगलवार दि० १४-२-६१

प्रातः ८ बजे से—

उपनिषद्

मध्याह्न ३ बजे से—

१. उपनिषद्
२. वाद-विवाद प्रतियोगिता

रात्रि ७॥ बजे से—

१. वार्षिक रिपोर्ट मन्त्री द्वारा
२. संगीत सम्मेलन

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का संक्षिप्त विवरण

भरतपुर के साहित्यिक जीवन में १२ फरवरी १९६१ का शुभ दिन विशेष उल्लेखनीय है। उस दिन यहाँ की प्रमुख साहित्यिक संस्था श्री हिन्दी साहित्य-समिति ने अपना अर्द्ध शताब्दी स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एक उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया था। इस साहित्यिक मेले के लगभग ६ मास पूर्व इस संस्था की कार्यकारिणी ने दिनांक ३-८-६० की बैठक में यह निश्चय किया था कि "राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर' द्वारा आयोजित उपनिषद् तथा 'समिति' का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दोनों एक साथ आगामी नवम्बर सन् १९६० में मनाये जावें, किन्तु थोड़े ही दिन पश्चात् अकादमी के निर्देशानुसार फरवरी सन् १९६१ में इस महोत्सव का आयोजन निश्चित् कर दिया गया। सन् १९६१ के आरम्भ से ही महोत्सव की तैयारी प्रारम्भ करदी गई और 'समिति' के उत्साही कार्यकर्त्ता पूर्व निश्चित योजना के अनुसार कार्य-क्रम स्थिर करने में जुट गए।

धन संग्रह —महोत्सव के कार्य-क्रम को 'समिति' के स्तर के अनुरूप सम्पन्न करने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता धन की थी। एतदर्थ महोत्सव के कार्य-क्रम की निम्न रूपरेखा घोषित करते हुए जनता से अपील की गई कि इस आयोजन के निमित्त 'पत्र-पुष्प' 'समिति' के प्रधान मंत्री के पास शीघ्र भेजें। महोत्सव के प्रमुख आकर्षण इस प्रकार घोषित किये गए —

१—भारत के उप-राष्ट्रपति डा सर्वपल्ली राधाकृष्णन् द्वारा जयन्ती उद्घाटन,

२—राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषद्

३—स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ का प्रकाशन

४—कवि सम्मेलन एवं अन्य रोचक साहित्यिक कार्य-क्रम,

५—गीता प्रवचन

६—संगीत सम्मेलन

भरतपुर की हिन्दी प्रेमी एवं जागरूक जनता ने 'समिति' की इस अपील का हार्दिक स्वागत करते हुए आर्थिक सहायता भेजना प्रारम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में प्रचुर धनराशि एकत्रित हो गई।

मुख्य उत्सव —दिनांक १२ फरवरी सन् १९६१ को प्रातःकाल बाल रश्मियों के प्रस्फुटित होते ही समस्त नगर में एक अद्भुत उल्लासपूर्ण वातावरण दृष्टि-

समिति के अध्यक्ष श्री डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त,
उप-राष्ट्रपति को कार्य-कारिणी के सदस्यों का परिचय देते हुए
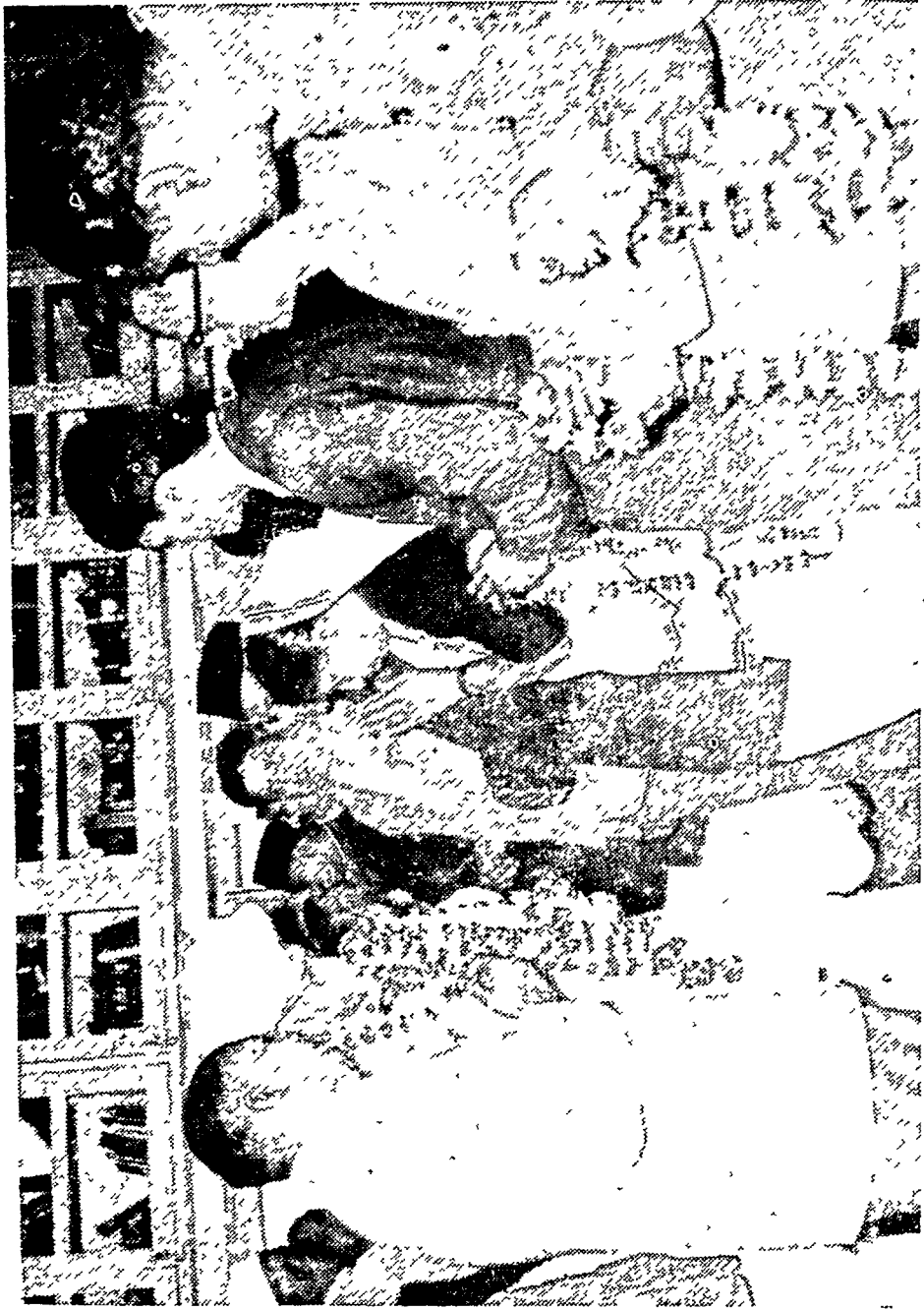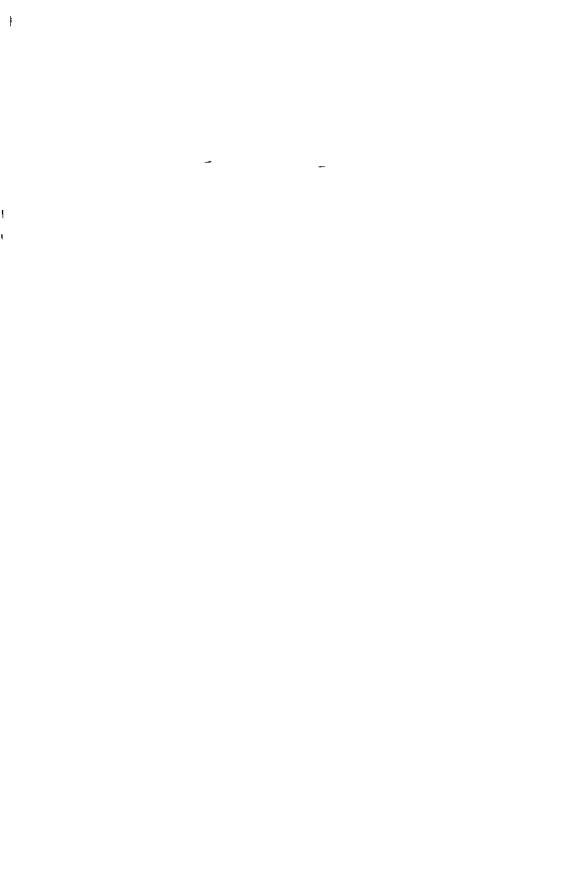
गोचर होने लगा। रेलवे स्टेशन से लेकर 'समिति' भवन तक मुख्य मार्ग रंग विरंगी सुन्दर पताकाओं से सुसज्जित था और स्थान २ पर भव्य तोरण बने हुए थे, जिनकी संख्या अर्द्ध शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष में ५० थी। सैकड़ों नर-नारी आबाल वृद्ध 'समिति' भवन में एकत्रित होने लगे।

सर्व प्रथम १० बजे वाद्य यत्रों की मनोमुग्धकारी ध्वनि के बीच 'समिति' के पुराने सदस्य श्री राजबहादुर केन्द्रीय मंत्री ने, 'समिति' का पीताम्बरी ध्वज फहरा कर महोत्सव का कार्य शुभारभ किया। विशाल जन समुदाय ने करतल ध्वनि कर ध्वज का अभिनन्दन किया। इसके अनन्तर मध्याह्न ३ बजे स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उद्घाटनार्थ अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साहित्यकार भारत के उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् नगर के प्रमुख बाजारों में होते हुए समिति भवन पधारे, जहाँ एक सुसज्जित पडाल बना हुआ था। लाल, पीले, नीले, तथा हरे रग की पताकाए मडप को आच्छादित कर अद्भुत सौन्दर्य प्रदान कर रही थी। सुन्दर तथा कलात्मक अक्षरों मे लिखे हुए साहित्यकारों के अमृत-मय उपदेश जनता को जागरूकता प्रदान कर साहित्य के प्रति अभिरुचि की अभिवृद्धि कर रहे थे। समस्त मडप नर-नारियों से खचाखच भरा हुआ था, जिनमें भरतपुर की सभी सस्थाओं के प्रतिनिधि, प्रेस प्रतिनिधि, राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया, पी० डबल्यू० डी० मत्री महाराज हरिश्चन्द्र, भरतपुर नरेश श्री सवाई बृजेन्द्रसिह, राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर तथा डायरेक्टर श्री मोतीलाल मेनारिया और राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य प्रमुख थे।

महोत्सव के मुख्य अतिथि डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् अपनी कीर्त्ति के समान ही दुग्ध धवल अचकन, श्वेत धोती और शुभ्र पगड़ी के परिधानों से विभूषित थे। उनके स्थान ग्रहण करते ही नगर के सुप्रसिद्ध पडित श्री रामस्वरूप मिश्र ने सस्वर वेद मत्रों द्वारा मगलाचरण किया। इसके अनन्तर सुरजीत संगीत विद्यालय की बालिकाओं ने महामहिम के स्वागत में एक छोटा किन्तु सुमधुर गायन प्रस्तुत किया। इस साहित्यिक मेले के अवसर पर हिन्दी साहित्य समिति के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त ने मुख्य अतिथि का अभिनन्दन करते हुए बताया कि यह समिति लगभग ५० वर्षो से हिन्दी के प्रचार एव प्रसार में अनवरत् रूप से लगी हुई है। इस संस्था के गौरवमय अतीत पर प्रकाश डालते हुए उन्होने कहा कि भरतपुर के लिये यह एक परम सौभाग्य की बात है कि राधा और कृष्ण की क्रीड़ास्थली बृज भूमि के इस प्रदेश को अपने चरणों से पवित्र बनाने के लिये स्वयं राधाकृष्ण (राधाकृष्णन्) यहां पधारे हुए है। क्या इसे बृजवासियों तथा गोपियों की विरह व्यथा क्रन्दन का ही प्रतिफल

समझा जावे ? राधाकृष्ण के सुन्दर साहित्यिक प्रयोग पर उप-राष्ट्रपति मुस्करा गए, क्योंकि निकट में बैठे हुए केन्द्रीय मंत्री श्री राजबहादुर ने उसका रहस्योद्घाटन कर दिया। पुनः नन्ही नन्ही बालिकाओं ने अपने संगीतमय नृत्य द्वारा उपस्थित जन-समुदाय का मनोरंजन किया। इन्हीं बालिकाओं ने सुरजीत शिल्प-कला विद्यालय द्वारा निर्मित एक विशेष प्रकार की गुड़िया मुख्य अतिथि को भेंट की। इसके अनन्तर समिति के उपप्रधान श्री मोतीलाल अग्रवाल ने भरतपुर की चिर विख्यात् शिल्प वस्तु चन्दन की चौकी, पंखी, तथा स्वर्ण जयन्ती पुस्तिका भेंट की। हजारों नर नारियों से भरे हुए मैदान में जब मुख्य अतिथि भाषण देने के लिये खड़े हुए तब तालियों की गड़गड़ाहट तुमुल ध्वनि ने कुछ समय तक निरन्तर चालू रही। महामहिम डा० राधाकृष्णन ने सरल एवं प्रभावोत्पादक अंग्रेजी भाषा में उद्घाटन भाषण दिया, जिसका हिन्दी अनुवाद अकादमी के अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर ने तुरन्त पढ़कर सुनाया। भाषण का सार इस प्रकार है —

"साहित्य यों तो प्रत्येक रचनात्मक कृति को कहा जा सकता है, परन्तु स्थाई और शाश्वत महत्व रखने वाले साहित्य का अपना विशेष महत्व है। 'साहित्य समाज का दर्पण है', वाली उक्ति का प्रमुख रहस्य यही है कि जो तत्कालीन समाज की गति विधियों, उसके रूप और दृष्टिकोण को अपने समान ही शाश्वत और अमर बना दे वही सत्साहित्य है। सत्साहित्य के निर्माण में योग देना जीवन की परम आवश्यकता है जिसे कर्तव्य समझकर हम अपनाना चाहिये। कहानी कविता आदि लिख देना साहित्य का एक अंग अवश्य है, परन्तु पूर्णतः साहित्य के दर्शन के लिये हमें एक दूसरे का प्रसन्न रखने की भावना, परस्पर आदर व सत्कार का विचार और संतुलित व स्वस्थ परामर्श का आदान प्रदान करने वाली त्रिवेणी में अवगाहन करने पर ही साहित्य का सच्चा आनन्द प्राप्त हो सकता है। सत्साहित्य की तरह मानव के सत्कार्य भी सदैव प्रेरणादायक व शाश्वत होते हैं, किन्तु सत्कार्यों को शाश्वत रूप देना साहित्य पर आधारित है। वह एक अनुभूति है और मधुर अनुभूति है। साहित्य सृजन आत्म तुष्टि, आत्मानन्द और आत्म विकास का ध्यान तो है ही, लेकिन शुद्ध साहित्य में वह अपार शक्ति भी निहित है जो सामाजिक विकारों को दूर करके उसे 'सत्समाज' का रूप प्रदान कर सकती है। साहित्य व कार्यों में 'सत्' लग जाने से वे शाश्वत बन जाते। यहां 'धर्म' में भी 'सनातन' शाश्वत प्रतीक है जिसका अर्थ अपरिवर्तनशील नहीं वरन् 'अक्षुण्ण' है। अतः सत् वातावरण के निर्माण के लिये सत्साहित्य सत्कार्य व सत् धर्म का स्वस्थ समन्वय करना होगा।"

डा० सर्व पल्ली राधाकृष्णन् ने कहा कि —

महामहिम उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन
स्वर्ण जयन्ती का उद्घाटन भाषण करते हुए

"विभिन्न सस्कृतियों, भाषाग्रों, धर्मों, परम्पराग्रों ग्रौर विचार-धाराग्रों वाले देश भारत का भविष्य ग्रत्यन्त उज्ज्वल इस कारण लगता है कि इसमें ग्राई हुई बिषमताग्रों में जल्दी ही सामजस्य स्थापित हो जाएगा ग्रौर तब भारत ही विश्व क्षितिज पर पथ प्रदर्शक होगा। यों, हमें नहीं भूलना चाहिये कि कला, धर्म, विज्ञान व साहित्य सब एक ही है, जिनके समायोजन से राष्ट्र का वास्तविक विकास संभव है।"

ग्रंत में समिति के प्रधान मंत्री श्री मदनलाल बजाज ने मुख्य ग्रतिथि एवं उपस्थित जनता के प्रति ग्राभार प्रदर्शित किया। उप-राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने समिति भवन तथा पुस्तकालय का निरीक्षण किया ग्रौर समिति की प्रगति के प्रति सन्तोप प्रकट करते हुए प्रस्थान किया।

कवि सम्मेलन:—इसी दिन रात्रि को समिति ने एक विराट कवि सम्मेलन का ग्रायोजन किया जिसके ग्रध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर थे। इस ग्रवसर पर ग्रनेक रस भरी तरगें प्रवाहित की गईं। कही शृंगार का ग्राकर्षण था तो कहीं वीरता का बिगुल; कहीं करुण का हृदय विदारक चित्र उपस्थित किया गया तो कहीं हास्य के फव्वारे चल रहे थे, कहीं गीतों का माधुर्य था तो कही ग्रोजपूर्ण कवित्त पढ़े जा रहे थे, मुक्तको की मादकता एव नये प्रयोगों की नई सूझ बूझ ग्राकर्षण बिंदु बन रही थी। ग्रनेक रस धाराग्रों से युक्त इस सरोवर मे ग्रवगाहन करने वाले कविगण ने काव्य सागर की उज्ज्वल तरंगों से काव्य प्रेमी श्रोताग्रों को सराबोर कर दिया। श्री कुलशेखर की 'ग्रमृत ध्वनि' को सुनते ही समस्त पंडाल करतल ध्वनि से गूंज उठा। श्री ब्रजेन्द्रविहारी कौशिक की 'चीन को चुनौती' मे युवक हृदय की उमंगों से परिपूर्ण उद्गार थे। "तुम क्यों दर्पण देख रहे हो, तुमको ग्रब क्या ग्राशंका है। दर्पण तो वह देखा करते जिनका रूप ढला करता है", गाकर श्री वीरसक्सेना जयपुर ने ग्रात्म निरीक्षण की बांसुरी बजा दी। मथुरा निवासी प्रो० राकेश के कंठ से निकला गीत "यदि तुम ग्रपने नयनो से नभ के दीप जला दो तो मै पागल परवानों का प्यार तुम्हें दे दूंगा" सुनकर श्रोताग्रों के मन मयूर नृत्य कर उठे। जहां एक ग्रोर श्री 'भारतरत्न भारद्वाज' जयपुर तथा प्रो० हरीराम ग्राचार्य "ग्रमिताभ" के मुक्तक हृदय स्पर्शी थे वहा दूसरी ग्रोर श्री राजावत ने राजस्थानी गीतों मे प्रदेश की संस्कृति को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। श्री शांतिप्रकाश भारद्वाज 'राकेश' ने ग्रपने सरस गीतों के ग्रतिरिक्त ग्रन्य कवियों पर सूक्ष्म टिप्पणी प्रस्तुत कर इस सम्मेलन के कार्यक्रम को ग्रधिक रोचक बना दिया। श्री 'मित्र' तथा श्री कुंजविहारीलाल पांडेय मध्य प्रदेश के हास्य रस के फव्वारे कई बार छोड़े

गये। स्थानीय तथा बाहर के लगभग २५ कवियो ने अपनी सुन्दर २ रचनाएँ सुना कर हजारो श्रोताओ को मत्र मुग्ध बना दिया। यह सम्मेलन अर्द्ध रात्रि तक शातिमय वातावरण मे चलता रहता।

उपनिषद् —इस त्रिदिवसीय स्वर्ण जयती महोत्सव पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित एक उपनिषद् १३ व १४ फरवरी को सम्पन्न हुआ। उपनिषद् का विषय था "साहित्य और लोक रुचि"। इस कार्यक्रम मे सर्व श्री प्रो० हरदत्त शास्त्री, प्रो० विजेन्द्रपालसिंह, मा० शिवलाल गुप्त, मा० गोपालप्रसाद 'मुद्गल', सांवलप्रसाद चतुर्वेदी, शक्ति त्रिवेदी, कुसुम चतुर्वेदी और रामदत्त शास्त्री के निबध पुरस्कृत हुए। उपनिषद् की बैठको की अध्यक्षता सब श्री जनार्दनराय नागर, डा० मोतीलाल मेनारिया, श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय और श्री निरजननाथ आचार्य ने की।

अन्य साहित्यिक कार्यक्रम —इस अवसर पर अन्त्याक्षरी तथा वाद विवाद प्रतियोगिता का भी सुन्दर आयोजन हुआ जिसमे स्थानीय एम० एस० जे० कालेज तथा अन्य सभी विद्यालयो के छात्र छात्राओ ने भाग लिया। कई दिन तक चलती रहने वाली अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता मे अन्तत राजकीय बहु उद्देशीय विद्यालय का दल बाजी मार ले गया। वाद विवाद प्रतियोगिता मे श्री प्रमिला भटनागर, श्री अचला कुमार, श्री गायत्री गुप्त और श्री जगदीशप्रसाद भारद्वाज को पुरस्कृत किया गया।

गीता प्रवचन — गीता प्रवचन का कार्यक्रम महोत्सव का विशेष आकर्षण था। यह आयोजन श्री शातिस्वरूप बोहरे द्वारा प्रदत्त निधि से प्रतिवर्ष किया जाता है। इस अवसर पर भारतविख्यात् श्री दीनानाथ 'दिनेश' ने गीता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओ को अपना जीवन गीतामय बनाने का परामर्श दिया। भरतपुर के प्रतिष्ठित नागरिक श्री युधिष्ठिरप्रसाद चतुर्वेदी ने गीता के १४ वे अध्याय मे वर्णित 'गुणातीत' होने की साधना पर एक सुन्दर प्रवचन किया तथा श्री सावलप्रसाद चतुर्वेदी ने साधक के स्तर और 'महाप्रकाश' की खोज के विषय मे वैदिक मत और गीता के मत का सुन्दर स्पष्टीकरण किया।

सगीत सम्मेलन —इस महोत्सव के अन्तिम कार्यक्रम 'सगीत सम्मेलन' की जनता ने विशेष सराहना की। इस कार्यक्रम मे देहली के अनेक ख्यातिप्राप्त कलाकारो ने भाग लिया, जिनमे श्री नसीर अहमद तान कप्तान, श्री जहूर अहमद और श्री जफर अहमद के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। भारतीय आकाशवाणी के प्रसिद्ध कलाकार श्री सुरजीतसिंह तथा श्री जसवन्तसिंह के गिटार वादन को
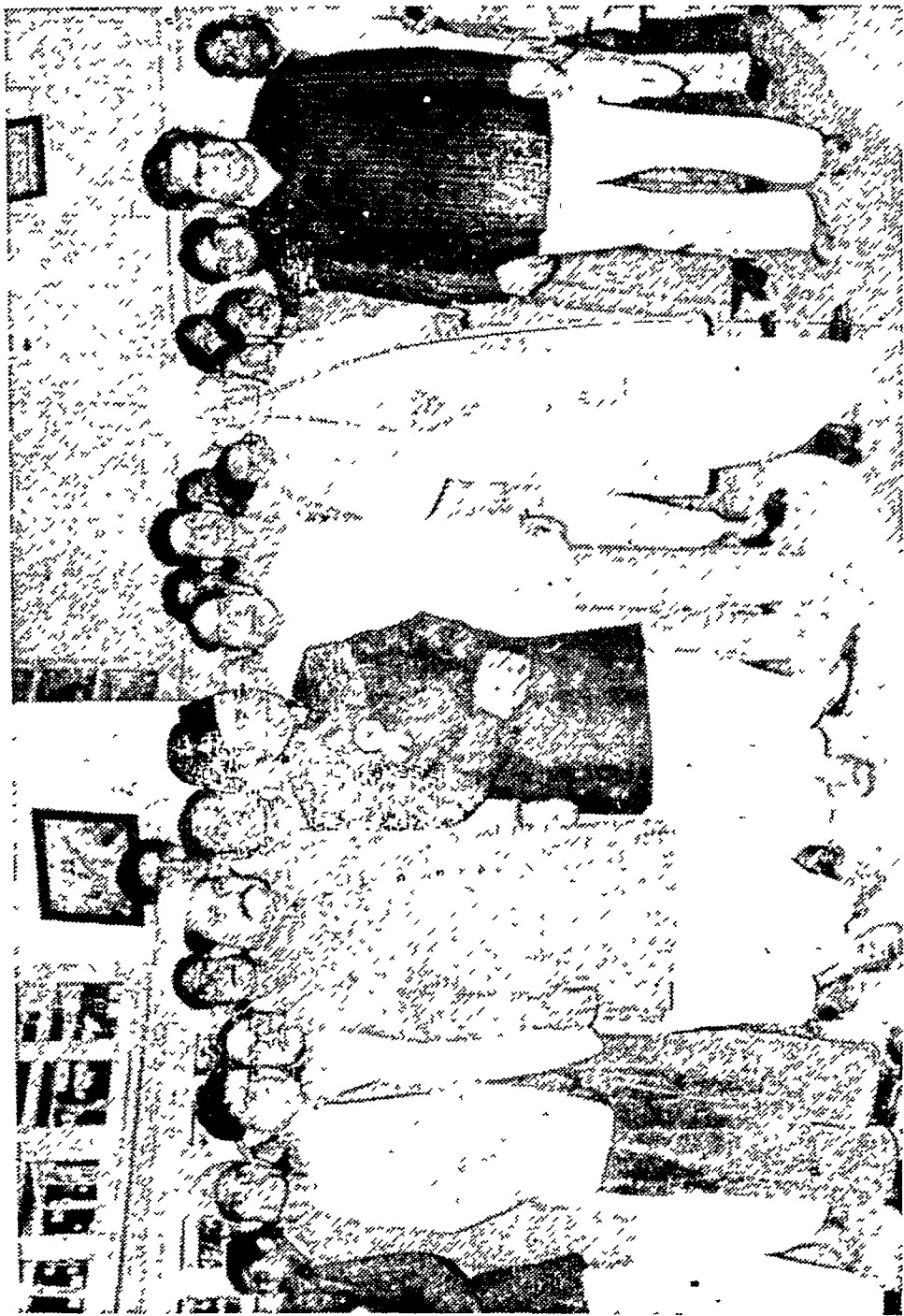
उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् तथा श्री मोहनलाल सुखाड़िया
(मुख्य मन्त्री राजस्थान) के साथ समिति के प्रमुख कार्यकर्त्ता

श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया। भरतपुर के प्रसिद्ध कलाकार श्री मा० दुरगसिंह, श्री बूलचन्द तथा श्री रमनलाल का कला प्रदर्शन भी विशेष प्रशंसनीय रहा। श्री मानिकचन्द के शास्त्रीय गायन और श्री सरला कपूर के सरल संगीत ने तो इस सभा को इतना आकर्षित बना दिया कि जाड़े की स्थिति में भी रात्रि के दो बजे तक तीन चार हजार व्यक्तियों का विशाल समुदाय मंत्र मुग्ध होकर संगीत का रसास्वादन करता रहा।

चित्र-प्रदर्शिनी:—स्वर्ण जयंती महोत्सव पर एक चित्र प्रदर्शिनी का विशेष आयोजन किया गया जो जनता के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। जयपुर के कलाकार श्री हीरालाल सक्सेना ने लगभग २५०० रंगीन चित्र बड़े आकार में बने हुए इसमें प्रदर्शित किये। इन चित्रों में हिन्दी और संस्कृत साहित्य के इतिहास तथा १८५७ ई० से १९४७ ई० तक के भारत के सुविख्यात् सपूतों और सैनानियों के सुन्दर चित्र प्रदर्शित किए गए।

इसी अवसर पर दिल्ली स्थित भरतपुरिया समाज के प्रतिनिधि मंडल ने समिति को ११ नवीन पुस्तके भेट कीं और समिति की प्रगति की सराहना की।

अन्त में श्री मदनलाल बजाज, प्रधान मंत्री श्री हिन्दी साहित्य समिति ने उपस्थित समुदाय के बीच अपनी अर्द्ध शताब्दी रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई और उन सभी व्यक्तियों के प्रति आभार प्रदर्शित किया जिन्होंने अपना अमूल्य समय और धन देकर शारदा के इस अर्द्ध शताब्दी मेले को सम्पन्न कराने में योग दिया।

स्वागताध्यक्ष

डा० श्री कुंजविहारीलाल गुप्त

अध्यक्ष

हिन्दी साहित्य समिति

का

स्वागत भाषण

तत्र भवान् उपराष्ट्रपति जी ,

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के स्वर्ण जयन्ती एव राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषद् समारोह के उद्घाटन अवसर पर ब्रज-भाषा के प्रमुख केन्द्र भरतपुर नगर मे आपका स्वागत करते हुए जिस अपार आनन्द एव गौरव का अनुभव हमे हो रहा है उसे शब्दो द्वारा व्यक्त नही किया जा सकता। स्वर्ण जयन्ती मनाना समिति के लिए महत्व का विषय हो सकता है, परन्तु आप जैसे विश्व विख्यात साहित्यिक एव महान् दार्शनिक का यहाँ पधारना उससे कही अधिक गौरव की बात है।

यद्यपि साहित्य और सस्कृति की अनन्त और अविस्मरणीय सेवाओ तथा साधना के कारण आपकी गणना भारत के महान् पुरुषो मे ही नही अपितु विश्व की महान् विभूतियो मे की जाती है, परन्तु हम ब्रजवासियो के लिये तो आप प्रेम की वही साक्षात् मूर्ति 'राधाकृष्ण' ही हो जिनकी प्रतीक्षा मे हम इतने दिनो से पलक पावडे बिछाये हुए थे।

हमारे अकिंचन नम्र निवेदन पर आपने अपना अमूल्य समय देकर यहाँ पधारने की जो अनुकम्पा की है वह आपके हिन्दी के प्रति प्रगाढ स्नेह और साहित्यानुराग का परिचय देती है।

यह निर्विवाद सत्य है कि आपके उदात्त व्यक्तित्व मे हमे प्राचीन गौरवमय भारत के धर्म, ज्ञान व सस्कृति की तीन सुन्दर-सुन्दर झाँकियाँ एक साथ देखने को मिलती हैं। जहाँ आप (श्री राधाकृष्णन्) का नाम भारत के महान् धर्म सस्थापक एव गीता की अमृतमय वाणी सुनाने वाले कृष्ण का स्मरण दिलाता है, वहाँ आपकी सरल वेषभूषा एव शान्त व गम्भीर मुद्रा तथा प्रखर विद्वत्ता हमारी प्राचीन सस्कृति एव ऋषियो के जीवन की याद दिलाती है।

स्वागताध्यक्ष द्वारा महामहिम उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् को अभिनन्दन-पत्र भेंट

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप जैसे महानुभावों के वरद हस्त की छत्रछाया में राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरव तो बढ़ेगा ही, साथ ही हिन्दी का प्रसार करने वाली हिन्दी साहित्य समिति जैसी संस्थाएं भी युग-युगों तक पल्लवित एवं पुष्पित होती रहेगी।

आपका अभिनन्दन करने वाली इस संस्था के स्थापन का निश्चय आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व मातृ-भाषा हिन्दी के कुछ भक्तों ने श्रावण कृष्णा तृतीय गुरुवार संवत् १९६९ तदनुसार १ अगस्त सन् १९१२ (शक सँवत् १८३४) को श्री तुलसी जयन्ती के पुण्य पर्व पर किया था। हिन्दी प्रचार हेतु इस सँस्था की स्थापना में सर्व श्री गंगाप्रसाद शास्त्री और जगन्नाथदास अधिकारी का विशेष हाथ था। स्थापना काल में सँस्था के अत्यन्त हितैषियों में डा० ओंकारसिंह पमार, पं० मयाशंकर याज्ञिक, पं० नारायणदास, पं० गुलाब मिश्र 'भूमि कज' और श्री बालकृष्ण दुवे का नाम उल्लेखनीय है। इन्ही महानुभावों के अथक प्रयत्न व परिश्रम के बल पर खड़ी होकर यह सँस्था दिन दूनी व रात चौगुनी उन्नति करती हुई वर्तमान स्थिति पर पहुँच सकी है। किराये के एक छोटे से कमरे में जन्म लेने वाली यह संस्था भरतपुर के हिन्दी प्रेमियों के सद् प्रयत्नों से आज निज के भव्य भवन में प्रतिष्ठित है। सँस्था के पुस्तक भण्डार में विविध विषयों की १३ हजार से भी अधिक हिन्दी पुस्तकें है। इनके अतिरिक्त सँस्कृत तथा हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थ भी हजार से ऊपर ही है। इस समिति की ओर से हिन्दी प्रचार के लिये अनेकवार भागीरथ प्रयत्न किये गये। इन्ही प्रयासों के परिणाम स्वरूप हिन्दी प्रेम की गूंज झोपड़ियों से लेकर महलों तक सुनाई देने लगी। इसी गूंज के फलस्वरूप सन् १९१९ में हिन्दी प्रेमी भरतपुर नरेश महाराजा कृष्णसिंहजी ने सर्व प्रथम हिन्दी को राज्य भाषा घोषित किया तथा उसके प्रचार के लिये अनेक प्रयत्न किये। उसी का यह परिणाम था कि राजस्थान में सबसे पहले भरतपुर में ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन का १७ वाँ अधिवेशन १९२७ में हुआ। उस अवसर पर श्री पं० मदनमोहन मालवीय, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति डाक्टर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, श्रीमती लक्ष्मीवाई किवे श्री माखनलाल चतुर्वेदी जैसे दिग्गज विद्वान् तथा अनेक हिन्दी प्रेमी भरतपुर पधारे। इनके अतिरिक्त इस संस्था को अब तक अनेक साहित्यिक और राजनैतिक महानुभावों का आर्शीवाद और परामर्श भी समय समय पर मिलता रहा है।

राजनीति से अलग रहते हुए इस संस्था ने हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार तथा प्रसार के लिये जो अथक और स्मरणीय प्रयत्न किये हैं वे किसी से छिपे नही हैं। यह समिति हिन्दी पुस्तकों के पठन-पाठन के प्रति रुचि, हिन्दी की परीक्षाओं के प्रति आकर्षण और हिन्दी की प्रतिष्ठा वृद्धि के लिये

सदैव से प्रयत्नशील रही है और रहेगी। इस पुण्य पर्व पर समिति की कठिनाइयो एव आवश्यकताओ की ओर सकेत कर देना भी मैं अपना परम कर्त्तव्य समझता हू। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये धनाभाव के अतिरिक्त समिति का भवन सर्वथा अपर्याप्त है और सैकडो सुन्दर-सुन्दर पाण्डुलिपियो के होते हुए भी इसके पास कोई मुद्रणालय नही है।

अन्त मे आपके यहा पधारने के लिये आपके प्रति मैं अपनी, हिन्दी साहित्य समिति तथा भरतपुर नगर की समस्त हिन्दी प्रेमी जनता की ओर से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आपका हृदय से स्वागत करता हूँ।

जय हिन्दी—जय भारती

स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ

(द्वितीय खण्ड)

भरतपुर कवि-कुसुमाञ्जलि

भरतपुर राज्य के स्थापन काल से वर्तमान काल तक के कवियों का संक्षिप्त जीवन-वृत एवं साहित्यिक परिचय

सम्पादक

डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त

एम० ए० (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान), पी-एच० डी०

तमसोमाज्योतिर्गमय

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर

स्थापित १९१२ ई०

प्रकाशक

मदनलाल वजाज, प्रधान मंत्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर

सं० २०१८ वि०

प्रकाशक —
मदनलाल बजाज, प्रधान मंत्री
श्री हिन्दी साहित्य समिति
भ र त पु र।

मकर सक्रान्ति स० २०१८ वि०,
प्र थ म स स्क र ण ७५० प्र ति यां

मूल्य ४) रुपये

मुद्रक
विद्याव्रत शास्त्री
तथा
देवराज गुप्त
नूतन प्रिन्टिंग प्रेस, भरतपुर

हिन्दी के वयोबृद्ध साहित्यकार

डा० गुलाबराय, एम० ए०, डी० लिट्, आगरा

का

आशीर्वचन

"भरतपुर कवि-कुसुमाँजलि नाम के पद्य संग्रह को उसके सम्पादक महोदय डाक्टर कुंजबिहारीलाल ने मुझे दिखाने की कृपा की। इस संग्रह में भूतपूर्व भरतपुर राज्य के कवियों की रचनाओं का सकलन है। इन कवियों में कुछ जैसे 'सोमनाथ' और 'सूदन' तो इतिहास प्रसिद्ध है और कुछ का नामोल्लेख मात्र मिश्रवंधु-विनोद में हुआ है और कुछ स्थानीय ख्याति के ही रहे। इस संग्रह में कवियों का कालक्रमानुकूल परिचय और विवरण है। इस सग्रह की कविताओं का मूलविषय नायिका भेद नखशिख वर्णन शृंगार है इसके साथ वीर और भक्ति रसों का भी समावेश हुआ है। व्रज भाषा के अमित रत्न भण्डार की जितनी रक्षा की जाय उतना ही अच्छा है। इस सग्रह में सम्पादक महोदय की सुरुचि और संयोजन शक्ति का परिचय मिलता है। स्थानीय साहित्य की रक्षा स्थानीय लोग ही अच्छी तरह कर सकते है। मुझे आशा है कि यह संग्रह रसिक जनों का मनोरजन कर व्रज भाषा की गौरव वृद्धि में अपना योगदान करेगा।"

सम्मति

डा० मोतीलाल गुप्त,

एम० ए०, बी० टी०, पी-एच० डी०, एफ० आर० ए० एस०,
एम० पी-एच० एस० (लन्दन)

"मत्स्य प्रदेश के हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज करते समय भरतपुर के साहित्य से मेरा परिचय बढ़ा। यह साहित्य इतनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुआ कि मुझे भरतपुर की साहित्य-चेतना की जागरूकता पर आश्चर्य होने लगा। इतनी अशान्ति, लडाई-झगडे का समय और भरतपुर के साहित्यकार इतने श्रजनशील ! साथ ही उन आश्रय दाताओं की भी प्रशंसा करनी पडेगी जिनके प्रोत्साहन और विद्या प्रेम से यह सब कुछ संभव हो सका। कवियों को आश्रय देना, राज कवि रखना उस समय की एक प्रचलित परम्परा थी, और भरतपुर में भी इस परम्परा का समुचित निर्वाह किया गया। भरतपुर दरबार से सम्बद्ध कवि अनेक वर्ग और जातियों के थे ब्राह्मण, चौबे, वैश्य, जाट, मुसलमान, कायस्थ आदि, जिनके द्वारा प्राय: सभी विषयों पर लिखा गया। प्राप्त साहित्य का विश्लेषण करते समय मैंने उसे प्रवृत्तिमूलक वर्गीकरण करने की चेष्टा की थी—रीति और श्रृंगार, भक्ति और नीति, इतिहास और शिकार, अनुवाद और गद्य सभी प्रकार का साहित्य प्राप्त हुआ, और उच्च कोटिका।

क्षेत्र कुछ विस्तृत होने से भरतपुर के कवियो का सम्यक अध्ययन सम्भव नही हो सका था, और मेरा ध्येय भी व्यक्तिगत मूल्यांकन की अपेक्षा प्रवृति मूलक अधिक था। जब भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति के विद्या प्रेमी उत्साही कार्य कर्त्ताओ ने 'भरतपुर कवि-कुसुमाँजलि' का प्रणयन कर प्रारभिक परिचयात्मक सामिग्री यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध कर दी है और मेरा अनुमान है कि प्रस्तुत सूत्रों के आधार पर विस्तृत अध्ययन की ओर अग्रसर होने में मूल्यवान सहायता मिलेगी। मेरा विश्वास है कि भरतपुर में कुछ तो ऐसे विशिष्ट प्रतिभा शाली कवि हुए जिन पर स्वतत्र रूप से काफी काम किया जा सकता है। सोमनाथ, रसानन्द, कलानिधि, उदयराम, शिवराम कुछ ऐसे ही नाम है। इन कवियों की जीवन सामग्री के साथ २ इनकी कृतियों की उपलब्धि और उस पर शोध कार्य विशेष उपयोगी हो सकते है। मैं तो चाहूँगा कि समिति के तत्वाविधान में ही इस कार्य को भी पूर्ण करने की ओर सक्रिय पग उठाया जाय। वैसे शोध इच्छुक विद्यार्थी भी इन साहित्य सृष्टाओं का सफलता पूर्वक उपयोग कर सकते हैं।

कवियो की कृतियो का अध्ययन प्राय साहित्यिक दृष्टियो मे ही किया जाता रहा है, किन्तु इन कृतियो के दो एक पहलू और है। भाषा विषयक और शास्त्रीय अध्ययन भी वैज्ञानिक अनुसधान के अग होते है । अपनी विदेश यात्रा मे मैंने देखा कि साहित्य और भाषा दो अलग अलग दृष्टि कोण हैं। और आज के युग मे भाषा सम्बन्धी अध्ययन अधिक महत्व पूर्ण और आवश्यक माना जाता है। एडिनबरा के हैलिडे का नाम इस प्रसंग मे आदर के साथ लिया जा सकता ह जिन्होंने एक चीनी पुस्तक का भाषा विषयक अध्ययन अभी अभी प्रस्तुत किया है।

हिन्दी मे इस प्रकार का अध्ययन अभी आरम्भ नही हुआ है, सोमनाथ के काव्य का भाषा मूलक अध्ययन करने का किंचित प्रयत्न मैं भी कर रहा हूँ। अलवर के कवि जोधराज का 'प्रताप-रासो' मेरे द्वारा की गई भाषा विश्लेषणात्मक टिप्पणी सहित जोधपुर के राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने को है। मैं चाहता हू कि साहित्यिक अध्ययन के साथ २ भरतपुर के कवियो की भाषा का भी विधिवत विश्लेषण हो । कवियो द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो के शास्त्रीय विवेचन पर भी विद्वानो का ध्यान आकर्षित होना चाहिये। मेरी मान्यता है कि भरतपुर के कलाकारो का अन्य क्षेत्रो के कवियो के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर यहाँ के कवियो की उत्कृष्टता निश्चय रूप से प्रमाणित होगी।

'समिति' द्वारा प्रकाशित इस परिचयात्मक पुस्तक का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि विविध विद्वानो की सृजनात्मक प्रवृत्ति द्वारा 'समिति' को एतद्विषयक बल निरतर मिलता रहेगा। "

विषय-सूची

प्रकरण ३

राम—काल (पूर्वार्द्ध)

प्रकरण ४

राम—काल (उत्तरार्द्ध)

प्रकरण ५

वर्तनमान—काल

आभार

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, की स्वर्ण जयन्ती की योजना बनाते समय यह सोचा गया था कि इस अवसर पर एक ग्रन्थ दो खण्डों में प्रकाशित किया जावे - प्रथम खण्ड में समिति के गत ५० वर्षों की सेवाओं का सिंहावलोकन हो और दूसरे में भरतपुर राज्य के स्थापन काल से लेकर आज तक के कवियों का सक्षिप्त परिचय। स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर प्रथम खण्ड तो मुद्रित हो ही चुका है, दूसरा खण्ड, जो किन्ही कठिनाइयों के कारण न छप सका था, आज प्रकाशित हो रहा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में भरतपुर के अनेक विद्वानों का, जिनका उल्लेख 'सम्पादकीय निवेदन' में किया गया है, पर्याप्त सहयोग तथा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ समिति उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करती है।

समिति के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त एम० ए०, पी–एच० डी० ने वर्तमान काल के अधिकाश कवियों के जीवन–वृत तथा रचनाएं एकत्रित करने तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अपने साहित्य-प्रेम और कार्य-कुशलता का प्रशंसनीय परिचय दिया। यथार्थ में यह उन्ही के अहर्निशि परिश्रम का फल है कि यह ग्रन्थ इस रूप में निकल रहा है। इसके लिए 'समिति' उनके प्रति चिर ऋणी है। मैं श्री चम्पालाल 'मजुल' के प्रति भी हार्दिक आभार अर्पित करता हूँ जिन्होंने छः मास निरंतर परिश्रम करके वर्तमान पाँडुलिपि के 'पाठान्तर दोप' को दूर करके रचनाओं को शुद्ध रूप दिया। समिति के लायब्रेरीयन श्री प्रभुलाल गोयल ने जिस तत्परता से इस ग्रन्थ के लिए दो मास काम किया, वह सराहनीय है।

श्री नारायनलाल प्रधानाध्यापक रा० मा० विद्यालय जघीना और श्रीरमेशचन्द्र चतुर्वेदी अध्यापक रा० मा० विद्यालय अवार ने अपना अमूल्य समय देकर इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने तथा प्रूफ पढ़ने मे योग दिया, इस लिए समिति उनकी कृतज्ञ है।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर (राजस्थान)
मकर सक्रांति स० २०१८ वि०

मदनलाल बजाज
प्रधान मन्त्री

सम्पादकीय निवेदन

वैसे तो राजस्थान के पूर्वी सिंहद्वार भरतपुर की गणना राजस्थान के अन्तर्गत ही की जाती है और विशेषतया वर्तमान समय में जब कि बिलीनीकरण के अनन्तर यह उसका एक प्रमुख जिला बन चुका है, किन्तु वास्तव में यह भू-भाग व्रज प्रदेश का ही अंग है, और अति प्राचीन काल से यह व्रज भाषा, व्रज साहित्य और व्रज-संस्कृति का एक सुविख्यात् गढ़ माना जाता रहा है। एक समय था जब मथुरा, बृन्दावन और गोवर्धन आदि भरतपुर राज्यान्तर्गत थे और यहां के नरेशों की बिजय पताका समस्त व्रज-प्रान्त पर फहराती थी। यहां के नरेश 'व्रजेन्द्र' कहलाते थे और हिन्दी तथा हिन्दुत्व के रक्षक और उन्नायक माने जाते थे। जहां ये नरेश अद्भुत शौर्य एवम् पराक्रम के लिए प्रसिद्ध थे, वहां कला-प्रेमी और साहित्य मर्मज्ञ होने के लिए भी। इनमे से अधिकांश कवि थे और जो कवि न थे, वे काव्य प्रेमी अवश्य थे और कवियों को आश्रय देते थे। ऐसा अनुकूल वातावरण पाकर यहाँ अनेक जाज्वल्यमान ग्रहों का अभ्युदय हुआ, जिन्होंने न केवल व्रज साहित्याकाश को अपनी काव्य प्रतिभा से देदीप्यमान ही किया अपितु साहित्य की अभिवृद्धि एवम् विकास में स्पृहणीय योग भी दिया। चन्द्र और सूर्य के समान महाकवि सोमनाथ और सूदन ने क्रमशः शृंगारिक एवम् शौर्य, कमल तथा कुमुदवन को विकसित कर अनेकों कवियों को काव्य सृजन की प्रेरणा दी। इन कवियों की अमर वाणी व्रज साहित्य की अमूल्य निधि ही नही वरन् अभिन्न अंग भी है, क्यों कि इन काव्य ग्रन्थों से साहित्य की श्रीवृद्धि के साथ २ उसके प्रचार एवम् प्रसार में पर्याप्त योग मिला। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि व्रज साहित्य की उन्नति मे भरतपुर वासियों को उतना ही श्रेय है जितना मथुरा वासियों को। भरतपुर जितना व्रज भाषा पर गर्व करता है उतना ही व्रज भाषा भरतपुर के कवियों पर भी।

व्रज भाषा के उत्तरालंकृत-काल (१७९१—१८८९) के पाँच उप विभागों में से तीन के प्रमुख कवियों-देव, सूदन और पदमाकर-का भरतपुर से विशेष सम्बन्ध रहा है। वर्तमान-काल में व्रज भाषा के गौरव सत्यनारायन 'कविरत्न' ने भी अनेको वर्ष भरतपुर में रहकर काव्य सृजन किया।

भरतपुर राज्य को स्थापित हुए तो केवल २३९ वर्ष ही हुए है, किन्तु इससे बहुत दिन पूर्व यह भू-भाग साहित्य सृजन के लिए पर्याप्त उर्वर रहा है। यह भूमि, जहाँ आजकल भरतपुर बसा हुआ है, अति प्राचीन काल से कवियों को

जन्म देती रही है। वर्तमान राज्य वंश के पूर्वज भी हिन्दी के शैशव काल से ही कवियो को आश्रय देकर हिन्दी की निरंतर अक्षुण्य सेवा करते रहे हैं। विक्रम की ११ वी शताब्दी मे बयाना मे वर्तमान राज्य वंश के पूर्वज विजयपाल नामक यदुवंशी नरेश राज्य करते थे। इन्ही नरेश ने प्रसिद्ध यवन आक्रमणकारी महमूद गजनवी के भांजे सालार मसूद गाजी तथा अबूबकर-कंधारी जैसे आततायियो का, हिन्दू धर्म की रक्षा के हेतु, अपूर्व शौर्य एवम् कौशल से सामना किया था। वीर होने के साथ २ ये बड़े रसिक और काव्य प्रेमी भी थे। इनके इस युद्ध का मार्मिक वर्णन 'विजयपाल-रासो' नामक ग्रन्थ मे प्रसिद्ध कवि नल्लसिंह ने किया है। यह ग्रन्थ प्रारम्भिक हिन्दी-काव्य का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है।

वर्तमान राज्य के स्थापित होने से बहुत दिन पूर्व १७ वी शताब्दी मे सुकवि प्रसविनी भरतपुर भूमि ने प्रसिद्ध कवि टहकन को जन्म दिया जिन्होने संस्कृत महाभारत के 'जैमिनाश्वमेध' अंश को सरल और सरस भाषा मे अनुवाद कर जन साधारण को सुलभ बनाया।

औरङ्गजेब की धर्मान्धतापूर्ण नीति के परिणाम स्वरूप सन् १७२२ ई० मे महाराज बदनसिंह ने भरतपुर राज्य की स्थापना की और यहाँ के शासन एवम् राज्य विस्तार का भार रणबाँकुरे युवराज सूरजमल (सूदन-कृत सुजान चरित्र के नायक) को सौंपा गया।

भरतपुर के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि राज्य के संस्थापक महाराज बदनसिंह सरस कवि थे और कवियो को आश्रय भी देते थे। जिस राज्य का कर्णधार स्वयं काव्य प्रेमी हो वहाँ कविता का विकास क्यो न हो ? बदनसिंह की इस साहित्यिक अभिरुचि का इनकी संतति पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। इनके दो पुत्र सूरजमल और प्रतापसिंह, जो क्रमश भरतपुर और वैर के शासक थे, बड़े काव्य प्रेमी थे और दोनो ने ही अपने समय मे ललित कलाओ को श्लाघनीय प्रोत्साहन दिया। यदि दीग के भव्य भवन सूरजमल की कलाप्रियता का अक्षण्य यशोगान करते हैं तो वैर के सुन्दर महल, नोलखा बाग और फुलवारी प्रतापसिंह की कीर्ति का। यदि महाकवि सूदन ने अपने आश्रय दाता सुजान के शौर्य वर्णन के लिये 'सुजान चरित्र' की रचना की तो आचार्य सोमनाथ ने प्रतापसिंह की सरस प्रवृत्तियो की तुष्टि के लिये मनोमुग्धकारी 'रस पीयूष निधि' ग्रन्थ की। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ मे सोमनाथ और सूदन को समकालीन होते हुए भी दो विभिन्न कालो के उन्नायको के रूप मे प्रदर्शित किया गया है। शौर्य काव्य की दृष्टि से सूदन तो महाकवि है ही, किन्तु काव्य प्रतिभा के साथ २ जिस आचार्यत्व गुण का होना अपेक्षित होता है वह महाकवि सोमनाथ मे देखने को मिलता है।

इन दोनों महाकवियों द्वारा श्रृंगार और शौर्य की जो धाराएं प्रवाहित की गई वे साहित्य प्रेमी मानम को अपनी सरम लहरियों से आप्लावित करती हुई उद्दाम वेग से प्रवाहित होने लगी और इनके युगल सजल तटों पर आसीन कवि विहंग रस सीकरों का पान कर अनिर्वचनीय आनंद का अनुभव करने लगे। कुछ काल के अनन्तर नगर निवासी भागीरथ रूपी राम कवि ने भक्ति रस रूपी सुर सरिता को प्रवाहित किया जिससे भरतपुर की काव्य धारा को नया मोड़ मिला। शौर्य श्रृंगार और भक्ति की यह त्रिवेणी इतने वेग से उत्तरोत्तर बढ़ी कि इसका प्रवाह आज तक जन मानस को रसानुभूति करा रहा है।

यह त्रिवेणी वहने ही पाई थी कि समय परिवर्तित होने लगा। अंग्रेजों के अत्याचारो के परिणाम स्वरूप जनता में राष्ट्रीय भावना का अभ्युदय हुआ। पद्य के साथ २ गद्य का प्रचलन बढ़ा और ब्रज भाषा के स्थान पर शनैः २ खडी बोली को प्रोत्साहन मिलने लगा। ऐसे संक्रमण काल में श्री गोकुलचन्द दीक्षित जैसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यिकार उत्पन्न हुए, जिन्होंने कहानी, नाटक, इतिहास, दर्शनशास्त्र आदि गद्य रचनाओं द्वारा साहित्य की श्रीवृद्धि की। इस प्रकार वर्तमान काल के प्रारम्भ होते ही कवियों ने ब्रज और खड़ी दोनों भाषाओं में काव्य सृजन प्रारम्भ कर दिया। अब जहाँ डा० रांगेय राघव खड़ी बोली में सामयिक रचना कर भरतपुर के साहित्यिक क्षेत्र को गौरवान्वित कर रहे है वहां श्री चम्पालाल 'मंजुल' और श्री कुलशेषर आदि कवि ब्रज भाषा की सरस रचनाओं द्वारा भगवती वीणापाणि की अर्चना करने में संलग्न है। इस प्रकार सारस्वती के इन वरद पुत्रों ने भरतपुर में जन्म लेकर जो अमर काव्य रचना की है वह केवल भरतपुर को ही नही वरन् समस्त हिन्दी जगत के लिए एक अमूल्य देन है।

शारदा के इन सुपुत्रों की वाणी के अमरत्व को सुरक्षित बनाये रखने की दृष्टि से हिन्दी साहित्य समिति के स्थापन काल से ही अनेक भागीरथ प्रयत्न किए जारहे है। सर्व प्रथम सन् १९११–१२ में यहाँ के तत्कालीन साहित्यकार श्री मयाशंकर याज्ञिक और विद्यारत्न अधिकारी श्री जगन्नाथदास विशारद ने भरतपुर के प्राचीन कवियों के ग्रन्थों की शोध की और अनेक अमूल्य ग्रन्थ ढूढ़ निकाले। इन्ही ग्रन्थों में सोमनाथ कृत 'माधव विनोद' नामक ग्रन्थ मिला, जिसे पढ़कर श्री सत्यनारायन कविरत्न को 'मालती माधव' लिखने की प्रेरणा मिली। खेद का विषय है कि अनुकूल परिस्थित न होने के कारण ये शोध कार्य स्थगित हो गया और प्राप्त ग्रन्थ भी श्री मयाशंकर याज्ञिक के पास ही रह गए सुने जाते है। इसके अनन्तर सन् १९३७ ई० के आरम्भ में श्री बालकृष्ण दुबे ने इस कार्य को नवीन ढंग से करने का स्मरणीय पग उठाया। उनके देख रेख मे सर्व श्री वैद्य देवी प्रकाश, कविवर नन्दकुमार, प्रेमनाथचतुर्वेदी, प्रभुदयाल 'दयालु' तथा मा० प्रभुलाल

गोयल ने बडी तत्परता से कार्य किया और अथक परिश्रम के पश्चात् 'भरतपुर कवि स्मारक ग्रन्थ' प्रकाशित करने के लिए पर्याप्त सामिग्री एकत्रित करली, किन्तु दुर्भाग्यवश यह स्मारक ग्रन्थ प्रकाशित न हो सका और कुछ सामिग्री स्वर्गीय कविवर नन्दकुमार के पास ही रह गई। स्वर्गीय दुबेजी हताश न हुए और वे सर्व श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी, प्रभुदयाल 'दयालु', प्रभुलाल गोयल, चम्पालाल 'मजुल' तथा कवि हरीश आदि के सहयोग से प्राचीन कवियो का जीवनवृत और उनकी कविताओ के उद्धरण पुन सकलित करने मे जुट गये, किन्तु दुबेजी की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण स्मारक ग्रन्थ की पाण्डुलिपि तैयार न हो सकी और न यह ग्रन्थ मुद्रित ही हो सका।

सन् १९५५ ई० मे 'समिति' के सभापति पद का कार्य भार सम्हालने के अनन्तर मेरी भी यह उत्कट अभिलाषा हुई कि यहा के कवियो के 'स्मारक ग्रन्थ' को शीघ्रातिशीघ्र सम्पादित कर स्वर्गीय दुबेजी के स्वप्न को साकार करू किन्तु 'समिति' के नवीन भवन के निर्माण-कार्य मे व्यस्त हो जाने के कारण मैं अपने विचारो को मूत रूप न दे सका। दिनाक १७-१०-६० की कार्यकारिणी की बैठक मे मेरे साथियो ने मुझे यह कार्य अविलम्ब सम्पादित करने को विवश किया। अत मित्रो के आग्रह के फलस्वरूप मैंने यह कार्य शीघ्र प्रारम्भ कर दिया, परन्तु इसको जितना सरल समझे हुए था उतना न निकला। प्राचीन कवियो की रचनाए तो थी, किन्तु प्रतिलिपिको की असावधानी के कारण काव्य सम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ आगई थी जिनका निराकरण करना अनिवार्य था, दूसरे वतमान-काल के बहुत से कवियो के जीवन-वृत तथा रचनाए भी न थी और प्राचीन कवियों के जीवन वृत्तान्त भी पुन लिखने को थे। इस काय मे सहयोग देने के लिए मैंने श्री प्रभुदयाल जी 'दयालु' से निवेदन किया। श्री 'दयालु' ने बडो तत्परता से काय प्रारम्भ किया, किन्तु अन्य कार्यों मे व्यस्त हो जाने के कारण वे अधिक समय न दे सके। ऐसी स्थिति मे मेरे पुराने मित्र श्री चम्पालालजी 'मंजुल' ने सक्रिय कदम उठाया और छ मास का अथक परिश्रम करके प्राचीन कवियों की रचनाओ को उनकी मूल प्रतियो से (जो समिति के पुस्तकालय मे एकत्रित की हुई थी) मिलाकर शुद्ध किया। यथार्थ मे यदि मजुलजी' जैसा काव्य मर्मज्ञ इतना परिश्रम न करते, तो यह कार्य असम्भव तो नही, कठिन अवश्य था। समिति के लाइब्रेरियन श्री प्रभुलाल गोयल का भी पर्याप्त सहयोग मिला।

जैसा पहले कहा जो चुका है, यह ग्रन्थ बहुत जल्दी मे तैयार करना पडा है। अत प्रूफ सम्बन्धी भूलो के अतिरिक्त वर्तमान-काल के अनेक प्रतिभा सम्पन्न कवियो के वृतान्त जल्दी मे रह गए होगे। आशा है सहृदय पाठक इन त्रुटियो के लिए मुझे क्षमा करेंगे।

यदि इस 'कुसुमांजलि' के अवलोकन से भरतपुर के कवियों की हिन्दी साहित्य को देन और उनका अन्य कवियों के बीच स्थान निर्धारित हो सका तथा हिन्दी जगत के मनीषियों को भरतपुर के कवियों पर शोध-कार्य के लिए कुछ भी प्रेरणा मिल सकी, तो मैं अपने इस प्रयास को पर्याप्त सफल समझूंगा।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर (राजस्थान)
मकर संक्रांति सं० २०१८ वि०

डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त

प्रकरण १

सोमनाथ–काल

महाकवि सोमनाथः–भरतपुर राज्य वंश के आश्रय में रह कर ब्रज-भाषा काव्य को पल्लवित एवम् पुष्पित करने वाले कवियों में महाकवि सोमनाथ प्रमुख हैं। ये 'शशिनाथ' 'सोमनाथ' और 'नाथ' नाम से काव्य रचना किया करते थे।

महाकवि सोमनाथ के जन्म एवम् कविता काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है। मिश्रबन्धु विनोद के अनुसार इन्होने अपना प्रमुख रीति ग्रन्थ "रस पीयूषनिधि" भरतपुर राज्य के संस्थापक महाराजा बदनसिंह के शासन काल में सं०१७९४ की ज्येष्ठ वदी १० को पूर्ण किया, परन्तु ठाकुर शिवसिंह सेंगर इनका जन्म संम्वत् १८८० विक्रम बतलाते हैं। हम ठाकुर साहब के मत से सहमत नहीं है क्यों कि "रस पीयूपनिधि" निश्चित रूप से महाराजा बदनसिंह के समय मे लिखा गया और महाराजा बदनसिंह का शासन काल सं० १७७५ विक्रमी से १८१२ विक्रमी तक ही रहा। इसलिये मिश्रबन्धु-बिनोद का मत ही उचित ठहरता है। इनके मरणकाल के विषय में भी कुछ नहीं कहा जा सकता।

इनका जन्म मथुरा नगर के चतुर्वेदी (छिरौरा) वंश में हुआ था। इन्होंने अपने वंश के सम्बन्ध में लिखा है कि छिरौरा वंशी नरोत्तम मिश्र के देवकीनन्दन एवं कण्ठ नामक दो पुत्र थे। देवकीनन्दन के नीलकण्ठ, मोहन, महामणि और राजाराम नामक चार पुत्र हुए, जिनमें नीलकण्ठ के उजागर, गंगाधर और सोमनाथ उत्पन्न हुए। नरोत्तम मिश्र जयपुर नरेश महाराजा रामसिंह (राज्यारोहण-काल संवत् १७२४) के मंत्र-गुरु थे। सोमनाथ जी के पिता नीलकण्ठ मिश्र अपने समय के प्रसिद्ध कवियों व ज्योतिषियों में गिने जाते थे।

बाल्यकाल श्री कृष्ण भूमि मथुरा में व्यतीत कर सोमनाथ जी नवाब आजमखां के यहाँ गये और उनके लिये इन्होने 'नवाबोल्लास' नामक ग्रन्थ की रचना की। तत्पश्चात् ये महाराजा बदनसिंह के कनिष्ठ पुत्र प्रतापसिंह जी के आश्रय में आकर स्थायी रूप से भरतपुर में रहने लगे। यही पर इन्होंने अनेक

सुन्दर ग्रन्थो की रचना की। बदनसिंह के बडे पुत्र इन दिनो युवराज थे और प्रतापसिंह को वैर की जागीर व किला मिला हुआ था, जहा वे रहते थे। इनके वंशज अभी तक भरतपुर मे रहते हैं। उन्हें राज्य की ओर से दानाध्यक्ष का पद प्राप्त है तथा खानपान आदि मिलता है। इनके निम्न हस्त-लिखित ग्रन्थ मिलते है —

(१) नवाबोल्लास	(नवाब आजमखाँ के लिये) लिखित
(२) शशिनाथ-विनोद	(शिव विवाह)
(३) रामकलाधर	(अध्यात्म रामायण)
(४) रस-पीयूषनिधि	(रीति ग्रन्थ)
(५) ध्रुव-विनोद	(ध्रुव चरित्र)
(६) राम-चरित-रत्नाकर	(वाल्मीकि रामायण का अनुवाद)
(७) माधव-विनोद	(मालती माधव का अनुवाद)
(८) रास-पचाध्यायी	(कृष्ण लीलावती)
(९) सग्राम-दर्पण	(ज्योतिष पर विचार)
(१०) प्रेम-पच्चीसी	
(११) रस-विलास	(नायिका भेद)
(१२) सुजान-विलास	(सिंहासन बत्तीसी का अनुवाद)
(१३) व्रजेन्द्र विनोद	(भागवत उत्तरार्द्ध)

सोमनाथ का सभी साहित्य व्रज भाषा काव्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है, किन्तु खेद का विषय है कि यह अभी तक अप्रकाशित है। इनका 'रस-पीयूषनिधि' रीति का अपने ढग का अकेला ग्रन्थ है जिसकी मिश्र बन्धुओं ने भी अपने 'मिश्रबन्धु-विनोद' मे भूरि भूरि प्रशसा की है। इसमे कवि ने पिंगल, काव्य लक्षण, प्रयोजन, कारण और भेद, पदार्थ-निर्णय, ध्वनि, भाव, रस, रसाभास, भावाभास, दोष, गुण, अनुप्रास, यमक, चित्र-काव्य तथा अन्य अलंकारो का बोधगम्य सरस वर्णन किया है। इस दृष्टि से यदि इन्हे हिन्दी रीति-शास्त्र का मम्मटाचार्य कहदे तो अत्युक्ति न होगी। पदार्थ-निर्णय मे देव की भाँति इन्होंने भी वाच्य, लक्ष्य और व्यग्य के अतिरिक्त तात्पर्यार्थ भी माना है। रस का लक्षण कितना यथार्थ है —

> सुनि कवित्त को चित्त मधि, सुधि न रहै कछु और।
> होय मगन वहि मोद मे, सो रस कहि सिर मौर ॥

इस ग्रन्थ मे नायिका भेद विस्तार पूर्वक वर्णित है। सर्वत्र इनकी बहुज्ञता की छाप मिलती है। भाषा मे प्रौढता के साथ साथ सरलता, शैली की रोचकता

और सरसता तथा वर्णनों की सजीवता देखते ही बनती है। इनकी रचनाएं गुर्जर समाज में बड़े चाव से पढ़ी-सुनी जाती हैं। रसो के विवेचन में प्रतापसिह के हाथी, घोड़ों का वर्णन अच्छा बन पडा है। सोमनाथ ने दशांग कविता को अकेले इसी ग्रन्थ मे वड़ी कुशलता पूर्वक प्रस्तुत किया है।

रीति-आचार्यों में इनके स्थान के सम्बन्ध में मिश्र-वन्धुओं ने अपने विनोद में जो विचार प्रकट किये है उनको ज्यों का त्यों उद्धृत कर हम हिन्दी-संसार से निवेदन करते है कि वह इनके साहित्य का अध्ययन और प्रकाशन करें ब्रज भापा साहित्य की श्री-वृद्धि करें।

"श्रीपति और दास जी के सिवा इनका (सोमनाथ का) रीति ग्रन्थ प्राय. और सव आचार्यों के रीति ग्रन्थो से रीति के विषय में श्रेष्ठतर है। प्रत्येक विषय को जैसी साफ और सुगम रीति से इन्होंने समझाया है, वैसा कोई भी कवि नही समझा सका है। कविता से अपरिचित पाठक भी इस ग्रन्थ को पढ़ कर दशांग कविता समझ सकता है। हमारी समझ में आचार्यत्व की दृष्टि से देखने पर केवल चार सत्कवियो ने दशांग कविता का वर्णन स्पष्ट और सुन्दर किया है, अर्थात, देव, श्रीपति, सोमनाथ और दास। इन सबमें समझाने की रीति सोमनाथ की प्रशसनीय है। केशवदास और कुल पति मिश्र भी आचार्य हैं परन्तु उन्होने एक तो दशांग कविता नही की, और दूसरे इन दोनों की कविता कठिन है। रसपीयूषनिधि काव्योत्कर्ष में भी प्रशंसनीय है। आकार में यह दास के काव्य निर्णय से सवाया होगा।"

इनकी भापा, भाव और छन्द प्रयोग के सम्बन्ध में मिश्र वन्धुओ ने लिखा है:—"सोमनाथ की भापा शुद्ध ब्रज भापा है। उसमें संयुक्ताक्षर वहुत कम पाये जाते है और समस्त ग्रन्थ बहुत ही मधुर भाषा में लिखा गया है। इनको यमक, अनुप्रास आदि का इष्ट न था और यह उचित रीति से अपनी कविता में उनका व्यवहार करते थे। शब्दो के स्वरूप मे ये शुद्ध सस्कृत के स्थान पर हिन्दी की रीति अधिक पसन्द करते थे। वृन्दावन की जगह विदावन लिखते थे। इनकी कविता मे प्रकृष्ट छन्दों की सख्या वहुत अधिक न मिलेगी, परन्तु इनकी रचना निर्दोष है और एक रस बनती चली गई है, ऐसा नही कि कही बहुत उत्तम हो और कही शिथिल पड़ गई हो। ये देव और मतिराम की भांति चमत्कारिक छन्द नही लिख सकते थे, परन्तु इनकी भाषा बहुत ही सन्तोष जनक है। आप दास जी के समकक्ष कवि है।" (मिश्रवन्धु-विनोद द्वितीय भाग पृष्ठ ७०६)

इनकी कृतियों में से कुछ उदाहरण लीजिये —

नवावोल्लास

ईद वर्णन

कंत अवनी को गुनवंत गाजी आजमखां,
ईद मान इन्द्र को विलास परसत है ।
बाजत मृदंग बीन मधुर मधुर मंजु,
तानकी तरंगन सों रंग दरसत है ॥
कुन्दन लता सी स्यामी काम कदली सी बाल,
नृत्यत अनंत अंग रूप सरसत है ।
नजर विनद सों गयंद उमगत रीझि,
करन सौं कंचन को मेह बरसत है ॥

बकरीद वर्णन

पण्डित परम गुन मण्डित विबुध जिमि,
उच्चरत विमल कवित्त गुनवेश के ।
नृत्यत अनेक नृत्य कारक अनत गति,
गावत सुघर सम किन्नर सुवेश के ॥
सोमनाथ कहत मुबारकी चहूँधा चारु,
आये सो चतुर नरेश देश देश के ।
आजमखां गाजी को विलोक बकरीद आज,
फीके होत सुघर समाज अमरेश के ॥

दशहरा वर्णन

(इस छन्द के प्रथम तीन चरण ही मिले है चौथे की पूर्ति सोमनाथ जी की न होकर छन्द पूर्ति-मात्र है)

मोहे आज सरस सभा मे दसहरा मान
आजमखां आय पुरहूत सो प्रवीनो है ।

दान दे कविंदन गयंदन हयंदन के,
जानें सुख सुयस गुलाम कर लीनों है ॥
सो छवि अखंड महि मंडल के जीतिवे कों,
मानहु विरंच अवतंस यह दीनों है ।
'सोमनाथ' वरनत दशहरा सुप्रसन्न ह्वै कें,
ठाट वाट देखि के अतीव मन चीनों है ॥

दिवाली वर्णन

सरस दरस की दिवारी मान आज़मखां,
राजत मनोज की निकाई निदरत है ।
जगर मगर दिसा दीपन सो कर राखी,
तिनै पेखि दुजन पतंग पजरत है ॥
छूटत छवीलौ हथ-फूलन को वृंद तामें,
ताकी दुति देखि हिये आनंद भरत है ।
सो छवि अनद मानों पावक प्रताप-तरु,
फूल्यो ताकै चहुँघा तै फूल ये झरत है ॥

शशिनाथ--विनोद

छप्पय

शरद छटा सौ अंग पीत शिर जटा-जूट धर ।
तापर वसत भुजंग तुंग गंगा-तरंग वर ॥
चन्द्र लिलार अमंद तीन दृग कोटि कष्ट-हर ।
भूत पास अट्टास और श्री विधि विलास कर ॥
अरु मुण्डमाल कंकाल कर, कंठ विसाल कराल गर ।
इहि विद्धि लख्यौ 'शशिनाथ' को, जग प्रसिद्ध सब सिद्ध धर ॥

कवित्त

जरद जटान में विसाल जिमि गंगधार,
हार शेष हिरदें त्रिनैन रूप न्यारे कौ ।
गरल गरे में जोर जाहर जलूस वारी,
आधे अंग तरुनी सनेह के पत्यारे कौ ॥
'सोमनाथ' एरे उर अंतर निहारि भव,

-नागवार ताग्न हू को कर्ता-हुस्यारे को ।
सम म्गारे-को लिलार पर धारे ज्योति
चन्द की कला की वा पिनाकी-प्रान प्यारे को ॥

रामकला-धर

बटी चौपाई

श्री बदनसिंह ब्रजमण्डन नायक जग जाको जस छायो ।
ताको कुवर प्रतापसिंह वर ग्रानन्दन अधिकायो ॥
तिहि निमित्त कवि 'सोमनाथ' ने रामचरित्र बनायो ।
रामकला वर नाम ग्रन्य को प्रथम मयूप लसायो ॥
कर जोडे ठाढे हनुमन्ताहि ग्रापु राम जो बोले ।
सुनि अब तत्व कहतु हो तो, सो मेरे भक्त अमोले ॥
एक ग्रातमा अरु ग्रनातमा परमातमा सु तीजो ।
जीवरु प्रकृति ब्रह्म क्रम ही तु तीनों उर गुनि लीजो ॥
तीन भेद हैं जैसे नभ के डीठि सबन के ग्रावै ।
महाकास है पहिलो दूजो घटा कास छवि छावै ॥
अरु प्रतिबिंब तीसरो भेद सुश्रुति प्रगट बखान्यो ।
इही भाँति चैतन्य तीन विधि 'सोमनाथ' ने गान्यो ॥

सवैया

हे रघुनाथ दयाल सुनो अब मैं निहचै तुव पाँइ पखारि हों ।
काठ औ पाहन मे कहा भेद, मनुष्य करें नहि और विचारि हों ॥
ए पद पकज रावरे के, तिनकी यह बात क्यो धीरज धारि हों ।
यो कहि के पग ओड मलाह ने फेरि कह्यो अब पार उतारि हों ॥

दोहा

भये अविद्या ते प्रगट, देहादिक समुदाय ।
तिनमे चेतन शक्ति सो, प्रतिबिम्बति है आय ॥
जीव लोक के मध्य ह्यां, जीव कहत सब ताहि ।
विगत अविद्या ब्रह्म ही, ज्ञानी लखत उछाहि ॥
देह बुद्धि मन प्रान को, जब लों है अभिमान ।
तब लो कर्ता भोगता, सुख दुख को सुनिदान ॥

परं ब्रह्म को नाँहिनें, यह संसार विचार ।
तुम में नाहिंअजान कौ, लेस जगत भरतार ॥
हम संसारी हैं सबै, सने महा अविवेक ।
तुम चैतन्य सदा अमल, आनंदमय प्रभु एक ॥

रस-पीयूषनिधि

गीतिकाछन्द-लक्षणम्

सगन जगन जुग भगन पुनि रस गन लघु गुरु होय ।
बीस बरण यों गीतिका बरनैं कवि सब कोय ॥

उदाहरण

परसै सुहातन फूल चन्दन अंग अंग अर्चैन हैं ।
दिन रैन एक सुभाय सौं नित पंथ हेरत नैन है ॥
'शशिनाथ' प्रीतम साँवरे कब आय मोद बढ़ाय हैं ।
बरसाय मेह सनेह कौ मुसक्याय कंठ लगाय है ॥

संयोगशृंगार-लक्षणम्

दम्पति मिलि विहरत जहाँ, मन्मथ कला प्रवीन ।
ताहि संजोग सिंगार कहि, वर्णत सुकवि कुलीन ॥

उदाहरण

जगमगै जटित जवाहर कौ परजंक,
फूले से अनुपम बिछौना सरसात है
तहां ऐन मैन रति काम से सुघर सजै,
मरगजै वसन औ भूषन लसात है ।
'सौमनाथ' कहै चित्त चाइन सौं मोद भरे,
प्रेम रस रंगन की बातें बतरात हैं ।
गलबाहीं दम्पति परस्पर दै प्रात आजु,
रगमगी आँखिनि निरखि मुसिक्यात हैं ॥

अथ रूपकातिशयोक्ति-लक्षणम्

केवल जह उपमान को कहिबो है सुखदानि।
'रूपक अतिशय उक्ति'सो रसिक लेहु पहिचानि ॥

उदाहरण

थर हरे कुन्दन कदलि अरविन्दन पै,
गुजरत भँवर समीप सरवर है।
फरकत कोक सुरसरि की तरग मग
भेटति कलप वेलि काम तरुवर है ॥
विद्रुम सुरगनि मे हीरा की जगत जोति,
'सोमनाथ' कहै सो मधुरता को घर है।
देखो लसै दामिनी न छत्र जल-धर माहि,
नक्षत्रपति अक मे विचित्र दिनकर हैं ॥

विभावना लक्षणम्

विना हेतु जह कारज सिद्धि।
सो विभावना जान प्रसिद्धि ॥

उदाहरण

अलवेली रुचि सों रही उही वदन की छांह।
बिन ही पिय निरखै हरषि-विहँसि पसारै बाह ॥

विट सखा लक्षणम्

काम केलि की वात अरु दूतपने मे ठीक
लच्छन ये विट सखा के बरनत हैं कवि नीक ॥

उदाहरण

काहे को गुलाब सानि केसर लगाई अग,
सग मलियागिरि के नेक ना सिरायगी।
फूलन की पाखुरी विछाये ते न ह्वै है कछु,

'सोमनाथ' प्यारे सौं न कीजै अभिमान प्यारी,
ऐसे उपचार विथा और अधिकायगी ।
वैद ब्रजचन्द कौ सरूप रस चाखौ चलि,
अंतर के जुर की जरन घटजायगी ॥

ध्रुव विनोद

छप्पय

उज्वल मृदु अंग अंग, जगमगै कमल बदन अति ।
हरि-रस मत्त विशाल, लाल लोचन चंचल गति ।
शीश लटूरी कुटिल, जनेऊ तुलसी माला ।
तिलक भाल करवीन वसन, कटि तट मृग-छाला ।
कहि 'सोमनाथ' उद्दार अति, हौनहार को ज्ञान गुनि ।
वर बुद्धि विशारद सिद्धि-निधि, दरसे नारद देव मुनि ॥

पद्धरि छन्द

तुम चरन भजत जे प्रभु दयाल ।
तिनकों न और आशिष विशाल ॥
यातें तुम हमसे दीन जाँनि ।
यों रक्षा करियै नेह साँनि ॥
जिहि विद्ध प्रसूता-प्रथम गाय ।
निजु वच्छा कों पालति सुभाय ॥
तुम विरह दीन वत्सल सुजान ।
हम हैं अधीन अनसावधान ॥

दोहा

यों जब ध्रुव ने जोरिकर, प्रभुसौं उचरे वैन ।
धन्नि धन्नि कहि हरि तबै, बोले हरषत चैन ॥

पादाकुलक छन्द

बह्यौ छीर छतिया तै धारनि ।
अरु अंसुवनि की धार अपारनि ॥

मारे मुनीनि और ध्रुव छौना ।
भीजगये श्रमुवन गहि मौना ॥

मत्त—गयन्द

सुन्दर मन्दिर अवरे औ, वहु रग तुरग मतग अमाने ।
कचन के मनि मडित साज सजे तरुनी अरु पुत्र सयाने ।
वाग वडे कल्पद्रुम के 'गनिनाथ' जुदेले मनोरथ दाने ।
ते ध्रुव माने नही अपने सपने के समान सवै पहिचाने ॥

रामचरित-रत्नाकर

कवित्त

जैसे तेजवन्तनि मे उद्धत प्रभाकर औ,
पव्वयनि मध्य हिमवत ज्यो पहार है ।
सिन्धुन के मध्य ज्यो गम्भीर छीरसागर है,
नरन मे त्यो तुम, न विक्रम को पार है ।
रामचन्द्र सुनो रावरे के, सम कोऊ अरु,
जग मे न दूजो यह वात निरधार है ।
वरुन कुवेर न असुर जक्ष नाग जम,
पावक समीर न पुरदर उदार है ।

नाराच छद

चली सुचारु शैल ते अनन्त नीर-धार है ।
भमे प्लवङ्ग वीर औ मतग वार वार है ॥
कपे प्रचण्ड वृक्ष डार पात मूल तच्छने ।
चढ्यो महेन्द्र पे जवै समीरनन्द रच्छने ॥
अनेक रग की चली अनेक धार छुट्टिकै ।
अनिन्दता गिरिन्द्र की गई शिला सुफुट्टि कै ॥
मनस्सिला शिला त्रिधातु हरिताल सौं मिली ।
समीरनन्द वीर के प्रचण्ड पग सौ भिली ॥
भविष्य नाग चप्पिकै शिलानि दुख मण्डनै ।
स धूम ज्वालसी लगै सुज्वाल मुक्ख छण्डनै ॥

भजे गधर्व नाग वृन्द बुद्धि चित्त धारि कैं।
हुतै महा करक्क सौ सुयान कौ विसारि कै ॥

छप्पय

चण्ड फुरुहरी मंडि चरन उद्दंड मचक्कै।
विकट कर्ण संकोचि पुच्छकरि उच्च उचक्कै।
चल्यौ व्योम के पंथ कपिनि कुंजर बल मंड्यौ।
हनूमन्त उद्दाम चित्त आनन्द घमंड्यौ।
दव्यौ महिन्द्र पव्बे सबै शृंगे गई दरक्कि कै।
च्वै चल्यौ नीर चहुँ ओर तै सरिकी सिला करक्कि कै॥

माधव—विनोद

झमकतु वदन मतङ्ग कुम्भ उत्तंग अंग वर।
वन्दन वलित भुशुण्ड कुंडलित शुण्डि सिद्धि धर।
कंचन मनिमय मुकुट जगमगै शुभ्र शीश पर।
लोचन तीन विशाल चारि भुज ध्यावत सुरनर।
'शशिनाथ' नन्द स्वच्छन्द नित, कोटि विघन छरछन्द हर।
जय बुद्धि विलन्द अमन्द द्युति, इन्दु भाल आनन्द कर॥

रास पंचाध्यायी

सवैया

रावरी हाँसी विलोकनि सौं अरु बाँसुरी की सुनि तान तरेरी।
जागि उठी मनमत्थ की अग्गि छिनो छिन बाढ़त भाँति अनेरी।
सीचौ हमे अधरामृत सौं 'शशिनाथ' कहौ जिनि बात करेरी।
नातरु या विरहानल में जरि होंयगी कान्ह भभूति की ढेरी।
मनमत्थ मनोहर मूरति श्याम न क्यों अबलों दरसावत हौ।
सरसाइ कें नेह भलीविधि सों सुख-मेह न क्यों वरसावत हौ।
'शशिनाथ' गुपाल कहौ कितहौ विरही विरहै परसावत हौ।
यह बात न चाहियें लाल तुम्हें जु हमें इतनो तरसावत हौ॥

संग्राम दर्पण

दिक्शूल कथन (दोहा)

सोम, शनिश्चर वार को, पूर्व न करो पयान ।
दक्षिण को गुरु के दिना, चलिये नहीं सुजान ॥
भानुवार अरु शुक्र को, मति पश्चिम को जाउ ।
मगल अरु बुधवार को, उत्तर दिशा बचाउ ॥
पूरब मे गिनि अग्नि दिशि, नैऋत दक्षिण जान ।
वायव पश्चिम में समभि, ईश उत्तर पहिचान ॥

अथ जय-पराजय ज्ञानार्थ स्वर-प्रश्न कथन [दोहा]

बायें स्वर की चाल मे, बायें प्रश्नक आय ।
पूछे तो सग्राम को, जीते आपु बनाय ॥
योही दक्षिण-स्वर चलन, ओर-दाहिनी आय ।
पूछे तो अनि कष्ट कर, पावै मन की भाय ॥
बध स्वर की ओर कै, पूछै अपनो काज ।
नाम होय तत्कालही, सम्पति सुख को साज ॥

प्रेम पच्चीसी [दोहा]

मगल मूरति विघनहर, सुन्दर त्रिभुवन-पाल ।
खेवट प्रेम-समुद्र के, जै, जै, श्रीनदलाल ॥

रेखता

क्या की थी तकसीर तुसाढा नहि मुखडा दिखलावै है ।
रात दिना बिन तडी चर्चा मुभनू और न भावै है ।
बेदरदी महबूब गिरदे क्यो गिरदगी करदा है ।
'सोमनाथ' नेही मे कैसा दिल अन्दर विच परदा है ॥
वे तुभसे महबूब गुविन्दे नैन असाढे उरझे हैं ।
कौन सकै सुरझाइ इन्होने पै औरोंसे सुरझे हैं ।
बेदरदी पहिचान दरद तू भला दिया ते अरदा है ।
'सोमनाथ' नेही मे कैसा दिल अन्दर विच परदा है ॥

खान पियन दी गल्लें भूली साहस नही ठहरदा है।
विधि का साल बराबर गुजरै निसि दिन आठ पहरदा है ॥
विन तेरा मुख देखे जानी काम कहर अति करदा है।
'सोमनाथ' नेही से कैसा दिल अन्दर विच परदा है॥
दरदवन्द वे मरद कन्हैया जे पन को प्रतपाले हैं।
पाक नजर पहिचान गहगही गुरवे दरद उसाले हैं॥
प्रेम-पन्थ में डग दै जानी अब क्यों हिये अहरदा है।
'सोमनाथ' नेही से कैसा दिल अन्दर विच परदा है॥

रस-विलास

छप्पय

उदय दिवाकर रंग-अंग आभा वर धारिनि।
त्रिनयन चन्द लिलार ईश अरधंग विहारिनि।
सिंह-वाहनी सिद्धि चारि भुज आयुध मंडिनि।
जुग्गिनि मंडल संग चंड दानव दल खंडिनि।
बहु बुद्धि वृद्धि वरदायनी मोहनि सुर-नर मुनि मननि।
हृजै सहाय 'शशिनाथ' को जय जय सिंधुर मुख जननि॥

नायिका-लच्छणम्

दोहा

सुन्दर केलि-कला चतुर, भूषन भूषित अंग।
इहि विधि वरनों नायिका, रस कौ पाइ प्रसंग॥

उदाहरण [कवित्त]

सोहति कसूमी सारी सुन्दर सुगन्ध सनी,
जगमगै देह दुति कुन्दन के रंगसी।
शील सुघराई की सी सीव अरविंद मुखी,
नैनन की गति गूढ तरल तुरंग सी।
छूटति चहूँघा मनि-भूषन मयूष चारु,
'सोमनाथ' लागै वानी उपमा विरंग सी।
राजै रति मंदिर अनंग अंगना सी आजु,
वाढ़ै अंग अंगनि में जोवन तरंग सी॥

सुजान-विलास

सवैया

ग्रामनि मे द्रुम पुञ्ज निकुञ्ज प्रफुल्लित सौरभ की भरनी है ।
नाक प्रभाकर की तनया अरु चारु पदारथ की फरनी है ।
नित्त जपै 'शशिनाथ' हिये जड की रज पापन की हरनी है ।
लोकन यो वरनी वरनी दुख की हरनी व्रज की धरनी है ॥

कवित्त

प्रबल प्रताप दानी बलि सी विराजे जोर,
अग्नि के पीर रोर धमक निसानि की ।
ठट्ट मरहट्टन के निघट्ट डारे बानन सो,
सेस घर लेत है प्रचण्ड बिलगाने की ॥
'सोमनाथ' कहै सिंह सूरज कुमार जाकौ,
क्रोध त्रिपुरारि कौ सो लाज बरबीन की ।
नटिके तुरग जङ्ग रग कर मेलन सो,
तोरि डारी तोबी नरधार, तुरकनि की ॥

२—टहकन कवि —इनके पिता का नाम रगीलेदास था। ये जाति के खत्री और चोपडा गोत्र के थे। इनका निवास स्थान जलालपुर था जो तहसील नगर मे एक प्रसिद्ध गाव है। इन्होंने अपना परिचय स्वय इस प्रकार दिया है —

'टहकन कवि' जलालपुर वासी ।
छत्र धर्म नदलाल उपासी ॥
पिता रगीलदास जग नामा ।
जाति चोपडा कुल अभिरामा ॥
समय पाय कवि गयो सियाही ।
हय क्रतु भाषा करी तहा ही ॥

'टहकन' का कविता काल विक्रम की १७ वी शताब्दी का आरम्भ सिद्ध होता है। इनका बनाया हुआ 'जयमश्वमेध' नामक ग्रन्थ पाया गया है। यह २०×३०/८ साइज का ३७५ पृष्ठ का ग्रन्थ है। इसमे ७३ अध्यायो मे महाभारत के अश्वमेध पर्व की कथा दोहे, चौपाई तथा सोरठो मे लिखी है। ग्रन्थ निर्माण काल अषाढ वदी १३ बुधवार सवत् १७०६ है जिसे स्वय कवि ने इस प्रकार लिखा है—

कवित्त

मोर मुकुट सीस शुभ केसरिया तिलक माथे,
वेसर बनी है नांक मोती ढरकत है।
नगन जटित लोल कुन्डल कपोलन पै,
दशन दमकि छवि कोटिक धरत है।
बांसुरी अधर राजै उर वनमाल साजै,
छुद्र-घंटिका बाजै छवि कही ना परत है।
नूपुर विशाल पग 'टहकन' प्रभु नन्दलाल,
ऐसो ध्यान धरै कोटि पातक टरत है॥

दोहा

प्रश्न कियो रुक्मिनि वहुरि, कहौ कृष्ण समुझाइ।
तीन अवस्था तुम रहे, ब्रज में वसि जदुराइ॥

चौपाई

तीन अवस्था तुम ब्रज रहे, कीने केल जगत सब कहे।
प्रथम किशोर पुगंड कुमारा, तुम गोकुल में कियो विहारा।
पांच वर्ष कौ बालक होई, कहै किशोर अवस्था सोई।
तिह आगे पौगंड वर्ष दस, वर्ष पांच दशलों किशोर रस।
तुम तीनहु ब्रज मांहि विताई, इक दिन हमरे मन यह आई।
ब्रज की विधि जानत बलमाता, तिहि सों पूछ लेहु सब बाता॥

छप्पय

यथा बुद्धि अनुसरी, कियो वर्नन हिय हर्षित।
अश्वमेध गंभीर ग्रन्थ, कवहुती अच्छ मति।
कछुक उक्त बल बुद्धि, कछुक परिकृति हरि दीनी।
बीन बीन शुभ अच्छर, सुभग पोथी शुभ कीनी।
श्री नन्दलाल की कृपासों, हय क्रतु की भाषा करी।
कवि 'टहकन' वुध जन सोधही, जहां चूक बरनन परी॥

३—हरि प्रसादः—आप मिश्र वंश के चतुर्वेदी जाति में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम श्री गंगेश चतुर्वेदी तथा पितामह का नाम श्री मक्खनलाल चतुर्वेदी था। भरतपुर महाराज के आप दानाध्यक्ष थे। हरिप्रसाद प्रारम्भ से ही

काव्यानन्द मे मग्न रहते थे, इसका कारण वातावरण था। इनके पूर्वज काव्य प्रेमी रहे थे। अत आपने भी इस सम्पत्ति को धरोहर रूप मे प्राप्त किया और बचपन से ही काव्य सृजन करते रहे। आपकी महत्वपूर्ण कृति 'भाषा तिलक' उपलब्ध हुई है, किन्तु गणेश वाहनो द्वारा खडित हो गई है। इस पुस्तक के अन्तर्गत 'मिश्र परिवार' का क्रम बद्ध सुन्दर परिचय मिलता है। हिन्दी के साथ २ इनको सस्कृत का अच्छा ज्ञान था।

आपके कविता काल के विषय में विद्वान् एक मत नही हैं। उसका कारण यह है कि उन्होंने अपनी रचनाओ के अन्तर्गत कही भी इसका उल्लेख नही किया है। अत आपका कविता काल अनुमानत सम्वत् १७६० ठहराया है।

इनकी भाषा के विषय मे पाठको को 'भाषा तिलक' मे पूर्ण परिचय मिलता है, जिसमे उन्होने विशुद्ध ब्रज-भाषा, नवीन छन्द एव अलकारो का प्रयोग किया है। इनके काव्य के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है—

असंभव भणित

कवित्त

कमल मृणाल तन्तु, सिव यम, वारि स्वच्छ,
कौरनि समुद्र गामिनी के तट बैठि किनि।
वकुल मुकुल दाम परिमल तोलि तोलि,
सेरनसकेलि अग लाइयतु कहि किनि।
चन्द्रकूप काते सुभ-सीतल समीर गुने,
साजि तजि लाज कहि पियो सुधा पय किनि।
सपन मनोरथ, पथिकै पिय भेटि भेटि,
विन गुन हार हिय ऊपर धरायौ किनि॥

गुंफ नाम शब्दालंकार

दोहा

शब्द निरर्थक हू जहा, रचना ते सुख देय।
गुफ नाम सो जानिये, शब्द विभूषण तेय॥

सवैया

भूल रही मुख पै अलकें, सुकपोलनि झूमति झूमति छाई।
गायन पैंजनि को मन के, कटि किंकिनि घुघरु-स्यो छुतनाई॥
नाच उछाह लिये, लख लालु, जसोमति औ वनिता घिर आई।
थाना थेई, थाना थेई शब्द करन सव ब्राजत ताल सबै मन भाई॥

भारती वृत्ति

कोमल प्रौढ जहाँ रचन, अर्थ सुकोमल आनि ।
कविताई में तिह सरिस, वृत्ति भारती जान ॥

उदाहरण

भृकुटि निकट छिटकी अलक, रही गुलभरी खाय ।
मकरध्वज-धनु सौं लगी, मनु जीवा दरसाय ॥

४—कृष्णलाल भट्ट—'कलानिधि' 'लाल कला निधि' और 'कृष्ण कला निधि' आदि अनेक उपनामों से कविता करते थे। भरतपुर राज के संस्थापक महाराजा वदनसिंह के पुत्र श्री प्रतापसिंह से आपका घनिष्ट सम्बन्ध था, जैसा कि इनकी रचनाओं से विदित होता है.—

'व्रजराज कुवर विराजि है, सु प्रतापसिंह उजागरौ ।
तेहि हेत विरचित कवि 'कलानिधि' चार ग्रन्थ गुनागरौ ॥"

कलानिधि का भरतपुर के अतिरिक्त बूंदी, जयपुर तथा मथुरा आदि में भी रहना पाया जाता है। देवकवि के आश्रयदाता राजा भोगीलाल के यहां भी इनका अच्छा आदर था। इन्होंने राजा भोगीलाल के लिये 'अलंकार कलानिधि' नामक ग्रन्थ लिखा, इनका अधिक समय प्रतापसिंह के आश्रय में ही व्यतीत हुआ। इनके लिये इन्होंने वाल्मीकि रामायण के बाल-काण्ड, युद्ध-काण्ड और उत्तर-काण्ड आदि की भाषा में रचना भी की ।

केशव की भाँति बहुमुखी प्रतिभा व पांण्डित्य का आभास इनमें मिलता है। ये संस्कृत के विद्वान थे। इन्होंने उपनिषदों का 'शंकर भाष्यानुसार' गद्यानुवाद किया है जो प्राचीन हिन्दी गद्य का एक नमूना कहा जा सकता है। महाकवि केशव के समान इन्होंने आचार्यत्व में भी ऊंचा कदम उठाया है जैसा कि इनकी रचना 'शृंगार-माधुरी' एवं 'अलंकार कलानिधि' से विदित होता है इन्होने रामचन्द्रिका की पद्धति पर विविध छन्दों मे वाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद भी किया है। भाषा भावानुकूल सानुप्रासिक एवं ओजस्वनी है। शृंगार में कोई कोई छन्द तो मतिराम के रसराज की टक्कर के हैं। इनका कविता-काल विक्रम संवत् १७६९ से १७९० तक ठहरता है। इनके निम्नलिखित हस्तलिखित ग्रन्थ मिलते हैं:—

(१) शृंगार-माधुरी (बूंदी नरेश बुधसिंह के लिए सम्वत् १७६९ में लिखित)
(२) अलंकार-कलानिधि (राजा भोगीलाल के लिये लिखित)
(३) उपनिषद्सार (इनकी यह पुस्तक स्वान्तः सुखाय मालूम होती है)

(४) दुर्गा माहात्म्य (भरतपुरान्तर्गत वैर के राजा प्रतापसिंह के लिये संवत् १७६० वि० में लिखी गई)
(५) रामायण बालकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड (यह भी राजा प्रतापसिंह के लिये लिखी गई)।

इनके अतिरिक्त संस्कृत में एक 'रामगीता' नामक पुस्तक भी इन्होंने लिखी है जो जयदेव कृत 'गीत-गोविंद' की परिपाटी पर है। माधुर्य की दृष्टि से कहीं कहीं यह जयदेव के समकक्ष दिखलाई पड़ते हैं।

इनकी कविता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

शृंगार माधुरी

दोहा

हुकम पाय नृप कौ सुकवि, सकल कलानिधि 'लाल'।
यह शृंगार रस-माधुरी, कीन्हौं ग्रन्थ रसाल॥
सम्वत् सत्रह सौ बरस, उनहत्तर की साल।
सावन सुदि पून्यौ सुदिन, रच्यौ ग्रन्थ तत्काल॥
छत्र महल बूंदी तखत, कोटि सूर सम नूर।
बुद्धिवली पतिसाह के, कीन्हौं ग्रन्थ हुजूर॥

सवैया

सब भूपति-बंस-सिरं अवतंस सदा सिव अंस नरिंदवती।
महि मान महिम्मत हिम्मत कौ हद किम्मति कौ हद हिंदवती।
सुख सौं सरसी सरसी सरसी सरसीरुह सौरभ वृन्दवती।
गुण सो अगरी सगरी नगरी अधिराज विराजत वृन्दवती॥

अलंकार कलानिधि

सहेतुक विप्रलम्भ [सवैया]

एक समै इन आँखिन में विधिनाहि अराधि महा वर पायौ।
ता दिन तें अलि नन्दकुमार विलोकत ही इनकौ मन भायौ।
मान भरी अति भूल परी उन श्राप दियौ तन तापन तायौ।
लाज दई अन देखन कौ अरु देखन संग निमेष लगायौ॥
कंचन की द्वै गेंद मनोहर कंचुकी माझ छिपाइ धरी है।
ते अब दीजिये कीजिये केलि यों बोलि हँसे ठिग आइ हरी है।
बाल विनोद बढ़ाइ हँसी तब ओठनि दंत उजास भरी है।
मानो नये द्रुम पल्लव ऊपर कुंदकली खिलिकें बिखरी है॥

उपनिषद्सार

दोहा

चरण कमल श्रीराम के, अकथ सुआनंद मूल ।
जिहि रज सों पाखान हू, पायौ धाम अतूल ।।
भाष्यकार भगवान जे, कहे सूत्र पर अर्थ ।
तेही अव संक्षेप सों, समुझों सुमति सुअर्थ ।।

तैत्तिरीत सूत्र

नमो ब्रह्मणे ! नमस्ते वायो ! त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मानि ।
त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रह्मावादिषम् । ऋतमवादिषम् ।
सत्यमवादिषम् । तन्मामावीत । तद्वक्ताकारमावीत् ।
आवीन्माम् आवीद्वक्तारम् ।।१२।। ॐ शांतिः शांतिः शांति ।।

अर्थ

"ब्रह्म जो वायु रूप है ताकों नमस्कार होऊ, आगे है वायु ताको नमस्कार होऊ, इहां परोक्ष प्रत्यक्ष दोऊ करि वायु ही कहियत है। अरु तुही वह इन्द्रिय और प्रत्यक्ष ऐसौ ब्रह्म है जाते ताते तोही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगो। उत कहै शास्त्र अनुसार कर्त्तव्य के अनुसार बुद्धि में भली-भांति निश्चित जो अर्थ सोऊ तो आधीन है। तातें तोही को कहूँगो। सोई अर्थ वाक काम और सम्पन्न कीजियत सत्य कहियै सोऊ तो आधीन है सो सम्पन्न कीजियत है।....."

दुर्गा माहात्म्य

सवैया

धर्मन संजुत कर्म सबै करिहै अति आदर ही सों सदाई ।
धारत हैं तिनको प्रतिपाल जु राखत बुद्धि सदा थिरयाई ।
ते पुनि स्वर्ग कूं जात सदा नित पाई प्रसाद तिहारौ ही पाई ।
तातें तुही तिहूँ लोकन में इक देव सदा सबकों फल दाई ।।

रामायण

दोहा

जब श्री कुंवर प्रताप नैं, ठयौ ग्रन्थ कौ मान ।
रामायण भाषा कियौ, सुकवि 'कलानिधि' जान ।।
वालकाण्ड अरु युद्ध अरु, उत्तरकाण्ड उदार ।
रचे भट्ट 'श्रीकृष्ण' ने, संजुत प्रेम प्रसार ।।

कवित्त

धनद प्रसाद में प्रताप मे हुतास धर्म,
मन मे भुजा मे बुद्धि वल मो प्रमाण है ।
वाक मे सरस्वती वदन मे सुधाकर है,
बल मे पवन काम-रूप मे उदार है ॥
सुरगुरु बुद्धि मे दिनेस तन तेज-माहि,
कोप माझ काल कर गहे करवार है ।
व्रज-भुव-चन्द्र तेज कुवर प्रतापसिंह,
विस्वरूप धारी सब देवन अधार है ॥

युद्धकाण्ड-छप्पय

कुण्डल कनक किरीट सत्य कहुँ सत्य उछट्ठो ।
जहं रिस रच्चिय नैन अधर कल दन्तन कट्टे ॥
कहुँ महाभुज सहज के कटे आयुध भूषन ।
कहुँ हत्थ कहुँ नग्न कहुँ भट पडे सदूषन ॥
कहुँ रुण्ड मुण्ड कहुँ सुण्ड कहुँ, गजे भुसुण्ड गिरि से गिरे ।
संग्राम भूमि भैरव भरिय भय्कर दल चहुँ दिसि फिरे ॥

५—महाराज बदनसिंह प्राचीन देशी राज्यो मे भरतपुर भी अपना एक प्रमुख स्थान रखता है। जहा इसके अधिपति वीरता और पराक्रम के लिये प्रसिद्ध थे, वहा साहित्य और कला प्रेमी होने के लिए भी। भरतपुर राज्य के संस्थापक महाराज बदनसिंह अपने समय के एक प्रसिद्ध कवि हुए हैं। यद्यपि इनका समय युद्ध और अशान्ति का था, परन्तु अपने सुयोग्य पुत्र सूरजमल के राज्य भार सम्भालने के कारण इनको अधिक समय राज्य विस्तार एवम् शासन मे नही देना पडता था। कवि एव साहित्यानुरागी होने के साथ २ आप अनेक कवियो के आश्रयदाता भी थे। आपका लिखा हुआ कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नही हुआ है, परन्तु कुछ फुटकर छन्द मिलते हैं जिनमे इनका उपनाम 'बदन' मिलता है।

आपकी कविता बडी सरस एव कलापूर्ण है। कविता कामिनी के अग पर अलकार भार रूप न होकर स्वाभाविक शोभा वर्द्धनकारी दीख पडते हैं। व्रजभाषा का माधुर्य रीति कालीन कवियो से किसी भी प्रकार कम नही है। "मिश्रबन्धु विनोद" मे इनका कविता काल लगभग सम्वत् १८२५ वि० दिया है और कवि परिचय संख्या ६८२ पर इन्हे महाकवि सूदन के आश्रयदाता महाराज सूरजमल जी का पितामह लिखा है जो नितान्त भ्रम मूलक है। वास्तव मे

वदनसिंह का स्वर्गवास ज्येष्ठ शुक्ला १० सम्वत् १८१२ वि० में ही हो गया था। ये महाराजा सूरजमल (सुजानसिंह) के पितामह नहीं वरन् पिता थे। सूरजमल देवकी के पुत्र थे जिनका विवाह किसी अन्य जाट के साथ हुआ था। अत्यधिक सुन्दरी होने के कारण वदनसिंह ने देवकी को अपनी रानी बना लिया था। इस प्रकार वदनसिंह सूरजमल के धर्म पिता थे। 'सुजान-चरित्र' में कविवर 'सूदन' ने लिखा हैः—"भूपाल पालक भूमिपति वदनेश–नन्द सुजान है।" इससे यह भली भांति स्पष्ट है कि सूरजमल (सुजानसिंह) भी इनके धर्म पुत्र थे। भरतपुर राज्य के राज-वंश-वृक्ष में भी महाराज सुजानसिंह को वदनसिंह का पुत्र ही वताया गया है। वदनसिंह की रचनाओं में से कुछ छन्द नीचे उद्धृत किये जाते हैं —

कवित्त

पूरव हरित वनिता कौ मुख पत्र तामें,
रचना रुचिर वरु मृगमद रग की।
कैधों नभ सरवर फूल्यौ पुण्डरीक मध्य,
मेचक प्रभा है अलि अवली अभंगकी।
और कवि सुकविन उपमा अनेक कही,
'वदन' बखाने एक इहि विधि अगकी।
विरही निरखि याहि नाखत निसास याते,
दागिल दिखात मानों आरसी अनंगकी॥

रस अनुकूल जामें धुनि झलकत होहि,
खोय जतिभंग होय रुचिर सुछन्दगति।
जाकौ पान करत 'वदनकवि' सुधा कौन,
कामिनी अधर–मधु–माधुरीहू ना रुचति।
जोपै ऐसे वचन की रचना कै जानै तौ,
निसक सुख-भूप कौ कवित्त कहि पै है पति।
वोलै तौ सभा में आइ आगे सुकविन के तू,
आपने कुलिश करेजेसों निकारै मति॥

८—माधौराम—यह महाराज सूरजमल के दरवारी कवि थे। यह जाति के कायस्थ और फारसी के अच्छे विद्वान् थे। महाराज सूरजमल का समय भरतपुर में हिन्दी का गौरव-काल था। अतः आपने भी हिन्दी से प्रभावित होकर 'करुणावत्तीसी' नामक ग्रन्थ लिखा। आपका कविता काल संवत् १८०० के

आस पास ठहराया जाता है। आपके पद्य बड़े सरल सरस और हृदय- ग्राही हैं। उदाहरण के लिए कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

एरे मेरे मूढ़ मन! काहे विकल होत,
चतुरभुज चितामनि तेरी चिन्ता हरि है।
बंशीधर अवर विश्वभर कहावत है,
मोसे दीन दुखिया को कैसे करि बिसरि है।
असरन सरन ऐसो विरद जो धरावत है,
भीर परे भजन की कैसी भाँति करि है।
वारन की वार कछु करीना अवार सो तो,
अवक अवार क्यों हमारी वार करि है॥

गिरि कौं उठाइ ब्रज गोप कौ बचाइ लियौ,
अनल तें उबारे कान्ह बालक मझारी कौ।
गज की गरज सुनि ग्राहतें छुड़ाइ दियौ,
राख्यौ प्रन नेम धरम पडवन की नारी कौ।
राखे गज, घटा तर बालक विहगम के,
राख्यौ पन भारत मे भीषम ब्रनचारी कौ।
त्रिविध तापहारी निज सतन सुखकारी एक,
मोहि तौ भरोसो भारी ऐसे गिरधारी कौ॥

कहा भयौ जो पै तुम द्वारिका के राजा भये,
गोकुल के वासी खट्टी छाछ के पिवैया हो।
कच्छ मच्छ रूप वाराह नरसिंह भये,
कहूँ होय वामन, आछे स्वांगी भरैया हो।
धेनु के चरैया गुंज माल के रखैया कान्ह,
बंसी के बजैया अरु बन के रहैया हो।
टेरत हों प्रात-रात पूछत न मेरी बात,
जानी हम घात भृगु-लात के सहैया हो॥

—::०::—

प्रकरण २

सूदन-काल

महाकवि सूदन:—इनका जन्म मथुरा में माथुर चतुर्वेदी कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम बसंत चतुर्वेदी था। इन्होंने "सुजान-चरित्र" में अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

मथुरा नगर सुधाम, माथुर कुल उत्पत्ति वर ।
पिता वसत सुनाम, 'सूदन' जानहु सकल कवि ॥

जिस प्रकार महाकवि भूषण ने महाराष्ट्र केशरी शिवाजी के वीर चरित्रों का वर्णन कर संसार में ख्याति प्राप्त की, उसी प्रकार इन्होंने भी भरतपुराधीश सूरजमल के वीर चरित्रों का वर्णन कर साहित्य संसार को चकित कर दिया था। यह महाराज के साथ युद्धों में उसी प्रकार रहते थे जिस प्रकार पृथ्वीराज के साथ चन्दवरदाई। सूदन की लेखनी से यह विदित होता है कि यह केवल कविता के ही नहीं वरन् तलवार के भी धनी थे। युद्ध कुशलता इनकी रचनाओं से टपकी पड़ती है। मिश्र-बन्धुओं ने इनके विषय में लिखा है कि "इन्होंने आंखों देखे युद्धों का वर्णन किया है"। हमारा मत इस विषय में यह है कि इन्होंने युद्धों में स्वयम् भाग लेकर पूर्ण अनुभव के साथ रचना की हैं। इनका कविता-काल सम्वत् १८०२ से १८१० तक माना जाता है। इनकी उपलब्ध रचना "सुजान-चरित्र" है जिसका प्रकाशन ना० प्र० स० काशी से हो चुका है।

सुजान-चरित्र के सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि यह रचना अपूर्ण है। सम्भव है कि कवि के स्वर्गवास हो जाने से पूर्ण न हो सकी हो। इस ग्रन्थ में वीर काव्य से रीति काव्य तक की प्रवृति एवं परम्पराओं का दर्शन होता है। इसमें वीर रस प्रधान हैं। इसमें रस के अनुकूल ही ओजस्वनी एवं कड़कती भाषा का प्रयोग किया है। भाषा सरस ब्रज भाषा है। इस ग्रन्थ की भाषा से ज्ञात होता है कि कवि को देश की बहुत सी भाषाओं का ज्ञान था। दिल्ली की लूट में पंजाबी, महाराष्ट्री, पूर्बी, बंगाली तथा गुजराती आदि सभी बोलियों का स्त्री पात्रों से प्रयोग कराया है। ग्रन्थ के आरम्भ में कवि ने अपने पूर्ववर्ती एवं सम-कालीन कवियों की वंदना कर अपनी बहुज्ञता का परिचय दिया है। यह ग्रन्थ काव्य के साथ २ इतिहास की भी पूर्ति करता है। कवि ने अनेक छन्दों का प्रयोग बड़ी कुशलता से किया है। इनकी शैली में उत्कृष्टता तथा वर्णनों में ओज की मात्रा प्रचुर परिमाण में मिलती है। वर्णित दृश्य का चित्र सा खींच देना इनकी

विशेषता है। इनकी रचनाओं मे केवल यमक, अनुप्रास आदि अलङ्कारो की छटा ही नही दिखलाई पडती वरन् अनेको अलङ्कार स्वाभाविक रूप मे आकर पाठको को रसप्लावित किये बिना नही रहते। 'सुजान चरित्र' मे वर्णित आठ युद्धो मे प्रत्येक युद्ध के पश्चात् हरिगीतिका छद मे उस अध्याय का सक्षिप्त वर्णन करना इनकी निजी शैली है जिसकी परम्परा भरतपुर के सभी कवियो मे पाई जाती है। वीर रस के अतिरिक्त इनकी कविता मे अन्य रसो के भी बडे ही सुन्दर भाव पूर्ण छद पाये जाते हैं, जो अपनी समता नही रखते।

सुजान-चरित्र

कवित्त

अदिति असोक भरी सोक भरी दिति ओर,
दोस भरी पूतना, अदोस भरी ओपिका।
चस हिये भी भरी अभीभरी अथवस,
पडव के कीरति, अकीरति को लोपिका।
लाज भरी द्रौपदी सुजान भरी व्रज-भूमि,
कुबरी इलाज भरी साज मद सोपिका।
देवकी अनद भरी रूगे व्रजचद धरी,
भाग भरी जसुदा सुहाग भरी गोपिका॥

अनी दोऊ बनी घनी लोह कोह सनी धनी,
धर्मनु की मनी बान बीनन निवग मे।
हाथी हटि जात साथी सग न थिरात भोन,
भारती मे न्हात गग कीरति-तरग मैं।
भानुकी सुतासी "कवि सूदन" निकासी तेग,
बाहत सराहत कराहत न अग मे।
वीर रस रग मे यौं आनद उमग मे सो
पगु पगु अरण होत जोवन को जग मे॥

छप्पय

मिली परस्पर डीठि वीर परिगय रिस अग्गिय।
जग्गिय जुद्ध विरुद्ध उद्ध पलचर बग रग्गिय।
भग्गिय सद्द शृगाल काले दै ताल उमग्गिय।
लग्गिय प्रेत पिसाच पत्र जुग्गिन नै नग्गिय।
रग्गिय सुरग रभादि गण, स्द्र रहस आवाज दिय।

कवित्त

वाप विष चाखै भैया षटमुख राखै देखि,
आसन में राखै वस बास जाकौ अचलै ।
भूतन के छैया आस पास के रखैया,
और काली के नथैया हू के ध्यान हू ते न चलै ।
बैल बाघ बाहन बसन कौ गयंद-खाल,
भाग औ धतूरे कों पसार देतु सचलै ।
घर को हवालु यहै संकर की बाम कहै,
लाज रहै कैसे पूत मोदक कूँ मचलै ॥

कवित्त

श्रोनित-अरघ ढारि लुत्थि जुत्थि पाँवड़े दै,
दारू-धूम धूप दीप रंजक की ज्वालिका ।
चरबी कौ चंदन चढ़ाय पल टूकनुकें,
अच्छत अखंड गोला गोलिन की चालिका ।
नैवेद नीकौ साहि सहित दिल्ली कौ दल,
कामना बिचारी मनसूर पन-पालिका ।
कोटला के निकट बिकट अरि काटि सूजा,
भली बिधि पूजा कै प्रसन्न कीनी कालिका ॥

मालती छन्द

फिरयौं मनसूर कियौ बल पूर कढ़यौ करि कोप धरें बहु तोप
करै सन मान बुलाइ सुजान कियौ बहु मान बजीरहिं आन
लियौसु अगार सुजान कुंवार कियौ सुपयान दुहूँ बलवान

आभीर छन्द

पुनि उतरि पार जमुना अपार उत में पठान हुव सावधान

दोहा

एक ओर मल्लार दलु, दूजें सिंहसुजान
उतहि रुहेले अग्गधरि, सनमुख भए पठान ॥
चहूँ ओर घौसान के, छाए सद्द अहद्द
मनहुँ गंगके मिलन कौं, आयौ सिंधु विहद्द ॥
दोइ जाम बीतन लगे, खड़े सुभट बिनु जंग
तव सुजान के दलबलनु, आगैं करी उमंग ॥

८—रगलाल —इनका जीवन-वृत्तान्त कही भी उपलब्ध नही है, केवल मिश्र-बन्धुओ ने इनको अपने 'विनोद' मे ८२५ वी सख्या पर लिखा है और कविता-काल १८०७ वि० माना है। यद्यपि आप महाराज सूरजमल के दरबार मे रहा करते थे, किन्तु उनके सम्बन्ध मे आपकी कोई रचना नही मिलती, केवल महाराजा जवाहरसिह की प्रशसा का एक छप्पय प्राप्त है जो नीचे उद्धृत किया जाता है। ऐसा अनुमान होता है कि सूरजमल के निधन के पश्चात् ये महाराज जवाहरसिह के आश्रय मे रहे हो।

छप्पय

जटित जवाहर मल्ल, रल्ल चहु दिसि अति हल्लिय।
गहर नदिय खल भलत, कापती थर थर मल्लिय।
तरवर घन गिर परत, होत कुल्ला हल भारिय।
हय ही सो धर घसक मसक नर मिलत न नारिय।
चटि हक तिसक अभग दल, प्रगट जग दल जात तब।
सुज्जान नंद 'रगलाल' भनि, कुल वदनेस सुभाति इव॥

९—अखैराम —कविवर अखैराम भरतपुर नरेश सूरजमल के दरबारी कवियो मे से थे। ये जाति के ब्राह्मण थे और हिन्दी सस्कृत, ज्योतिष शास्त्र, पुराण आदि के प्रकाण्ड पण्डित थे। याज्ञिक बन्धुओ ने माधुरी ५ वें वर्ष की प्रथम सख्या मे इनके रचित पाच ग्रन्थ बतलाये हैं—(१) सिहासन बत्तीसी (२) गगा माहात्म्य (३) कृष्ण-चन्द्रिका (४) वेदान्त-हस्ता-मलक (५) स्वरोदय। इनके अतिरिक्त 'सुजान विलास' भी एक और पुस्तक बतलाई जाती है जिसके विषय मे यह दोहा प्रचलित है—

प्रथम सुतहि असीस दै, उपज्यौ हिये हुलास।
सूरजमल के नाम कौ, रच्यौ 'सुजान-विलास'॥

इस पुस्तक का विषय महाराजा सूरजमल का यश वर्णन ही ज्ञात होता है। इसी प्रकार की और इसी नाम की एक पुस्तक महाकवि सोमनाथ की भी है, जो सिहासन बत्तीसी की कहानी पर आधारित है। कविवर अखैराम का सुजान-विलास उपलब्ध नहीं है।

कविवर अखैराम की कविताओ मे ओज और अनूठी उक्ति के साथ ही साथ वर्णन की सजीवता का भी अच्छा समावेश है। भाषा सरस एव सरल है और कविता मे भरतपुरी छाप भली-भाति झलकती है। इसमे सन्देह नही कि ये अपने समय के कवियो मे उच्चकोटि के कवि थे। इनका कविता-काल विक्रम सवत् १८१२ के आस-पास माना जाता है, जैसा कि इन्होने सिहासन बत्तीसी की समाप्ति

पर लिखा है:—

ठारह सै बारह गनौ, संवत् सर घर सूर ।
सावन वदि की तीज कों, ग्रन्थ कियौ परिपूर ॥

अब इनके काव्य की झाँकी भी कर लीजिये:—

कवित्त

चन्द सौ वदन अरविन्द से नयन दोऊ,
श्रवन सरोज नासा सरस सुहाई है ।
दाड़िम दसन सुधासिन्धु से अधर विम्ब,
रसना रसीली कोटि छवि की निकाई है ।
गोरे गोरे गोल गोल केतुकी कलासी भुजा,
श्रीफल उरोज सब सोभा की सफाई है ।
रम्भा जुग जंघ पद-कंज 'अखैराम' कहै,
आनन्द की ढेरी लै विधाता ने बनाई है ॥

स्वरोदय

कवित्त

ज्ञान गुन गाइवे कों ध्यान उर ध्याइवे कों,
तामस वहाइवे कों निसिदिन गाइ लै ।
भक्ति निधि जोरिवे कों आठों सिद्धि मोरिवे कों,
मदन मरोरिवे कों चित्त में चिताइ लै ।
होनहार जानिवे कों जोतिष बखानिवे कों,
काल के पिछानिवे कों नीके कै सचाइ लै ।
स्वर कौ विचार चार्यों वेदन कौ सार यह,
पहन उर हार 'अखैराम' सचु पाइलै ॥

मूल श्लोक

षट् शतानि दिव रात्रौ सहस्राण्येक विंशतिः ।
एतत्संख्यो भवेच्छ्वासो सोहं सोहं प्रकीर्तितः ॥

दोहा

सहस एक विंशत कहौ, छसै कढ़त पुनि स्वास ।
इतनी सँख्या रैन दिन, सोहं मंत्र प्रकास ॥

वेदान्त—हस्तामलक

कवित्त

जैसे बड़े छोटे आड़े टेढ़े फूटे काँच माँझ,
भासत अभास मुख पंकज निधानियै ।

कुंडल कलगी सिर पेच औ ललाट टीका,
जैसो मुख मांडै तैसो वासैं दरसानियैं ।
ऐसो जग जानि लीजैं बुद्धि को विलास तैसे,
एक ते अनेक होत छानबीन जानियै ।
नित्य उपलब्ध है स्वरूप जो जगत मांझ,
सोई हम जानें नहिं दूजो उर आनियैं ॥
जैसे रवि ओखत मयूखन सो भूमि रग,
सवतें विभिन्न काल लिपत न जानियैं ।
सोखि सोखि वर्षत सहसगुनौ पावस मे,
कोटि कोटि बुंदन सो समझ सु मानियैं ।
जैसे उपजत हैं खिपत जग जीव जन्तु,
एक तें अनेक अविनासी सो बखानियैं ।
नित्य उपलब्ध है स्वरूप जो जगत माझ,
सोई हम जानें नहिं दूजो उर आनियैं ॥

१०—लाल कवि—भरतपुर नरेश वदनसिंह और उनके पुत्र सूरजमल के आश्रित प्रतीत होते है। खेद का विषय है कि इनका विशेष वृत्तान्त उपलब्ध नहीं है। इनकी रचनाओं से ही राज्याश्रय का पता लगता है। ये वीर और शृंगार दोनो रसो पर समान अधिकार रखते थे। इनकी प्रतिभा इनके प्रत्येक छन्द से प्रकट होती है। भाषा सरस, सुहावनी एवं प्रवाहयुक्त है। इन्होंने महाराज वदनसिंह की मृत्यु पर जो छन्द लिखा है उससे विदित होता है कि महाराज के मृत्यु-सम्वत् १८१२ वि० के आस पास ही इनका रचना काल भी रहा होगा। इनकी कविता ऐतिहासिक तथ्यो से भरी हुई है।

कवित्त

कटतौ कलपतरु लात जातौ कामधेनु,
पारस परसि लोहे कंचन न करतौ ।
फट जातौ चिन्तामनि फूटि जातौ गिरि मेरु,
ध्रुव गिरि धरनि धरा न सेस धरतौ ।
सूख जाते सिन्धु सातो वहतौ न वरु वात,
सूर सीरो चन्द तातो तीऊ का विगरतौ ।
सदन सदन सोच वदन वदन वाद,
हाय हाय वदन महीप पैं न मरतौ ॥

उपर्युक्त छन्द से कवि की ऊँची प्रतिभा के साथ साथ कवि कर्म की कुशलता का अच्छा परिचय मिलता है। इन्होंने कविताओं में श्रेष्ठतम उपमानों का यथावत् प्रयोग कर सजीव एव सरल चलती भाषा का अच्छा दिग्दर्शन कराया है। इनकी वीर रस सम्बन्धी रचनाओं की ओजस्विता देखते ही बनती है। उदाहरणार्थ कतिपय कविताएं निम्न लिखित है—

कवित्त

दक्खिने दल दर ओजसो उमंड तिन्हैं,
खडे गहि खङ्ग जसु मड्यौ देस कौ।
कहै 'कवि लाल' सुर सकल तमासे भूले,
फूले पल चारी हार सूदन महेस कौ।
गगाप्रसाद स्वामी–कारज मे पाव रोप,
जग जितवार साखि साखिन हमेस कौ।
एक सत सूरमा निवार्यो प्रथीराज इमि,
एकीएका रनतें निकार्यौ नवलेस कौ॥

❀ ❀ ❀

कौन जटवारे की बचावतौ सरम स्वामि,
धरम के काज लाज काहि एती परती।
दक्खिनी दल भुज बलन कौन ठेलतौ जु,
आमिष अहारिन की भूख कापै हरती।
संकर के हार कौ सुमेरु कौन हो तौ अब,
जापै सुरनारिन की आरती उतरती।
गंगापरसाद जो न जूझतौ समर कहौ,
कैयक हजार अपछरा कैसे बरती॥

❀ ❀ ❀

फिरत फिरंगी चहुं ओर चकवाने भये,
मुगल पठान सेख सैयद समरतौ।
गोलन के मारे तोपखाने के दवान भये,
तुरक सवार कहौ कैसे धीर धरतौ।
पिलते न सैंगर भदौरिया मिसिर और,
आसिफदौला कौ मनोरथ क्यों सरतौ।
कोप करि करतौ समर मूलचन्द जो न,
बांकुरेन जीवन कौ बीमा कौन करतौ॥

कैधों प्रेम नागन की मोंनि मनि ठौंनि रही
कैधों प्रान कौल पैं भ्रमर अभिलाखी है।
वचन के पट्ट पैं लिखी कैं मंत्र मोहिनी कौ,
कैधों अभिलाखन को ग्रन्थ साख साखी है।
कहै 'कवि लाल' हाल जाहिर जहान बीच,
कोटिन उपाइ कैं उकति इमि भाखी है।
मेरे जान रूप के खजान पैं मुहर कैधों,
प्यारी तेरी बेंदी स्याम काम रचि राखी है॥

* * *

जबतें धरी तैं तबही तें न हियेते कढै
मोंनों मैं मही में सबही तें सुखदाई है।
अति अभिराम कामबान तें सरस मौहैं,
सुनि सुनि मोहै मन छिन छिन छाई है।
कहै 'कवि लाल' हाल जाहिर जहान बीच,
जानियतु प्रौढ़ कोऊ पंडित पढाई है।
जाके आगे ऊख औ पियूष सब मीठो लगै,
ऐसी मीठी नाहीं सो धहा सौं सीख आई है॥

११—हरिवंश —इनका विशेष वृत्तान्त तो प्राप्त नहीं है, परन्तु 'सुजान-चरित' में इनके नाम का उल्लेख है। यह महाकवि महाराजा सूरजमल के समकालीन हैं। इन्होंने महाराजा सूरजमल व महारानी किशोरी की प्रशंसा में अनेकों फुटकर छन्द लिखे हैं, तथा 'बरसाने की लीला' नामक पुस्तक भी लिखी है। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

दौरे बाज-विकट, कराल कर-तारी देत,
दौरी कारी किलकत छुधा की तरंगनें।
कहै 'हरिवंश' दात पीस लख ईस दौरे,
दौरे अवनीस-सीस गीदर उमंगते।
सिंह श्री सुजान, जग जालिम मुहीम पर,
फरकाई भुजा श्री, चढाई भोंह भंगते।
भग डार मुंडलै, त्यौं भुजग डार कंठ ते,
हरष हर दौरे, गौरी डार-अरधंग ते॥

बरसाना—लीला

श्री 'हरिवंश' विनोद रच्यौ तहं, गोरे-श्याम छवि जोरी जी ।
गोरी सखियाँ मंडलपुर राजें, संग ललितादिक भोरी जी ।
कुन्जन कुन्जन केलि कुलाहल, गावत नव नव वानी जी ।
दूलह नंदकुमार रसिक वर, दुलहिन राधा रानी जी ॥

१२—शिवराम—ये जिला शिकोहावाद के अन्तर्गत पौरौली ग्राम के रहने वाले थे। इनके पितामह का नाम पीताम्बर तथा पिता का नाम हृदयराम था। ये जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। महाराज सूरजमल के दरबार में इनका अच्छा मान था। इन्होंने 'राग-रस-सार' नामक एक बडा ही सुन्दर ग्रन्थ रचा है, जिसमें अपने आश्रयदाता का बश वर्णन करने के पश्चात् उनका यशोगान करते हुए राग-रागिनियों के परिवारों का उत्कृष्ट वर्णन किया है। ग्रन्थ में कवि ने अपने वंश वर्णन में भी बडी पहेलियाँ बुझाई हैं। ग्रन्थ के अन्त मे महाराज सुजानसिह के अस्त्र-शस्त्रों का सुन्दर वर्णन किया है। ग्रन्थावलोकन से इनकी विद्वत्ता का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। आपकी शैली में विशेष चमत्कार है। इस ग्रन्थ की रचना पर महाराज सुजानसिंह ने इन्हें ३६००० (छत्तीस हजार) रुपया पुरस्कार दिया था जिसका कवि ने एक दोहे में इस प्रकार वर्णन किया है:—

जबै ग्रन्थ पूरन भयौ, तबै करी वकसीस ।
खरे रुपैया मान सौं, दिये सहस छत्तीस ॥

इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं :—

छप्पय

गवरि नन्द जुत चद सकल आनंद कंद बर ।
एक दत सोभित सुभाल चदन बिसाल धर ।
बिघन हरन दुख कदन धरन गज वदन प्रचंडन ।
जग बंदन बुध सदन हर्ष सिब कुल जस मंडन ।
'शिवराम' फबित फरसा फबनि कर त्रिसूल गणपति धरहि ।
श्री नृप सुजान गृह रैन दिन पल पल पल रक्षा करहिं ॥

मेघ राग परिवार वर्णन (दोहा)

मल्लारी अरु सोरठी, सुहनी जगत बखानि ।
आसाबरी सुकोकिनी, मेघ नारि इमि जानि ॥

मेघ-राग के अष्ट पुत्र (छप्पय)

नट कान्ह मारग अवर केदार राग भनि ।
गुडराग पुनि गुडभाल जालधर सुख मनि ।
शकर राग प्रवीन मेघ परिवार इनौ कहि ।
पट राग की खानि सकल मुन सुर किन्नर कहि ।
'शिवराम' राग माला इति सुन्दर बहु रूपन फबहि ।
मन मोहन सुर नर नारि के देखत शशि सूरज छिपहि ॥

सवैया

श्री बदनेस को वश प्रसिद्ध भयो कलि मे कल कीरति गाई ।
पडित के मन मडित है अरु शत्रुन पीडत अस्त्र सुहाई ।
भूमि के भार उतारन कौ भुज दड महा प्रगटे बलदाई ।
सूरजमल्ल दिपै नम घोर कहै 'शिव' सूरज ते अधिकाई ॥

कै बनवास प्रवास कै कचन के मृगछाल कै सेज चमेली ।
कै 'शिवराम' सुन्यौ करौ श्रौनन वेद के मत्र कै प्रेम पहेली ।
जोग औ भोग ससार मे सार है सोध कही विव बान गुहेली ।
मेली भली गल मेली किधौ कि नवेली की बाँह गले अलवेली ॥

१३—पतिराम—आपका जन्म तहसील कुम्हेर के अन्तर्गत भटपुरा ग्राम मे हुआ । आपके पिता का नाम शकर भट्ट था जो कि स्वय बडे विद्वान् थे। अत पतिराम ने भी विद्या एव बुद्धि पैतृक सम्पति स्वरूप पाई। सुजान–काल के वीर रस के कवियो मे आपकी विशेष ख्याति हुई। यद्यपि आपने फुटकर कविताओ की रचना की है किन्तु उनके काव्य मे ओज झलकता है। महाराज सूरजमल के यश वर्णन करने मे आपने कमाल कर दिखाया है। कहा जाता है कि आपके पूर्वज महाराज भरतपुर के आश्रित थे। इसके प्रमाण मे अब तक आपके वशजो को माफी चली आरही है। 'पतिराम' के वीर रस पूर्ण काव्य के एक उदाहरण से उनकी प्रतिभा एव कृतृत्व का परिचय मिल जायेगा —

छप्पय

जहाँ कमठ की पीठ, नीव तुम तहाँ जमाई ।
वरी सेस के सीस भीत ऊपर जो उठाई ।
रच्यो दीघ परिकोट माह मुलतान उबारन ।
दगत दीह दल सकल बुजा ऊँची धर धारन ।
चौर छत्र आदिक तिलक जब सुजान बैठन तखत ।
सिर छत्र सलामत साहिबी मुख देखत खुल्लत बखत ॥

१४–सोभ कवि:–आप भरतपुर नरेश महाराज जवाहरसिंह के बन्धु नवलसिंह के आश्रय में रहते थे। आपका कविता–काल सं० १८१२ वि० ठहराया गया है। आपके जन्म एवं वंशजों का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। अतः दुःख है कि इस ग्रन्थ में हम उनका परिचय देने में असमर्थ रहे हैं। आप कोमल भावनाओं के कवि थे। अतः शृंगार की ओर झुकाव होना स्वाभाविक था। आपने "रस चन्द्रोदम" नामक रीति ग्रन्थ लिखकर अपनी शृंगारिक प्रकृत्ति का परिचय दिया है। 'रस चन्द्रोदय' के अतिरिक्त आपके अनेक फुटकर छन्द भी मिलते हैं। इन सभी छन्दों के अन्तर्गत नवलसिंह की वीरता, दान शीलता तथा गुण-ग्राहकता आदि गुणों का परिचय दिया है। 'रस चन्द्रोदय' ग्रन्थ की रचना कवि ने नवलसिंह के लिये ही की है। ग्रन्थ के रचना–काल के विषय में कवि ने स्वयं यह दोहा लिखा है:—

वसुविधु वसुविधु वत्सरहिं सावन सुदि गुरुबार।
सरव सुसिद्धा त्रयोदशि, भयो ग्रन्थ अवतार॥

यहां पर कुछ उदाहरण देकर कवि की शृंगारिक भावना का दिग्दर्शन कराया जावेगा। रसराज शृंगार की उपासना में कवि को कहा तक सफलता मिली है, इसके विषय में कवि के निम्न लिखित उदाहरणों से पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं:—

प्रगलभा–लक्षणम् (दोहा)

पति सों केलि कलान में, अति प्रवीन चित चाह।
यहै 'प्रगलभा नायका' नवलसिंह नर नाह॥

उदाहरण (सवैया)

ए रजनी सजनी! बिनती यह चार घटी लौ रहौ अनुकूलै।
हार हिये मुक्ताहल चार विचार कै सीतलता वल हूलैं।
आपनौ नायक है सब लायक 'सोभ' सहायक भाव न भूलैं।
झाँपै दुकूल तिया श्रुति मूल सरोज के फूल प्रभात न फूलैं॥

सवैया

बंक भई भृकुटी भलि भाल, मनोज नृपाल की नीति सो जागी।
मंद हँसी विलसी मुरि आनँद, आनन प्रेम के पूजन पागी।
द्वै लटकी लटै सोहैं रसाल सी, प्रेम प्रमोद भरी अनुरागी।
नीर समोखन के मिसही, बलवीर कौं, बाल बिलोकन लागी॥

कवित्त

अमित अखंड नभ–मंडल के मेघ महा,
मंडि २ आये ब्रज मण्डल की ओर पर।

गोला धार बरसत अपार रार, डोरु तोर,
द्रुम डार चलैं पवन भक झोर पर।
सामने सुरभि वाई धाई वृषभान जाही,
दाहिने जसोदा नंद ग्वाल ग्रान सोर पर।
ग्रधरन मधुर बजत 'सोभा' बंशी धुन,
गिरि पर गिरिधरयौ छिगुनि के छोर पर॥

१५—दत्त—इनका विशेष वृतान्त प्राप्त नहीं है। इन्होंने महाराज सूरजमल की प्रशंसा मे 'सूरजमल की कृपाण' नामक १४ छन्दों की एक पुस्तक लिखी है। आपकी कविता वीर-रस से ओत प्रोत है और भाषा ओजस्विनी है। उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

कृपाण छन्द

जहँ बज्जत निसान सारे, गज्जत दिमान,
सूर सज्जत सदान, वीर तज्जत गुमान।
जहँ छुट्टत कमान, गोला गोली बरखान,
धुआधार आसमान, छिप्यो भानु को विमान।
जहँ होत भाज भाज, घोर दुंदुभी गराज,
तोप तरपै तराज, गज घटा घहरान।
वहँ हिम्मत निधान, भूमि भारी मघवान,
सिंह विक्रम सुजान, वाह वाही किरपान॥

सवैया

कन्चुकि माहि कसे उकसे परे कामिनी ऊँचे उरोज तिहारे।
'दत्त' कहैं जनु विश्व बिजैकरि काम धरे उलटे वे नगारे।
जोबन-जोर कढ़े हिय फोरि कैं औरहू ते ये कठोर निहारे।
गेंद के गुम्मज के गिरि के गज कुम्भ के गर्व गमावन हारे॥

१६—केशव—आपका जीवन वृतान्त कहीं भी उपलब्ध नहीं हुआ है, केवल 'महाकवि सूदन' ने सुजान-चरित्र मे इनका नाम उल्लेख किया है। ये कवि महाराज सूरजमल के ही आश्रित प्रतीत होते हैं। इनकी कविता का उदाहरण नीचे दिया जाता है—

सवैया

जादिन ते दल साज चढ्यौ नृप आगे बढ्यो पग पीछे धर्यौ ना।
मेर है मेर चढ्यौ किरवान लै एक ते दूसरो अंक वर्यौ ना।

'केशव' श्री बदनेश के नन्दन, तो सम और बरंग बर्यौ ना।
हाथी टरे घने साथी टरे; परधान टरे पै सुजान टर्यौ ना॥

१७–जुलकरन:–आप जाति के भट्ट और डीग के निवासी थे। यद्यपि इनके जीवन का विशेष परिचय तो प्राप्त नहीं हो सका है, परन्तु इनका महाराज सूरजमल और उनके पुत्र महाराज जवाहरसिंह के समय तक विद्यमान रहना प्रतीत होता है। इनका कविता–काल सम्वत् १८१५ वि० के आस पास ही ठहरता है। कहते हैं इनके दो पुत्र थे और दोनों ही कविता करते थे। ये वीर रस के प्रधान कवि हैं। इनके पद्यों में महाराज सूरजमल की वीरता का ओजस्विनी भाषा में वर्णन किया गया है। सूरजमल के स्वर्गबास पर आपने जो अनेक सुन्दर पद्य लिखे, उनमें से कुछ नीचे दिये जाते है :—

कवित्त

एक कहै मोहि देखि कदली कलस थाप्यौ,
दूजी कहै मोहि देखि पूर्यौ चौक अंगना।
तीजी पटा डार्यौ चौथी हरद लगाइ गई,
पांचई मरवट बंधायौ कर कंगना।
कहै 'जुलकरन' छठी माथे पै मौर धार्यौ,
सातई ढुरायौ चौर कीनौ व्रत भंगना।
आगे पाकसासन के आसन के ढिग जाय,
दूलह सुजान ताकों झगरें वरंगना॥

रंग राच्यौ रण-भूमि भूमि भूमि लड्यौ सूजा,
संग कौ सगोती लोग पीछे कों हटि गयौ।
कहै 'जुलकरन' अनल सौ तातो भयौ,
रातौ भयौ रूप छबि छोभ में पटि गयौ।
टारे ते टर्यौ न ऐसौ धरती समान रुप्यौ,
तन टूक टूक तरवारन कटि गयौ।
बेध रबि मंडल कों छेदि गयौ दूर लोक,
सूरलोक वारेन को फाटक फटि गयौ॥

फुटकर

ऐरे मन मेरे तेरे औसर घनेरे नेरे,
लोभ ही के चेरे संग लोभ ही के जरि है।
मित्र औ कलत्र सब चित्र से दरसत हैं,
कहै 'जुलकरन' तेरौ साँचौ एक हरि है।

कोह तू न जानत न मानत मरोर भर्यौ,
ठानत है काची और कौन की उवरि है।
ह्वै है सोर सिद्दत करैगो जब विद्दत सु,
मुद्दत के आये कोऊ मद्दत न करि है॥

१८—भूधर—इनका विशेष वृत्तान्त तो ज्ञात नहीं होसका, केवल इतना पता चलता है कि ये जाति के ब्राह्मण थे और भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह (सं० १८२०-२५ वि०) के आश्रित थे याज्ञिक बन्धुओ ने लिखा है कि "सम्भवत यह भूधर वही है जिन्होंने भगवतराय खीची के लिये छन्द रचना की है", किन्तु इसका कोई प्रमाण नही मिलता। इनको रचित दो कृतियाँ 'ध्यान वत्तीसी, तथा 'दान लीला' मिलती हैं, जिनकी भाषा इन्हे भरतपुर का होना सूचित करती है। कुछ उद्धरण नीचे दिये जाते है—

सवैया

मोर किरीट लसै सिर चारु ललाट दिपै छवि चद कला की।
बाके कटाक्ष विसाल महाद्दग कुण्डल लोल कपोल थला की।
दतन की दुति कठ सिरी मुकता कर ककन छाप छला की।
नूपुर की कटि किंकिनि की उरते न टरै छवि नन्द लला की॥
(ध्यान वत्तीसी)

पूरन परम दयालु निरजन घट घट बासी।
वसुदेव गृह औतार लियौ अवनी अबिनासी।
ब्रज चौरासी कोस लो लीला करन रसाल।
असुर हनन के कारने भये नद के लाल।
सुनो ब्रज नागरी॥
बरसाने की ग्वालि सबै दधि बेचन आवै।
उज्ज्वल मिश्री गंध मोल मन मानो पावै।
सबै बिचित्र सहचरी लियौ राधिका सग।
आपस मे बतरात सब चली, आपने रग।
सुनो ब्रज नागरी॥
मिले कृष्ण अरु राधिका दान रस अमृत लीनो।
निरस लडैती लाल प्रभू ते सरबस दीनो।
यह सुख स्यामा स्याम को कवि बरन्यौ जाय।
निसिदिन 'भूधर' दरस कै हिरदे रह्यौ समाय।
लखै ब्रज नागरी॥
(दान लीला)

१६—बीरभद्र:—इन कविवर के सम्बन्ध में इतना ही ज्ञात हो सका है कि ये जाति के ब्राह्मण थे तथा भरतपुर राज्याश्रित कवि थे। कविता काल महाराज सूरजमल के राज्य काल सम्वत् १८२० वि० तक ठहरता है। इन्होंने भगवान् श्री कृष्ण की लीलाएं (व्रज-विलास) काव्य ग्रन्थ में दोहे, चौपाइयों में लिखी हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल, मधुर, ललित एवं प्रवाह युक्त शुद्ध ब्रजभाषा है। एक अवतरण प्रस्तुत है:—

दोहा

गुरु चरनन चित लाय के, करों कृष्ण को ध्यान।
सुमिरों राधारमण को, हरि लीला रस खान॥

चौपाई

तब हरि मन में मतौ उपायौ। वाके पति कौ स्वाँग बनायौ॥

दोहा

इतवित सरकन देत नहि, सासु, जिठानी, नन्द।
तउ नैनन की सैन में, न्यौत्यौ गोकुल चन्द॥

चौपाई

वही सरूप भेद कछु नाही। सांझ समै आयौ गृह माँही॥
बुढ़िया विकल गोपकी मैया। ठगी बचन दै कुँवर कन्हैया॥
सुनरी माता मेरी बाता। ब्रज मे नन्द पूत बिख्याता॥
मैं तो सुनि है वाकी बात। मेरौ रूप धर्यौ विख्यात॥
छैल चिकनियाँ ढीठ गुमानी। लंपट लोभी गोरस दानी॥
जाकी बात भली सुन पावै। ताकौ छलवल कर अपनावै॥
कवहूँ आवै वार कुबार। दौर्यौ छूट्यौ मेरे द्वार॥
करि है कछुक अटपटी चोरी। अब आवत कहियत है होरी॥
तू मत धसन देइरी ताही। वाकी बात न जियत पत्याई॥
ठोक किवार दीजियो गाढ़ी। अपनी खाट लीजियो आढ़ी॥
सावधान है रहियो भारी। मै तौ सोवत जाय अटारी॥
समौ माइ घर धनी पधार्यौ। गाढौ देखि किवार पुकार्यौ॥
भीतर ते कह उठी महतारी। वह तौ चकित है रह्यौ भारी॥
कहा भयौ री जननी तोकूँ। क्यों पहिचानत नाही मोकूँ॥
खीझ कही तुम जाउ नन्द के। तो गुन जानत छंद वंद के॥
इतनौ मान तू कौन करावै। धस्यौ विराने घर में आवै॥
कहा भई री माता वौरी। लाग्यौ भूत कै परी ठगौरी॥
वौरी होय जसोमति तेरी। लागैं भूत रहैं घर घेरी॥

२०—सुधाकर—इनका जीवन-वृत तो प्राप्त नही हो सका है, परन्तु महाराज सूरजमल सम्बन्धी कविताएँ इन्हे उस काल का कवि होना सिद्ध करती हैं। इनका कविता काल १८२० विक्रम सम्वत् के आस पास माना जाता है। इन्होंने जो फुटकर छन्द महाराज सूरजमल की प्रशसा मे लिखे हैं, उनमे से कुछ उद्धृत किये जाते हैं।

कवित्त

तेरौ तौ ताप मारतड सौ प्रचड तपै,
वैरिन के तन जर ववैला भये जात है।
अरिन की वाहिनी तोरई सी सूखि जात,
धारे अपजस जासौं कारे भये गात हैं।
सुकवि "सुधाकर" ने वरन्यौ व्रजेन्द तेज,
सेजन ते भाजि वैरी वधू अकुलात हैं।
जेई सब ताते-ताते उदक सो न्हात हुती,
तेई अश्रु पातन की धार सो अन्हात हैं॥

जालिम को जलाय दूनी मे दानी दरसत,
दौलत को मेह नेह वरसत जुवानी है।
उदित उदार परिवाह मे अपार तेरो,
उज्जवल अमल तेरी कीरति वखानी है।
कोकिला सी बानी जानी चन्द्र सो मुखारविंद,
सोभा रूप देख रति अति ही लजानी है।
तो सी तुही मानी और उपमा न जानी परै,
'सुधाकर' वखानी सो व्रजेन्द्र महारानी है॥

२१—रामकवि—यद्यपि इनका विशेष परिचय तो प्राप्त नही हो सका है, किन्तु इनकी कविताओ मे यह भली भाँति सिद्ध होता है कि आप प्रसिद्ध कवि 'सूदन' के समकालीन थे और भरतपुर दरवार के आश्रित थे। इनका कविता काल सवत् १८२० के आस पास ठहराया जाता है। आपकी कविता के कुछ उदाहरण निम्न लिखित है—

वदनसिंह परसिद्ध जो, व्रजमडल को भूप।
ताके सूरज मल्लसुत, सूरज ही को रूप॥

कवित्त

दौरे मल्ल सूरज के, भदावर हहरे औ,
मारवाडी थहरे राठौर मदमत्ता की।

उड़ि जात ओरछौ, सटकि जात सरीला को,
सकल जमात जैसे माखी मधुछत्ता की।
भरना औ परना के हरना से भाजि जात,
कंपत बसति कुल्लि चंपत के छत्ता की।
दिल्ली के मरद सब विल्ली से दुबकि जात,
चौंकि चौंकि परै चमू चक्कवै चकत्ता की॥

२२—रंगलाल:—आप भरतपुर के निवासी तथा भरतपुर नरेश जवाहर सिंह के आश्रित कवि थे। आपका कविता काल १८२० से १८२५ तक निश्चित किया गया है। आपने महाराज जवाहरसिंह के यश का वर्णन सुन्दर ढंग से किया है। उनकी "साखा" नामक पुस्तक महाराज जवाहरसिंह के यश एवं वंशावलि प्रशस्ति की है। इस पुस्तक में आपने पद्य के साथ २ गद्य का भी प्रयोग किया है। भाषा सरस एवं सरल है। उदाहरण देखिए—

दोहा

सरहद नापी समद लौ, सूरसेन के नाम।
छप्पन कोटि जादौ भये, मथुरा मंडल गाम॥

हाथी घोडा हैं घने, बहुत खजाने दाम।
काँसा में दै खोहरी, दीनी बहुत इनाम॥

लीनी चौथ मल्हार सूं, घासैड़ा सूं रार।
तोड़ी कड़क पठान की, रुहिला दिये पछार॥

२३—मुरलीधर:—ये भरतपुर निवासी तथा महाराज सूरजमल के पुत्र नवलसिंह के आश्रित कवि थे। इनका कविता-काल सं० १८२०–२५ वि० माना जाता है। इन्होंने श्रीमद् भागवत के पंचम स्कन्ध का हिन्दी पद्यानुवाद किया है। अपने समकालीन कवियों की भाँति ग्रन्थ में अध्याय की समाप्ति पर अध्याय में वर्णित विषय का संक्षिप्त विवरण हरिगीतिका छन्द में दिया है। उनकी शैली सूदन से मिलती जुलती सी है। कविता के उदाहरण निम्नलिखित है:—

हरगीतिका

भुव चक्रवर्ति सुजान को सुत नवलसिह सुजान है।
सनमान दान कृपान पूरौ वीर वुध बलवान है।
तिन हेत 'मुरलीधर' लिख्यो श्री भागवत भक्तिहि लियौ।
पंचम स्कन्ध अध्याय त्रोदश प्रकट यह पूरण भयौ॥

मुनि प्रगट सकल संसार, रीति।
दुख सुख की नहिं ताको सुभीत॥
ते प्रवल विष्णु माया विचारि।
भुव कठिन पन मे दिये डारि॥

२४—भोलानाथ—यह भरतपुर के निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे और महाराज जवाहरसिंह के पुत्र नाहरसिंह के आश्रय मे रहते थे। इनका कविता-काल सं० १८२०-२५ वि० माना जाता है। इनके दो ग्रन्थ बतलाये जाते हैं, उनमे से प्रथम 'लीला-पच्चीसी' तथा द्वितीय 'सुमन प्रकाश' हैं। सुमन प्रकाश अभी तक प्राप्त नहीं है। 'लीला पच्चीसी' मे प्राचीन परिपाटी के अनुसार राधाकृष्ण की रासलीलाओं का सरस एवम् भाव पूर्ण वर्णन है। इनकी कविताओं के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

सरस बजावत वेनु, सुनावत राग अपारे।
कौन बहुत सुधि करै, बसे हिय नद दुलारे॥
जतन जुवियें अनेक, मिलें बिन दरसन के हूँ।
तासों चिन्ता करत हियो, प्रभुमन नहिं जैहूँ॥

वेद रिचा जे कही, कही रिषि अमर कही जे।
ते गोपी बड भाग सावरे नेह पगीते॥
मुकुट बाधि लै लकुट, ग्वाल गोधन सग डोलति।
बैन बजाय रिझाय गाय सुर मधुरे बोलति॥

२५—मोतीराम—आपने सारस्वत ब्राह्मण कुल मे जन्म ग्रहण किया था। आप भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह के आश्रित कवि थे और फुटकर छन्दों मे रचना किया करते थे। आपके जन्म-स्थान के विषय मे अभी तक पता नहीं चल सका है किन्तु इतना अवश्य है कि आप जीविका-उपार्जन के हेतु भरतपुर पधारे और महाराज जवाहरसिंह ने १) एक रुपया दैनिक वेतन पर आपको अपने आश्रय मे रक्खा। इसके प्रमाण मे स्वयं 'मोतीराम' ने एक कवित्त लिखा है।

इनका कविता-काल सं० १८२० से १८२५ वि० तक माना जाता है। आपके फुटकर छन्दों मे भिन्न २ विषयों को लेकर रचना की, किन्तु जवाहरसिंह के यश को ही अधिक गाया है। भरतपुर आने के लिये शिवजी ने उनको जो स्वप्न दिया, उसी को उदाहरण स्वरूप नीचे दिया जाता है—

कवित्त

मोसों आज सपने में शिव महाराज ऐसें,
कह गये सोई हम बरनी प्रमान है।
मेरौ जप व्रत नेम, पूजन अनेक विधि,
कीन्हों है सर्व उर बाके मेरो ध्यान है।
'मोतीराम' ब्रह्म कुल-पालक कलपतरु,
सबै बात लायक सो दया कौ निधान है।
तेरे जो मनोरथ हैं पूरन करैगौ तिन्हें,
मेरो भक्त नाहर जवाहर जवान है॥

एक वियोगिनी का मर्मस्पर्शी चित्रण :-

कवित्त

पीव पीव करत मिलें जो मोहि आन पीव,
सौने चोंच चातक मढ़ाऊँ कर आदरन।
कुटिल कलापिन के कंठन कटाय डारौं,
देत दुःख दादुर चिराय डारौं गादरन।
'मोतीराम' झिल्लीगन मंदिर मुदाई डारौं,
बधिक बुलाइ बाधौं वग के विरादरन।
विरह की ज्वालन सों जलद जराइ डारौं,
स्वासन उडाऊं बैरी बेदरद बादरन॥

२६-ब्रजचन्द:-आपका विशेष परिचय उपलब्ध नहीं है। इनका कविता-काल वि० १८२०-२५ के अन्तर्गत ठहरता है। इन्होंने महाराज सूरजमल की प्रशंसा के अनेकों फुटकर छन्द लिखे है। इनमें से उदाहरण स्वरूप एक पद्य दिया जाता है:—

कवित्त

शंकर के आगे जैसे त्रिपुर के जुत्थ भजे,
भासकर आगे जैसे तिमिर भगात है।
वारि आगे अगिनि वयार आगे वादर ज्यों,
धार आगें कायर ज्यों धीर ना धरात है।
केहरि के आगे जैसे कुंजर समूह भजें,
सुरसरि के आगे पाप देखत विलात है।
वैसें ही सुजान नन्द 'कवि ब्रजचन्द' कहै,
सिंहनवलेस आगें अरि भगि जात हैं॥

२७—शोभनाथ —इन कविवर का विशेष वृत्तान्त उपलब्ध नही हुआ है, परन्तु इनकी रचना से इतना पता अवश्य लगता है कि ये महाराज सूरजमल के समय से लेकर महाराज जवाहरसिंह तक रहे हैं। इन्होने "माधव जयति" नाम का एक ग्रन्थ लिखा है, जिसका रचना काल स० १८२४ वि० है। कविता के उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

दोहा

'माधव जयति' सुनाम यह, ग्रन्थ करन आनद।
'शोभनाथ' कवि लख कियो, चतुरन हेतु सुछंद॥

छप्पय

सूरजमल सो जग करत, नेकहु नहिं कम्पौ।
कर उठ्ठान पठान रुहेलन, मद को चम्पौ॥
लार मलार लगाय, राव लीनो कर चाकर।
और कितेक अमीर, दिलीपुर के गुणआकर॥
अति वली जवाहर जगत मे, जाहिर जिहि गुन गन सही।
वीराधिवीर विक्रम अमित, व्रज-महीप राजै मही॥

२८—महाकवि देव —आप इटावा के अन्तर्गत ब्राह्मण जाति मे उत्पन्न हुए थे। आपका जन्म 'भावविलास' के रचना काल के आधार पर स० १७३० वि० माना जाता है। मिश्रबन्धुओ ने अपने 'विनोद' मे इनका स्वर्गवास स० १८०२ विक्रम को सन्देह के साथ प्रकट किया है। निश्चयात्मक रूप से यह किसी ने नही लिखा कि महाकवि 'देव' का देहावसान ठीक किस सम्वत् मे हुआ। भरतपुर राज्य के पुस्तकालय में इनकी कुछ फुटकर कविताओ का सग्रह सुरक्षित है। इससे यह प्रतीत होता है कि ये भ्रमण करते हुए वृद्धावस्था में भरतपुर राज्य मे आये। यहा पर आप भरतपुर-नरेश जवाहरसिंह से मिले और उनको दो कवित्त सुनाये, जिनको सुनकर जवाहरसिंह बहुत प्रसन्न हुए और आपको ५०००) पाँच सहस्त्र रुपये पारितोषिक स्वरूप प्रदान किये। इस घटना से 'देव' ८५ वर्ष की अवस्था मे १८२५ वि० मे भरतपुर आये।

महाकवि 'देव' के काव्य के विषय मे जितना लिखा जाय उतना ही थोडा है। इतना लिख देना पर्याप्त है कि आप रीति-काल के प्रमुख कवि हैं। चूंकि भरतपुर-नरेश जवाहरसिंह (१८२०-२५) का आपने यशोगान किया एव कुछ समय के लिये आपने भरतपुर निवास किया, इसी नाते उदाहरण स्वरूप उनके द्वारा भरतपुर के विषय मे लिखे हुए कवित्तो मे से एक कवित्त दे देना पर्याप्त होगा।

दक्खिन के दक्खिनी पछांह के पछाँही भूप,
उत्तर उत सेनाहू पूरब को रल की।
सुभट समाजन की गाजन गरज भूमि,
तरजति छाती 'देव' दानवके दलकी।
यदुवंशी नृपति सुजान के सपूत वीर,
कहाँलौ वखान करू तेरे भुज-बलकी।
मोहि भई जाहर जवाहर तिहारे हाथ,
आय लगी सायत विलायत कतलकी॥

२९—गोधाराम:—आशुकवि 'गोधाराम' का कविता-काल १८३० से १८६० वि० सम्बत् तक माना जाता है। इन्होंने महाराज जवाहरसिंह की प्रशंसा में अनेक छन्द लिखे। चन्द वरदाई की भाँति इनका भी महाराज रणजीतसिंह के साथ युद्ध में साथ २ रहना पाया जाता है। महाराज इन्हें मात्रा हीन (गधा) कहा करते थे। जब लार्ड लेक ने भरतपुर पर घेरा डाला और दोनों ओर की सेनाएं अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने में लगी हुई थीं, तब महाराज ने इनसे कहा, "अरे मात्रा हीन इस समय कुछ कह सकते हो?" गोधा ने कहा-"महाराज की जैसी आज्ञा हो।" महाराज ने तत्काल एक समस्या "वेगिही गुपाल फौज मारैगो फिरंगी की" देदी, जिसकी गोधा ने उसी समय निम्न पूर्ति कर सुनाई:—

भारत में भीषम पिता को पन राख्यौ नाथ,
द्वारिका में टेर सुनी पाण्डव-अर्द्धगी की।
मघवा कही ही ब्रज दऊंगो डुबाय गिरि,
गोवर्धन धारि रक्षा करी ब्रज-संगी की।
तुरत ही सुदामा को दारिद विनास्यौ नाथ,
हरनाकुस मार्यो सो शोभा है त्रिभंगी की।
अबकैं हमारीं बेर कान मूंद बैठे कहाँ,
वेगिही गुपाल फ़ौज मारौगे फिरंगी की॥

प्राची में लगी ही सो वजीर काची राखि गयो,
पट्टन में टीपू झर एक वार वरती के।
दक्षिण दहल पेशवान के महल लागी,
डरे दिगपाल भूप कपे सब धरती के।
सोई आग आय अब दिल्ली-पति देस घर,
सूबा उमराव सब खागीर भरती के।

नेही तेग धारन सो गोला बौछारन सो,
बरती बुझाई रे सुजान चकवर्ती के ॥

३०—मोहनलाल —आप कुम्हेर निवासी प० केशवदेव के सुपुत्र थे, और जाति के सनाढय ब्राह्मण थे। इनके रचित चार ग्रन्थ पाये गये हैं, उनमे जो रचना-काल मिलता है उससे यह अनुमान होता है कि आपका जन्म सम्वत् १८०० विक्रमी के आस पास हुआ था और मृत्यु १८५० के पश्चात्। आपके रचित ग्रन्थ (१) रग-मजरी (२) फूल-मजरी (३) पत्तल (४) पिंगल-सार है, जिनमे से कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

रग-मजरी (दोहा)

मुकट जटित हाटक मनो, दधि-सुत गुरु उर माल।
सजे जुमरदी तन बसन, आवत मोहन लाल ॥
ठारसै तेतीस अरु, गढ कुम्हेर शुभ ग्राम।
केशव-सुत मोहन रची, 'रग-मजरी' नाम ॥
शीश कीट सारँग धरे, मृग मद केसर भाल।
खेलत ख्याल वसत को, मनमोहन ब्रज बाल ॥
झूलत रग हिंडोलनो, मानो चढ्यो अनग।
सारी सोहे सोसनी, बनी बाल शुभ रग ॥
ओढ कुसूमल चूदरी, खेलन चालो तीज।
सग सखी नव-यौवना, शिर शोभित ऋतु भीज ॥
कृष्ण कासनी कर सुखद, पावत लै लै नाम।
केलि रची सबही सहित, वृन्दावन निज धाम ॥

फूल-मजरी रचना-काल (दोहा)

पड्ड वेद वसु इन्दु ये, सवत् कुम्हेर सुगाम।
केशव सुत मोहन रची, 'फूल-मजरी' नाम ॥

अवतरण

कमल नयन कान्हर लला, सुन्दर साँवल गात।
वनते आवत सुरभि सग, मद मद मुसकात ॥
पीत पगा झीनो झगा, कर कुसुमन की माल।
नगन जटित कर मुरलिका, बाजत शब्द रसाल ॥
कैसें कदम तरें अली, पहिरें बसन दुकूल।
पिय परदेस बनाव यह, जनु गुडहर को फूल ॥

गुलचीनी की भाँति कौ, भली भाँति रंग राय।
लंहगा चारु सुहावनो, रही भली छवि छाय॥
मैने कहुँ देखी लला, गुलअंगल की माल।
लखि हाँसी आवत हमन, कियौ कहा जंजाल॥

३१—चतुराराय:—यह जाति के ब्रह्म भट्ट थे और महाराज भरतपुर के आश्रय में रहते थे। इनका कविता-काल सं० १८३३ के आस पास ठहरता है। इनकी रचना में अलीसहादतखाँ के साथ पथैने में होने वाले युद्ध का वर्णन है जो 'पथैना-रासो' के नाम से प्रसिद्ध है। यह युद्ध वि० सम्बत् १८३३ में हुआ था। कवि ने बड़ी ओज पूर्ण भाषा में इस युद्ध का वर्णन किया है और साथ ही भरतपुर राज्य के महाराजाओं की वंशावली का बखान करते हुए ऐतिहासिकता का परिचय भी दिया है। 'पथैना रासो' से कुछ उद्धरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

सुमरन सारद माय को, गनपति कौ सिर नाय।
छंद पथैने कौ कियौ, 'चतुराराय' बनाय॥

छप्पय

खानचंद कै भयौ, कुँवर ब्रजराज महीपति।
ताके सुत द्वै भये पुन्य, जाग्यौ प्रताप अति॥
भावसिंह अतिराम और चूरामन ठाकुर।
बुद्धसिंह गजसिंह कुशलसिंह भयौ दिवाकर॥
जाहिर जहान हिन्दुवान में, कह 'चतुरा' आनद छयौ।
यह वंस अंस वसुदेव सुत, भावसिंह भूपति भयौ॥

भावसिंह के द्वै भए, रूपसिंह बदनेस।
ब्रज मण्डल मंडन महीं, सुरपुर मध्य सुरेश॥
सारदूल अतिराम के, भयौ वेरज्जा जुल्ल।
ढिग राख्यौ बदनेस ने, प्रानन की समतुल्ल॥
सारदूल अतिराम को, कीयो भुविपै नाम।
दियौ भूप बदनेस ने, ताहि पथैनो गाम॥
ताके सुत चौदह भये, चौदह बुद्धि निधान।
जाहर जंबूदीप में, दान और किरपान॥
अली सहादतखान ने, दीनो बढ़ा तुरंग।
सूरवीर तिसपै चढ़े, धर धर जीन उमंग॥
ठारह सै तेतीस के, माह मास सुदि ग्यास।
अली सहादतखान ने, तज्यौ आगरौ बास॥

३२—उदैराम —यह कवि जाति के गौतम ब्राह्मण और ग्राम टौंटपुर तहसील भरतपुर के रहने वाले थे। याज्ञिक बन्धुओ ने 'माधुरी वर्ष ५ सख्या १' मे भरतपुर राज्य के हिन्दी कवियों पर एक खोज-पूर्ण लेख लिखा है, उसमे इनको महाराज रणजीतसिंह के समय में राज्याश्रित कवि लिखा है और इनका कविता काल स० १८३४ से १८६२ माना है। इन्होंने राधाकृष्ण की लीला विषयक अनेक छोटे ग्रन्थ रचे हैं। उनमे से इनका 'सुजान सम्वत्' नामक, ग्रन्थ प्राप्त हुआ है, किन्तु वह अपूर्ण है। यह ग्रन्थ राजस्थान प्राच्य प्रतिष्ठान जोधपुर से प्रकाशित हो चुका है। इसमे महाराज सूरजमल के चरित्र का वर्णन है। खोज से एक पुस्तक 'गिरवर-विलास' और प्राप्त हुई है। इनकी रचनाओं मे अनुप्रास उपमादि अलकारों का बड़ा ही सुन्दर समावेश है। इसकी भाषा श्रुति मधुर चमत्कारिक एव प्रभोवोत्पादनीय है। वर्णनों मे सजीवता है। 'सुजान-विलास', 'गिरवर विलास' के अतिरिक्त उदैराम द्वारा रचित श्री कृष्ण की ७ लीलाओ व 'पक्ष पच्चीसी' 'बारह-मासी' व फुटकर कवित्त और पाये जाते है। कविताओ के कतिपय उदाहरण निम्न लिखित हैं —

दोहा

दसम सुनी देखी कछुक, हम तुम एकहि संग।
सोई अब वर्णन करौं, श्रवण सुखद परसग॥
ब्रजमण्डल जदुवस मे, अस कला अवतार।
उदित भयो भूपति भुवन, सूरज हरन अंध्यार॥
(गिरवर विलास से)

मेरे उर आयकें, विहाय विधि-मन्दिर कों,
सुन्दर-सरोवर मति मजुल मे न्हाइये।
करकें सिगार हार, अग साज अलकार,
तन-सुकमारि सार गध सो लगाइये॥
भारती भमानी, जगरानी, वाक् बानी बैठ,
कवियन के कठनि हसासन विहाइये।
ले के करबीन, परबीन मन मोद-मान,
आइये सयानी सो सुजान गुन-गाइये॥
(सुजान सागर से)

एक दिना ब्रज नारि, निरप जमुना मे न्हाती।
ताक लगाय गुपाल, करी तिनसो छल घाती॥
चीर चुराये आय तव, सबकी नजर छिपाय।
काहू ने जानी नहीं, चढे कदम पर जाय॥
(कृष्ण लीला से)

जमुना के तीर तीर बृच्छन की भीर जहाँ,
बन्दर चकोर मोर कीर लै पढावै है ।
छूट रही अलकें, अलबेलो अकेलो बन,
बाँसुरी में दै दै हेला गाय जो बुलावै है ।
इतने में एक आय बोली 'ऊदै' औचक ही,
एरे अहीरके तू ऐसों इतरावै है ।
आज तो अकेलो पायो, करन मन भायो दही,
लूट लूट खायो, बल कौनको दिखावै है ॥

जानत ही हम साख बड़ी, बैसाख में साख सबै ही बिसारी ।
ऐसे को वीर भरोसो कहा, कहि और में और कछु कर डारी ॥
गाय बजाय रिझाय हमें, ठग अत गयो अब दै करतारी ।
हाय 'ऊदै' अब कैसी बनी, पर हाथ बिकाय गयोरी बिहारी ॥

३३—राजेश:—इनका विशेष वृत्तान्त तो प्राप्त नहीं है, परन्तु भरतपुर राज्याश्रित कवि अवश्य प्रतीत होते है । इन्होंने महाराज रणजीतसिंह की प्रशंसा में कुछ छन्द लिखे हैं, जिससे इनका कविता-काल सं० १८३४ के आस पास ठहरता है । कविता का उदाहरण नीचे दिया जाता है:—

परम रजेश तू द्विजेश वंश अंश हंस,
कीरति तिहारी छीर सिन्धु लों भरी रहै ।
अतुल अगाध बोध बिमल बिधाता जैसौ,
सर्वगुण ज्ञाता ज्ञान आनंद करी रहै ।
चण्ड मार्तण्ड सौ प्रचण्ड तेज लोचन में,
ताही की ज्वाल अरि उर में अरी रहै ।
ब्रज बलवीर रणजीतसिंह तेरी धाक,
भूपन के भौन भौन भाजर परी रहै ॥

३४—बंशीधर:—आप महाराज रणजीतसिंह के राज्यकाल में काव्य रचना करते थे । ये भरतपुर निवासी और जाति के ब्राह्मण थे । आप द्वारा रचित कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, केवल फुटकर कवित्त ही मिलते हैं । इनकी काव्य रचना को देखकर यह प्रतीत होता है कि आप एक कुशल काव्य-मर्मज्ञ थे । आपकी भाषा भावानुकूल है । भाव पक्ष एवं कला पक्ष दोनों में अच्छा समन्वय है । आप अनुप्रास एवं यमक लिखने में सिद्ध हस्त प्रतीत होते हैं । भक्ति परक एवं शृंगार रस पूर्ण कविताएं लिखने में आप अत्यन्त कुशल हैं । इनके फुटकर छन्दों में से कुछ छन्द उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किये जाते है:—

पापी तीन तापी जापी नापी औ उपापी सम,
मोहन सुधापी जीव, आपी थलथैया को।
वारकन वारिकन वारतन वारक है,
वारि अघ ओघन उवार वर दैया को।
नातौ कीनौं हातो नातो पूरयो सुरपुर ही कौ,
पानौ कीनौं 'वशीधर' मुकन भरैया को।
कामना की गैया काम-तरु की कनैया अहै,
तरंगनि-तनैया ते उजासौ-सेस-भैया को।

दुर्गामन दुर्मन दुकूल गह्यौ दीन वधु,
दीन ह्वै कै द्रुपद-दुलारी यो पुकारी है।
छाडे पुर पारथ को ठाडे पिय पारथ से,
भीम महा भीम ग्रीव नीचे कर डारी है।
अवर ज्यो अवर अमर कर्यौ 'वशीधर',
भीषम करण द्रोण सोभा यों निहारी है।
सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है,
कि नारी ही की सारी है कि सारी ही की नारी है॥

सदल गुलाब रग रंगी अंग चन्द्र उदै,
अहा कहा महा रूप पाति की निकाई है।
बेसर विलास लोल लोचन मधुर हास,
हिये के हुलास की गुराई मुख छाई है।
त्यौरी की तरग भ्रू भ्रभंग मे अनग कोटि,
कौतुक करत मुसिकात छैलताई है।
चाहत चुचात ललचात लपटात मन,
'वंशीधर' माधुरी अनूप छवि पाई है॥

३५–गुलाम मुहम्मद–यह पीरमुहम्मदखा के पुत्र थे और रणजीत काल मे हुए थे। इन्होने भरतपुर नगर का, यहाँ के राज्य का तथा दुर्ग आदि का विस्तृत वर्णन किया है। जिस प्रकार हिन्दी के अन्य मुसलमान कवियों ने प्रेम सम्बन्धी कथाएँ लिखी हैं उसी प्रकार आपने भी 'प्रेम रसाल' नाम की एक प्रेम-गाथा सवैया, कवित्त, दोहा तथा कुडलिया आदि विविध छन्दों मे लिखी है। रूपक, उपमा आदि के प्रयोग मे आप बड़े कुशल थे। आपकी पुस्तक बहुत ही मनोहारिणी है, जिसमे कहीं २ उर्दू तथा फारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। एक-दो स्थान पर गजलें भी दी गई हैं। उदाहरणार्थ कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं —

सवैया

हे पृथपाल कृपाल धनी सुधि लेहु सहाय करौ किन मेरी ।
लु ज भयौ दुख संकट में अति व्यापत मो तन ब्याधि घनेरी ।
तो विन कौन पुकार सुनें मग में ठग हेरत रैनि अँधेरी ।
औरनि पास निरास भयौ अब केवल आस रही हरि तेरी ॥

तेरा ही भरोसा है तू कृष्ण मुरारी है ।
मैं दीन विचारा हूँ तू कु ज-विहारी है ॥
मैं दास कहाँ जाऊँ को बाँह गहै मेरी ।
सुधि लेहु विशंभरजी अब आस तिहारी है ॥
चाणूर संहारयौ तें गहि केस हन्यौ कंसाई ।
अब ढील यहाँ एती, किहि भाँति विचारी है ॥
कंगाल सुदामा सौ तैं राव किया छिन में ।
दासी जुहुती कुब्जा सो राज दुलारी है ॥
पर काज घने सारे गजराज उबारे तैं ।
पृथपाल विदुर कीने तू ख्याल खिलारी है ॥
प्रहलाद बचायौ तें पाताल बली दीनों ।
अवतार लियौ मथुरा व्रज भूमि सुधारी है ॥
संसार कहाजानें, अख्तार घने तेरे ।
अब लाज रखौ माधव यह अर्ज हमारी है ॥

३६—बालकृष्ण:—यह कविवर उदैराम के समकालीन थे और रणजीत-काल में हुए थे। आप राधाकृष्ण के अनन्य भक्त थे। इनकी 'राधा प्रतीत परीक्षा' नामक रचना हमारे देखने में आई है। यद्यपि यह एक छोटी पुस्तक है जिसमें केवल १२८ पद हैं, किन्तु इनकी रचना अत्यन्त भाव पूर्ण और प्रभावोत्पादक है। उदाहरण देखिए:—

अवतरण

एक समै लाडले कीनी मन इच्छा । लैन राधिका पर चले परतीत परीच्छा ॥
कैसी धौं राधिका करै परतीत हमारी । तातै जहाँ जैये जहाँ बृषभान दुलारी ॥
त्रिया भये भूषण सजे तन झूमर सारी । माँग पार बैनी गुही मनों पन्नग-नारी ॥
नख सिख सकल सिंगार कै सौरभ सरसाये । लखिकें सिवारु सार दामन माँहि लजाये॥
चली गई जहाँ राधिका बृषभान किसोरी । गज मराल मन हरन को जिनकी छवि थोरी॥
राधा आवत देखि के अति आदर कीनो । आसन दै कर पान दै कर बिजना लीनौ ॥
अंग अंग अवलोकिकें मन माहि विचारी । यह तौ कोऊ है बड़ी महाराज कुमारी ॥

जो पै चाहनि हो सुनो तो बात वखानो। हित जानकें कहत हूँ जो बुरो न मानो॥
अहो तियन मे राधिका गुन रूप निधानो। कुँमरि तुम्हारे कथ की इक अकथ कहानी॥
मैं आवत ही मग चली जब लखी अकेली। उन उठाय कें कांकरी मो तन को मेली॥
जब हूँ सखी हूँ रही जब कछु न बोल्यो। अपने सँग के सखन मे मन माहि कलोलो॥
मेरे मन मे रिस भई कछु न बाते। हौं पुनि चलि आई सखि तेरे हित नाते॥

३७—हुलासी —यह कवि भरतपुर के रहने वाले और जाति के ब्राह्मण थे। आप वीर रस की कविता करते थे। इनका कविता-काल सम्वत् १८३४ वि० के आस पास ठहरता है।

उदाहरण (कवित्त)

अलवर, उदैपुर, बीकानेर, जोधपुर,
कोटा, औ करौली पीठ जयपुर के दै गये।
राजा रजपूत धुर दक्षिण, औ पछाह के,
विभव विहाय कें सु आपै बस ह्वै गये।
कहत "हुलासी" राव राजा सब पूरब के,
हारकें नवाब, अग्रेज टोपी नै गये।
जम्बू दीप खडन को मडन भरतपुर,
वाके गढ टूटेते अनेक सर है गये॥

३८—मूलराय —यह कवि जाति के ब्रह्मभट्ट (राय) थे। ये तहसील नदवई जिला भरतपुर के अन्तर्गत नूरपुर ग्राम के निवासी काशीराम के पौत्र तथा अद्भुतराय के पुत्र थे, जैसा कि स्वय कवि ने अपने परिचय मे निम्न दोहा लिखा है —

नगर नूर को देश है, ब्रजराजा को धाम।
तामे ग्रन्थ बनाइये, मूलराय कवि राम॥

इन्होंने पद्मपुराण मे वर्णित गीता के महातम का 'गीतामहातम' नामक विविध छन्दो मे भाषानुवाद किया है। अनुष्टुप छन्द के परिमाणानुसार इसमे २००० छन्द हैं। इनके ग्रन्थ का रचना काल स० १८३६ वि० है, जैसा स्वय कवि ने लिखा है—

ठारमै छत्तीसवो, विक्रम सवत जान।
क्वार मास वदि पचमी, भौमवार शुभ भान॥

३९—देवेश्वर —ये जाति के माथुर चतुर्वेदी थे। इनका कविता-काल स० १८३६ वि० ठहरता है। इन्होंने महाराज सूरजमल के भाई वैर के राजा प्रतापसिंह

के पौत्र पुष्पसिंह के लिये "पुष्पप्रकाश" नामक एक छोटासा ग्रन्थ सं० १८३९ वि० में लिखा है। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है:—

ब्रज नरेन्द्र कौ, कुंवर प्रताप।
ताकौ सिंह बहादुर आप॥
पुहुपसिंह ताकौ परिगास।
ताहित किय, यह 'पुहुप-प्रकाश'॥

दोहा

गो गोपी गोपाल गन, गुल गुलाव गहि पानि।
गोकुल गोकुलचंद को, गुन्जा गुन्ज गुंजानि॥
बिल बिलात वाला विकल, बाधा विरह विशाल।
चल चुप देखी चपल चख, चकित चित्त नंदलाल॥

४०—पदमाकर:—ये जाति के तैलंग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मोहनलाल भट्ट था। पद्माकर का जन्म बांदा में सम्वत् १८१० वि० में माना जाता है। भारतीय काव्य-गगन में यदि सूर सूर्य और तुलसी शशि हैं तो पद्माकर शुक्र के समान देदीप्यमान हैं। इन्होंने अनेक राजा महाराजाओं से अतुल सम्मान एवं प्रचुर द्रव्य प्राप्त किया था। यह भरतपुर नरेश रणजीतसिंह के समय में उनके पास भरतपुर पधारे थे। यहाँ से भी इनको बहुत सम्मान एवं धन दिया गया। महाराजा रणजीतसिंह व उनके पुत्र बलदेवसिंह के विषय में इनके फुटकर वीर रस के बहुत कबित्त यहां उपलब्ध हुए हैं, उनमें से कुछ नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

डँकन के घोर शोर माचौ चहुँ ओर जाके,
ओझ की झकोर कोऊ पावत रजे नहीं।
कहैं पदमाकर उदँड भुज दंडनि की,
चंडता विलोकैं भीम आवत मनैं नही॥
हंका पर हंका कै सुबंका बलदेवसिंह,
जंग जुरै लाखन कै खाक हू गनै नही।
त्वै कर प्रचंड जहाँ काटे अरि झुन्ड तहां,
मुन्ड मुन्ड माली पै बटोरत बनै नहीं॥

कहर कौ कांस किलकाली को कोलाहल सौ,
हालाहल सलिल, धरातल वडव को ।
कहै 'पदमाकर' महीप रणजीतसिंह,
तेरो कोप देख यो दुनी मे को न दवको ॥
चिल्लिन को चुगल विजुल्लिन को तीखौ तेज,
बांकुरो ववा है वडवानल अजव को,
गव्विन को गजन गुसैल गुरु गोलन को,
गाजन को गज गोल गुमज गजव को ॥

उच्छलत सुजस वलच्छ नव लच्छ दिच्छ,
दिच्छिन हू छीरधि लौं स्वच्छ छाइयत है ।
कहै पदमाकर महीप रणजीतसिंह,
अच्छिन मे ओज पर तिच्छ पाइयत है ।
पच्छ विन लच्छि लच्छि विकल विपच्छी होत,
गव्विन के मुच्छ कर तुच्छ नाइयत है ।
प्रकटत पुच्छ कुच्छ-कुच्छ पर शेप जब,
रुच्छ परि मुच्छ पर हाय लाइयत है ॥

पेलै को प्रनै को, मीच मेलै को मुठी मे झुकि,
झेलै को उच्छलत मुसल्ल, वलवीर को ।
कहै 'पदमाकर', उमडै को, उमादल पै,
दडै को दुनी मे, वेग, वाढत समीर को ।
वर्जै को, वलाय मद मर्जै को, महीसुरन,
गर्जै को गरज वज्र बास्यो सुना सीर को ।
मोडै को दई को अव लोडै को अगनि पुंज
ओडै को अतक वीर बका रणधीर को ॥

दाहन तें दूनी तेज तिगुनी त्रिसूल हू ते,
चिल्लिन ते चौगुनी चलाक चक्रचाली तें ।
कहै 'पदमाकर' विलद वलदेवसिंह,
ऐसी समसेर सेर सत्रुन पै घाली तें ॥
पांच गुनी पवि ते पचीस गुनी पावक तें,
प्रगट पचास गुनी प्रलय पनाली तें ।
सुपंन सौं सौगुनी सहस्त्र गुनी सूरज तें,
लाख गुनी लूक तें करोर गुनी काली तें ॥

४१—मुरलीधर:—यह जाति के भट्ट ब्राह्मण थे। इन्होंने अपनी कविता में 'प्रेम' उपनाम का प्रयोग किया है, और कहीं कहीं पूरा नाम 'मुरलीधर' भी लिखा है। इनका कविता-काल सं० १८५० से १८६० वि० तक माना जाता है। इन्होने महाराज रणजीतसिंह के समय में होने वाले 'अंग्रेजी युद्ध' को अपनी आँखों देखा था। यह बड़े प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इनकी रचना सरस व्रजभाषा में है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

कवित्त

चढ़े हैं फिरंगी भयौ भारत भरतपुर में,
तोपन तराप के हलान पै हलान की।
सूरज सुजान कौ बहादुर लस्यौ है तहाँ,
छीन लई खेतन में खग्ग जे खलान की।
'प्रेम' यों प्रचण्ड महि मंडल को मण्ड रह्यौ,
पूरन प्रताप थल थलन थलान की।
काली करी तृपत फिरंगी सब कुरंगी भये,
एकहू न कला चली पथर कलान की।

केसन की नवनि, नवनि वरुनीन की है,
भूरि भाग भौंहन वकाई बीज बै रही।
नासिका नबेली की, अनूप रूप 'प्रेम' राखि,
दन्तन की दमक दुख दामिन कों दै रही।
चम्पक चमेलिन की चरचा चलावै कौन,
अंग की सुवास छित छोरन लों छ्वै रही।
पाई असि तावी औ सितावी नैंन रंग की है,
आवी अंग अंग की गुलाबी रंग ह्वै रही॥

कंटक गुलाव क्यों गरूर करै अपने मन,
हमें कंज केतकी सुबासन के ढेरे हैं।
आदर ते एक दिन करीलहू पै बास करें,
आदर बिन जायँ कल्प तरु के न नेरे हैं।
'मुरली' मलिन्दन के कुल की मरजाद यही,
गंध हीन फूलन पै करत नहिं फेरे हैं।
ऐसी तुच्छ वारी की न कुच्छ परवाह हमें,
भुव बीच भौंरन कों वाग वहुतेरे हैं॥

४२—धौकल मिश्र —ये महाराज सूरजमल के भाई प्रतापसिंह के वंशधर तेजसिंह के आश्रय में वैर में रहा करते थे। ये जाति के ब्राह्मण थे। इनकी रचनाओं से कविता-काल सं० १८५० के आस पास ठहरता है। इन्होंने अपने आश्रयदाता तेजसिंह के लिये 'शकुन्तला नाटक' तथा 'प्रबोध चन्द्रोदय' नाटक का सरस व्रजभाषा में पद्यानुवाद किया है। 'शकुन्तला नाटक' का रचना-काल सं० १८५६ वि० है। कविता काव्योचित गुणों से सम्पन्न, सरस, प्रसादमयी एवं सुमधुर है। प्रबंध योजना अच्छे प्रकार की है।

शकुन्तला (अवतरण)

तन चंद कला सी, सिंधु सुधा सी, मनु चपलासी रुचिकारी।
फूली जनु वेली, पीत चमेली, गति अलवेली सी धारी॥
सारी द्युतिकारी, पीत किनारी, उज्वल तारी धारि लई।
अलकें रंग कारे, पन्नग प्यारे, गंध सुधारे सोभ छई॥
वैनी रचि देनी, काम नसैनी, पन्नग मैनी सी राजै।
पारी सुभ वन की, घटा सुघन की, सुचि निज मन की छवि छाजै॥
मुक्ता फल मंडित, सुरभि उछंडित, वसकरि पंडित सी गाजै।
झमकत कदम्बनी, मनो चन्दनी, जलधि नन्दनी लखि लाजै॥

प्रबोध-चन्द्रोदय

पीन सघन कुचवारी, प्यारी, कमलिनी इमि गावौ।
समय कुरंग नैनी, पिकवैनी हमको हिये लगावौ॥
दिगम्बरी सिद्धन के सत को, मत नाही मन में लावौ।
अहो कपालिक दरसन ही यह, मोक्ष रूप ही गावौ॥

४३—सूरतराम —इनके पिता का नाम महापात्र केवलराम था। ये जाति के ब्रह्मभट्ट थे। इनका निवास-स्थान ग्राम जहानपुर तहसील वैर था। इनको महाराज ग्वालियर की ओर से दो ग्राम जहानपुर व मुलैना जागीर में मिले थे जिनको उनके वंशधर अब तक भोग रहे हैं। इनका कविता-काल सं० १८५० वि० के आस पास ठहरता है। खेद का विषय है कि इनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होसका है। इनकी रचना के कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं —

सवैया

एक ही पांव सों, सैंधिया साहब, सागर लों सब दाबी धरा है।
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन, लोक पती मन मांहि डरा है।
दूसरे पांव को है वसुधा, विन दूग्न टेकन डांड पड़ा है।
'सूरत' सातहू दीपन में, तुही लँगड़ा सो तुही लँगडा है॥

४५—वृजेश —व्रजेश जाति के ब्राह्मण और महाराज रणजीतसिंह के समकालीन थे। आपकी रचनाएं बहुत उच्च कोटि की हैं। यद्यपि आपका कोई ग्रन्थ तो हमें उपलब्ध नहीं हुआ है, तथापि कुछ फुटकर कविताएं पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं। इन कविताओं के देखने से यह भलीभांति सिद्ध हो जाता है कि आप बड़े प्रतिभाशाली कवि थे। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

कवित्त

पूरन पुरुष ताकौ पारहू न पावैं वेद,
गावत पुरान ताहि मंगल विनोद में।
पालने झुलावें हलरावें पय प्यावें, मसि
विन्दुक लगावें भाल धारें मन मोद में।
अज अविनासी दैत्य दानव विनासी प्रभु,
सची कमलासी तहाँ रहत प्रबोध में।
कहत 'ब्रजेश' सुक सारद महेस सेस,
जग जाकी गोद में सो जसुधा की गोद में॥

घनन की घोर नभ मंडल दसौं दिसान,
साजे अवसान के निसान ब्रज बोर पर।
तडित तडाकी बहु बद्दल बलाकी स्याम,
धाम धर खंडन घुमडि बरजोर पर।
पौन के फनाटे झर झरना 'ब्रजेश' जल,
देखत दयाल गोप गोपी जन सोर पर।
मूलते उखारि कर-पल्लव सम्हारि गिरि,
फिरकी लौं फिराय त्यों बसायौ नख कोर पर॥

मंडि नभ मंडल, अखंडल उमंडि घन,
मंडि मंडि सायुध घमंड अति जोर पर।
खंडि जल घोर जोरा जोरे ही अपारे जीव,
जंतुन प्रहारे हा हा सब्द सुर सोर पर।
पौन तरु तोरे गोपी ग्वारनि करोरे त्योंही,
कंप तन गोरे राधा लाइ मन मोर पर।
करुना कलित भुज दंडन वलित कर,
महिते खलित गिरि धार्यो नख कोर पर॥

घटा घिरि आई कोप वासन पठाई जुथ्थ,
जुथ्थन सुहाई लूम लूम व्रज ओर पर ।
धक पक धाई गोप गोपी मन भाई गाय,
वच्छ अकुलाई करें करुणा किशोर पर ।
जसुमति मैया ढिग नंद बलि भैया ताकि,
ता छिन कन्हैया गिरि गह्यौ वर जोर पर ।
हर वर धाय भुज दण्डन घुमाय हाल,
करन पै छाया त्यों बसायौ नख कोर पर ॥

अमित अपारे नभ-मंडल गुहारै घन,
सायुध सँहारे धाय धाय व्रज वोर पर ।
चपला की चौंधे धर धार जल औंधे पौन,
गौन तन कौंधे त्यों समूल तरु तोर पर ।
करुना के कंद व्रजचन्द दुख कदन कौं,
घूमन घुमाय बंसी घोर वर जोर पर ।
मघवा खिसाय कर कगन फिराय गिरि,
छत्र सम छाय कै तुलायौ नख कोर पर ॥

नैन वर्णन (कवित्त)

खंजन तै खरे मनोरजन गुमान गुर,
गजन गहीले गुन गाहक करोरी के ।
मृग के मलीन मन बेधत परीन पुंज,
मीन हू अधीन करे भंजन चकोरी के ।
मैन कैसे वान खरसान के सुधारे तीखे,
उज्ज्वल अनियारे कारे भौर की मरोरी के ।
सौतिन के साल नदलाल श्री "व्रजेस" पाल,
राजत विसाल नैन कीरति–किसोरी के ॥

केसू के कुसमन की कफनी करी है कंठ,
तसवी कलीन मन मोद उपजायौ है ।
अंबनि कौ मौर सिर टोपी औ झवा है सेली,
अलफी अनार भौंर गुंज छवि छायौ है ।
झार्‌यौ मकरन्द द्रुम डारहि करि दड धारी,
खप्पर समीर यों "व्रजेस" गुन गायौ है ।

बडो वेगीर भीग्व प्राण को वियोगिन सो,
माँगन फकीर ह्वै वसत चलि आयो है॥

मुरली वर्णन (कवित्त)

माथे मोर मुकुट रसाल सिरमौर लसै,
फूले हैं सरसो फूल कुडल श्रवन है।
अलकें भ्रमर जुग लोचन कमल मुग्व,
चद देख अनि अहलाद के भुवन है।
मुरली मधुर गान पचवानादि तान,
कोयल कुहुकि मान माननी दवन है।
श्रीमत व्रजेन्द्र महाराज वलवन्त जू के,
राजत वसत रूप राधिका रमन है॥

४६—गणेश —ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे । इनका कविता-काल स० १८६० से स० १८९० वि० तक ठहरता है । ये भरतपुर के महाराज वलवन्तसिह के दरवारी कवि थे । इनके पुत्र लक्ष्मीनारायण व पौत्र युगल किशोर भी कवि थे। ये दोनो भी महाराज वलवन्तसिह के दरवार मे रहते थे। इससे यह पता चलता है कि उक्त कवि वहुत वृद्ध थे । इनकी रचनाओ मे से एक पुस्तक "विवाह विनोद" प्राप्त हुई है जिसमे उक्त महाराज के विवाह का सुन्दर ढग से वर्णन किया गया है। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है —

छूटत फुहारे जल जत्रन ते जल धारे,
देखे लगें प्यारे, न्यारे न्यारे बुन्द धारे हैं।
तोप तरवार ह्वै कें मुक्ता समूह स्वच्छ
लागन परतते वे सुकवि निहारे हैं।
नृप-सिरताज महाराज श्री व्रजेन्द्र वली,
वलवत दूल्है पै सरुपवत्त वारे है।
मेरे जानि व्याह के तमासे कौ उछाह जानि,
मानो हेत मानि आछे वरुण पधारे हैं॥

४७—जसराम —इनके विषय मे इतना ही वृत्त उपलब्ध हो सका है कि ये जाट जाति के थे और भरतपुर के रहने वाले थे । इनका कविता-काल स० १८६१ वि० ठहरता है क्योकि ये भरतपुर नरेश रणजीतसिह के यहा दरवार मे रहते थे।

इनके वीर रस के स्फुट छन्द पाये जाते हैं। ये खरी खरी कहने में नहीं चूकते थे। राज दरबार मे गुणियों का अनादर कराने वाले दीपचन्द व पलाग्राम के पटैल (गूजर) और किशना पर अप्रसन्न होकर आपने "सात-भूत खेले" वाली ग्राम्य लोकोक्ति का प्रयोग बड़े सुन्दर ढ ग से किया है । इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते है:—

कवित्त

देख दरबार दीपचंद सों प्रकासित है,
ताही छाय मीरजी अमीर वुद्ध साज की ।
पला कौ पटैल जो पलाय देत ताही छिन,
सही रहै येही कहै आयुस व्रजराज की ।
जिद्द "जसराम" जोर जाहिर जहर जूद,
किशना विष-वैन कहै, खोय लाज ताज की ।
आवै दीन दुखित सहाय दरबार जान,
सात भूत खेले, कहो कुशल का राज की ॥

मच्यो घमसान कोस तीन लगि लोथ परी,
मर गये सूर सांचे मौहरा अगाह ते ।
वाई यों भुजा ते मार कीन्ही जसबन्त राव,
परे रहै रुण्ड मुण्ड, लागे वे सलाह ते ।
कहत "जसराम" अगरेज जग हारि गये,
जीत जदुवसी सूर लड़त उछाहते ।
दोऊ दीन जान्यों महाराज रनजीतसिह,
हारि के फिरंगी फन पटक्यौ कराह ते ॥

४८—गंगाधर:—ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के रहने वाले थे इनका कविता-काल विक्रम स० १८६१ माना जाता है। इनकी रचनाओं में वी रस की प्रधानता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आप महाराज रणजीतसिह दरबारी कवि थे। एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है:—

कवित्त

पारथ मचायौ महाभारत भरतपुर,
घिरे भूप भट भीमसैन से सजत हैं ।
"गंगाधर कहै समसेरन की जड़ा झड़ी,
धड़ा धड़ी तोपन के गोला यों गजत है ।

जहाँ कर रारि गिरे गोरटा गरद्द भये,
दोऊ लट्ट पट्ट रण-खम्भन तजत है ।
फिरका फिरगिन के फार के फतूह करे,
जीत के नगारे रणजीत के बजत है ॥

४६–प्रसिद्ध –ये कवि जाति के ब्रह्म भट्ट थे । ये महाराज रणजीतसिंह की पलटन मे सैनिक कार्य के द्वारा जीविका अर्जन करते थे । इनका कविता-काल स० १८६१ के आस पास पाया जाता है । इनके वीर रस के अनेको फुटकर कवित्त मिलते है । उदाहरणार्थ कतिपय पद्य प्रस्तुत किये जाते है —

कवित्त

सुरपुर भवन, भरतपुर देखन को,
काहे काज आये हो फिरगी सूर छत्ता मे ।
धर के नसैनी चढ्यो कुरली खडग लिये,
किये मन भोरे गोरे सुरत चकत्ता मे ।
कहत "प्रसिद्ध" महाराज रणजीतसिंह,
धाय धाय धामे पग आगे ही धरत्ता मे ।
भेजी फोर पटक पछार लात खभन सो,
लेडी अगरेजन की रोवे कलकत्ता मे ॥

छप्पय

कछवाये सरभरे लरे नहि एक लराई ।
रजवारे भजि गये गिरत्ता गैल न पाई ।
दक्षिण लक्षण भरे, रग कवियन मुख भाखी ।
दीघ, देहली भई मैंड सूरज सुत राखी ।
दिगपाल हालि भुवपाल भग जब नृप बल चढते जहाँ ।
रणजीतसिंह नहि जनमते तो हिन्दुन हद रहती कहाँ ॥

देखे दुरबीन, कडाबीन बान सग लिये,
मत्तरह पहर हल्ला किये मदमत्ता के ।
पीरे पट झडा फते बुर्ज पै निसान दिये,
बाने फहराने मोरपच्छ के धरत्ता के ।
गोगनी जमात पाति बैठ के अघात खात,
भाँति भाति मामन सवाद नव खत्ता के ।

कहै 'परसिद्ध' महाराज रणजीतसिंह,
सत्रह हजार दल काटे कलकत्ता के ॥

५०—रमेश:—इनका कवित्ता-काल सम्बत् १८६२ से १८८०वि० तक माना गया है। इनका पूरा इतिवृत्त ज्ञात नहीं होसका है। इनकी कविताओं में रसानुकूल ओज एवं प्रसाद गुण का प्राचुर्य है। स्वाभाविक अनुप्रासों के सम्पर्क से इनकी रचनाओं में अद्भुत चमत्कार उत्पन्न हो गया है। इनका लिखा हुआ एक नायिका-भेद ग्रन्थ तथा महाराज रणधीरसिह की प्रशंसा के कुछ फुटकर छन्द मिलते हैं। वीर रस की रचनाओं में से कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

महाराज रणधीरसिह का आंतक वर्णन:—

कवित्त

तेरी धाक धरक धराधिप धर धरात,
घर छोड़ धावत धरा की लाज धारें ना।
कोटिन के कोटि सुनि उद्धत निसान धुनि,
सूने करें पल में पलायन में हारें ना।
झुकि झुकि झारन में छिपत पहारन में,
प्रान हानि जानि हार जीत कौं बिचारें ना।
श्रीमत् ब्रजेन्द्र महाराज तेज तत्ता देखि,
पत्ता से उड़त बैरी सत्ता कों सम्हारेंना ॥

महाराज रणधीरसिह के अश्वों का वर्णन

उच्छलत सुच्छलत वल के बलच्छ दच्छ,
रुच्छ गहि गच्छति सु तुच्छ करें पौन कों।
अच्छन निहारि के सुपच्छनि के पच्छ हरें,
पच्छिपति के से बच्छ बच्छि तन कौन कों।
श्रीमत् ब्रजेन्द्र के हयेन्द्र वरने 'रमेश',
लच्छित सु लच्छिन के लच्छ वर हौन कों।
दच्छिन अदच्छ के सु कच्छनि के कच्छ खोलि,
रच्छक विलच्छन समच्छ करे भौन कों ॥

हाथियों का वर्णन

औपे आप ओपे इन्दु नीलमनि पंनग से,
दव्वे पर भूमि को 'रमेश' कहै आनि के।
उद्धित अमंद ते कलिंद ते बिलंद बेस,
मलिंद पुंज मद की के।

ऐसे गल गाज गजराज व्रजराज द्वार,
दिग्गज हू भाजे लाजें मोर पहिचानि के ।
सु डादड उद्धत उदड नभ-मण्डल मे,
चूमे मुगा मडल मुखारविद जानि के ॥

५१–मिश्र सुखदेव गगाकिशोर—ये माथुर चतुर्वेदी महाकवि सोमनाथ के वशज थे। इस वश को भरतपुर राज्य की ओर से राज-दानाध्यक्ष का पद परपरा से चला आता है। इनके वशज अब भी भरतपुर मे विद्यमान हैं और इस उपाधि का उपभोग कर रहे हैं। इनके पिता का नाम वैजनाथ मिश्र था। इनका रचा हुआ 'सग्राम-रत्नाकर' नाम से महाभारत के भीष्म पर्व तथा मूसल पर्व के अनुवाद हमारे सग्रहालय मे हैं। ग्रन्थ के देखने से हम इस निश्चय पर पहुचे हैं कि आप न केवल हिन्दी के ही वरन् सस्कृत के भी ज्ञाता थे। इस ग्रन्थ मे आपने अगणित प्रचलित तथा अप्रचलित छन्दो का प्रयोग किया है जिससे सिद्ध होता है कि आपको पिङ्गल शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। यद्यपि आपने यत्र-तत्र अलकारो का भी प्रयोग किया है, किन्तु उनका विशेष चमत्कार कहीं नहीं दिखाई पडता। इतना सब कुछ होते हुए भी हम यह कह सकते हैं कि आपकी भाषा मे सरलता तथा स्वाभाविकता की मात्रा यथेष्ट पाई जाती है और शैली साधारणत अच्छी है। इनकी कविता के कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं —

छप्पय

श्री नारायण शख चक्र को धारण करि कें ।
अरु नर उत्तम रूप आप अर्जुन को धरि कें ।
सब दैत्यन की दमनि देव सरसुति मन भरि कें ।
श्री पारासर सूनु व्यास आनन्द बिहरि कें ।
हूजें प्रसन्न मोपे अवै कृपा दृष्टि अधिकारि कें ।
मैं करत प्रणति तुमको सदा अपने हियमे धारि कें ॥

कवित्त

पर्वत कैलास मध्य पून्यो की जुन्हैया बीच,
आपने समान बिम्ब आपनो निहारि कें ।
धावत अनेक बार छाया सो विचारि रारि,
अनि ही प्रचण्ड सुण्ड दण्ड को भ्रमाय कें ।
दौरै मत पुत्र ! तेरे पदनि के घातनि तें,
कम्पति है धरती ताकी दया को विचारि कें ।

ऐसे गिरिजा के सपूत पूत गनपति कौ;
सदा उर ध्यान धरौ कपट विसारि कें ॥

५२—रसनायक.—जैसा कि आपके नाम से प्रतीत होता है 'रसनायक' रस-राज श्रृंगार के सफल उपासक थे। आपका जन्म भरतपुर राज्यान्तर्गत कामवन नगरी में भट्ट जाति में हुआ था। आपके जीवन परिचय एवं कविता-काल के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता, किन्तु विद्वानों ने आपका कविता-काल सम्वत् १८७२ वि० के लगभग माना है। आपका केवल 'विरह-विलास' नामक काव्य-ग्रन्थ उपलब्ध हुआ है। इस ग्रन्थ में भ्रमरगीत के ढंग पर पद्य में उद्धव तथा गोपियों का सम्बाद बहुत ही आकर्षक ढ़ंग से लिखा गया है। गोपियों के द्वारा प्रयुक्त उक्तियाँ तो बहुत ही मर्मभेदी है, और भाषा भी भावानुकूल सरल और रोचक है। यद्यपि आपका एक ही ग्रन्थ देखने मे आया है फिर भी इसके देखने से यह विश्वास नही होता कि ऐसे उच्च कोटि के कवि ने केवल एक ही ग्रन्थ लिखा हो। केवल इसी एक ग्रन्थ के अवलोकन से यह कहा जा सकता है कि आप काव्य-कला के अच्छे मर्मज्ञ एवं प्रकाण्ड विद्वान् थे। 'विरह-बिलास' ग्रन्थ से आपकी सरसता, सरलता, मर्मज्ञता एव विद्वत्ता की पर्याप्त झलक मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवत: जगन्नाथदास "रत्नाकर" को 'उद्धव-शतक' की प्रेरणा रसनायक के 'विरह-बिलास' से ही मिली हो। इस ग्रन्थ के निर्माण काल के विषय में कवि ने स्वयं लिखा है:—

अष्टादस जु वहतरा, सम्बत् सावन मास।
सोंमवार तिथि तीज सुभ, प्रगटो विरह-बिलास ॥

आपके 'विरह-बिलास' काव्य के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जारहे हैं:—

उद्धव (दोहा)

अलख निरंजन ध्यान धरि, निगुन ज्ञान उर धारि।
जोग जुगति सिखवहुँ अबै, सीखौ सब ब्रज-नारि ॥

गोपी (दोहा)

अलि ! बौरे काहे बकत, कह दुवारिका कान्ह।
बसत निरंजन सुचित ब्रज, श्री घनश्याम सुजान ॥

कवित्त

व्यापक जगत ब्रह्म अलख कहाँ है काहि,
आदि निरंजन नाम रँगे सब पेखि लै।
कैसो अविनासी को है ? बेद जो बखानें जाहि,
विधिहू न जानै हमैं एकै रंग रेख लै।

ब्रज ही बसत 'रसनायक' न आन ठौर,
काहे झकझोर करैं सुचित विसेख लै।
वौरे लौं बकत ऊधौ द्वारका बतावैं कान्ह,
कान्ह हैं हमारे प्रान प्रानन में देख नैं॥

अन्य सखि (दोहा)

प्रेम-सुधा जिन जनम सों, अलि चाख्यौ अनुकूल।
जोग जहर तिनको कहा रचि मानै, मति भूल॥

कवित्त

जोगलै सिधारे तुम कुबिजैं दै भोग आये,
निरगुन हमैं लाये लम्पट लखातु हौ।
रोकत सरल पन्थ वेद औ पुरानन के,
थापत अपथ पथ निलजै मिहातु हौ।
यामें धौं कहा है 'रसनायक' वृथा है वाद,
चाह जो हमारें सो न चरचा चलात हौ।
अपनी कहत पर-पीर ना लहत ऊधौ,
माधव मिले की विधि काहि ना बतातु हौ॥

सवैया

कान्ह दै जोग पठाये तुम्हैं हम जानी अहो जू बडो जत लीनो।
कैसी अन्होती कथा कथिकै, भरि श्रौननि हाय हलाहल दीनो।
काहू की नेक दया न लई 'रसनायक' वैर बिसाह्यौ नवीनो।
क्यों हमसों अबला बपुरीन पै ऊधव आय कैं ऊधम कीनो॥

राधिका जी का पत्र श्री कृष्ण को (दोहा)

एक बेर ब्रज आइयै, सुन्दर स्याम सुजान।
सुरति समैं न रुसाइ हौं मोहिं तिहारी आन॥

कवित्त

एक बेर आय ब्रज-बिरही जिवाय लीजै,
पाछै मन मानैं सोय कीजै सचुपाय हौ।
मान ना करौंगी 'रसनायक' धरौंगी धीर,
गुन ही गनौंगी पै न औगुन गुनाय हौं।
पीवत अधर दस दैहौं ना कठिन जुग,
कुच ही अरी न अंग हरवें छुवाय हौं।

सौहैं हैं हजार मोहि नंद के कुँवर अव,
सु-रति समै न हा हा रावरे रुमाय हों ॥

दोहा

जारत अनल अगाध हरि, विरह व्याधि वढ जाय ।
मो जीवत जदुपति अवै, ब्रजहि वमावैं आय ॥

कवित्त

आपनौ वतन छाडँ कीरति कछू न यामें,
चरचै करत लोग नाहक हँसाइयै ।
प्यारे परदेस 'रसनायक" रहै हो अवै,
घरकी विचारी कहा मो हू तो सुनाइयै ।
अति ही अनन्य दई विगरी प्रचंड मोहि,
जीवत वचाय तन तापहि नसाइयै ।
सूनौ है सकल व्रज विरही विकल यातें,
गोकुल के नाथ आय गोकुल वसाइयै ॥

घट की न जल भरै, मग की न पग धरै,
घर की न सुधि करै, लैंनि है उसाँस री ।
एक सुनि लोट गई एक विन जोट भई,
एकन के अधरन छूट आए आँसुरी ।
एहो 'रसनायक' याते कछू तो उपाय कीजै,
एसो तो करौ जासौं होय न उपहाँस री ।
दीजिये जराय वन-बाँसन कटाय फेरि,
उपजैं न वाँस वन वाजैगी न वाँसुरी ॥

५३—मोतीराम:—ये महाराज रणधीरसिंह के दरवारी कवि थे। इनका कविता-काल संवत् १८८० बि० के आस पास ठहरता है, परन्तु इनकी रचनाओं में महाराज रणधीरसिंह से लेकर महाराज बलवंतसिंह तक का वर्णन मिलता है। इनके पिता का नाम रघुवरदास था जो प्रसिद्ध महाकवि रामलाल के पितामह थे। ये नगर के निवासी तथा मुद्गल गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके रचे हुए दो ग्रन्थो का पता लग चुका है, जिनका विवरण इस प्रकार है:—

१—व्रजेन्द्र-वंशावली.— इस ग्रन्थ में भरतपुर राज्य वंश का वर्णन बड़े ही विस्तार पूर्वक रसीली भाषा में किया गया है।

२-ब्रजेन्द्र-विनोद —यह रीति ग्रन्थ है, जिसमे नायिका भेद को लक्षण और उदाहरण देकर भली प्रकार स्पष्ट किया है।

आपकी भाषा बडी ही लचीली तथा श्रवण सुखद है। भाव व्यजना सरल तथा हृदय स्पर्शनी है। शैली मे पूर्ण चमत्कार है और अनुप्रासो की छटा देखते ही बनती है। इनकी रचनाओ के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

ब्रजेन्द्र-बनावनी— (दोहा)

महाराज रणजीत सुत, श्री रणधीर ब्रजद ।
जगमगात जग मे प्रगट, जाको सुजस ग्रमद ॥

कवित्त

प्रबल प्रचड मजु मालती निरड मद्रि,
मलय उदटन गम्र गहि गारिये ।
गहि गहि गौहरन जौहर ज्वनित जाल,
पानिप त्रिमाल मद चित्त त उतारिये ।
'मोतीराम' रुचिर अनेक उपचार भार
घने घनसार हू असार कर टारिये ।
हिन्द सरताज तेरे जस पै ब्रजेन्द्र वीर,
कोटिक - ग्रमद चद चाँदनीन वारिये ॥

पद्धरि छन्द

अति विमल नीर सरवर अपार,
जह करत आन खग कुल विहार ।
वल हस हसनी लिये सग,
तिहि तीर आय विहरै मुढग ।
बहु चक्रवाक चातक चकोर
मन मोद भरे विहरत मोर ।
कोकिल कपोत कूजत रसाल,
मजुल अनूप बहु बगन जाल ॥

भुजग प्रयात छद

लगी चारिहूँ ओर झालर झमके,
मु तो चन्द्र की चन्द्रिका सी चमके ।
बने पोतवारे चदोवा बिराजे,
चहूँ ओर जर तार की कोर साजें ।

घटा सर्द की सी अटा औ अटारी,
छटा सी चमंकें जहां गेह नारी।
रची है सची चित्तसों चित्र सारी,
खची स्वर्ण सों रूप की रासि भारी॥

कवित्त

जलद बंदूक चहुं औरन अचूक राजें,
साजे घोर गरज गरज गुन बारे हैं।
छटनि छतारि स्वच्छ रंजक अपार छवि,
धूम धार धुरवान रार निरधारे है।
'मोतीराम' मोहन सरस सुर सार धार,
वारि धर गोलिन गुमान गार डारे हैं।
पावस न होय बीर खेलत सिकार,
महाराज रणधीर के करौल बल भारे हैं॥

बुरजन बुरजन गरजैं गभीर धुनि,
लरजै पहार बन सघन समाज सों।
चमकत रंजक चपल चपलासी घोर,
प्रलय घटासी गेरे गरभ गराज सों।
ऐसी तोप तीखीं गढ भामते भरतपुर की,
दगती ब्रजेन्द्र वीर हिम्मत दराज सों।
पूछत कुरावे करै छुव्वत तुरावे भरै,
गजब अराबे अरैं अरि में अवाज सों॥

जाकी जोति जगती में जगत ज्वलित जाल,
जगर मगर रहै दसहू दिसान में।
व्रजजन कोकनद अधिक प्रमोद भरे,
सोक तजि कोक कुल कलति कलान में।
'मोतीराम' सुकवि मलिन्दन के बृन्द धाये,
दान मकरन्द गध पिवत भलान में।
सेस नहि ताव व्रजकत बलवन्तसिंह,
उदित प्रताप आफताव हिन्दवान में॥

कलपलता के कल कोमल अमल दल,
करुना निलय गति ललित इलाज के।
सुखद सरोजन ते ओज दरसत दूनों,
कलिमल दल दलमल दराज के।

'मोतीराम' सुकवि सहायक सदैव जय,
दायक विनद वलवन्त व्रजराज के।
औढर ढरन नव अनुज वरन ऐसे,
विनऊ चरन वेंकटेस महाराज के॥

५४—महाराजा वलदेवसिंह —आपने सम्वत् १८८० से १८८१ वि० तक भरतपुर के राज-सिंहासन को सुशोभित किया। आप महाराज रणधीर के भाई और उच्च कोटि के विद्याव्यसनी तथा विद्वानों का आदर करने वाले थे। आपका दरवार विभिन्न प्रान्तों के कलाकारों एवम् सत्कवियों से सुशोभित रहता था। विभिन्न प्रान्तीय गुणियों के सत्संग का प्रभाव महाराज की कृतियों में स्पष्ट झलकता है। जिस प्रकार आपकी महारानी 'चतुर सखी' ने अपनी काव्य-प्रतिभा प्रकाशन का माध्यम गीत काव्य को चुना है, उसी प्रकार आपने भी गीत काव्य ही अपनाया है। आपके पदों से भली प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि आप काव्य के साथ साथ संगीत कला के भी विशेषज्ञ थे। सत वाणियों के सदृश्य आपकी रचनाओं में सरसता एवं माधुर्य प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। आपकी रचनाओं में व्रज-भाषा के अतिरिक्त पंजाबी एवम् मारवाडी भाषा का पुट भी विद्यमान है।

आपने अपनी रचनाओं में 'चतुर छैल', 'चतुर प्रभु' तथा 'चतुर पिय' के उपनाम की छाप अङ्कित की है। आपकी कृतियों (पदों) के कतिपय उदाहरण नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

ठुमरी

पचरँग पाग जरद वाकी पटका साँवरे वदन पर मेरा मन अटक्या।
तीखे नाखे नैन भौंह रतनारी मृदु मुसक्यान चमक चित लटक्या॥
'चतुर छैल' मुकुटि मनि गरे मदन फद मेरा मन लपट्या।

ठुमरी राग काफी

मन मोहन मेरे लाल हो जी सही वाला एजी सेली वाला मेरे लाल।
छुपि छुपि के क्यों घरन हो वाही मे लग्या मेरा ख्याल॥
'चतुर पीव' [illegible] हाली अव हो ज्या परमाल।

[illegible]डी—इक ताला

[illegible]

[illegible]लो भू ठे सुजन सगाथी॥
मान धूमत है जस हाथी।
फिर न मिले रस साथी॥

५५–महारानी अमृतकौर:—महाराज बलदेवसिंह स्वयं जैसे सरस कवि थे वैसी ही उनकी रानी अमृतकौर भी थीं। ये भी सरस पद रचना किया करती थीं और अपने पदों में 'चतुर सखी' तथा 'चतुर प्रिया' के उपनाम का प्रयोग करती थी। इन रचनाओं से यह अनुमान होता है कि 'चतुर सखी' काव्य-कला के साथ संगीत-कला कोविदा भी थीं क्योंकि इनकी समस्त उपलब्ध रचनाएँ गीत काव्य के रूप में ही है। इनके पदों के पढने से संत वाणी का सा आनन्द प्राप्त होता है। इनका अधिकाँश काव्य भक्ति रस से ओत प्रोत है। कतिपय रचनाओं के उदाहरण निम्नाङ्कित है:—

राग गौड मलार ताल जलद

प्यारी निकसी है खेलन तीज राधे निकसी है खेलन तीज।
पंचरंगी दामिन लावन सों ओढ़े दक्खिनी चीर।
कैसें कहूं अंगिया की सोभा आभूषन की भीर॥
बेदी में हीरा की झलकनि वेसरि लटकन धीर।

पायल तौ घायल करि ड़ारे पिय सामल बलबीर।
'चतुर सखी' या विधि सौ खेलौ वा जमुना पै तीज॥

जल भरन कू जाय स्याम खड़ौ पनघट पै।
राधे तेरौ रूप अनूठौ लाल देखि सुधि सब भूल्यौ।
महरि कौ लरिका महा अति खोटौ गलियन में रोकै टोकै।
'चतुर सखी' ने यह छवि निरखी कहा कहै अब की ररिया॥

राग ईमन

प्रीत जुरी मोरी तुम सूँ गिरिधर। प्रीत जुरी मोरी तुम सूँ।
बहुत जतन क्यों हूँ कर जोरी अब तोरी हरि छल सूँ॥
महाधूत वह नन्द लाड़िलौ घात चलावै बल सूँ।
'चतुर सखी' मेरे विरह बहुत है विन दरसन अब तरसूँ॥

राग सोरठ–ताल चंपक

मोहन मुकुट की झलकानि।
कोटि चन्द्र बिसेस सरि भरि तुलै न ता अनुमानि॥
नन्दजी कौ कुँवर सुन्दर राधिका प्रान।
चार जुग मै वरन सकै नहि प्रेम रस की खानि॥
ब्रजवासीं सब लोग जुग सों करत अमृत रस पान।
'चतुर सखी' के प्रान प्यारे दरस देहु मोहि आन॥

५६—जयदेव —ये काव्य के साथ साथ ज्योतिष के भी प्रकाण्ड पंडित थे और महाराज बलदेवसिंह के दरबार में रहते थे। इनका कविता-काल १८७१ वि० है। इन्होंने 'जातक भूषण जोग' नामक ग्रन्थ संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर हिन्दी में लिखा है। ग्रन्थ में काव्य-सौन्दर्य तो नहीं है परन्तु जातक सिद्धान्त पर भाषा के पद्यों में अच्छी पुस्तक प्रतीत होती है। उदाहरण के लिये इनके दो दोहे प्रस्तुत किये जाते हैं —

महाराज बलदेव जू कह्यो सहज ही भाय।
'जातक भूषण जोग' की, भाषा देहु बनाय॥
सम्वत् ठारह सौ बरस, इकहत्तर को मान।
कातिक वदि पाँचै गुरु, पुनर्वसू सो जान॥

५७—धरानन्द— इनका पूरा नाम घासीराम था। इन्होंने कहीं 'कवीश' कहीं 'धरानन्द' और कहीं 'घासीराम' नाम से कविता की है। ये भरतपुर के निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे। इनके वंशज अब भी भरतपुर में हैं, जिनमें पंडित रामचन्द्र महाराजजी 'कर्मकाण्ड केसरी' 'ज्योतिषाचार्य' राज-पंडित प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। घासीराम संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके रचे हुए संस्कृत में वेदान्त न्याय, ज्योतिष आदि पर कितने ही ग्रन्थ हैं। आपका बहुत सा साहित्य आपके उक्त वंशधर पं० रामचन्द्र ने श्री हिन्दी साहित्य समिति को भेंट कर दिया है। कवि धरानन्द महाराजा बलदेवसिंह के दरबारी कवि थे। हिन्दी साहित्य में आपने एक रीति बृहद् ग्रन्थ 'साहित्य सार चिन्तामणि' नामका लिखा है। यह ग्रन्थ गद्य-पद्य अर्थात् चम्पू के ढंग का है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें तुलनात्मक शैली पर अन्य कवियों की कविता के साथ कवि ने अपनी कविता लिखी है। इस ग्रन्थ का निर्माण-काल सम्वत् १८७२ वि० है। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

छप्पय

मद जल मंडित गंड, चंड लगि चंचरीक गन।
हलत सुन्ड मनु दण्ड, विविध जिहिं पूजत सुरगन॥
सेन दन मद मत्त, बेन सोभित अनेक गति।
सेवत सेस सुरेस, अनेक नरेस महामति॥
सिंदूर पूर सोभित बदन, मदन बुद्धि भव भय हरन।
जय सुर नर मुनि बंदित चरन, लम्बोदर कविजन सरन॥

कवित्त

गुन्जरत कुंज कुंज सरस मलिन्द कुल,
उड़न पराग पुंज रंग सरसायौ है ।
प्रफुलित मालती, कदंब बन भूमि रहो,
पवन झकोरनि सुगन्ध बरसायौ है ।
सुमनन की सम्पत सरसत, केलि बाग बीच,
बरनै 'कवीश' पचबान बल छायौ है ।
माननी के मान गढ़ तोरिवे के काज आज,
काम नृप सेवल बसंत-बन आयौ है ॥

कहो कहाँ पाई झूंठ मोती में सचाई अब,
दुरे न दुराई गति पावस गयंद की ।
बडेन की बडाई लघुताई श्रो लघुन की यो,
परै पहिचानी परछाई सूक चन्द की ।
मै तो बरजत ही अहीर के कों बार बार,
आँखन अंदाई ही मिठाई विम कंद की ।
'घासीराम' कहैं कंठ कूबरी लगाई अब,
आई री उघर सुघराई नद नंद की ॥

प्रकरण ३

राम-काल (पूर्वार्द्ध)

महाकवि रामलाल —महाराज बलदेवसिंह के देहावसान के अनन्तर भरतपुर राज्य वश विश्रृंखलित होने लगा। अंग्रेजों ने ऐसा सुअवसर देख भरतपुर दुर्ग पर आक्रमण कर दिया और दुर्जन साल को पदच्युत कर राज्य को अपने आधीन किया। बलवन्तसिंह को सिंहासन प्राप्त हुआ और राज्य शासन अंग्रेजो की देख रेख मे होने लगा। राज्य की स्थिति एक दम बदल गई। युद्ध और वैमनस्य के स्थान पर शांति तथा मैत्री स्थापित हुई। फल-स्वरूप हिन्दी कविता को पुष्पित एव पल्लवित होने का एक स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ। शांति स्थापन के साथ २ कवियो के विचारो और भावो मे परिवर्तन आने लगा। महाकवि सूदन ने वीर रस की जिस काव्य सरिता को प्रवाहित किया था वह आगे चलकर मद गति से बहने लगी, यद्यपि इसका प्रवाह सर्वथा सूखा तो नही। वीर रसात्मक छद अब भी लिखे जाते थे, किन्तु जो कुछ भी लिखे जाते थे वह अधिकतर बदी-जनो की विरदावली के रूप मे ही होते थे क्योकि जाटो की वीरता एव गौरव के वे दिन समाप्त हो गये जब "दक्खिनी पछेला करि खेला ते अजब खेल, हेला मारे गग मे रुहेला मारे जग मे" अथवा "तेरे तेग तत्ता मे चकत्ता की न रही सत्ता, पत्ता से उडाये अंग्रेज कलकत्ता के" की सी वीर रस पूर्ण कविताए रची एव कही जाती थी।

अब शृङ्गार रस का समय आया और रीति कालीन कवियो की भाति इस काल के भरतपुर के कवि भी अपने काव्य को शृङ्गारिक रचनाओ से अलकृत करने लगे। परिणामत राजा और प्रजा दोनो को कविता से विशेष प्रेम बढने लगा। भरतपुर नरेश बलवन्तसिंह स्वय उच्च कोटि के कवि थे और कवियो का बडा सम्मान करते थे। इनके आश्रय मे रहकर अनेक कवियों ने इनकी उदारता का वर्णन किया है, और सुन्दर २ ग्रन्थ लिखे हैं। इन कवियो मे महाकवि रामलाल एव रसानद दो कवि पु गवों ने वीर रस के साथ साथ शृङ्गारिक रचनाओ को अधिक महत्व दिया है।

महाकवि रामलाल यजुर्वेदी शाखा के मुद्गल गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके

वंश के आदि पुरुष संतोष मिश्र विराटपुर (बयाना) के समीप सूरौठ ग्राम के रहने वाले थे। इनके पुत्र खेमचन्द तथा पौत्र रघुवरदास हुए। ये वहां पर अपने शत्रुओं के द्वारा अधिक सताये जाने से तंग आकर नगर (भरतपुर राज्य के अन्तर्गत) में रहने लगे। इनके छः पुत्र रामरतन, सीताराम, मोतीराम, रेखराज, सेवाराम तथा सदाराम हुए। सेवाराम के चार पुत्र हुए, जिनके नाम राम, कृष्ण, धनुर्धर तथा हनुमान थे। ये ही राम हमारे महाकवि राम (रामलाल) है। छन्द सार ग्रन्थ मे इन्होंने अपना वंश परिचय विस्तार पूर्वक दिया है।

कविवर राम ने मथुरा में विद्याध्ययन किया। इनके गुरू का नाम घासीराम था जो संस्कृत साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे। विद्या लाभ कर जब राम कवि अपने घर नगर लौटे तो दीवान दिलसुखराम की प्रेरणा से यह हिन्दी में काव्य रचना करने लगे। उच्च कोटि के कवि होने के कारण महाराज बलवन्तसिंह ने इन्हें अपने दरबारी कवियों मे स्थान देकर सम्मानित किया।

अब तक हमारे देखने मे इनके सात ग्रन्थ आ चुके हैं, जो काव्य की दृष्टि मे एक से एक बढ चढ़ है। इनके ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है:—

१—अलंकार मंजरी:—इस ग्रन्थ में प्रत्येक अलंकार के लक्षण स्पष्ट करके कवि ने सरस कविताओं के उदाहरण दिये है। यद्यपि यह ग्रन्थ केवल २८ पृष्ठों का है तथापि गागर में सागर का समावेश है।

२—छन्द सार:—यह ग्रन्थ पिंगल-शास्त्र की शिक्षा के लिये बनाया गया है। विषय प्रतिपादन कितनी सुन्दरता से किया है यह तो देखते ही बनता है। इस ग्रन्थ की यह विशेषता है कि पुस्तक के आरम्भ में कवि ने देव स्तुति और बंदना आदि के पश्चात् अपने आश्रय दाता महाराजा बलवन्तसिंह का वंश वर्णन कर भरतपुर नगर, कोट, महल, हाथी-घोडे, तलवार आदि वस्तुओं का वर्णन बड़ी ही सुन्दर और उत्कृष्ट भाषा में किया है, जो समय के ऐश्वर्य एवं वैभव का पूर्ण द्योतक है। सिंह और सिंहनी के संवाद रूप में महाराज की वीरता और यश आदि गुणों का सुन्दर चित्रण किया है। इसके अनन्तर ग्रन्थ का मूल विषय वर्णित है।

३—हितामृत लतिका:—यह ग्रन्थ हितोपदेश तथा पंच तंत्र आदि के ढंग पर लिखा गया है। उपदेश ओजपूर्ण भाषा मे बड़े सुन्दर ढंग से लिखे गये है। इन्होने भी 'सूदन' तथा 'सोमनाथ' के समान ग्रन्थ के प्रत्येक अंग के अंत में 'शंकर-छन्द' की आवृति की है जो इस प्रकार है:—

जदुवंस कौ अवतंस नृप बलवन्तसिंह प्रवीन।
तिहि हेत द्विजवर राम कवि अमृत-लता यह कीन।
यह मैं विचार समाप्त कीनौ सुभग पहिलौ अंग।
वर विमल मित्रन कूं करै सुख मित्र लाभ प्रसंग॥

(४) शिखनख —इस ग्रन्थ मे शिख से नख पर्यन्त वाला रूप वर्णन किया गया है। प्रत्येक विषय-वर्णन अपने ढग का निराला तथा एक दूसरे से बढकर है। अलकारो का प्रयोग इतना सुन्दर और हृदयस्पर्शी हुआ है कि मु ह से बरबस वाह वाह २ निकल पडती है।

(५) विजय-सुधानिधि —यह ग्रन्थ महाराज बलवन्तसिह की आज्ञानुसार रचा गया था। इसमे महाभारत के वर्ण वध से लेकर दुर्योधन के ताल प्रवेश तक की कथा बडे अच्छे ढग से २६ तरगो मे लिखी है। इस ग्रन्थ के प्रत्येक तरग के अन्त मे इन्होने एक दुवई (हरिपद) छन्द की आवृति की है जो इस प्रकार है —

श्री बलवन्त भूप ब्रज रक्षक हुकम हर्ष के दीनो ।
तिहि हित यह कवि 'रामलाल' ने विजय 'सुधानिधि' कीनो ॥
वरण विलास ललित पद यामे रुचिर वीर रस मान्यौ ।
सजयपुर प्रवेश नृप कौ हित, प्रथम तरग बखान्यौ ॥

(६) गगा पच्चीसी —यह पुस्तक काव्य-चमत्कार से पूर्ण अलकृत है। इसमे केवल २५ छन्दो मे गगा के भिन्न २ अगो का वर्णन सुन्दर भाषा मे प्रभावशाली ढग से किया है।

(७) विरह-पच्चीसी —यह पुस्तक इन्होने कविवर रस-रासि के कहने से महाराजा बलवन्तसिह के लिए लिखी है। इसमे गोपियो तथा उद्धव के सवाद और गोपियो का विरह वर्णन ऐसी उत्तम रीति से किया है कि विरह का मूर्तिमान स्वरूप खडा हो जाता है। अनुप्रासो का स्वाभाविक चयन इतने सुन्दर ढग से हुआ है कि 'रतनाकर' का उद्धव शतक छायानुवाद सा प्रतीत होता है।

उपर्युक्त ग्रन्थो के अवलोकन से महाकवि रामलाल अपने समय के सर्वोत्कृष्ट कवि ही नही वरन् लब्धप्रतिष्ठित आचार्य भी सिद्ध होते हैं। अन्य आचार्यों की अपेक्षा इनमें यह विशेषता पाई जाती है कि इनके ग्रन्थो में शिथिलता एव नीरसता किंचित् मात्र भी दिखाई नही देती। लक्षणो तथा उदाहरणो में कही भी दुरूहता नही आने पाई है। अलकार, रस, नायिका, एव पिंगल आदि सभी काव्यागो का सुबोध एव सरल भाषा में वर्णन किया है। इनकी भाषा में प्रौढता, सजीवता एव मार्मिकता का समावेश है। शैली हृदय ग्राही तथा विद्वतापूर्ण होने के साथ २ सर्व साधारण के लिये भी बोध गम्य है। इनके प्रत्येक छद का रस परिपाक एव भावो की मधुर व्यजना पाठक को रस में निमग्न किये बिना नही रहती। उदाहरण देखिये —

(अलकार मजरी से)

वस्तु उत्प्रेक्षा उदाहरण (दोहा)

लाल बाल के भाल पर, मृग मद करत विलास ।
सुधा लैन आयौ मनौ, मनौं सुधानिधि पास ॥

हेतूत्प्रेक्षा लक्षणम् (दोहा)

जहाँ भावना और की, और विसै युत हेत ।
'हेतुत्प्रेच्छा' तहाँ कवि, रसिकन कूँ सुख देत ।।

उदाहरण (सवैया)

कै लागी ग्रीसम की इन्हैं घाम ही, कै अलि काम की ज्वाल दहे है ।
कै रँगरेज मजीठ रँगे पग, कै मधु के मद छाकि रहे हैं ।।
'राम' कहै कि गुलाल भरे किन, कै छिन काहू पै छोह छए हैं ।
ए नँदलाल के सग जगे ते, विभौ सजनी द्दग लाल भए हैं ।।

फल उत्प्रेक्षा लक्षणम् (दोहा)

फल लैवे के भाव सूं, तर्क करै जिहि ठौर ।
तहाँ 'फलसु उत्प्रेच्छा', वरनै रसिक बहौर ।।

उदाहरण (दोहा)

तव नैनन की सहस द्दग, होत हेतु मृग माल ।
विधि पेखत देखत मही, निस दिन फिरै विहाल ।।

प्रथम तुल्य योगिता लक्षणम् (दोहा)

हित अनहित यह एक में, जहाँ लखाई होय ।
'तुल्य योग' में प्रथम कौ, भेद जानिये सोय ।।

उदहरण (दोहा)

ब्रजपति नृप बलवंत कौ, चहुँ दिसि जस यह हाल ।
अरि गुनियन कूं उमगि कैं, देत सदा बह साल ।।

भरतपुर वर्णन (कवित्त)

पुर चहुँ ओर घोर सोर कर नाचें मोर,
कोइल कुहू कुहू कै लागत सुहाई है ।
कदली कदंब निंब, अंबु जबु तरु बर,
तिनपै लबंग लता 'राम' छबि छाई है ।
हाट–हाट द्वार घर–बार बाट बीथिन में,
गुंजत सुकुंज अलि पुंज समुदाई है ।
नृपति ब्रजेस के निकेत बसिबे के हेत,
संग झख-केतु के वसंत बन आई है ।।

असि वर्णन (कवित्त)

झूम झूम झमकि दमकि कैं चमकि जात,
झरि झरि परत झपट झर ज्वाल की ।
संभु की लटासी फेरि बिज्जुल छटा सी बनी
अरिन कटासी कूं घटा सी यहै व्याल की ।

देखि क दूर ते मोहि बोली भली ।
दूतका ते कही याहि लाग्रो अली ॥
तासु के पास मो लैय दूती गई ।
देखि कै मोहि ताज़ीम तानें दई ॥

॥ छन्द शका ॥

सुक सारिका अरु देस सहज सुभाव कौं ।
मत राजनीति विचारि पर इनको न उचित नरेस ॥
अति मृदुल तैं निज हाथ की विधिहू न राखी जाय ।
तातें कहौ कव कवन विधि करि देस कौं सरसाय ॥
अति अधर्मी अति धर्म रति अति आलसी कुल हीन ।
अति काम वस मति थिर न जाकी सो नृपाल मलीन ॥
तू तुच्छ मैंढक कूप को इक हम ही कौ जान ।
इह हेतु हम ते कहत उह के विविध चरित बखानि ॥
वड वृक्ष कौं जग सेइये फल विमल छाया हेतु ।
फल-हीन होय तउ सुछाया सकल श्रम हरि लेतु ॥
वड होय बड़ के आसरे लहि हीन सग होइ हीन ।
जिमि मुकुर मे गजराज उन्नत लगन लघु अति हीन ॥
टरि जात सव भय एक संग ही जानि समरथ रात्र ।
जिमि भये निभय-प्रवत भय तें ससक चंद प्रभाव ॥

दोहा

तव मैं तिनत यह कही, कैसे यह इतिहास ।
कहन लगे सोते तवै, ह्वै प्रसन्न सुखरास ॥

(नख शिख)

ब्रजपति नृप वलवत कू, परम रसिक पहिचान ।
रस शृगार वर्णन करौं गनपति गुरु उर आनि ।
सो शृगार तरुनी विषै, वरनन वहुत उमग ।
ताते अब कहि हौं सकल, शिख तें नख लौ अग ॥

कपोल कौतिल (सवैया)

कै अलि पदम मे आय पर्यौ ढुरि, कैधो भर्यौ विष हेम को वासन ।
कै घनश्याम कौ 'राम' कहै प्रतिविंव दिखावत सौतनि गासन ।
कै चतुरानन चार चितेरे की, लेखनी कौ लिखना लग्यौ स्यामन ।
गोल कपोल पै नाहिं तिया तिल, राहु ठयौ ससि कौ करि आसन ॥

विजय सुधानिधि

छप्पय

मुख प्रसंस-ससि मोर पक्ष्य अवतंस परम प्रिय ।
चारु चरण कौस्तुभ उदार उरवर सोभित श्रिय ।
गोपिन के दृग कमल काम समुचित अर्चित तनु ।
गोप गउन के मध्य बसत जनु लसत कुसुम धनु ।
गावत बजात सुख वेणु सुर-सप्त सरस संगीत लय ।
अवतार उदार अपार छवि जयति जयति श्री कृष्ण जय ॥

दोहा

नारायन नर वर वहुर वाणी व्यास मनाय ।
रच्चौ ग्रन्थ भाषा अवै ब्रजपति आयसु पाय ॥

छंद प्रमाणिका

सुभीम फेरि खेत में । भयौ जुझार खेत में ॥
गदा मुदा कुछावरे । कही तुसल्य आबरे ॥
तबै संभार सूरमा । सुसस्त्र धारि ऊरमा ॥
वजाय बाजने भले । जु पडु सैन में मिले ॥
किते अरी गिरे रुधे । किते जु सस्त्र से विधे ॥
तुमार पुत्र आद दै । लरै उदार नाद दै ॥
चढै तुमार घोर सों । उतैहु पडु जोर सौ ॥
सुधार सस्त्र जे लए । जुझार सामही भये ॥
तुमार पुत्र नै मषे । जु पडु आवते लषे ॥
सुफाँस हाथ में लई । जु फेक तान कैं दई ॥
विदीर्ण वर्म है वही । सुरथ्थ तें पर्यौ मही ॥

छंद त्रोटक

यह आवत अर्जुन है इतमें । मम त्रास कछू न गहै चित में ॥
हमरौ दल रूधत आत सबै । तहं लै चल रथ्थ जुझार अबै ॥
मत उल्लघन कै पथ्थ तथा । निज बारिधि ज्यों मरजाद जथा ॥
रज व्योम चढी सुन सैन घनी । लखि केहरि नाद संवाद सुनी ॥
तब कोप कर नृप साल्य ने वरसे अपरिमित बान ।
चहुं ओर ते दल रुक्यौ दमकत भानु किरन समान ॥
सर देख वहु भागे महीपति पंडु दल के भीरु ।
लखि कर्म ताकौ मत्स औ पंचाल भये अधीरु ॥

तट वासी वर्णन

आँडि कै मुराज राज साजि अब धूतन की,
पूतन को नेह गेह श्राम जग सोक की ।
'राम' इह भाति नर नाथन की पाँति वहु,
जहँ तहँ भाति तीरथ है सुधा थोक की ।
पीवत अघाय न्हाय धाय देव-सरिता में,
दुरिता नसाव ते दिखाव गति तोक की ।
कूदत फिरै धरै बिघनन के माथे पाव,
गंगा तट वासी कर हासी सुरलोक की ॥

सवैया

मातु ! तज्यो पन पावन घात की बात यहै जग लोग वरैगो ।
इन्द्र विरचहु के पुर में हरि के घर में अनि सोर परैगो ।
तो मुख नेक उदास भये जन 'राम' निरास ह्वै रोय मरैगो ।
मा निरधार उधारि हौ जो न तो या कलि कौन प्रवीन बरैगो ॥

या छिन सोक बिडारन को सुरलोक सौ संभु जटान में आवत ।
'राम' कहै जग दीनन के हित मीन चढी मित्र सीस मो धावत ।
नारद सारद सेसहु ते जस जानत नाहि सवयो करि गावत ।
अब ! स्वरूप तुम्हारो यहै निरलोभन के उर लोभ बढावत ॥

वायु सखा सुत बधु को वाहन ना अरि जीवन की सुख दैनी ।
ना सिर राजत तासु भयंकर जासु प्रिया जग आनँद सैनी ।
जा पितु के सुत के सुत को सुत तासिर मडन नाक नसैनी ।
श्री बलवत के सीस सदा बसै 'राम' कहै सोइ मातु त्रिवैनी ॥

विरह-पचीसी

उद्धव गोपी सवाद (दोहा)

मैं अनेक कविता रची, पचि पचि मति अनुसार ।
उत्तम मध्यम वा अधम, नृपन कही इक बार ॥
तब मो मन चिंता बढी, पढी कविन के पास ।
पढ तिनने मो सन कही, तब बानी रस रास ॥
तू पै कछु जाने नही, नृप के उर की बात ।
रीझत है बलवत श्री, सुनत बिरह की घात ॥

या ते तू अब बिरह रच, प्रिय हमार मत मान ।
हरि है तोर दरिद्र सुनि, ब्रजपति भूप निदान ॥
सुनि 'कविराजन के बचन, मो कहँ भयौ अनंद ।
बिरह पचीसी यह रची, अंकित सुगुन गुबिंद ॥

कवित्त

स्याम के सखा कूं आयौ जानि द्विज 'राम' कहै,
धाम धाम पास इमि बचन सुनाय कै ।
जब ते गये है ब्रज छाँडि ब्रजराज पुरी,
तब ते दई है आज खबर पठाय कैं ।
मात ते छिपाय ताय लाय जमुना के तीर,
मंगल गाय बीर सुबुध बुलाय कै ।
कितियाँ न जाओ लाल बतियाँ लिखी है कहा,
छतियाँ जुडाओ यह पतियाँ बचाय कैं ॥

इन्द्र हू के धाम कौ सुकाम, अभिराम 'राम',
पाँब हू धरै ना मग ज्ञान तजि भाजैगी ।
तन तजि दै है तऊ न जैहैं ब्रज छाँडि कहूं,
ह्वै कै रज रूप अंग स्याम के बिराजैंगी ।
हमरी तुवा की ऊधौ दुंदुभी मढ़ाये हू पै,
भू पै जान सूधौ पाथ, प्रेम ही कौ छाजैंगी ।
लाजैंगी न मान सुर साजैंगी न आन कछू,
गाजैंगी निदान कान्ह कान्ह कहि बाजैंगी ॥

सवैया

जाय कैं दै सिखि औसधि ऊधौ जु बा कुबजाय जबै निधि पाओ ।
स्याम सबै ब्रज के अभिराम हैं काम कहाय हा जोग जताओ ॥
जाने जू जान रहौ चुप के कब के तुम ज्ञान निधान कहाओ ।
क्रूर हमैं अकरूर जराय गयौ तुम तापर अब नौन लगाओ ॥

कवित्त

जान परी राबरी अनौखी रीति 'राम द्विज',
ऐसे घन स्याम गरबाये पाय राजकूं ।
भौ मन तुम्हारौ यह हो मन हमारे गात,
बिरह हुतासन सुबासन समाज कूं ।

याही ते विहारी नव मंगल कारी भये,
भारी भारी विपति विडारी दिन आज कूँ ।
अहो ब्रजराज ! तुम मारग चहो जो हमें,
धारन कियो हो गिरिराज किहि काज कू ॥

सवैया

भोग लिखे कुबजा तनकू ब्रजवासी वियोगहि कू सिरजाये ।
'राम' कहै ते विथा टरि है मरि है जो वृथा करि हैं पछिताये ।
या जग मे हुए नेही घने धरि देही लहे वपु पूरन दाये ।
लाल कू दोस कहा अब ऊपर भाल के अक मिटे न मिटाये ॥

अब कूवरी दूर री के तजि पाय कू गोपिका नाथ कहाइये जू ।
सुख पाइये तौलो निराम करो फिर जाइये 'राम' दुहाइये जू ।
मन भाई जो प्यारे करी मगरी कछु नेह को नातो निभाइये जू ।
जिन भाइये नेग नियाउ डरते ब्रजराज पिया ब्रज आइये जू ॥

कोकनद लोचनी अलीक उपमान करें,
दिपत महल महा कचन के खभा हैं ।
जात गड पायन विछौना मखमल ये जु
मूलन गिरत तन फिरत अचभा हैं ।
कहै 'कवि राम' बलवत भूप तेरी धाक,
धीर ना धरत अरि-दारा दुनि दभा हैं ।
रति जानी काम काम मोहिनी मुनिंद जानी,
इदु जानी रोहिनी मुनिंद जानी रभा है ॥

५६—रसरासि -ये महाराज बलवन्तसिह के दरबारी कवि थे। इनका कविता काल सम्वत् १८८० से १९०० वि तक माना जाता है। इनका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं है, किन्तु फुटकर कवित अवश्य मिलते हैं। रसरासि अपने समय के एक लब्ध प्रतिष्ठित कवि थे। महाकवि रामलाल आपका गुरुवत् आदर करते थे। इन्ही की प्रेरणा के फलस्वरूप कविवर रामलाल ने महाराज बलवन्तसिह के लिये 'विरह पचीसी' नामक ग्रन्थ लिखा था। इनकी कविता अत्यन्त सरस, सरल प्रभावोत्पादक एव मर्मस्पर्शनी है। ब्रज भाषा के प्रसिद्ध कवि सूरदास की सी विरह-वेदना आपकी कविता मे परिलक्षित होती है। इनकी कविता के उदाहरण देखिये —

कवित्त

अब कहां पाइयै उपाइ न उपाइये हू,
वह 'रसरासि' केलि बैंन कौ वजायबौ ।
चातुरी चलाइबौ न बोले हू बुलाइबौ जू,
सालत हिये में वाकौ मनहु मथायबौ ।
रूप दरसानि चौंप चाप रस सरन अति,
मन की हरन चटकीली चाल आयबौ ।
काहू सों जताइबो न वेदन बतायबौरी,
रहस्यो तन तायबौ कि मन पछतायबौ ॥

दस ही दिना कौ भयौ नयौ जसधारी जिन,
मारि डारी नारी ऐसौ निठुर निहारयौ है ।
बच्छ मार्यौ बकी मार्यौ अजगर हू मार डार्यौ,
हय हू कौ मारि खरहू कौं मारि डार्यौ है ।
मन माहि भूल्लौ फूल्यौ फल्यौ 'रसरासि' यहाँ,
ऐतो कृत कीनौ सो तो सबन बिसार्यो है ।
मामा मारबे को पाप मुकुट उतारवे कों,
कूवरी त्रिवेनी तामें तन कों पखार्यौ है ॥

सवैया

जिनके रट देखन ही की सदाँ, अस चेरी भई उन पाइन की ।
निरमोही तिन्हें तरसावत क्यों, जिनके चलै नाहिं चवाइन की ।
'रस रासि' हमें पहिचानों कहा, तुम जानत हौ गति गाइन की ।
इसमें रस रीत रसाइन की, सु करी तुम नीत कसाइन की ॥

६०—नथुआसिंह:—ये कुम्हेर के निवासी और जाति के अग्रवाल वैश्य थे। आप महाराज बलवन्तसिंह के समय में हुए थे। इनके फुटकर छन्द पाये जाते हैं। इनका कविता-काल संवत् १८८० वि० से सम्वत् १९०० वि० तक पाया जाता है। आपकी कतिपय रचनायें उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जाती हैं.—

दोहा

भादों वदी रोहिनी, आठे औ बुधवार ।
अर्द्ध रैन बरसा समै, लियौ कृष्ण औतार ॥

कवित्त

आदर जनायौ पितु मातु कूं सुहायौ दिव्य,
देह दरसायौ दौर आनंद अपार है ।

सुमिरत सेस महेस सबै मति धरत ध्यान मुनि वृन्दा ।
'ब्रज दूलह' चिन्तामनि स्वामी कृपा करो नद नन्दा ॥

६४—बलदेव —ये जाति के खण्डेलवाल वैश्य और भरतपुर के रहने वाले थे। इनके गुरु का नाम उद्दाम मिश्र था। इनका कविता काल स० १८७० वि० से १९०३ वि० तक है। पता चला है कि ये सरकारी नमक के महकमे में पेशकार थे। इनके दो ग्रन्थ देखने मे आये हैं —(१) विचित्र रामायण और (२) गगा लहरी।

विचित्र रामायण हनुमान नाटक का एक सुन्दर अनुवाद है। इनकी कविता हृदय स्पर्शी, सरस एवम् प्रसाद गुण युक्त है। थोडे मे उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

पूरन मयक के समान स्वेत अग ज्योति,
उज्ज्वल सुधा से स्वेत अमर उदाम है।
पकज वतार स्वेत आसन उदार जाके,
वाहन मराल पै विराजे सुख धाम हैं।
पुस्तक धारे कर बेदन उचारें मुख,
सारे काज जन के सकल गुण ग्राम हैं।
बीना बजावै सब सुख सरसावै बहु,
ताही सारदा के पद-कमल प्रनाम हैं॥

भरतपुर दुर्ग बर्णन (छप्पय)

दुर्घट दुर्गन माँहि दुर्ग इक दिपत अवनि पर।
बिदित भरतपुर नाम तासु महिमा उदार बर।
उन्नत बुर्ज अपार चारु विधु मडल परसत।
चहुं दिसि नहर गभीर नीर निरमल जहँ दरसत।
बहु कुसुमित बन उपबन सघन, विविध पवन सचरत जहँ।
उनमत्त अमन्द आमोद बस मधुप वृन्द गुंजरत जहँ॥

गगा लहरी (कवित्त)

ह्वै कै निसक लक हक ते जराई जाने,
जघन के जोर होते जल निधि नार्यो है।
मारि मारि राक्षस बिदार बन रावन को,
अच्छहि सँहार फल अमीरस चाख्यो है।
आनी है बिसल्या जिनें राखे प्रान लक्खन के,
लक्पुर जाके सक भ्रम अभिलाख्यो है।

ऐसे हनुमन्त जू को काटें ताहि दंतन सों,
राक्षसिन ऐसौ एक चित्र लिख राख्यौ है ॥

तेरे आसरे के बल पाय कै बिसाल गंग,
बढ़यौ गर्ब जाके सो मै तोसो कहत सब ।
याही ते वृन्दारक वृन्दन की अवज्ञा करी,
काहू की न अवलगि मानी कछु दाह दव ।
जो पै कहूँ या ममैं उदारता गहौगी नाहि,
तो मै निराधार नहि दूसरों अधार भव ।
मुख विल खाय दुति दीनता दिखाय कहों,
कौन के अगारी जाय रुदन करुँगो अब ॥

६५—नवीन—इनका पूरा नाम गोपालसिह था किन्तु 'नवीन' उपनाम से अधिक विख्यात् थे। ये महाराज बलवन्तसिह के दरबारी कवि थे। इनका कविता-काल सम्वत् १८८० से १९४० बि० तक माना गया है। इनके जो ग्रन्थ देखने मे आये है उनसे पता चलता है ये उच्च कोटि के अनुभवी कवि थे।

'नवीन' जयपुर निवासी 'ईस' कवि के पट्ट शिष्य थे। उन्ही के द्वारा इन्हें 'नवीन' उपनाम मिला था जिसके सम्बन्ध में उन्होंने इस प्रकार लिखा है:—

जानत हौ नहिं जोरन अक, हुती चित की वृति मूढ़ता भीनी ।
सो निज देख कें दास दयाल, बनावत जोग हरें हरें कीनी ।
ताहू पै नाम धरांये के सोचन, नाम धर्यो तब यों सुधि लीनी ।
श्री गुरु ईस प्रवीन कृपा करि, दीन कों छाप 'नवीन' की दीनी ॥

उपरोक्त पद्य से स्पष्ट हो जाता है कि आपका 'नवीन' उपनाम कल्पित न होकर गुरु प्रदत्त है। ये भरतपुर के निवासी थे। अब तक आपके निम्नलिखित चार ग्रन्थों का पता लगा है। (१) प्रबोध रस सुधा सागर (२) नेह निदान (३) रंग तरंग (४) सरस रस

प्राप्त ग्रन्थों में 'प्रबोध रस सुधा सागर' कवि की उत्कृष्ट रचना है। इसे कवि ने छः तरगों में विभाजित किया है। काव्य के बिभिन्न अंगों की सरस एवम् विशद व्याख्या करना इनकी विशेषता है। इस ग्रन्थ में एक महान् विशेषता यह है कि कवि ने एक विषय को लेकर पहले अन्य कवियों की कविताएँ दी है और फिर उसी विषय पर अपनी रचनाएं प्रस्तुत की है। इससे एक तो अन्य कवियों की विषय पर कविताएं एक स्थल पर मिल जाती हैं और दूसरे भिन्न भिन्न प्रकार से एक ही विषय पर वर्णन और विचारधारा का तुलनात्मक

अध्ययन हो जाता है। आपकी सुमधुर कविताओं के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

प्रबोध रस सुधा-सागर

दोहा

जुगल चरन वन्दन करो, सब देवन समुदाय।
ज्यों हाथी के खोज मे, सब के खोज समाय॥
प्रेम मगन विहरे विपिन, राधा नन्दकिसोर।
दोउन के मुख चन्द के, दोउन नैन चकोर॥

नैन वर्णन (कवित्त)

तीखनता ताकिबे की तीर ते तरल तोरि,
जाती मिल होती जो न नासिका अगाडी मे।
अजब अजाब अरविन्दन की आभा पर,
झूमन गजब सो न एनिक मराडी मे।
मोती की जोती तिन तूल ना प्रबीन तुलैं,
तोलत 'नवीन' चख पल को दराडी मे।
मीनन के मीन करि भौंरन को भौंर देत,
खिज खिज खंजरीट खिचत खराडी मे।

झूमन चलन मद धूमन खुमारी नैन,
जानत कलित सोभा ललित सुभाल की।
श्रम के कमाने देखे दरद बढ़त दूनो
फन्द दुमाले में पलट लाये माल की।
राजत 'नवीन' रेख अंजन अधर लर-,
मोतिन की माल की बराबर न माल की।
आनी औ दई सो जात जानी सो निसानीहू की,
दै आये निसानी कै अंगूठी नग लाल की॥

बिरहपुर के बिरहीन पै सवाल दै दै,
करै इकतरफी भई वो जानै ढील है।
कोकिला गवाही भरैं प्रेम के मुकदमा मे,
दावा को सबूत कर बोलत अपील है।
डिगरी सजोगिन की जारी भये फूलै फूल,

गुंज की 'नवीन' कुंज कुंजनि दलील है ।
रति-कंत साहब अदालत लसंत ताके,
रोवकार राजत बसंत कौ सो बकील है ॥

आंख मिचौनी (कवित्त)

और खेल खेलैं सो तौ खेलि है बबा की सोंह,
कहा लौं सखीन उपहासन कों पेलौगी ।
कौतुक 'नवींन' बीन लावै तू सुजान नित,
मसकै भुजान कंध सो न अब झेलौंगी ।
छतियाँ छुवावें पीठ ठोड़ी दै गुदी में नीठ,
छोड़न कहै ढीठ कैसें वर हेलौगी ।
जांघन में दैके कटि भीचनों वरौ दैय्या,
तो संग कन्हैया आंख मिचौंनी न खेलौगी ॥

सवैया

नन्द बबा कै बबा के सुकृत्य सौ आछौ सपूत भयौ जसुधा कैं ।
रार की गार की हार की प्यार की नेंकहु लाज नहीं सखि याकैं ।
ठौर कुठौर ठठोलिन बोलिन ौलि 'नबीन' छली छबि छाकैं ।
या खन लौ न मिलै वस कौ यह माखन से अग चीर कै ताकैं ॥

६६—बटुकनाथ:—ये कवि जाति के गौड ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम रिषीराम था। आप संस्कृत और हिन्दी दोनों के अच्छे विद्वान् थे। आपका लिखा हुआ केवल एक ग्रन्थ ''रास-पचाध्यायी' देखने में आया है, जो इन्होंने संवत् १८६६ वि० में लिखा है। शैली सरस एवं सुन्दर है। इनकी कविता से कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं:—

छप्पय

गनपति गुरु गोविन्द, गिरा गिरजा गगाधर ।
गिर गंगा गोपाल, गोप पति गोपति गिरधर ।
व्यास बिबुध बिवुधेश, और बुध विद्या भाजन ।
सती सून सनकादिक, सुखद सुक.सेस सनातन ।
रसिक और इन आदि मग, परम भागवत जे धरन ।
तिनकी पद रज बन्द हो, विमल अंक भाषा करन ॥

दोहा

अमरपुरी अमरी भरी, कबरी भ्रमरी भीर ।
मुखरी कृत पद-कंज महि, बंदौ सुवन अहीर ॥

गोपी ग्वाल गोप गाय वच्छ प्रति पाले भले,
　　भूमि को उतारो भार दुष्ट मद छीन्हो है।
सोई 'रामकृष्ण' महाराज बलदेवजू को,
　　सकल मनोरथ को सिद्ध फल दीन्हो है॥

सदा आय सर्वोपरि सुख के समूहन को,
　　श्री जी की कृपा ते विधिवत विलस्यो करो।
सफल समृद्धि अष्ट सिद्धि नव निद्धि वृद्धि,
　　सम्पत समेत ते खजाने में लस्यो करो।
विभव सु तेज औ प्रताप त्यों सुजस स्वच्छ,
　　आगे और आनँद समूह सरस्यो करो।
आनँद के कंद 'रामकृष्ण' चंद-कुल-चंद,
　　श्री ब्रजेन्द्र बलवन्त हिय में बस्यो करो॥

७०–धनेश –ये कवि जाती के ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम चन्दराम था। इनके दो बडे भाई हीरालाल और मुकंद भी बडे विद्वान् एव कवि बतलाये जाते हैं। धनेश हिन्दी और संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। ये महाराज बलवन्तसिंह के प्रसिद्ध दरबारी कवि थे। इनका कविता-काल स० १८८० वि० से १९०० वि० तक पाया जाता है। इनकी केवल फुटकर रचनाए मिलती है। उदाहरण देखिए —

गोवरधन, गिरधरण, धीर धर दुख विमोचन।
नन्दराज युवराज, रुचिर राजीव विलोचन।
सकट बकी बक कस केसि अभिमान विमरदन।
खल भुजग फल रग, भूमि निरतन विध बर्धन।
कदर्प दर्प दल दलन बर, राम रसिक रस रूप जय।
गोकलेस गोपाल जै, गोपीनाथ जगनाथ जय॥

७१–ब्रजचंद – ये भरतपुर के निवासी तथा महाराज बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इन्होने कवि कुल-चूडामणि-कालीदास के 'शृंगार-तिलक' का अत्यन्त सुन्दर पद्यानुवाद स० १८९५ वि० मे महाराज बलवन्तसिंह के लिये किया था। कविता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

पंडित कवीन मन देख कवि कालीदास,
　　दृढ लाय देख्यो सब ग्रथन को सार है।

तरुनी प्रवीनन के भेद बहु भाँति जान,
फिर प्रगटायौ यह सूछम अपार है।
श्रीमत ब्रजेन्द्र महाराज बलवंतसिंह,
तिनकी कृपा सों लह रस बिसतार है।
पंकज वरन सम राधिका चरण ध्याय,
कीन्हौ 'ब्रजचन्द' ग्रन्थ 'तिलकशृंगार' है॥

बाँहें है मृणाल दोऊ मुख अरबिन्द बन्यौ,
सुन्दर स्वरूप ही कौ लीला जल लीनौ है।
पुलिन नितम्ब द्वन्द नैन हैं नबीन मीन,
खुले बाल जाल सो सिंबाल परवीनौं है।
भनि 'ब्रजचन्द' त्रिवलीन की तरंग उठै,
उरज उतंगन कों चक्रवाक कीनौं है।
काम वन दीवे तिन तैरन कों तीय तन,
प्रजा के करैयां ने तलैया रच दीनौ है॥

७२—सुन्दरलाल:—ये जाति के ब्राह्मण और भूड़ा दरवाजा डीग के निवासी थे। इनके वंशधर अभी भी विद्यमान हैं। इनका कविता-काल स० १८८० से १९०० वि० माना जाता है। इन्होंने कोई ग्रन्थ नहीं लिखा है, केवल फुटकर कविता ही देखने में आती है। उदाहरण के लिये इनका एक पद प्रस्तुत किया जाता है:—

प्यारी लैयो छाक हमारी। टेक
जित मग धेनु धरत पग भूपर सोई बाट हमारी।
माखन मिसरी अरु दधि व्यंजन संग वृषभान कुमारी।
सुन्दर स्याम चढ़ कदमन ऊपर टेरौ नाम पुकारी॥

७३—नरहरिदास:—इनके पिता का नाम जीवाराम चतुर्वेदी था और ये भरतपुर के निवासी थे। महाराजा बलवन्तसिंह की पटरानी श्री राजकुँवरि के लिये इन्होंने 'कातिक-महात्म्य' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इनकी भाषा बहुत ही साधारण है, और शैली में किसी प्रकार का चमत्कार एवम् विशेषता नहीं पाई जाती है। पूर्ववर्ती कवियों की भाँति इन्होंने भी प्रत्येक अध्याय के अन्त में एक छन्द दुहराया है जिसके तीन चरण वही रहते है तथा चतुर्थ चरण विषयानुकूल बदलता रहा है। [illegible] इस प्रकार है:—

श्री ब्रजपति बलवन्त बहादुर, तिनकौ सुजस सुहायौ ।
राजकौर तिनकी पटरानी, तिन चरणन चित नायौ ।
चौबे जीवाराम तनय सुभ, 'नरहरि' नाम कहायौ ।
ताने श्री ब्रजराजकुवरि हित 'माधवचरित' बनायौ ॥

इनकी कविता के कुछ छन्द उदाहरणार्थ उद्धृत किये जाते हैं —

छन्द भुजग प्रयात

रहै देव शर्मा निपुत्री सदां कौ,
हुतौ चन्दशर्मा नाम सिष्य ताकौ ।
तवै ताहि तू व्याह दीनी जु प्यारी,
भयौ ता समै तोहि कौ मोद भारी ॥

सोरठा

ताहि पुत्र सम मानि; चन्दर शर्मा शिष्य को ।
वोहु पिता सम मान, तिन्हैं तहाँ सेविन भयौ ॥

सवैया

यौं तव कृष्ण कहैं सुभ नेम सु पूरव जन्म सुन्यौ हरसानी ।
देखी विभौ परमेसुर की परनाम करी मन मे मुसिकानी ।
तीनहु लोक अधार प्रभू तिन सौं सतभामा कहैं पटरानी ।
और कथा कहियै हम सो प्रिय यो उचरी मुख सो वर बानी ॥

७४—लाल—ये जाति के जाट और भरतपुर के निवासी तथा महाराजा बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। 'लाल' इनका उपनाम है। इनके यथार्थ नाम का अभी तक पता नही लग सका है। सम्भवत इनकी अनेक कृतियाँ हो, किन्तु हमे अभी तक 'लाल ख्याल' नामक रचना ही उपलब्ध हो सकी है। इनकी रचनाओ मे विनोदयुक्त हास्य का पुट पर्याप्त मात्रा मे पाया जाता है। इनकी रचनाओ मे सर्वाधिक विशेषता यह पाई जाती है कि लाल अथवा मुनिया शब्द से इनकी कोई भी रचना अछूती नही बची है। लाल और मुनिया को माध्यम मान कर कवि भौतिक और आध्यात्मिक तत्वो पर मनोरजक ढग से प्रकाश डालता हुआ अपनी प्रतिभा का परिचय देता है।

इनकी भाषा टकसाली है। भाव व्यञ्जना इतनी अनूठी है कि कवि की सराहना करते करते तृप्ति नही होती। इनकी सुमधुर रचनाओ के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं —

कवित्त

एक बनो गधहा एक बैठ गयौ पालकी में,
घोरा बन एक एक जोग अंग लीनो है ।
एक हाथ पोथी लै बार बार थोथी कहै,
एक देत ताल सुर साजत प्रवीनौ है ।
एक जाति-रीतन की सगरी प्रकासें नीत,
फार डारें कपरा इक और भेस कीनौ है ।
लेतेई नाम सुख काम के अराम बारे,
देखौ ब्रजराज के भंडान ख्याल कीनौ है ॥

वृद्ध वल पाय एक पीजरा वनाय लायौ,
अति ही महीन तुरी नीलम ते ढाली की ।
जोवन के जोर जग जगमगात जेवर सौ,
तामें जोत होत आय लाल ही की लाली की ।
लाली वृषभान की जहान मे प्रमान बारी,
कीरति के आँगन में साँचे सम ढाली की ।
सुन्दर सलौनी लौनी ओढ़ तन सारी नील,
अंगन की ओप उरै लालिमा प्रवाली की ॥

पीजरा सुघर तन पाय के सुहाय रह्यौ,
उछट उछट्टन की छोड़ै नहिं हटरे ।
काम वस पाय अग मुनिया लुभायौ रूप,
दूजौ नैन संग देख तामसी हो झटरे ।
ग्यान कर ध्यान गहि पावत परम पद,
तातें भव-ज्वाल माल लागै नहिं लटरे ।
मान कह्यौ मेरौ मै तौ तोकों समझावत हों,
जाही कौ बनायो जग ताही कौ सु रटरे ॥

७५—श्रीधरः—ये श्री हरदेवजी के मंदिर के महंत थे। इनका पूरा वृत्त ज्ञात नहीं हो सका है। इनके पिता का नाम श्रीराम गोस्वामी था। इनके बंशज अब भी भरतपुर में विद्यमान हैं। इनके लिखे हुए कई ग्रन्थ वतलाये जाते हैं, किन्तु कहा जाता है कि वे मयाशंकर याज्ञिक के अधिकार में है। इनकी रचनाओं में से एक छन्द यहाँ उद्धृत किया जाता है:—

सवैया

भूलि हू नेह को नाम न लेहु जू, कोऊ कहूँ हरिदेवहि हेरे ।
सासा निसूकत ही रहिये, निसि वासर प्रेम प्रवीन अनेरे ।
नेंकहु 'श्रीधर' प्रेम विचित्र, हियो उरझै निरुरै न निवेरे ।
जे दुख कानन सों सुनते अब, सोई निसान घुरे सिर मेरे ॥

७६—वैद्यनाथ —ये महाकवि सोमनाथ के वंशज माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। गणेश कवि ने विवाह विनोद में इन्हें महाराजा बलवन्तसिंह का सभा पंडित लिखा है। इन्होंने सम्वत् १८८४ वि० में 'विक्रम पंच दंड कथा' नामक पुस्तक लिखी है। खेद है कि इनका विस्तृत जीवन वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हो सका है। प्राप्त सामिग्री में से कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं —

भये इकट्ठे नृप अनेक महमानी कीनी ।
विविध भांति विंजन सुधार रचि आनन्द भीनी ॥
तिही समय विक्रमादित्य बोले वर बानी ।
रत्नसेन नृप सुनो बात इक अचरज मानी ॥
मोइ ठग्यौ नहिं काहु कहूँ परदेस देस महिं ।
इहाँ तिहारे सहर माहि मैं ठग्यौ मोह लहिं ॥
बंदोवस्त ऐसौ न चाहिये नृप थानन में ।
वैस्या की सब बात कही सुनि नृप कानन में ॥
रत्नसेन तिहिं वैस्या को हुजूर बुलायौ ।
रत्न इक अरु दंड मोंडिया सहित मँगायौ ॥
और वस्तु भूसन सुवस्त्र सब ही मँगवाये ।
सरजाम अपने समस्त लैके अपनाये ॥
पीछे वेस्या को रिसाय करि मजा दिवाई ।
सहर बाहिरैं काढि देस में ते निकराई ॥
नृप जैकर्नहिं फेरि सीख दीनी निज घर को ।
करी बहुत सिष्टाई दियौ आनद तिहि वर को ॥
आय विक्रमादित्य रत्नसेनहि सँग लैकें ।
अरु समस्त निज फौज लिए आनदित ह्वै के ॥
सहित कुमरि जयमाल अवन्तीपुरी सिधारे ।
घने बजे वादित्र दुंदुभी परह नगारे ॥

७७—महाराज बलवन्तसिंह:—भरतपुर नरेश महाराज बलवंतसिंह (सम्वत् १८८२ से १९०९ वि०) का शासन-काल हिन्दी प्रेमियों के लिये विशेष रूप से स्मरणीय है। आपके पिता महाराज बलदेवसिंह और माता अमृतकौर दोनों के काव्य-प्रेमी एवं साहित्यानुरागी होने के फल-स्वरूप इनका उच्च कोटि का कवि होना स्वाभाविक ही था। शासन एवं सभी ललित कलाओं के विकास की दृष्टि से बलवंतसिंह का समय भरतपुर का स्वर्णयुग माना जाता है। राज्याश्रय एवं प्रोत्साहन पाकर इनके समय में काव्य कला ने विशेष रूप से प्रगति की। इसी काल में महाकवि रामलाल और कविवर रसानंद आदि जैसे प्रतिभाशाली कवि हुए, जिन्होंने अपने काव्य सौरभ से भरतपुर ही नहीं समस्त हिन्दी संसार को सुरभित कर दिया। यह अत्युक्ति न होगी कि जितने सत्कवि अकेले महाराज बलवन्तसिंह के समय में हुए और जितने सुन्दर २ काव्य इनके आश्रय में लिखे गये, उतने सत्कवि भरतपुर के समस्त नरेशों (महाराज बदनसिंह से लेकर महाराज ब्रजेन्द्रसिंह तक) के समय में नहीं हुए और न इतनी सुन्दर कृतियां ही लिखी गईं। यह गौरव भरतपुर नरेशों में केवल बलवंतसिंह को ही प्राप्त हो सका। भरतपुर निवासी ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि चम्पालाल 'मंजुल' ने आपके विषय में ठीक ही कहा है:—

सूरज सूरज उदित वहुरि बलवंत प्रभाकर।
कियौ कला-सर-सलिल जोतिमय परम प्रभाकर।
सोमनाथ, सूदन, ब्रजेश, विरही रस नायक।
राम, रसानंद, कलित-कमल बिकसे सुखदायक।
सिंगार, वीर, बैराग्य-रज, अरुन पीत सित संचरत।
मधु-पान हेत 'मंजुल' रसिक, अजहु मधुप मृदु गुंजरत॥

बलवंतसिंह स्वयं बड़े सरस कवि थे और भाव पूर्ण कविता करते थे। इन्होंने अपनी कविताओं में 'हरिनाम' उपनाम का प्रयोग किया है। इनका केवल एक पद्य ही पर्याप्त होगा:—

कटित कटीले कोट विकट मवासे तेरे,
कुंजर तुरंगन कौ पुंज हू बिलायगो।
जोर धर्यौ जो घर करोरन कौ धन सों तौ,
धरनी में धसक पाताल [illegible]।
ऐसौ [illegible] गावै कवि 'हरनाम' [illegible],
कपूत क्रूर पारो [illegible]
खेम कुसल सो [illegible],
अकेलो [illegible]

प्रकरण ४
राम-काल (उत्तरार्द्ध)

महाकवि रसानंद --ये महाराज बलवंतसिंह के दरबार में उच्च कोटि के कवि थे, जैसा कि कवि ने स्वयं हित कल्पद्रुम में संकेत किया है --

ऐसें चित्त विचारि बुद्धि अनुमान सों।
रस आनंदहि बुलाय कहिय मनमान सों।
जिमि ब्रजेन्द्र बलवंतसिंह अज्ञा दई।
तिमि तुमनें ह्वै कृपा पात्र रचना ठई॥

इन कविवर के लिखे हुए अभी तक निम्न ग्रन्थों का पता लग सका है --

१--ब्रजेन्द्र-विलास --यह ग्रन्थ ८ उल्लासों में समाप्त हुआ है। इसमें कवि ने भरतपुर राज्य के वैभव का विशद वर्णन सरस एवम् सरल भाषा में किया है। अलंकार और पिंगल पर बड़े ही चमत्कार पूर्ण ढंग से प्रकाश डाला है।

२--नख-शिख --यह ग्रन्थ कवि की अप्रतिम सरस प्रकृति का द्योतक है। इसमें रीति कालीन पद्धति पर कामनियों के समस्त अंगों (नख से शिखा तक) का मधुर एवं अलंकृत भाषा में वर्णन किया गया है। यह हिन्दी साहित्य में अपने ढंग का एक अनूठा ग्रन्थ-रत्न है।

३--गंगाभूतलागमन --इस ग्रन्थ में वाल्मीकि रामायण के आधार पर गंगा जी का पृथ्वी पर आगमन मनोहारिणी भाषा में वर्णित है।

४--समर-रत्नाकर --इस ग्रन्थ का नाम कहीं २ पर संग्राम-रत्नाकर' भी लिखा है। यह जैमिनी अश्व मेध का भावानुवाद है।

५--संग्राम कलाधर --यह महाभारत के विराट पर्व का अनुवाद है।

६--मौज-प्रकाश --इसमें श्री कृष्ण की लीलाओं का सुन्दर ढंग में वर्णन किया गया है।

७--हित-कल्पद्रुम --यह 'अनवार--सुहेली' (फारसी ग्रन्थ) का हिन्दी भाषा में बड़ा ही सुन्दर अनुवाद है। इस ग्रन्थ की रचना धाऊ गुलाबसिंह की आज्ञानुसार महाराज कुमार जसवंतसिंह के लिये की गई थी, जैसा कि नीचे के पद्य में कवि ने स्वयं लिखा है.--

प्रथम 'समर-रतना' कर ग्रन्थ जु विस्तर्‌यौ ।
जामैं जैमिनि अश्वमेध भाषा कर्‌यौ ।
रच्यौ द्वितीय 'संग्राम-कलाधर' कों तथा ।
है जामें बैराट पर्व की सब कथा ॥
तीजौ 'मौज-प्रकाश' की जु रचना करी ।
तामें अद्‌भुत रास जु क्रीड़ा विस्तरी ।
अब ब्रजेन्द्र जसवंतसिंह हित प्रीत सों ।
रचो ग्रन्थ इक न्याय नीनि की रीति सों ॥

दोहा

श्री जसवंत ब्रजेन्द्र हित, सोधिनीति कौ पंथ ।
'रस आनद' बरनन करत, 'हित-कल्पद्रुम' ग्रन्थ ॥
बाण ब्रह्म निधि ससि हि गुनि. संवत विक्रम राय ।
अक्षय त्रितिया मास पुनि, माधव गुरु दिन पाय ॥

उक्त ग्रन्थों के अवलोकन से यह भली भांति ज्ञात होता है कि रसानंद केवल कवि ही नहीं वरन् आचार्य भी थे। इनके वर्णनों में कलापक्ष और भावपक्ष का सुन्दर समन्वय पाया जाता है। इनकी भाषा कोमल-कान्त पदावली-युक्त सरल एवं सरस ब्रज भाषा है। भाषा रसानुकूल परिवर्तित होती गई है। युद्धों के वर्णन मे ओज का प्राचुर्य वीर गाथा काल का सजीव चित्र उपस्थित कर देता है। आपने भक्ति, शौर्य और शृंगार की परम पावन त्रिवेनी प्रवाहित कर तत्कालीन कवियों में विशिष्ट पद प्राप्त किया था। आपकी रचना के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते है.—

हित कल्पद्रुम (छप्पय)

जयति सच्चिदानंद नंद नदन जग बंदन ।
दुष्ट निकंदन पुष्ट सुजस गावत श्रुति छंदन ।
मुरली अधरन धरे मधुर सुर पूरत हरषत ।
बरसत 'रस आनंद' जुबति जन नित चित आकरषत ।
मुसिकात मद बतरात में उभलति सुसमा सोहनी ।
ब्रज मड़ल मडन को प्रगट चेटक है कै मोहनी ॥

दोहा

काब्य सास्त्र आनंद मे, रसिकन के दिन जात ।
मूरिप के दिन नींद में, कलह केलि उतपात ॥

छप्पय

कही काग सुनि हितू कहनि पै चित्त दीजियै ।
अनजाने परदेसी सो नहिं प्रीत कीजियै ।
जाको सील सुभाव प्रगट आश्रम नहि जानै ।
तासो छिप्रहि बुद्धिवान मित्रता न ठानै ।
घर हू मे बास न दीजियै नीति मते तौ यो कही ।
जो बास देइ तौ मित्र सुनि पावै इमि बिपदा सही ॥

काव्य छन्द लक्षण

प्रथम रसकला बसुकला, पुनि दिसकला प्रमानि ।
इन चौबीस कलान को, काव्य छन्द सुख दानि ॥

उदाहरण

चढत प्रबल बलवन्त भूप, जब सहज सिकारहि ।
खल भल दस दिस परत, डरत अरि धीर न धारहि ।
धूर पाटि नभ अन्ध-धुन्ध, रवि मण्डल झम्पति ।
भार सहत नहि सेस, कमठ दिग्गज कम्पति ॥

लक्षणामूलक व्यङ्ग लक्षण

द्विविध लक्षणा मूल है, प्रथम गूढ़ि पहिचान ।
दूजी ब्यग अगूढ यो, उभय भेद उर आन ॥

उदाहरण (कवित्त)

एरी नित नये दिन कठिन जितैये कैसे,
जैसे ये अनैसे आय स्वाग अरबौ करहि ।
पापिन कलापिन कुजापिन कुपेडौ हित,
चरचा चलाय ललचौली कग्बौ करहि ।
कवि 'रसआनद' बिलोक कमलन-मुख,
पोग्बी नैन नीर की नदी सी ढरबौ करहि ।
ललित लतन थभ अतन सदभ कीनै,
दभ भीने भौर पररभ भरिबौ करहि ॥

बाढी छीरनिधि की तरग सी उमग भारी,
सरद बिहग सी पियूस पारावार सी ।
सतगुन के सार सी सुमुक्त नव हार सी,
बिकसी बहारदार कुमुद कतार सी ।

भन 'रस आनंद' बिमल गंगाधार सी है,
हिम के पहार सी सुखद घनसार सी ।
सिंह बलवन्तजू के जस विस्तार सी यों,
छिटकी है चन्द छटा फटिक पसार सी ॥

सवैया

रोस की बात सुने अति आतुर चातुर आये चले इहि ओर हैं ।
त्यों 'रस आनंद' सीस नवाय लगाय रहे पग नन्द-किसोर हैं ।
तो हू रही मुख मौने मढी न कढ़ी जु बढ़ी भृकुटी की मरोर हैं ।
ऐसे कठोर हिये में बसेते भये तिय तेरे उरोज कठोर हैं ॥

बेंदी वर्णन (दोहा)

जगमग भूसण भाल को, है सुहाग निधि रूप ।
पूरनता शृंगार की, बेंदी बरन अनूप ॥
जटित जडाव सु जगमगत, बेंदी ललित लिलार ।
जनु पूरन ससि अंक में, दिनकर करत बिहार ।

नैन वर्णन (दोहा)

खजरीट पंकज कुरंग, चपल तुरँग सर मीन ।
लाज सील पानिप भरे, बरनत नैन प्रवीन ॥

तव मुख की सुखमा निरखि, उपमा फिरत खराब ।
कंचन अचन तन हुतत, है गुलाब बे आब ॥
मुख सुखमा उपमा दिये, भयौ कलंकी चंद ।
कटक अटकी केतकी, ग्रस्यो भँवर मकरंद ॥

विष्णु अंग सीतल सलिल, सज उज्जलता बारि ।
उठत जु गंग तरंग है, सिव सिव सब्द उचारि ॥

छप्पय

सोभित मुकट सिखंड, गंड मंडित अलकावलि ।
करत चंद दुतिमन्द, कुन्द निंदक दसनावलि ।
कटि सुदेस पट पीत, करन कुण्डल छवि छाजै ।
'रस आनंद' दुति पेख, कोटि मनमथ मन लाजै ।
अतुलित प्रताप विक्रम विदित, सकत न श्रुति स्मृति बरनि ।
ब्रज मंडन पूरन अंस जै, अवतारी अवतार मनि ॥

७६—देवीदास —ये जाति के खवास थे और महाकवि रसानंद की सेवा में रहते थे। यद्यपि ये विशेष पढ़े लिखे नहीं थे, किन्तु प्रकाण्ड विद्वान् के संपर्क में आने से इनके हृदय में भी काव्यांकुर उत्पन्न हो गया था। फलस्वरूप इन्होंने 'श्री मद्भगवद्गीता' तथा 'हितोपदेश' का सुन्दर अनुवाद किया तथा राजनीति के अनेक फुटकर छन्द लिखे। हितोपदेश का रचना काल स्वयं ग्रन्थकर्त्ता ने इस प्रकार लिखा है —

मेष शुक्ल निशि सप्तमी, गुरुवासर परिमान।
रुद्र रुद्र ससि अंक कर भयउ प्रभव प्रमान॥

इनकी भाषा में विशेष चमत्कार नहीं पाया जाता और व्याकरण सम्बन्धी भूलें भी यत्र तत्र देखने में आती हैं। इतना होते पर भी वर्णन शैली सरल, रोचक तथा हृदयग्राही है। उदाहरणार्थ इनके कतिपय पद्य नीचे दिये जाते हैं —

भगवद्गीता (छप्पय)

गवरि तनय बुधि सदन बदन वारन सुर नागर।
प्रणवहु महिम मनेह कुंज-पद सब सुख दागर।
भाल इन्दु इक रदन तिमिर कहु कोटि दिवाकर।
भजत सुरासुर नित्य वाय तत्र लहहिं गिरा बर।
लखि प्रसन्न अब देव यहि अक्षर युक्तिहिं दिज्जियै।
इहं कठिन ग्रंथ गीता अगम, छप्पय जब सुरिज्जिये॥

जागि भरे जगि नैन धनंजय के तब माधव।
कहेत भये यो वचन सत्य साचे तब यादव।
तीन पुरुष जा होय मोह लु पतित आनी।
नसै स्वर्ग को सुक्ख बढ़ै बहु अजस बखानी।
तोहू न चाहिये या समै, दुबलता छाडौ सब।
उठि समर मति ठाडे जु अरि, बढ़ै लाक कीरति अबै॥

हितोपदेश चौपाई

हिरण्य गर्भ रहा इक नरराजा, सगन नाहि कीन्हो निज राजा।
सो वह राज करन रहौ लाग्यौ, राज साज के रस म पाग्यौ॥
रस भामन कुत्र जन ताको, नृप विहीन सुख कहा प्रजा को।
जिमि सागर म मनि के भटके, चलत न नाव बिना खेवट के॥
तिमि जग में ह नृप बिन धर्मा निबहत नहीं सुगम सुभ कर्मा।
तिते तित नृपनि प्रजा अधिकाई, चाहे निज पुत्रन की नाई॥

होय भूप जासूस विहीनौ, सो करता नै आधौ कीनौ।
जा नृप के जासूस सरूपी, है न नैन सों अंध अरूपी॥

दोहा

सुधर होइ जासूस अति, जा नृप के नित पास।
सो घर बैठे जगत की, लखैं विभौ अनयास॥

सोरठा

इन्है सास्त्र ते जान, तीरथ आश्रम सुर मदन।
परत नृपहि पहिचान, गूढ बात जासूस तै॥

फुटकर कवित्त

आरम्भत जाहि बहु लोगन सौ बैर होय,
दूसरे करत जाहि धर्म ठहरै नहीं।
करत करत जाहि ऊपजै कलेस भारी,
फल ऐसौ लागै जासो पेट हू भरै नहीं।
अति छोटौ काम ऐसौ कुल मे न कीयौ होय,
अति ही दुरंग काज पूरौ हू परै नहीं।
'देवीदास' जामे लाभ खर्च बराबर ही,
बुद्धिवंत ह्वै कै ऐसौ कारज करै नहीं॥

प्यारी परबीन देख ढरे ढग भौरे स्याम,
मान करि बैठी चुप साधि पिक बैनी ते।
परत जोक अग ते अनूप रूप,
टूटि टूटि मोती गन परे टूट बैनी तें।
'देविया' अनत मान सुनत सहेली धाई,
आई ढिग प्यारी के सु पूछे मृग-नैनी तें।
ऐरी सुनि गोरी व्रपभान की किसोरी भोरी,
का पर करी है आज भृकुटी तनैनी ते॥

८०—रूपराम :—ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर नगर निवासी थे। ये इतने विख्यात् थे कि इनके नाम पर अभी तक कुंडारूपराम नामक मोहल्ला वसा हुआ है। इनका कवितात्काल संवत् १८५६ वि० से १९२८ वि तक माना जाता है। शेष जी के अनन्य भक्त होने के कारण इनके घराने के लोग 'शेषजी' वाले कहलाते है। कवि होने के साथ २ ये ज्योतिष-शास्त्र के भी अच्छे विद्वान् थे। इन्होने मृत्यु से पूर्व [illegible] । काल [illegible] कार उल्लेख किया था—

दास दोष देखे नही, पाप कर दीये छीन ।
चौबीस्सौ की साल मे, होऊ सेम मे लीन ॥
हिम रितु अगहन मास पुनि नौमी भौम सु पाइ ।
'रूपराम' तन त्याग के, मिले सेम में जाइ ॥

जो बानी या मुखते निकसी सेम करेंगे साची ।
झूठी बात कोई मत जानो आप सरसुती नाची ॥
पढ़यौ गुन्यौ नहि भाषा ग्रन्थन नाहि गयौ कछु साखी ।
'रूप राम' के प्रभु सेम नें अपने मुख तें भाखी ॥

कहते हैं आपकी यह भविष्य वाणी अक्षरश सत्य सिद्ध हुई। इनके रचित दो ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं,-(१) गंगा लहरी और (२) शतपचाशिका। शतपचाशिका मे इन्होंने अपने उपास्य देव सेमजी के विवाह आदि उत्सवो का विविध राग रागनियो व सुन्दर छन्दो मे वर्णन किया है। यह वर्णन बहुत ही स्वाभाविक सरल, सरस और हृदयग्राही बन पड़ा है। इस ग्रन्थ का रचना काल कवि ने इस प्रकार दिया है —

एक सहस्र पर-आठमी, नौ ते ऊपर एक ।
भई कृपा श्री सेम की, गाए चरित अनेक ॥
सावन सुक्ला पंचमी, रच्यौ चरित विचार ।
जो याकू सीखे सुने, बाढ़ै धर्म आचार ॥

आपकी भाषा साधारणत अच्छी है। इनके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं —

राग बिलावल

सेमजी अबतो निबहि बनेंगी ।
नाव जरजरी खेवट नाही किहि विधि पार लगेगी ॥
अति गभीर भमर मे भरमे पवन प्रचड धुनेंगी ।
आगे ठाडी दुरजन सैना मारहि मार मचेगी ।
घबरा पै धक्का लागत हैं बुधि नही धीर धरेंगी ॥
इहा काऊ रख बारो नाही और कछु न हनैंगी ।
'रामरूप' को चरन सरन देउ सारद सुजस भनेंगी ॥

राग ललित-ताल धीर

सेमजी एतानें छोगाजी चरन कमल विश्राम ।
जो चाहणा सोई लेस्या काई करो उपराम ॥
चौरास्या का स्याग परयौ म सरयौ न कोई काम ।
रैभि खीभि मे थे नही समभो कांई करा मन स्याम ॥

थे जानौ हमैं भू'जा ना यह रीझ पर्चै बिन काम ।
'रामरूप' तो और न माँगै दीजै अपनौ धाम ॥

राग मलार

रमत दोऊ सुन्दर नवल हिंडोरे ।
चद बदन श्री सेस रसिक मनि कुंवरि तरुन तन गोरे ।
नीलांबर अरु अरुन वसन की छवि घन दामिन भोरे ।
'रामरूप' दोऊ दंपति बिहरे मधुर हंसत थोरे थोरे ॥

कहूँ जी सेस कूं आप भुलावें ।
रत्न जटित कौ बन्यौ पालनौ रेसम डोरि डरावें ॥
मान भामिन चपकलता सखि मिलि मंगल गावें ।
और कोई इहां आवन पावें मुख मसि बिंद लगावें ॥
राई नौन कूँ वारि फेरि कै कौने में आप बगावें ।
'रामरूप' सखि निरखि लाल कूँ तनमन धनहि लुटावें ॥

गंगालहरी

छन्द पद्मावती

संवत् रस सर वसु चन्द्र अमित सुभ माघ सुक्ल तेरस सबिलास ।
वुद्धवार कर गंगा लहरी 'रूपराम' हिय करौ निवास ॥

श्री गौरीनन्दन सुर नर वन्दन जग अभिवंदन विघन हरौ ।
श्री 'रूपराम' जन करत वीनती गंगा तनमय चित्त करौ ॥
श्री मातु भवानी निगम बखानी बृह्म कमंडल करि संगा ।
भागीरथ आनी मुनिगन मानी कुलन उधारन जै गंगा ॥
तव निर्मल धारा अगम अपारा वारि देख जन सुद्धि लहै ।
तन मन वच धावै तव वर पावै अधम उधारन साँत कहै ॥
सिव सीस निवासी परम प्रकासी कलुस सँघ नासत जन के ।
जल पान करत भव-रोग कटत इमि भेसज अक्षत जिमि तनके ॥

८१—जीवाराम.—ये कवि महाराज बलवन्तसिंह के आश्रित थे। इनका जन्म तालफरा ग्राम (तहसील कुम्हेर) में चतुर्वेदी वंश में हुआ था। इनके केवल दो ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं:—

१—अकलनामा.—यह गद्य में लिखा हुआ है। इसमें अकबर बादशाह तथा बीरबल के सम्वाद बड़े ही रोचक ढंग से दिये गये हैं। तत्कालीन परिस्थितियों के

तथा मानसी गगा की महिमा का विस्तृन वर्णन वडे ही रोचक ढग मे मधुर भापा मे किया है ।

अवतरण

राधा माधव भूलत फूलत, हुलसि हुलसि मुसकानी ।
जनु दरपन प्रतिविम्ब निहारत, मन भावन मन भानी ॥
कवहूँक मुरली मधुर वजावत, गावत रागिनि राग छए ।
मानो वन घन व्रज नर नारी, काम-मत्र पढ बीज वए ॥
गिरिधर नागर रसिक उजागर, हसि हसि भुकि भुकि अक भरे ।
जनु मनमथ रति करत लगाई, नैकहु इन उत नाहि टरे ॥
इक कर चिबुक परसि पुनि माधव, वीरि वदन पर देत हसी ।
मिस कर उमग पयोधर परसत, मृगलोचनि तव मोह कसी ॥
नील पीत पट अचल चचल, घन दामिनि की कौन छवी ।
ककन किंकिन नूपर ठुमकनि, कथन करै सो कौन कवी ॥
गोप कुमारी पचरग सारी, कनक किनारी भलल मली ।
अग अभूपन वाजत रुन भुन, जन उर कचन-कमल कली ॥
भुकि भुकि दरसत हरसत मोहन, सुमन पराग वर वार वही ।
वाजत जत्र अनेक एक गति, राग अमावरि गावनही ॥
श्री वनबारी अति सुखकारी, मुरली मल्हारी गायवी ।
मानहु मोहनि मत्र उचारत, सवकौ सुधि विसरायवी ॥
नवलकिसोर भोरी गोरी, वय गति थोरी रूप लसी ।
मृदु मुसिकाय रिझा प्रीतम को, स्याम सुजान मनहि वसी ॥
मारि मभारी दै चटकारी, सरस सुधारी राग लई ।
भौंह नचाय बचाय मान गति तान मोहन पर राख दई ॥
मोहित भौ गिरिधर बर नागर करतै मुरली लटक गई ।
श्रवन सुनत मृदु स्वर सुर वनिता, चल न सकत गति थकित भई ॥

८४—रामवख्श —ये जाति के ठाकुर तथा भरतपुर के निवासी थे । आपका जन्म सवत् १८६७ वि० के आस पास तथा देहावसान १८९७ वि० मे हुआ । ये महाराज वलवन्तसिह के समकालीन कवि हैं । इनके पुत्र मुरलीधर तथा पौत्र भगवत प्रसाद दोनो [illegible] आपकी कविता वहुत खोजने पर भी विशेप नही मिल सकी है । केव [illegible] त किये जाते हैं —

कवित्त

जो पै पिय प्यारे तुम निपट बिसारी हम,
तौ पै काहे कों जु तुम करी प्रीति ठेठ में।
हमहूँ न जानी कान्ह रीति पहचानी अब,
सब सुभ बानी जो कहानी ढंग सेठ में।
हौ तुम निठुर 'रामबख्श' पहिचान लये,
नाही कछु आवत है ऐसी या अनेठ में।
कुबजा सग लाग्रो हमे रूप जो दिखाओ कान;
आओ वर दिना में प्रभू नीके जू जेठ में॥

चन्द बिन रजनी सरोज बिन सरवर,
वेग बिन तुरंग मतंग बिना मदकौ।
बिन सुत सदन नितम्बनी सुपति बिन,
बिन धन धरम नृपति बिना पद कौ।
बिन हर भजन जगत सोहै जन कौन,
नौन बिन भोजन बिटप बिना छद कौ।
'रामबख्श' सरस सभा न सोहै कवि बिन,
विद्या बिन बात न नगर बिना नद कौ॥

८५–सेवाराम:–ये वैर के निवासी थे। इन्होंने किन्ही रामपाल यदुवंशी के लिये 'नल-दमयंती चरित' की रचना की है। इनकी भाषा सरल, सरस एवम् प्रवाह युक्त है। इनका कविता–काल स० १८९३ बि० के आस पास है। इनकी कविता के कुछ अग प्रस्तुत है:— चौपाई

अब नृप सुनौ मनोहर बानी। दमयती की अकथ कहानी॥
जगी नीद भरके जब बाला। लख्यौ न प्रिय कौ रूप रसाला॥
दीसै नहि नरबर कौ राजा। तिय कौ बन में भयौ अकाजा॥
पीय पीय कहि चतुर सयानी। गद् गद् गिरा कहत भई बानी॥
अहो कंथ बन तजी अकेली। सूखत है कंचन की बेली॥
अमृत मय दरसन दरसाऔ। हमको वन में क्यों तरसाऔ॥
ऊंचे स्वर सों सब्द उचारे। तोर तोर कुसुमावलि डारे॥
अहो दई तुम कीनो कहा। अति अत्यंत भयौ दुख महा॥
नरबरीस कित गये सुजाना। सूनी तजकें मोहि निदाना॥
कासौ कहौ सुकाहि पुकारौं। पुनि काकौ मन में वृत धारौ॥

दोहा

वन वन में भटकत फिरै, रानी व्याकुल रूप ।
पछिन सों पूछन लगी, तुम देखे नल भूप ॥

८६—चतुर्भुज मिश्र —ये भरतपुर निवासी तुलसीराम के आत्मज खुस्याली-राम के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इन्होंने 'अलंकार आभा' नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें अप्पै दीक्षित के आधार पर अलंकारों के बड़े ही रोचक उदाहरण दिये हैं। ग्रन्थ रचना-काल के विषय में कवि ने लिखा है —

सम्वत् रस निधि वसु ससी, सिसिर मकर गत भान ।
पाख असित तिथि पंचमी, सुरगुरु समय प्रमान ॥

इस प्रकार इनका कविता काल १८८९ वि० ठहरता है। इनके ग्रन्थ की भाषा बड़ी ही रोचक तथा शैली प्रभावोत्पादनी है। उदाहरण के लिये कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं —

विशेषोक्ति लक्षणम् (दोहा)

पूरन कारन होत हू, कारज उपजै नाँहि ।
ताहि 'विशेषोकति' बरण, बुध जन सकल सिहाँहि ॥

उदाहरण (सवैया)

हौं न करूँ सुधि भूलि अबै तउ जात उतै चित मान बसेरो ।
भूख लगै तउ खात बनै न सुनूँ न कछू श्रुति रागहुँ तेरो ॥
सोऊँ तऊ नहि आवत नींद सह्यौ किन जातरी सो दुख रेरो ।
काम ससाल जरै उर में तऊ नेह न रंच घटै ग्रलि मेरो ॥

असंगति अलंकार लक्षणम् (दोहा)

जहाँ हेतु अरु काम को, भिन्न देस सवरुद्ध ।
तहाँ 'असंगति' को प्रथम, बरनें भेद विसुद्ध ॥

उदाहरण (सवैया)

सुन्दर नील सरोरुह से सुचि, सावल रंग रंगे रुचि लावहिं ।
हाय लियौ अपनाय सबै, नभ भूमि विभाग भले दरसावहिं ।
पै सखि ये घनें हू विपरीत री, और की औरहि व्याधि लगावहिं ।
आप करें बिरसा न बिदेसिन, की तिय मूछिन ह्वै मुरझावहिं ॥

तद्गुण अलंकार लक्षणम् (दोहा)

निज गुन को तजि लेत जह, संगति को गुन वस्तु ।
'तद्गुण' सो आभरन है, बरनें सुकवि समस्त ॥

उदाहरण (सवैया)

श्री बलवंत बली तुमरे अरि की तिय ताप तची घबरानी ।
नग्न सरीर फिरें बन में कछु ओढ़न को उर प्रीत प्रमानी ।
पल्लब तोरि धस्यौ तन चाहत हाथ पसारि तबै उमहानी ।
चारु नखाबलि रंगन ते भये पाण्डु तिन्हें तज देख खिसानी ॥

८७—युगल किशोरः—ये ब्राह्मण जाति के रावत अल्ल वाले लक्ष्मीनारायण के पुत्र और भरतपुर के निवासी थे। इनके वंशजों को महाराज बलवंतसिंह से 'कवीश्वर' की उपाधि मिली हुई है। महाराज के आदेशानुसार इन्होंने 'रस-कल्लोल' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। अब तक इनके ३ ग्रन्थ देखने में आये हैः—(१) रस कल्लोल (रस ग्रन्थ) (२) ब्रज बिलास (ब्रज का वर्णन) और (३) श्रीराम जानकी मंगल। साधारणतया इनकी कविता सुन्दर है और यत्र तत्र वर्णनों मे स्वाभाविक सजीवता भी पाई जाती है, परन्तु इनकी भाषा में व्याकरण सम्बधी भूलें अधिक हैं। इनका सवैया तथा षटपदी छन्दों पर अच्छा अधिकार था। इनकी कविता के उदाहरण नीचे दिये जाते है—

रस कल्लोल

शोक लक्षणम् (दोहा)

वाँछित वस्तु बियोग औ, रति कौ परसत नाहि ।
मन बिकार उतपन भयौ, परिमित 'शोक' कहाहि ॥
वाँछित वस्तु बियोग लघु, 'शोक' कहौ तज बेद ।
विप्रलंभ करुना बिसै, कैसे होतौ भेद ॥

विप्रलभ रति कों गहै, करुना परसात नाँहि ।
इतौ भेद है दुहुन मे, समझ सुकवि मन माँहि ॥
प्रीतहि रीतहिं जो कहौ, ता बिन शोक न होय ।
है असमजस यह मनौ, समझें कहै न कोय ॥

'भय लक्षणम् (दोहा)

अपराधरु बहु रोग ते, रव भय दरसन पेखि ।
[illegible] भयौ, परिमित सो 'भय' लेखि ॥

उदाहरण

गरुड पक्ष की पतन करि, सेवन किय यदुनंद ।
लखि काली भय भीत इव, चलन चह्यौ मंद मंद ॥

सवैया

जुग कान मे पकज फूलि रहे दृग आनद नीर ही भिन निहारे ।
भय भूषन भूषित हेम कहै जम ओपरगावलि ने किये न्यारे ।
लखि भेद चुनी पद की उपमा मधि नूपुर के रव ने निरधारे ।
अब याते परें विधि की चतुराई कहा वरनें कवि कोउ बिचारे ॥

बावर घेवर मोद जनेबिन, दूध मनी फैनी अनि सोहे ।
गोरस मानि मिना मग ओदन, पायस देखत ही मन मोहे ।
चार प्रकार वरा तरकारिन, और उचार गनें कहि कोहै ।
ठौर पुरी लुचई वर मोहन भोग, सुबास लिये उर ओहै ॥

पान कपोलन मे झलकें बन सपुट नील मनी मधि चूनी ।
कुन्तल केलि करे मकरद सुगन्ध भरे अलि मो दुनि दूनी ।
कुडल लोल किधौ नट नितत मडल मानिक पै छवि ऊनी ।
मजुल बोलनि मोल लियो मन को बरनें कविता मनि-सूनी ॥

रोला

कृष्ण-कुन्ड के तीर सुभग मनि मडल मण्डित ।
निरतत स्यामा स्याम सखी सग गुन गन पडित ॥
सरद चद प्रतिबिम्बित भूमन मनि छबि सोहै ।
लटकि चलति पट पीट अटकि नैननि मनु मोहैं ॥

दोहा

चपल चरनि गति मन्द ध्वनि, नूपुर सुर चित चोर ।
बजत बीन मिरदग मिलि, निरतत जुगल किसोर ॥

सागीत की छप्पय

श्रवन सुनें किमि बैन थकित पवन सरित जल ।
दल दल बिंबित जुगल रूप धुनि बजत सकल कल ।
तान गान गति मान नृत्य अगनि की मोरनि ।
दुरनि मुरनि चख चलनि चोप माची चहु ओरनि ।
रीझि रीझि अकनि भरत अमित भाव रति काम बन ।
विविध केलि कौतुक करत कुज भवन राधारमन ॥

यशवन्तसिंह का जन्मोत्सव,–कुआ पूजन

करत सिंगार, गज गामिनी सुदामिनी सी,
पालने झुलावें मातु देखत सिहाती हैं।
जाही समै चली महारानी कूप पूजन कों,
देबअली कुसुम समूह बरसाती हैं।
आनंद कौ सिंधु श्री ब्रजेन्द्र के महल माँझ,
तामें लेत थाह सी झमकि झमकाती हैं।
आती हैं अनेकन अनेकन ही जाती है सु,
ढोल ढमकाती है वधाये गीत गाती हैं।

नक्कारखाना वर्णन

बाजत बधाई बेस श्रीमन ब्रजेन्द्र द्वार,
कुंवर जनम सुभ उत्सव दराज पै।
फटिक धबल धाम पातुर नचत तामें,
नौबति परन सहनाई के अवाज पै।
बिधु के उदोत होत दीपन की जोंति मानौं,
कोटि कोटि दामिनी की सुषमा समाज पै।
'जुगल किशोर' निसि भोर नही जान्यौं परै,
आनद की ओप बलवंत महाराज पै॥

बिदा

पूजे देव देवी कुल रीति कीनी नीकी भाँति,
प्रोहित बिदा करकें और बिदा कीने हैं।
अति सनमान सों ब्रजेन्द्र बलवंतजू ने,
आश्रित अनेकन कों मौज बक्स दीने है।
सौनें के जडाऊ कड़े सौकरान को प्रसाद,
जरदोजी काम बने दिल्ली के सु चीने है।
हीर चीर मानिक सु रोकड़ गयंद बाज,
ग्राम लै लै जाचक अजाची रग भीने है॥

कवित्त

जौलों चन्द्र–मण्डल प्रकास नभ मण्डल में,
जौलौ है अडिगता की टेक ध्रुव तारे की।
जौलौं पौन पानी रमारानी औ भवानी रहै,
जौलौ रविरूप की प्रकृति तम फारे की।

जौलौ श्री महेश औ सुरेश नारदादि मुनि,
जौलौ गंग जमुन फनिंद भूमि धारे की ।
जौलौ राम नाम तौलौं अहो ब्रजराज प्रभू,
उमर दराज रहौ कुवर तिहारे की ॥

८८—मणिदेव —ये भरतपुर राज्यान्तर्गत जहानपुर ग्राम के निवासी और जाति के भट्ट थे। अपनी विमाता के व्यवहार से असंतुष्ट होकर काशी चले गये और वहा गोकुलनाथ के यहाँ रहने लगे। काशी नरेश की आज्ञा से इन्होंने महाभारत के कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, विशोक, स्त्री तथा महाप्रस्थान पर्वों का पूर्ण तथा शान्ति पर्व के २७५ अध्यायों का अनुवाद किया है। अपनी अन्तिम अवस्था में ये विक्षिप्त से हो गये थे। इनका समाज में बडा आदर था। अन अनेकों स्थानों में इन्हें ग्राम, हाथी, घोडे आदि भेंट में मिले थे। इनका कविताकाल १६०० से १६२० वि० तक है। इनके कुछ छन्द उद्धृत किये जाते हैं।

रूप माला

वचन यह मुनि कहन भो चक्राग हम उदार।
उडौगे मम संग किमि रूपमाला सो कहहु तुम उपचार ॥
खाय जूठो पुष्ट गर्वित काग सुनि ए बैन।
कह्यौ जानत उडन की गत रीति हम वल ऐन ॥
उड्डीन अरु अवडीन अरु प्रड्डीन अरु नीडीन।
सडीन निर्यगडीन अरु वीडीन अरु परिडीन ॥
पराडीन सुडीन अरु अति डीन अरु आडीन।
डीन अरु संडीन डीनक महाडीन अडीन ॥

इन्हें आदि प्रकार गत है उडन के ते सर्व।
भली विधि हम सिखे ताते गहत इतनो गर्व ॥
जौन गति की लिए होहु अभ्यास तुम गति तौन।
ग्रहण करिकै उडौ मो संग मको जो करि गौन ॥
काग के ऐ वचन सुनिकै कह्यौ हंस सुजान।
एक गति सब विहग की तुम काक शत गति वान ॥
एक गति सो उडव हम-तुम यथा रुचित सुवस।
वानि यहि विधि वहस, लागे उडन वायस हंस ॥

भए तह्न अति करन विक्रम उभय योधा वीर।
सहि परस्पर गदा गरुई गनत नेकु न पीर ॥

गर्जि गर्जि अखंड गति गहि उभय वीर उदंड।
करत चालन दोरदंडनि चपल अतिशय चंड॥
सव्य कोउ अपसव्य फिरि जो सव्य सो अपसव्य।
फिरत वाहत गदा गरुई सुभट भा भरि भव्य॥
शब्द सों भरि दियो अब्दहि स्तब्ध भेनहि नेक।
टूटि टूटि अचूक चाहत गहे जय की टेक॥

कहां निद्रा आतुरहिं अरु भरो अमराव ताहि।
कहां निद्रा ताहि घेरे महा चिंता जाहि॥
सकल ए मम हिए निवसत कहां निद्रा मोहिं।
पिता के वधे ते अधिक दुख कौन बूझत तोहिं॥
विप्र हम निज धर्म तजिकै गह्यो क्षत्री धर्म।
कर्म क्षत्रिन के करब अब उचित तजि कै मर्म॥
झूठ कहि तजि धर्म्म उन मम पितहि डार्यो मारि।
तथा अब हम बधब उन कह नीति धर्म बिसारि॥

८६—हनुमंत.—ये जाति के ब्राह्मण और नगर के निवासी थे। इनका जन्म सम्वत् १८८१ और निधन सम्वत् १९६० वि० में हुआ। इनके पिता का नाम प० सेवाराम था जो ज्योतिष के अच्छे विद्वान् थे। हनुमंत भरतपुर महाराजा जसबतसिह के आश्रय में रहते थे। इनके रचित आठ ग्रन्थ मिले हैः—(१) राधा मङ्गल (२) जानकी मङ्गल (३) कवितावली रामायण (४) सूर्य पुराण (५) तोता पच्चीसी (६) सांगीत शिरोमणि (७) नायिका भेद (८) भाषा चाणक्य, इनके अतिरिक्त और भी ग्रन्थ बतलाये जाते है। हनुमंत अपने समय के उच्च कोटि के कवियों मे से थे। अपने वश परिचय में इन्होंने अपने को नगर के प्रसिद्ध कवि रामलाल उपनाम राम-कवि का भाई प्रकट किया है। इनका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार था। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है.—

सुन रिषि कहत अरे नृप बालक, बोलत बचन संभार न तू।
मैं रिषि जैसौ तोहि सुनाऊँ, प्रगट समझ लै कारन तू।
छत्री कुल घमंड खण्डन लखि, ये कुठार खल हारण तू।
तुरत पठाऊँ यम लोकन में, नतरु सीख कर धारण तू॥
पुनि कहत वैन अनन्त, कोई मिल्यौ क्षत्री नाय है।
द्विज जान कें कुल कान कीनी, नतरु रिस उपजाय है।

केसर की कीच में करूँगी बरजोरी घेर,
ऊपर गुलाल लाल झोरी भर नाऊँगी।
गोकुल गली में भली भाँति सों अलौरी आज,
नन्द के लला को लली करिकें नचाऊँगी॥

नेत्र वर्णन

तरुन तुरंगम ते चौगुनी चलाकी चाहि,
चीतिबे को चूकै मति चकित चितेरे गी।
मीन मन हारे मृग वारे 'द्विजराम' हूने,
काम हू जिमारे बान जान कर चेरे गी।
सारे मुख चिन्तन के गारे है गुमान पगे,
प्यारे मन-भौर के सुधारे कंज हेरे गी।
अंजन ते कारे ये निहारे चतुरारे बीर,
लाज भरे भारे कजरारे नैन तेरे गी॥

नृसिंह वीर

प्रगट्यो प्रचंड रन भिरबे को भीषम सो,
बान वर अर्जुन सो भीम रन धीर सो।
पूरी पैज पारबे को राम द्विजराज जैसो,
भारो गिरि मेरु सो सागर गभीर सो।
तेज पुंज वासव को पूत पुरहूत जैसो,
कीरत को चंद सो, अमन्द राजे नीरसो।
विप्र-कुल भूषण सुजान श्री नृसिंह वीर,
कंचन बरसिबे को हरन पर पीर सो॥

छलको छरैया पूरी पैंज को परैया,
दान खगन झरैया औ तरैया रतिराज को।
धीर को धरैया पर कारज करैया,
लाय लासन लरैया औ दरैया शत्रु साज,को।
दीनन ढरैया पूरे गर्व को अरैया,
एँड मेडन परैया औ भरैया भारी लाजको।
सिंह सो बहादुर रन भूमि ना टरैया,
अरि उदर फरैया औ मरैया मत्र काज को॥

९२—धाऊ गुलाबसिंह:—ये जाति के गुर्जर क्षत्रिय तथा महाराज यशवन्तसिंह के धाऊ थे। आपकी राज्य सरदारों में उच्चकोटि की प्रतिष्ठा थी। आप बड़े काव्य प्रेमी तथा कविजनों के आदर कर्त्ता थे। आपने 'प्रेम सतसई' नामकी पुस्तक लिखी है, जिसमें १२५ दोहे अन्योक्ति के, १२५ दोहे नीति के, १२५ दोहे शृंगार के तथा ३७५ दोहे शान्त रस के है। इस प्रकार यह ७५० दोहों की सतसई बड़ी ही सुन्दर और उच्च कोटि की पुस्तक है। कवि ने ग्रन्थ की समाप्ति का समय इस प्रकार लिखा है:—

षट जुग नंद सुचंद, सम ज्येष्ट सुक्ल सुभ पच्छ।
द्वितिया सनि पूरन भई, 'प्रेम सतसई' स्वच्छ॥

सतसई से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है:—

अन्योक्ति (दोहा)

भरी लता फूली फली, बसि कर उनमें भोग।
अली कली क्यों दल मलै, यह नीकौ नहि योग॥
जाँचत नहि धन मान पै, सुनत न खोटी बात।
का मृग तैने तप कियौ, सुख सोवै तृन खात॥
जा सूरज जारै कमल, गारै चन्द चकोर।
हने नार जो मीन को, जाँय कहौ किहि ठौर॥
सुबरन चोंच मढ़ाय के, मानिक जुत पग दोय।
पख पख मोती लगे, काग हस नहि होय॥

नीति (दोहा)

कहुँ कहूँ छोटे जो करत, सो न बड़े ते होय।
तृषा कूप मोरत सकल, जैसे सिन्धु न जोय॥
नीति सहित जो सूरता, सोई जय कौ हेत।
सुध्यौ संखिया देत सुख, बिन सोध्यौ जिय लेत॥
फल फूलन जुत एक तरु, बन कौ करत सुपास।
ज्यों सपूत सुत एक ही, कुल कौ करत प्रकास॥

शृंगार (दोहा)

प्यारे तेरे दरस बिन, चित न लहत कहुँ चैन।
चन्दन चन्दरु चाँदनी, [illegible] गै दुख दैन॥
अरे यार तू निठुर [illegible] ानत पर पीर।
तरफत हों तेरे बि[illegible] री बिन नीर॥

तेरे वदन मयंक को, मो मन भयो चकोर।
रैन दिना इक टक सदा, लग्यो रहै तुव ओर॥
वह चितवन वह चाल गत, वह मीठी बतरानि।
छिनहुँ न चित ते टरत है, कसकत निसि दिन आनि॥

शान्त रस (दोहा)

तारन की तू बार को नेक न लायो बार।
मेरी ही अब बार को, कीन्हो कहा विचार॥
हरी करी की बेर को, नेक न कीनी बेर।
कब को आरतवत हूँ, क्यो न सुनत ही टेर॥
सुर सरिता के तीरवस, कर हरि तन अनुराग।
बहु सोयो खोयो बहुत, अबहू तो तू जाग॥
जग हरि मे हरि जगत मे, हरि बिन कोई नाँहि।
ज्यो नभ सब मे बसत है, सब नभ ही के माँहि॥

९३—काशीराम—ये महाराज यशवतसिंह के दरबार के प्रसिद्ध सरदार और जाति के ब्राह्मण थे। इनका जन्म गोवधन मे हुआ था। इन्होंने सम्वत् १९२२ वि० मे 'मनोहर शतक' नामक पुस्तक की रचना की, जिसके शीर्षकों मे नीति शतक, शृ गार शतक, शान्ति शतक, बारह खरी, शान्त रस पद, श्लेष कवित्त और होली आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इनकी कविता हृदय स्पर्शनी एव भाषा सरल सरस तथा लचीली है। इनकी कविता को पढकर यह निश्चय होता है कि ये उच्च कोटि के कवि थे। कविताओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है —

नीति शतक से (दोहा)

नृपति पास लघु नरन को, छिनक न चहिये वास।
ग्रसत राहु जब चद को, होत तेज को नास॥
नृपति जो मत्री हीन है, छीन राज ह्वै जाय।
बिना नीम ऊँचो सदन, जिमि छिन माँहि गिराय॥
पालन खोटे नरन को, लाय करो दिन रैन।
बखत परे पै फेरले तोता के से नैन॥

शृ गार शतक से (दोहा)

रति ही थाई भाव है, जाको कह्यौ कवीन।
रस शृ गार सो जानिये, कोविद निपुन नवीन॥

ताकी उतपति होत है, मिलि बिभाव अनुभाव।
सात्विक संचारी तहाँ, प्रकटत होत दुराव ॥

प्रेम कुल्हा उपज्यौ सिच्यौ, सलिल प्रीति सों आय।
ताप सोच सताप की, किहु बिधि सही न जाय ॥

विछुआ वर्णन (दोहा)

छिनक छिनक छुन छुन करै, बिछुआ पग दरवार।
मनों जगावत मैंन कों, रैन पुकार पुकार ॥

नितम्ब वर्णन (दोहा)

गोल नितम्ब विराजई गोरे गजन गुजार।
मनों लरकई भजि गई, उलटि दुंदुभी डार ॥

लंक वर्णन (दोहा)

लंक लग लगी पातरी, तनक छिवाये हात।
छुई मुई सम लचक कें, कमची सी लफ जात ॥

सयोग वर्णन (दोहा)

दरस परस बतरान सों, दंपति जो सुख होत।
रस संभोग तासों कहत, सकल कविन के गोत ॥

उदाहरण (दोहा)

सिसकी भरि कसकी तिया, मसकी जब भरि अंक।
फिर फिर फिरकी सी फिरै, थिर की ना परजंक ॥

उद्वेग वर्णन (दोहा)

पिय वियोग, घबरात चित, लगत न काहू ठौर।
ताही कों 'उद्वेग' कहि, लिख्यौ कविन सिरमौर ॥

उदाहरण (दोहा)

इन्दु लखत किंदुक गरल, तारे कनक अंगार।
लगत विना बलवीर के, सब सिंगार जंजार ॥

शान्त शतक (दोहा)

अरे मूढ़ बहु पुन्य सों, दई दई नर देह।
त्याग सकल मद मोह कों, हरि पद सों कर नेह ॥
जैसे पुतली काठ की, नचत तार के साथ।
ऐसे ही नर नचत है, काल करम के हाथ ॥
ये नारी ना नाहरी, लखत प्रान हर लेत।
वाघिन सों वच जात नर, नारी बचन न देत ॥

बारह खरी (दोहा)

कक्का कमला पति कुमर, करना निधि घनश्याम।
निसि दिन मन रटिबो करो, छाँडि सकल मद काम॥
खख्खा खर-दूषण हन्यो, खगपति पै असवार।
आनद कन्द मुकन्द को, भज मन बारम्बार॥
गग्गा गिरिवर धारियो, गोपी ग्वाल बुलाय।
गव गारि पुरहूत को, लीनों ब्रजहिं बचाय॥

फुटकर

पापर कहत तो सों पूरी कर आस मेरी,
मोमन कचोरी धरे धीर न अराये ते।
तूहै पकौरी तो सो बड़ी सी खताई भई,
पायो है कछू कमार प्रीतम पराये ते।
बैसे खड़ी है खोआ सुकरन मनोहर मोहि,
नाहीं गोंदी सी कहा होत घबराये ते।
कहत है समोसे खजला के सब बराबरी के,
गुप चुप रही जी कहा बातन बनाये ते॥

कैधों रूप सरिता मे मीन मीनकेतु के से,
कैधों आन कजन मे कजन बिराजे ये।
कैधो लाल रेशम के जाल मध्य खजन युग,
कैधो विधि कारीगर तीखे सर साजे ये।
कैधो हेम अर्धन मे हीरा मनोहर है,
कैधो रूप वाटिका मे नरगस छवि छाजे ये।
कैधो नोकदार सीप मुक्ता उगल रही,
लोचन तिहारे प्यारे सुखके समाजे ये॥

मानो कलसाहै कलधौत के सुधा सो भरे
मानो ये खिलौना द्वै मनमथ के ख्याल के।
मानो फूल कज उर उलटे धरे हैं विधि,
मानो युग चकवा हैं सुखमा सुताल के।
मानो त्रिब दाडिम दिये हैं बाल वारी प्रेम,
मानो फन शोभित है तरुनी तमाल के।
मानो हेम दुदुभी धरी है विधि औधे कर,
श्रीफल मनोहर है जोवन रसाल के॥

९४—शोभाराम:—ये भरतपुर में अहीर जाति में उत्पन्न हुए थे और पलटन में नोकरी करते थे। इनका कविता काल सं० १९२० बि० से संवत् १९६७ वि० तक रहा। आपने अपने समय में भरतपुर में कविता की धूम मचादी थी। ये एक बड़े कवि मंडल के मण्डलेश्वर थे। कवित्त लावनी और ख्यालों का अखाड़ा इनके स्थान अटलबंद दरवाजे सोधी वाली वगीची पर हर समय जुड़ा रहता था। इनके पास दूर २ से कविता प्रेमी एवं कवि-गण आते रहते थे। इन्होंने हजारों कवित्तों की रचना की है। आज भी भरतपुर में कितने ही प्रौढ़ और वृद्ध पुरुषों को इनके अनेक छन्द कंठाग्र हैं। इनकी रचनाओं के संग्रह का प्रयास किया जारहा है। इनकी रचनाओं में दो पुस्तक बतलाई जाती हैं:— (१) गौरी-मंगल और (२) हनुमानाष्टक। विविध विषयों पर लिखे हुए इनके अनेक छन्द बहुत ही भाव पूर्ण हैं। इनकी भाषा मे खड़ी बोली की झलक दिखाई देती है, जो हिन्दी उर्दू मिश्रित मुहावरेदार तथा रसीली है। उदाहरण स्वरूप इनके कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

आगरौ अठारह ब्रज बारह कोस मधुपुरी,
गोवरधन ग्यारह-कृष्ण डूबत ते उबारौ है।
साठ कोस जयपुर आठ कोस नदबई,
दिन भर कौ रस्ता बैर ब्यानौ ही सुखारौ है।
चलै तौ चौकस चौबीस कोस गोपालगढ़,
पास है पहाड़ी आगे अलबर तिजारौ है।
गुरुन कौ सहारौ कहै 'शोभा' मतबारौ इह,
भयौ है उजारौ रहवौ भरतपुर हमारौ है॥

करके फरियाद बरबाद हुआ बरसों से,
खाना ना सुहाता भूख भागी परेसानी तें।
सुनता नही अरजी क्या मरजी है यार तेरी,
किया नहीं प्यार कभी हंस कर महरबानी तें।
'शोभा' समझावै इश्क तेरा सतावै रहम,
तुझको नही आवै मुझे खोया जिन्दगानी तें।
हाल तुझसे नहीं छानी सही बड़ी परेसानी,
एरे दिल जानी! मेरे दिल की न जानी तें॥

एरे दिल जानी! मेरे दिल की न जानी,
लगन तुझसे लगानी सही हमने परेसानी है।

तू है लामानी बात तेरी पहिचानी,
करै अपनी मनमानी मोह मो पै हाय तानी है ।
'शोभा' कह समानी इश्क आतिश भल्लानी,
बहै चश्मो से पानी पर तो भी ना बुझानी है ।
हुआ हूँ बेरानी कहूँ कहाँ तक कहानी'
हाय मैंने नही जानी नेह मौत की निसानी है ॥

ललित किसोरी गोरी भोरी सखियान सग,
अग अग-आम के अनग ने कला करी ।
थोरी बैस वारी और ओढे सुरग सारी,
सजके सिंगार नारि आई है अदा भरी ।
सग-के सखान आन 'शोभा' सुजान कान्ह,
घेरि वनितान लूट दधि की सदा करी ।
दिखाय कमर लाँचरी चढा भौंह बाँकरी,
सु साकरी गली मे प्यारी हाँ करी न नाकरी ।

लूटा खूब दक्खिन को दबाया दौर जैपुर को,
छोडी डेढ चद्दर जलाया नग्र जाही का ।
तोडा दरवाजा फील हूल के हठीले भूप,
आया शाफ जीत के न लाया खौफ काही का ।
"शोभा" वैर बाप का निकाला था जवाहर ने,
लूटा खुद जाय के घराना बादशाही का ।
दिल्ली नगरे ठग मगरे पुकारे लोग,
लोहा लगडे का यारो गजब खुदाई का ॥

(हनुमानाष्टक से)

हमे दुख देहि ताहि भ्रष्टि हू सो भ्रष्ट करौ,
भ्रष्ट बुद्धि नीच नाहि जानत पर पीर की ।
मेरे हौ इष्ट तौ मुगदरन सो मार डारौ,
नखन विदार करौ किरचे सरीर की ।
'शोभा' को सतावै ताके दावौ क्यो न कठ आय,
स्वास को घुटाय शपथ अजनी के छीर की ।
ठोकरन मारि कें उडाय जो न देहु ताहि,
केसरी-कुमार तोहि दुहाई रघुवीर की ॥

९५—रावराजा अजीतसिंह:—महाकवि रसानंद के अस्त होने के अनन्तर भरतपुर राज्यान्तर्गत ब्रज भाषा काव्यसृजन का झण्डा रावराजा अजीतसिंह ने उठाया। ये भरतपुर राज्यबंश में उत्पन्न हुए थे और उच्चकोटि के भक्त कवि थे। ये 'कृष्णदासि' तथा 'अजीत' उपनामों से रचनाए किया करते थे। इन्होंने 'वृन्दावनानद रसोद्दीपन महत्पद' नामक ग्रन्थ में अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

बदनेस सुपुत्र जु सूर्जमल, सुत तासु भयो रनजीति है।
भौ सिंह लक्ष्मण तासु कै, भई जासु हरिपद प्रीति है।।
तिनके भए उमरावसिंह, अजीत सुत हर ताई कै।
'कृष्णदासि' स्व-छापधरि, किय महत्पद रस दाइ कै।।

कुण्डलिया

प्यारी पिय सुरसरि, जमुन सरस्वती अनुराग।
बृन्दावन रसिकन हिये, नित ही रहत प्रयाग।।
नित ही रहत प्रयाग बही नव्र गुनन त्रिबैनी।
मुनि मन मंजन करन हारि अति ही सुख दैनी।।
कृष्ण पक्ष वर मकर मास तिथि ऋषि शुभकारी।
हरि शिब द्रग निधि चन्द्र वर्ष भल हिम ऋतु प्यारी।।

(दोहा)

जमुना तट वृन्दाबिपिन, कुंबरि किशोरी कुंज।
'कृष्णदासि' कौ वास तहाँ, लषति जुगल छबि पुंज।।

उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि अजीतसिंह उमरावसिंह के पुत्र थे, जिनको भरतपुर राज्यबंश में रावराजा की उपाधि प्राप्त थी। ये बृन्दावन रहा करते थे, इसी कारण इनके बंशज अब तक बृन्दाबन बाले रावजी कहे जाते है। इन्होंने सरल, सरस एवं सुमधुर ब्रज भाषा में पद रचना की है। इनकी काव्य शैली दो भागों में विभक्त हो सकती है:—प्रथम श्रेणी में वह रचनाए आती है जिनमें शुद्ध ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार की रचनाओं को समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी अपनी कृतियों में यत्र तत्र उद्धृत किया है। ऐसे अनेक पदों में से एक यह है:—

गाओ सखी कुञ्ज केलि रस रीत।
× × जीते रहत अजीत।।

दूसरी शैली वह है जिसको इन्होंने बृन्दावन निवासी ललित किशोरी का अनुसरण करते हुए अपनाया है, क्योंकि ये ललित किशोरी को गुरुवत् मानते थे। देखिये ललित किशोरी के इस पद्य का:—

अरे मल्लाह के ज़ालिम, हमें मझधार क्यों बोरै ।
लगादे पार किश्ती को, वृथा क्यो बादवा जोरै ॥
ज़रा बल्ली लगा ज़ालिम, यहा जल बहुत हिलोरै ।
ललित किशोरी गुन माने, निठुर क्यो हँम के मुख मोरै ॥

कितनी सुन्दरता से अनुसरण किया है —

अरे मल्लाह ला किश्ती, हमें उस पार जाना है ।
बताना राह उस जाँकी, जहाँ बेदर्द कान्हा है ॥

अब तक रावराजा अजीतसिंह के ३ ग्रन्थ प्राप्त हो सके हैं, सम्भवत और भी रचनाएँ हो। इनकी रचनाओ से उदाहरण प्रस्तुत हैं –

(१) वृन्दावन रसोद्दीपन महत्वाद —(इस पुस्तक मे केवल कडका छन्द का प्रयोग हुआ है)

जयति जै जयति जै जयति जै राधिका स्वामिनी सकल ब्रज यूथ नारी
जयति वृ दा विपन रुचिर जमुना पुलिन सुखद चित्त हरन नित बहत बारी
देव सुकदेव श्री सारदा शेष शिव कहत वृन्दा विपन सोभ लाजे
काम मद कोह दुख द्रोह लोभादि सब देषि बनसी बदुर दूर भाजे
बसौ वृन्दा विपुन लषो नित जुगल छवि सदाँ पहन बल सुख बढौ रासी
दीन अति हीन अब यही विनती करत राधिका श्याम धन 'कृष्ण दासी'

(२) विनय शतक —इसमे राधा कृष्ण सम्बन्धी उपासना अनेक राग रागिनियो मे वर्णन की है —

राग विभाग

मेरी लाज नाथ अब आपहि ।
तात मात सुर बधु न कोऊ तुमहि हरहु भव तापहि ॥
मोहि समान तिहुँ लोक पतित अर कोऊ सुयो न हेर्यो ।
तुमहि पतित पावन निगमागम अधम उधारन टेर्यो ॥
मोहि अधमाधम पतित तुच्छ अति समझ सरण प्रभु दीजे ।
सुरनर मुनि स्वारथी सकल कोउ परमारथि न पतीजे ॥
तुम सिवाय और न हरि कोऊ जो भव दुक्ख मिटावै ।
'कृष्ण दासि' मोसे पतितहि प्रभु तुम बिन कौन तिरावै ॥

राग मालकोस

काहे को भटकत मन बौरे तकन तौ धीरज राख ।
कृपा सिंध वृज राज स्याम कौ करि भरोस तजि माख ॥
दै है तोहि तिराइ दयानिधि तेरी केतिक बात ।
त्यार दिये बहु अधम कृपा करि तू फिरि क्यो घबरात ॥

'कृष्ण दासि' की बात हाथ तुव सकल भांति गोपाल ।
आये सरण सबहि राखे जिम राखहु मोहि दयाल ॥

राग सिंधु भैरवी

जुगल कृपा भयौ सतक यह पूरण ।
नाना सँश्रत ब्याध नसावन वन्यौ चटपटौ नवल सु-चूरण ।
सुनत पढ़त रति होहि निरंतर राधा कृष्ण चन्द्र पद पंकज ।
जिनकौ नवनि करत भव नारद सनकादिक मुनि शेष देव अज ॥
सँवत तत्व वेद निधि चन्दा मास विभूत श्याम पख नीक ।
तिथि सु प्राण भृगु बासर सुन्दर प्रात समय सुख दायक ठीक ॥
'कृष्ण दासि' यह दीन विनय मैं मति सम कीनी जुगल निहोर ।
बुध जन सोध कृपा करि लीजौ अज जानि मोहि छिम साव खोर ॥
जुगल किसोर विनय यह मोरी येही सब बिध जी की आस ।
भव दुख मेटि चरण रति दीजै शरण राखियै श्री बनबास ॥

(३) द्वादशाक्षरी:—इस ग्रन्थ में बारह खरी के क्रम से राम चरित्र का वर्णन किया है। अन्य कवियों ने भी वारह खरी लिखी हैं, किन्तु उन्होंने प्रत्येक अक्षर को १२ मात्राओं सहित लेकर नहीं लिखा है।

सिया राम पद वंदि पुनि श्री गुरु पद सिरनाय ।
राम चरित बारह खरी बरनौ मति सम गाय ॥

करी प्रार्थना बिधि कर जोरी ।
हरि महि भार चेरि यह तोरी ॥
कारज करि हो भई नभ वानी ।
धीरज धरि बिध महि सन मानी ॥
किरपन जिम धन ले सुख लहही ।
ऐसें प्रथ्वी उर सुख अह हीं ॥
कीर्ति मान दशरथ है राजा ।
अवध पुरी के माहिं बिराजा ॥

ठिठरे मनहुँ सीत के मारे ।
इतनहिं मुनि वशिष्ठ पगधारे ॥
ठीक बचन कहि कहि मुनि ज्ञानी ।
वहु विधि समुझाई सब रानी ॥

ठुमर ठुमर रोवहि सबरे जन ।
मुनिवर चार बुलाये सुच मन ॥
झूठा कहि कहि चरन छुआई ।
लावहु जाय भरत दोऊ भाई ॥

ज गुण अमित महा सुखरामी ।
भाये बुधि सम 'कृष्ण सुदामी' ॥

क सो ज लो बारह खरी क्रमसो कही विचित्र ।
मात्रान युत अक मत्र बरन्यो राम चरित्र ॥
राम कथा विस्तार बड जस मत तस कहि गाय ।
काव्य चूक जह होय जो लीजो गुनी बनाय ॥

संवत ग्रह गुण निद्धि प्रभु शुभ दायक सुख स्थान ।
दुतिया श्रावण मास तिथि असित सु पाडवा जान ॥

६६—रामधुन —ये क्षत्रिय कुल मे उत्पन्न हुए थे और भरतपुर निवासी जयकिसन के पुत्र थे । काव्य प्रेमी होने के साथ २ आपको, ज्योतिष तथा वैद्यक से भी प्रेम था । ये व्यापार द्वारा जीवन निर्वाह करते थे । इनका कविता-काल स० १९२५ वि० माना जाता है । उदाहरणार्थ छन्द प्रस्तुत है —

कवित्त

मेख दन्त सेत भाल वृष इन्दु वन माल,
मिथुन त्रिसूल गुन कर्क वेद छाये हैं ।
सिंह तन बिछौना गिरि कन्या की छौना तुल,
वृश्चिक विशेष घन 'राम' चित लाये हैं ।
मकर मन मनोरथ पुजावै ऋषि ध्यावै,
वर्णन करत लाल गगाधर भाये हैं ।
कुभ गज आनन पै मीन मन कज धरे,
रासि मिलि बारहु गनेस गुन गाये हैं ॥

६७—रामद्विज —ये जाति के ब्राह्मण थे और घनश्याम तथा शोभा राम आदि कवियो के अखाडो मे कविता पाठ किया करते थे । इनका कविता काल १९२५ वि० है । उदाहरण प्रस्तुत है —

कवित्त

छूम छूम छुमक छबीलौ छबि छप छप,
धप धप धारत धरा पैं पग दौगने।
लट पट लटक सु उरगौ मटक अंग,
झपटत चालै नटनागर तैं नौगुने।
भूसन के भार सों सिगार कै सजे है गात,
वात ते बिसेख जाके बल बढ़ै सौगुने।
'राम द्विज' भनत तिहारौ रघुराज बाज,
चंचला ते चपल चलाकी चाल चौगुने॥

दोहा

कर गहि ना मरदन करौ, कछु न निकरै सार।
यह सिसकारी पीउ की, पाय न दूजी बार॥
चूरौ भंजन मतकरै, हे गंवार मनहार।
कै सिसकी पिउ सैज पै, कै सिसकी यह बार॥

पान के पिटारे खोल ऊंची सी दुकान बैठी,
आँखिन में पैठी करै वातन अड़ाके की।
पानन सों पान मेल आसिकन कों पान देत,
सिसकिन समेत फाल फोरत कड़ाके की।
कहै 'द्विज राम' करि सुरमा सों पैनी दीठ,
सूग्मा लों मारै मार सैल के सड़ाके की।
बोलन अमोलिन मोल न बिसात मोहि,
रूप तक तोल में तमोलन तड़ाके की॥

९८—पीरु:—ये भरतपुर निवासी नन्नूराम ब्रह्मभट्ट के सुपुत्र थे और काव्य रचना द्वारा जीविका उपार्जन करते थे। इनके विविध विषयों के छंद पाये जाते हैं। इनकी भाषा टकसाली, उर्दू हिन्दी मिश्रित, मुहावरेदार तथा लचीली है। इनका कविता काल सम्वत् १९३० वि० ठहरता है। उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

कवित्त

मानों महताब सा खिला है क्या जमो पै देख,
जिस पर जुलूस एक दन्दा बुलन्द है।
शिकवि अम्वार सा चुनाचै हार गौहर का,
गुंचे गुमाँ का दस्त लड्डुआ पसन्द है।

राग मरहठी

बनी एक जोगिन अलबेली, डालि गल फटकि माल सेली।टेक।
पहर लीये कुण्डल कानन मे, सीस तिरपु ड अलख मनमे।
जुगल जादू जुग नैननि मे, लगी है भस्म सकल तन मे॥
पूगी नाद बजाइ कैं, भिक्ष्या करलै जाइ।
मन मोहिनी डारिकै, मज्जन लिये बुलाइ॥
नाथ गुरु पूरे की चेली ॥ बनी० ॥१॥
ओढि मृग चर्म चन्द्र बदनी मदन अल मस्ती रति रमनी।
करन कमनेती चोट घनी, भगोये भेष बसन कफनी॥
द्वारई द्वार सुनावती, पूगी ख्याल सुजान।
दरसन देखन रसिक जन, बहुत फिरे हैरान॥
किते जोगिन ते बाद खेली ॥ बनो० ॥२॥
कुवरी करन धरन प्यारी, नागिनी लटका लट कारी।
कीलनी नागिन पर डारी, किये निज बस मे नर नारी॥
देश कामरू पढी, बिद्या बीर बैताल।
मूर्छित भोगी बस किये, जागीन केरे जाल॥
भुरकनी बसीकरण पली ॥ बनी० ॥
घर ही घर खप्पर भरवानी, जरी जतर करि २ जाती।
चपल चपला सी चहचाती, प्रघट सस्यस्तिन गुण गाती॥
रुप की मूरति जोगिनी, ठगिनी सकल जहान।
दरसन देखन भटकते, 'हरिनरान' के प्रान॥
नाथ गुरु पूरे की चेली ॥ बनी० ॥

दोहा

ये शुभ कथा विवाह करि, श्रवण परीक्षत भूप।
पहुचि द्वारिका करत हरि, नित नव चरित अनूप॥

छद

पहुचे निकट हरि द्वारिका तिय नरन मारग भरि रहे।
धारत नगर मे बग बगर घरे घर जगर मग करि रहे॥
द्वारन कलश सोभित पताका देहरिन मणि खचित हैं।
माणिक्क भिलिल मिल चौक आँगन अमित रूप गुण रचित हैं॥

दोहा

जबते आई रुकमिनी महलन जगमग जोति।
रिद्धि सिद्धि बसुदेव गृह नित्त निरतर होति॥

कवित्त

जोबन अनंग अंग अंगन तरंग उठै,
सीसता सुहाग भाग सुन्दर रतीसी है।
सुधाके समुद्र में सरोज कली कोमल सी,
खिली सित रंग अति लंक पतलीसी है।
'हरिनंद' नदन प्रबीण मन मोल रतन,
मधुर मुख बोली करै अमृत झरीसी है।
रूप ऊजरीसी शील सांचे ढरीसी हरि,
कंचन छरीसी न परसी न परसी नरीसी है॥

भरतपुर युद्ध

डीग भरपुर बैर बिकट बांकी ब्रज भूमि राजधानी।
हो फिरंट अंग्रेजों से अडबंगी नृपति जंग ठानी॥
कलकत्ते की अठकोंसल में नित होती बतकही सही।
हिन्दुतान में किला भरतपुर उस सरका कोई और नहीं।
छीन छीन कर जोर जुलम कई राजों की ले लई मही।
लूटी भरी बादशाही अब दिल्ली में क्या खाक रही॥
कई करोड़ मंसूर अली से रुपे लिये जग ने जानी।
हो फिरंट अंग्रेजो..............................॥
फिर बोला अंग्रेज कंपनी का इकबाल सदा का है।
लहमे में सर कर लेगे अडबीला जाट कहां का है।
दै मूछों पै ताव कहै स्यौसिंह हिन्द का नाका है।
मान हमारा कहा लेक मत लडै भरतपुर बांका है॥
जब बोला अंग्रेज तुम्हारे मौत सीस पर मंडरानी।
हो फिरंट अंग्रेजों..............................॥
दोऊ ओर से जुरे मोरचे जगी तोप जंजीर चले।
धुंआ घन घुमंड बद्दल में प्रलय काल के से बदले।
गुब्बारे गोले बज्जर बे तीर तंमचे चले भले।
शक्ति शूल तलवार हजारों वार सूर सम्मुख झेले॥
गढ़ से बाहर निकल लड़ै जहांकी सेना मरदानी।
हो फिरंट अंग्रेजों से अडबंगी नृपति जंग ठानी॥
लेक फिरंगी आगें नृप ने खत लिख भेजा न्यारा है।
तैं हल्ला बहु किये यार अब कें इक बार हमारा है।

घर से निकले जट्ट बाहर से हूलकर धर ललकारा है।
जिन्न फिरंगी किया जाय दम कोस पड़ा सोई हारा है॥
श्री महाराज रनजीत सिंह सू छक रंग रही रजपूतानी।
हो फिरट अग्रेजो ॥

अठारह सै साठ की साल मे माका हुआ बड़ा भारा।
हार गया अग्रेज नृपत जीता रनजीत सिंह प्यारा।
जमना पार उतारे गोरे डोबे किते तेग धारा।
रुमाल गिरि यों कहै श्री व्रजपति नरेश जस विसतारा॥
हरनारायन मर्दों के साके गावैं सुनै ज्ञानी ध्यानी।
हो फिरट अग्रेजो ॥

१००—रामदयाल —ये सोमवशीय क्षत्री मोतीराम के सुपुत्र और भरतपुर निवासी थे। इनका जन्म सवत् १९०१ वि० तथा निधन १९५७ वि० मे हुआ। इनका केवल एक छन्द इनके सुपुत्र वल्लभराम से प्राप्त हुआ है, शेष साहित्य नष्ट भ्रष्ट हो गया बताया जाता है। इनका कविता-काल स० १९३० वि० ठहरता है।

कवित्त

सेस मे महेस मे सारद हू मगन रहे,
सनक सनदन सु नाम सो लगे रहैं।
बालमीक व्यास सुक ब्रह्मा हू धरैं ध्यान,
मारकण्डे भुसुण्ड हू सदा उर मे धरे रहै।
लोमस मुनि गौतम वसिष्ठ विश्वामित्र,
मूल बालखिल्य हनु- मिव हू जगे रहैं।
नाम देव दादू कबीर सूर राम चरन,
राम सरन रामदयाल भी खडे रहै॥

१०१—साधूराम —ये कुम्हेर-निवासी गगाराम के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका कविता-काल सवत् १९३० से १९५० वि० तक ठहरता है। इनके रचित फुटकर छन्द पाये जाते हैं, जिनमे से कतिपय प्रस्तुत हैं —

कवित्त

झूम झूम आय आय बरसे फुहारन ते,
सीतल पवन मनु मन्द चलै न्यारी है।

गरजें घन घोर घोर मोरा मचावें सोर,
छाई बन बागन बहु भाँतिन बहारी है।
चहक चिरैयाँ नदी नारन पै बोल रही,
तालन पै कोकिल की कूक लगै प्यारी है।
सरन पै सिन्धुन पै छाई छवि 'साधू राम',
पावस की सोभा स्याम रंग अतिधारी है॥

हाथ नहीं पांव नहीं पर नहीं पूंछ नही,
मानम को माँस खावै किन कही जावैना।
मन में मगन रहै जानैं वह कहाँ रहै,
देखी ना किसी ने फूले अंगहू समावैना।
बादर मत जानौ दीजौ ज्वाव हुसियारी सूं,
'साधू' सो विचार सांचे छन्द क्यों बनावैना।
दंगल में आवै ख्याल मेरे पर लावै याना,
छोड़ घर जावै एती बात क्यों बनावैना॥

१०२—दिगंबर:—ये शोभाराम के अखाड़े के कवियों में [illegible]
खोज करने पर भी इनका वृत नही ज्ञात हो सका है। इनका [illegible]
१९३० से १९५७ वि० तक है। उदाहरण स्वरूप इनकी [illegible]
जाती है:—

कवित्त

निकस गये हाकम हुकम के करन [illegible]
हाली औ मवाली वे हू [illegible]
आछे आछे महलन में परदा जड़े बाफ[illegible]
खासे खासे पलंगन पै [illegible]
गज तुरंग सूरवीर चढ़त [illegible]
और तोपकखाने ते [illegible]
तजौ देह-अंबर 'दिगंबर' [illegible]
आसन [illegible] के [illegible]

१०३—गंगाबख्श

के ब्राह्मण थे। इनका [illegible]

रूपसो रतन पाय, जोवन सो धन पाय,
नाहक गमायबो गमारन को काम है ॥

१०५—रामनारायण—इनके पिता का नाम भीकाराम था। ये जाति के ब्राह्मण तथा तहसील डीग के अन्तर्गत खोह नामक ग्राम के निवासी थे। ये वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इनका रचा हुआ एक सुन्दर ग्रन्थ 'राधा मंगल' नाम का मिलता है। इस ग्रन्थ मे श्री कृष्ण का श्री राधा के साथ विवाह होना वर्णन किया है। इसका रचना-काल सं० १९३३ वि० है। भाषा, सरस सुबोध एवम् पाण्डित्य पूर्ण है। प्रत्येक वर्णन मे इतनी कुशलता है कि चित्र सा खिच जाता है। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

छप्पय

नील सरोरुह स्याम काम मत कोटि लजावत।
अरुन तरुन वारिज समान दृग अति छवि पावत।
पीत वरन कटि वसन दसन दामिनी विनिंदित।
आनन अरुन उदोत ज्योति राका ससि निंदित।
मन चोरत मुनि मुसक्यान मृदु नेति नेति श्रुति कहत नित।
जन जान 'गुसांई राम' उर करहु वास नित हित सहित ॥

त्रिभंगी

इक दिवस सयानी जसुधा रानी दधि मथवे कू आप लगी।
सुत कू पय प्यामे गुन गन गामे दूध उफन तो देख भगी ॥
नहिं कृष्ण अघाये अति रिस छाये दधि मटकी के टूक किये।
माखन सो खायो सेस लुटायो जब भय पायो भाग दिये ॥
गोपी सो आई देखि रिसाई खोज खोज लख जात भई।
पकरन को धामे हाथ न आमे तब मन मे घवरात भई ॥
माता पचिहारी कृष्ण विचारी जन हित कारी ठहर गये।
पकर्यो कर जाकें भौत रिसाकें बाँधन काजे दाम लिये ॥
ओछी भई डोरी बहुतक जोरी तव मति भोरी होत भई।
तब प्रभु मुसकाए आप बँधाए माया के बस भूल गई ॥
निज काज सिधारी इत बनवारी मन मे सोच विचार भले।
यो कहत गुसाईं "रामनरायण" नल कूबर के पास चले ॥

१०६—बालमुकंद—यह जाति के तैलङ्ग ब्राह्मण तथा कामा के निवासी थे। इनके पिता का नाम मुरलीधर था। यह कामा के श्री गोकुलचन्द्रमाजी के

गोस्वामी बल्लभलाल के आश्रय में रहते थे। इनका जन्म सम्वत् १९०५ वि० है। इन्होंने 'कामबन-महात्म' तथा 'सनातन धर्म-विजय' दो नाटक लिखे हैं। इनका कविता काल १९३५ वि० ठहरता है। रचनाओं के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

गोपीजन मोहीं सब रूप देख मोहन कौ,
मृगी गन मोही सब मधुर सुर गान पै।
वक्ष-स्थल देखिकें रमाचित चंचल भयौ,
गाय सब मोहीं गोपाल लाल व्रान पै।
भक्त सब मोहे प्रभू भक्त-वत्सलता देख,
देव सब मोहे चार भुजा अभै दान पै।
देख के 'मुकन्द' चरनारबिन्द मोहे सन्त,
तीन लोक मोहे तेरी बाँसुरी की तान पै॥

सात दरबाजे और मन्दिर चौरासी जहाँ,
ऊंचौ एक महल सो प्रकट दिखात है।
अस्सी चार खम्भन की संख्या नहीं पूरी होत,
एक घट जात चाहे एक बढ़ जात है।
विष्णु के सिंहासन चौरासी बने ठौर ठौर,
चरन पहाड़ी थारी भोजन सुहात है।
तीरथ चौरासीन को राजा बिमलेश जहाँ,
कामबन जात ताकौ काम बन जात है॥

१०७—प्यारेलाल:—ये अग्रवाल बैश्य और भरतपुर के रहने वाले थे। इनका मुख्य व्यवसाय दुकानदारी था। इनका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ वि० के आस पास हुआ। इनका कविता काल १९३५ से १९६४ वि० तक माना जाता है। ये घनश्याम के शिष्यों में से थे। इनकी कविता का एक छन्द प्रस्तुत किया जाता है:—

कवित्त

घन घन गरज छाय मेघ नीर झरी लाय,
सीतल समीर बहै तीच्छत बामिनी।
कोकिला किलोल करें मोर बोलें चहुँ ओर,
कोप काम आयौ जी अकेली जान कामिनी।
'प्यारे जी' सरीर सुख सब कोऊ चाहत है,
कठिन कठोर है पराई प्रीत पामिनी।

चित चकोर चितवन रह्यो, वदन चन्द दुति ओर ।
रवि ऊचो नभ चढ गयो, तऊ न जान्यो भोर ॥
नीलाम्बर सो मुख ढक्यो, यो दोखो नदनन्द ।
कालिन्दी कल नीर बिच, झिलमिलात जिम चन्द ॥

विप्रलब्धा प्रौढा (कवित्त)

उमग उमाहन सो सकल सिगार साज,
पागी प्रेम पिय के मुआई सखि सग हैं ।
प्रीतम "विहारी" केलि मन्दिर न पायो तहा,
देख सूनी सेज उठी विरह तरग हैं ।
व्याकुल विकल भई बेसवर वाल परी,
लिपटी लटकि लटी दोऊ मुख सग हैं ।
मानो आज भूमि पै सुधाधर ही पर्यो आय,
ताप तकि प्यासे अमी पीवत भुवंग हैं ॥

उत्कठिता प्रौढा (कवित्त)

आली नभ लाली सो दिखान लागी जागी निसि,
भागी भयो सोर भोर होन ही चहत है ।
चहुँ ओर बोल रहे पछी चौचहाट करि,
चटक चट फूली कली फूल्यो चहत है ।
अनत रति पाली न आये बनमाली मैन,
रैन गई खाली जिय धीर न गहत है ।
तोहि कह्यो प्यारी भोर आवत ही 'विहारी' सो,
मान ठानि बैठो भोन यो मन कहत है ॥

वेद न्याय सांख्य शास्त्र पाशुपति वैष्णव ये,
पाचो मत जुदे जुदे मारग वतावें हैं ।
मनकी इच्छानुकूल होय कें सुधर्मारूढ,
गूढ इन पथन मे तर्क तज धावें हैं ।
तेही परिणाम माहि अद्भुत अजन्मा एक,
अनत अव्यक्त रूप आप ही को पावें हैं ।
सूधे असूधे मग वही भये सरिता सवै,
जैसे जाय अत एक सिन्धु मे समावें है ॥

१११—जानी श्यामलाल:—आप भरतपुर के निवासी तथा जानी बिहारीलाल हैड मास्टर के छोटे भाई थे। इनकी कुछ रचनाएं प्राप्त हुई हैं जो इनके विद्यार्थी जीवन की सी प्रतीत होती है। आपका कविता काल सम्वत् १९५० वि० के आस पास रहा है। उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

स्थाबर जंगम जीव अपार। भोगत भोग शरीरहि धार॥
'श्याम' सुजान कियौ निरधार। भाल लिखी लिपि को सक टार॥

चकोर छन्द

गोरस लै घरते चलती बन, श्याम अचानक गैल मझार।
रोकत टोकत लै लुकुटी कर, मांगत दान मचाबत रार॥
रूप सुधारस प्याय तबै वह, जाय बसे अब कोस हजार।
हाय कहाबत साँची भई सखि, भाल लिखी लिपि को सक टार॥

११२—मुकुन्द:—ये महाराजा जशवन्तसिंह के शासन काल में हुए थे और बयाना (भरतपुर राज्यान्तर्गत) के फौजदार गंगाप्रसाद के आश्रय में रहते थे। इन्होने अपने आश्रयदाता के नाम पर 'गंगा पुराण' नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमे गंगा महिमा तथा राजनीति आदि का वर्णन है। इनकी कविता बहुत साधारण कोटि की है। इनका कविता-काल सम्वत् १९४० के आस पास है। कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं:—

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज सिर पर धारन कीन।
कवि 'मुकुंद' बर गुन कहे सरस्बती बर दीन॥

चौपाई

तीन नयन उपबीत भुजंगा। सदा बसत गिरिजा के संगा॥
ससि ललाट माथे पै राजै। भागीरथी जटा में गाजै॥
आदि कमंडल बिधि उपजाई। दुतिय सीस शंकर के आई॥
तहाँ अखण्ड एक गिरि भारी। जासों गो मुख निर्मल बारी॥

दोहा

भागीरथि सरनें गही, संत दरस हित लागि।
पातक जन के दूर कर, करे न्हान मन जागि॥

११३—जुगल किशोर:—ये जाति के ब्राह्मण तथा भरतपुर के निवासी

थे। ये बहुधा भरतपुर के कवियो के अखाडो मे सम्मिलित हुआ करते थे और तत्काल रचना करके सुनाते थे। इनके फुटकर छन्द पाये जाते हैं। इनका कविता काल १६४० वि० के लगभग है। उदाहरण प्रस्तुत है —

कवित्त

वार वार हमसे इकरार किया आने का,
कह दो आप आओगे कौन से महीना मे।
एती निठुराई मित्र भाई है तिहारे मन,
कपट की न बात करो दाग होत सीना मे।
'जुगल किशोर' जुग फूटे नर्द मारी जाय,
जीती बाजी न हारो यह बात न करीना मे।
आप सब प्रबीना कछु बुद्धि की कमी ना,
हाय ऐसा जुल्म कीना मो साफ त्याग दीना मे।

११४—मगलसिह —ये जाति के श्रीमाल जैन थे। आपके पिता नथमल श्रीमालो मे भरतपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे। आपका रचना-काल १६४० वि० के लगभग है। इनके रचित चार ग्रन्थ–(१) 'होरी के रसिक जनो को निवेदन,' (२) 'तीर्थकराचन' (३) जबू नाटक, (४) मगल भजनावली प्रकाशित हो चुके हैं, इनके अतिरिक्त २ अप्रकाशित ग्रन्थ और हैं जिनके नाम क्रमश "श्रीमालों का इतिहास" तथा पत्र-पुष्प हैं। इनकी कविताओ के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है —

दोहा

कठिन प्रीत की रीति है, कठिन कर्म को नास।
भव सागर सो तैरबो कठिन धर्म बिस्वास॥
बचन निबाहन कठिन है कठिन होत उपकार।
सम्पति मे समता कठिन, अरु सयम को सार॥

पद

प्यारे पइयाँ परो शिर नाय नाय, मोपै रग जिन डारो धाय धाय।टेक।
ले गुलाल मुख पै लिपटानी, कर पकर्यो मेरो आय आय॥
पिचकारिन सो बिंदिया सरक गई, बिगर्यो कजरा हाय हाय॥
देख श्याम ते कहा गत कीन्ही, कहा कहों घर जाय जाय॥
सखी, कान ने बेगि मनाई, 'मगल' हा हा खाय खाय॥

ज्ञान ध्यान धारणी अनेक दुःख टारनी,
त्रिताप को निबारनी संबारनी कबित्त तू।
जगत्त जोति जागनी सुहाय रंग रागनी,
सु प्रेम पूज्य भावनी सुभोगनी सरूप तू।
काम को बढ़ावनी वढ़ावनी अगूढ़ युद्ध,
मनको समझावनी रिझावनी रसिक्क तू।
शंभुनाथ भावनी, अगाध बुद्धि लावनी,
सुरंग रंग रंगनी तुरंग रग भंग तू॥

११५—घनश्याम:—ये जाति के अग्रवाल वैश्य. और भरतपुर के निवासी थे। इनका जन्म सम्वन् १८८४ के लगभग माना जा सकता है क्योंकि इनका स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में सम्वत् १९६४ में हुआ था। यह शोभाराम के समकालीन थे और अपने अखाड़े के प्रधान थे। इन्होंने अटल बन्द दरबाजे बाहर वड़ के नीचे गणेश मूर्ति की स्थापना की जहां कवियों का प्रतिमास अखाड़ा जमा करता था। अब भी गनगौरों की तीज के दिन वहाँ पर कवित्त आदि होते हैं। इनके वहुत से शिष्य थे। इनकी रचित 'यमुना लहरी' तथा 'नख सिख' दो पुस्तके है, जिनसे कुछ छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते है। यमुना लहरी अप्राप्त है किन्तु उनके कुछ छन्द उन्ही के शिष्य लाला कैलाबख्श बजाज से हमें प्राप्त हुए है:—

यमुना महिमा

मैं तो कलि काल की कलौछ मेटवे के लिये,
आयौ तक तोय ताक वेद सुन लीयौ मैं।
भनै 'घनश्याम' नेक रविजा तिहारे तीर,
नीर भरि हाथ में सु आचमन पीयौ मैं।
जबते सरूप नट-नटवर भयौ है भेस,
लेस न परत कौन पाप फस कीयौ मैं।
देबन कौ देवपति पतित बनाय मोय,
कान के समान कान कारौ कर दीयौ मैं॥

नख शिख

कैधों मखमली सेज साजी पिय केलि काज,
कैधों रूप रमनीक मंगल कौ थल है।

कैधौ मृदु पानिप की धार की धरनता है,
कैधौं मुखचन्द हाम कचन को पल है।
कहै 'घनश्याम' किधौ वयारी रोम केसर की,
सोभित है नाभि कुड मैनका को जल है।
कुवर किसोरी गोरी माखन ते मृदुल महा,
उदर अमोल गोल पन्ज को दल है॥

कैधो नाग नागनी के छुटे भये नाग सुत,
कैधौ श्याम मावस के सोभित कुमार हैं।
कहैं 'घन मुन्दर' किधौं सुत मरकत के,
मसले मसाने डरे तम के से तार हैं।
काम के तुरग फटकाग्वे को चौंर चारु,
कैधौं अनुराग मुख चन्द के सिंगार हैं।
कारे सटकारे भारे अतर फुलेल डारे,
मृदुल सुधारे न्यारे नवला के वार है॥

जमुना लहरी

प्रथम शशि स्थल मे गो लोक रासत हो,
दूजे रवि मण्डल की किरन सुहाई हो।
तीजें 'घनश्याम' भनें जामन के वृक्ष पर,
चौथें डार डारन मैं फल फूल छाई हो।
पच मे प्रवेस हिमगिरि मे घुमी हो धाय,
पष्ठ मे विराट शृग धूम छवि छाई हो।
सप्त मे चली हो गो लोक सो अपार धार,
राधिका कुमारि के कुमारि ढिग आई हो॥

विष्णु स्वास जल है सुजल पै एक कच्छप है
कच्छप पै शेष नाग फन विस्तार है।
कहै 'घनश्याम' शेष नाग पै धरी है धरा
धरा पै धर्यो एक भूधर अपार है।
भूधर अपार पै जामुन को वृक्ष एक
जामुन के वृक्ष पर फल दल बहार है।
फल दल वहार पर मारतण्ड मण्टल है
मारतण्ड मडल मे जमुना की धार है॥

११६–मुरलीधर:–ये शोभाराम के शिष्य थे। इनका जन्म सम्वत् १९१६ वि० तथा निधन सम्वत् १९९३ वि० है। मुरलीधर जाति के ढाकर राजपूत थे और महाराज कृष्णसिंह के इजलास खास में जमादार थे। इन्हीं महाराज ने आपको 'कविराज' की उपाधि से विभूषित किया था। समय २ पर कितने ही स्थानों से समस्या पूर्तियों पर आपने पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त किया था। यद्यपि ये विशेष पढ़े लिखे न थे तथापि नायिका भेद एवं अलंकारों का विशेष ज्ञान था। प्राचीन कवियों की कृतियों का आपने अच्छा अध्ययन किया था। कविवर ग्वाल पर इनकी विशेष श्रद्धा थी और उनके लिखे हुए छन्द आपको बहुत याद थे। आपकी तीन पुस्तकें मिली हैं:—(१) गज प्रकाश (२) वारुणि विलास और (३) दीग वर्णन; इनके अतिरिक्त आपके फुटकर छन्द भी बहुत मिलते है। आपकी भाषा सरल, सरस एव प्रसाद गुण युक्त है। उदाहरणार्थ कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते है:—

कवित्त

बारैठे के महल वसंत दरबार होत,
सुखमा बिसाल कों सुरेस लखि लाज है।
पीरे रंग अंग सजें भूसन वसन चारु,
सोभित है जैसे वीर रस कौ समाज है।
न्यौछावर नजर करैं है सरदार सव,
उड़त गुलाल नाँच बाजन कौ साज है।
तामैं श्री व्रजेन्द्र महाराज कृष्णसिंहजी ने,
'मुरली मनोहर' बनायौ कविराज है॥

प्रबल प्रतापी श्री व्रजेन्द्र जसबंत सिंह,
जा दिन सिधारे स्वर्ग चढ़ कै बिमान में।
कामदार रैयत सिपाह आँख आँसू ढरैं,
हाय हाय तो सौ ना नरेस भौ जहान में।
'मुरली मनोहर' महीपन कैं सोच महा,
सात हू बिलायत सोक दसहू दिसान में।
भूपर मनुज रोबें, पेड़न पखेरू पुंज,
तारे ससि सूरज हू रोवैं आसमान में॥

फील मुखड़े पै एक दन्दा की कमाल जेब,
माहताब सर पर झलकता नूर बन्द है।

सो विनती सुन मोहन मानियो,मोसो कभू मत हूजियो न्यारे।
मोहि सदाँ चित सो नित चाहियो,नीके के नेह निवहियो प्यारे ॥

भुजगी

झरें श्रोणधारा, गिरें भूमि माही।
गिरे वीर योद्धा, रही सुद्ध नाही ॥
झरी मेघ की सी, लगी तारथरी हैं।
वधू इन्द्र की सी सु वूदी परी हैं ॥

पथैना युद्ध (रोला)

तोप शब्द घन घोर, रोर मोरन जस पारी।
मनौ पथैने माँझ, भई पावस ऋतु भारी।
धूम उठे चहु ओर मनो बादर दलछाये।
उडत पतगा लसे, मनौं खद्योत जुथाये ॥
वरसत गोला नाहिं, मनो ओला सम झरकें।
गोलिन की पौछारि परत ऊपर गढ गरिके ॥
झमझमात समशीर, तेग चपला अति चमके।
वक कतार ज्यो उडत, तेई भाले ज्यो तमकें ॥

दोहा

इत पावस ऋतु शिशिर मे, दरसो है सविकाय।
रे रे शब्द अपार है, कानन सुनी न जाय ॥

कवित्त

शोभा को सदन, सव भाँति ते भरतपुर,
आनद अपार नित नये सरसत हैं।
तहाँ श्री व्रजेन्द्र कृष्णसिह महाराज राजें,
अमित उछाह रूप वत दरसत हैं।
दीपन मे दिपत दिलीप ज्यो महीपन मे,
देखि देखि सुख व्रजवासी हरसत हैं।
द्यौस द्यौस उत्सव ते उत्सव अनत गुनो,
अग अग दूना दून रग वरसत हैं ॥

११८—कृष्णदास—ये वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी तथा जाति के सूर्य-द्विज ब्राह्मण थे। इनके गुरु का नाम गोस्वामी-गोपेश्वर-महाराज था। इनका कविता-काल १९४५ वि० के आस पास है। ये नगर के तहसीलदार और उच्च

कोटि के कवि थे। यद्यपि इनके लिखे कितने ही ग्रन्थ बतलाये जाते हैं, किन्तु हमें केवल तीन ग्रन्थ ही देखने को मिले हैं:-(१) रस विनोद-इस ग्रन्थ में रस, नायक-नायिका भेद और संचारी भाव आदि का सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। (२) भक्त तरंगिणी-इसमें भक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए कृष्ण के प्रेम पर पूर्ण रूपेण प्रकाश डाला गया है। इसकी कविता में नन्ददास के काव्य का सा आनंद आता है। (३) भगवत सलाप पीयूष-यह ग्रन्थ पं० फतहसिंह तथा मथुरा निवासी ब्रजजीवनदास के परामर्श से लिखा गया था। इस ग्रन्थ की रचना सर्व प्रथम संस्कृत में हुई, फिर हिन्दी गद्य में अनुवाद किया गया। इसके अवलोकन से उत्तर हरिश्चन्द्र काल की व्रज भाषा के गद्य का आभास मिलता है। यह भक्ति रस प्रधान ग्रन्थ है। इनकी कविता के उदाहरण देखिए—

खडिता लक्षरण

और तरुनि के चिन्ह सहित पिय जिहि घर आवें।
बुद्धिवंत अति चतुर 'खंडिता' ताहि बतावें॥

उदाहरण (दोहा)

कहाँ वसे निसि डर लसे दरस दिखायौ भोर।
कहें देत हिय धों लगी कठिन कुचन की कोर॥

कलहान्तरिता लक्षणम्

नहि माने जो मान मनायौ तरुनि रिसाई।
'कलहांतरिता' बनिता पुनि पाछे पछिताई॥

उदाहरण (दोहा)

गढ़ि गई कोर कटाक्ष की हियते विसरत नाहि।
रोसहि निदरत सुधि करत श्याम छवीलौ वाहि॥

११९-ऊपरराय:-ये कामाँ तहसील के नौगांवा नामक ग्राम के रहने वाले थे और जाति के राय थे। इनका विशेष वृत उपलब्ध नहीं हो सका है। आपका कविता-काल सं० १९५० वि० के आस पास प्रतीत होता है। इनकी कविता का उदाहरण प्रस्तुत है:—

सुधा रस त्यागौ तौ न याकौ कछु अभिमान,
विष अनुराग्यौ तौ न मोद उर आनि है।
जोग लिख भेजो तो हमारे तन भोग सम,
निहचै अधिक यह लीनी हम जानि है।
उद्धव जू ऐसे ही विचार कहियो सँभारि,
भूलत कहाँ है यह भूल विष खानि हैं।

हमतो हैं वेही वेही और तें भये हैं और,
और तें भये हैं तेई और बात जानि है ॥

१२०—कृष्णलाल—ये भरतपुर निवासी गुलाबसिंह के सुपुत्र और जैन मत के अनुयायी थे। इनका कविता-काल सं० १९५० वि० के आस पास है। इन्होंने "वियोग मालती" नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें इनका वंश परिचय मिलता है। इनकी कविता का उदाहरण देखिए —

दोहा

चंचल चपला दामिनी, अधरन की जनु होल।
कोकिल कंठी बदन ते, निकसत नाहीं बोल ॥

मयन कुसुम भ्रकुटी रची, करी अनंग कमान।
आप अहेरी जोबना, तकि तकि मारै बान ॥

ये नैना बैरी भये, करन चहैं कछु और।
रोके बनै न रोकते, लगे रहैं छबि ठौर ॥

१२१—कर्नल बहादुरसिंह—आपका जन्म भरतपुर में एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में सम्वत् १९१३ में हुआ था। आपके पिता भगवानसिंह यशवन्त काल में नमक विभाग के अध्यक्ष थे। स्वयं बहादुरसिंह सेना में कर्नल तथा तोसकखाना विभाग के मुन्तजिम थे। आप हनुमानजी के अनन्य भक्त और उच्च कोटि के कवि थे। ये 'विहार' उपनाम से कविता करते थे। इन्होंने लगभग २१ ग्रन्थों की रचना की है। आपकी भाषा बड़ी ही सरल सरस, मुहावरेदार तथा आकर्षक है, उस पर प्रान्तीयता की छाप स्पष्ट दिखलाई देती है। जहाँ पर ख्याल, लावनी तथा शिखरणी आदि आते हैं वहाँ कुछ २ खड़ी बोली का भी आभास मिलने लगता है। उदाहरण देखिये —

सीता मंगल (कवित्त)

सागर सुधा के में सरूप कौं बनावै कच्छ,
तापर जमावै गिरि सुन्दर शृङ्गार कौ।
नरम नवीन सुचि रेसम की नेती कर,
मथन मनोज यो सरोज कर धार कौ।
ऐते उपचारन ते प्रगट रमा जो होय
तोऊ सकुचात मन कोविद कुमार कौ।

सीता सम सीता जग और न पुनीता कोई,
गावैं बेद गीता जस सीता के बिहार कौ ॥

केसर चमेली तेल हरद मिलाय सान,
उबट न्हवाय कें अगोछे रंग भीने है।
मोतिन के काम की सुभायमान त्राण-पग,
कोमलता चोज के सरोज छवि छीने है।
तरुआ अरुन ध्वज अकुसादि चिन्ह सोहै,
मोहै लेत रसिक 'बिहार' मन लीने है।
हीने भये हीरा मनि रीने से दिखाई देत,
मीने हू अधीने नख झीने ससि कीने हैं ॥

राधा कृष्ण बिहार (सवैया)

बालक आइ बने घर बीच बडौ अति बाहर होत खरारी।
क्यों नहिं रोकत मात जसोद लखै नहिं तू सुत के गुन भारी।
माखन भौन धरैं दुबकाइ 'बिहार' कहैं पुनि लेत निहारी।
चोरत धाम सदा नवनीन बड़ौ अब ढीट भयो बनवारी ॥

कवित्त

बाग बन फूले सोई बस्त्र बहु रंगन के,
ध्वज फहरात जिमि अंचल उड़ावै है।
बाजत है दुंदुभी अनूप पग नूपुर सी,
कोटि कर किंकिनी सकल छवि छावै है।
चित्रित निकेत मनौ भूसन जड़ाव जड़े,
कलस उरोज पै 'बिहार' ललचावै है।
मोतिन की झालर झमंक द्वार ऐसे रही,
जैसे तिय कथ कों बिलोक सुख पावै है ॥

मुन्दर नवेली पिकवैनी मृग नैनी बाल,
आई है सिंगार साज छोड़ काम धाम कौ।
गावती मलारें औ निहारें मेघ-मालन कों,
आनंद बिचारें हिये ध्यान घनश्याम कौ।
सीतल सुगंध मंद चलत समीर तहाँ,
करत 'बिहार' चित चोर लेत बाम कौ।
जमुना के कूलै आज झूलै ब्रज दूल्है तीज,
प्यारी मन फूलै लख भूलै मन काम कौ ॥

सवैया

मोद विहार कियो पति संग पलंग पै केलि कला भल ठानी।
भोर जगी मुख धोवन हेत लियो कर में भरि नीर सयानी॥
ही गज मूरति बिंद ललाट परी वह छूटि सुहाय समानी।
देख हसी मुसिक्याय तिया इम ह्नात हाथी हथेरी के पानी॥

१२२—बाबू कन्हैयालाल—ये भरतपुर निवासी मंगलसिंह के पुत्र और जाति के श्रीमाल जैन थे। इनका जन्म सम्वत् १९२८ के आस पास हुआ था। आप हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी तीनों भाषाओं के अच्छे ज्ञाता और उच्च कोटि के कवि थे। इन्होंने सात ग्रन्थों का निर्माण किया, जिनमें से पाँच प्रकाशित हो चुके हैं—(१) भक्तामर स्तोत्र (२) घनश्याम संदेसवा, (३) अंजना सुन्दरी नाटक, (४) रत्न सरोज नाटक और (५) शील सावित्री नाटक, प्रेममयी नाटक और रसिक सुन्दरी नाटक अभी तक अप्रकाशित हैं। आपका एक फुटकर संग्रह भी मिला है, जिसमें लगभग २००० छन्द विविध विषयों पर लिखे गये हैं। इनमें कुछ उर्दू की गजलें, कसीदे और अंग्रेजी की पोइम्स भी हैं। तारीख ३ फरवरी सन् १९३२ को लिखा हुआ अन्तिम छन्द देखिए—

कवित्त

पाती के ऊपर ही पीतम के अक्षर पेख,
छाती सों लगाय मृदु होठ चूम लीनो है।
लीनी है निकार फार कागज समोद बाल,
बाँचत ही बाचत कछु मन्द मुस्कीनी है।
मन की उमंग झलमलत चन्द्रानन पै
पत्रिका ने मन फूक कीनी रस भीनी है।
आमते मजा की का हम रोक लेह गैल,
कंचुकि दुराय सरमाय चल दीनी है॥

आपकी चमत्कार पूर्ण नवीन उक्तियों के सरस छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं—

गुण अवगुण जामे पर्यो, वाहि नहीं बिसराय।
चन्दन हू की आग लगि, देवै देह जराय॥
जोरी या मन जोरिये, हम सो चार निगाह।
पट-घूंघट का कर सकै, हिय में पैठी चाह॥
वहैं ब्राह्मण -दीजिये, मिष्ट भोज निज हेत।
स्वर्ग बैंक में कर जमा, लीजै व्याज समेत॥

सुन्दरि तेरी देह में, विद्युत प्रवाह महान।
ताहि खोलवे कों लगे, कुच द्वै वटन समान॥

१२३—गुलाबजी मिश्र:—आपका जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में सम्वत् १९२८ में हुआ था। ये संस्कृत और ज्योतिष के अच्छे ज्ञाता थे और हिन्दी में 'कंज' तथा 'भूमि कंज' उपनामों से रचनाएं करते थे। 'श्रीरामचरित-मानस' के अद्वितीय विद्वान् होने के कारण आपकी ख्याति दूर २ तक फैली हुई थी। श्री हिन्दी साहित्य समिति से आपको विशेष प्रेम था, जहाँ मृत्यु पर्यन्त इन्होंने पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्य किया। आपकी रचनाओं से कुछ छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

आयौ है फागुन मची है धूम ब्रज भर में,
भोर ही ते कुंवर कान्ह रग में रंगे रहैं।
संग में सुदामा श्रीदामा मधुमंगलादि,
लै लै पिचकारी महा मोद में पगे रहैं।
गावत कवीर सो उड़ावत अवीर 'कंज',
मलत गुलाल गोरे गालन खगे रहैं।
चोवा और चन्दन की मची है कीच वीथिन मैं,
होरी खिलवारन के झुंड से लगे रहैं॥

आई फेर राधिका दई है टेर गोपिन कों
ललिता विशाखा तुंगभद्रा सखी रहै।
हारी मन भामा नेक पकरि लेहु प्यारे कूं
करेगी निहाल याहि योहि डरी रहैं।
एती सुन धाय जाय पकर लियौ कान्ह कूं
छीनी सब आल माल मोतिन लरी रहै।
मलकैं गुलाल गाल गुलचादै वेदी भाल,
चूंदरि उड़ाय ख्वार खूद करती रहैं॥

धर्म की मूरति है कि न्याय की सूरति है,
दया कौ दरयाव है कि दानी दानवीर सौ।
धीर कौ धरैया पर पीर कौ हरैया किधौं
दीनन कौ भैया औ खवैया खाँड़ खीर सौ।

गोधन को भक्त अनुरक्त विप्र पाद पद्म,
सीतल और स्वच्छ शुद्ध गगा के नीर सो।
'भूमि कज' कृष्णसिंह भूपति तिहारो जस,
बरनो कहाँ लो बाढ्यो द्रोपदि के चीर सो॥

लाज को जहाज है कि साज है मुसाहिबी को,
द्दग अभिराम है कि मन्मथ को रूप है।
अरि उर साल है कि सतन प्रतिपाल किधौ,
राम जू को लाल है सुकीरति को स्तूप है।
राज काज दक्ष है प्रत्यक्ष है प्रभाव 'कज,'
सैना सचालन में अद्भुत अनूप है।
राजन के राज महाराज श्री कृष्णसिंह,
जबू द्वीप खडन मे तोलो तुही भूप है॥

जा दिन ते प्राणनाथ साथ गये ऊधव के,
ता दिन ते गोपी ह्वै मौन धरी रहती हैं।
करके उपवास त्रास देकें निज देही को,
प्यारे के वियोग जन्म सारे दुख सहती हैं।
'भूमि कज' बार बार याद कर मोहन की,
आँसुन की नदी धार बीच चली बहती है।
गोपीनाथ गोकुलेश दरश देवो वेगि आय,
फेरि पछितैहो हाय गोपी यो कहती है॥

जब लो जग माँहि सँयोगी सनेही सँयोग भरे सुख पायो करें।
जब लो अरविन्दन की कलियाँ अलि वृन्दन के मन भायो करें॥
जब लो भुवि गग की धार बहै नभ मडल सूर्य सुहायो करें।
तब लो व्रजरानी हमारी सदाँ मन भाई सु तीज मनायो करें॥

१२४—लक्ष्मीनारायन "काजी"—ये भरतपुर के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। ये सास्कृत और हिन्दी दोनो के प्रकाण्ड विद्वान् थे और दोनो मे ही कविता करते थे। आप बडी सरल प्रकृति के थे और शिक्षा विभाग मे अध्यापक का कार्य करते थे। इनकी मृत्यु के अनन्तर इनका काव्य सग्रह अस्त व्यस्त हो गया। इनका कविता काल सन् १९१५ के आस पास माना जाता है। इनकी रचनाओ के उदाहरण देखिये —

पतङ्ग

दर्शन देता नहीं पतङ्ग।
पूर्व दिशा में चमक रहे हैं, खद्योतों केसंघ।
पेड़ पेड़ पर चमक चमक दिखलाते अपना रंग॥
क्या इनके प्रकाश से बिकसित होंगे पंकज वृन्द।
जिनके सौरभ से प्रमुदित हो, होते मत्त मिलिन्द॥
क्या जग का तम पुंज नष्ट हो सकता घोर अमन्द।
चक्रवाक दम्पति के भी क्या मिट सकते दुख-द्वन्द॥
इन्हें देख हो अपने मन में श्रद्धायुत सानंद।
अभिबादन के साथ अर्घ्य क्या देगे भूसुर वृन्द॥
होंगे नहीं नित्य, नैमित्तिक, काम्य कर्म, रस रंग।
जब तक नभ मंडल में दर्शन देगा नहीं पतङ्ग॥

अरे तू अब भी चेत पतङ्ग।
रूप रंग के सिवा नहीं कुछ बल है तेरे तन में।
इनके उपर फूल गया तू जाकर उच्च गगन में॥
यदि कोई मिल गया तुझे, तू लड़ने लगा उसी से।
किन्तु प्रेम व्यवहार न तैने किया पतंग किसी से॥
'नदी नाव सयोग' कथन क्या तूने नही सुना है।
बढ़ी हवा में गर्वित हो जो इतना आज तना है॥
गुण भी है अति निर्बल तेरा जिससे उन्नति पाई।
यह जब होगा नष्ट न जाने कहाँ गिरेगा भाई॥
या तौ कण्टक मय पथ में पड़ छिन्न भिन्न होवैगा।
अथवा किसी जलाशय में गिर रूप रंग खोवैगा॥
संचालक को धन्यबाद दे रक्षा बही करेगा।
नही एक झटके में तेरा काम तमाम करेगा॥

तू समझा था, मेरे कारण जला रहा यह अग।
तेरी भारी भूल हुई थी यह तो कीट विहग॥
स्नेह भरी इससे लिपटी है वत्ती जो मृदु अग।
धीरे धीरे जला रहा है उसका भी यह अग॥

१२५—सुन्दरलाल —यह जाति के ब्राह्मण और डीग के निवासी थे। इनका जन्म सम्वत् १९३२ वि० मे हुआ था। इन्होने केवल 'परसराम सागीत' नामक ग्रन्थ की रचना की है। ये चौबोले बाज ज्ञात होते हैं। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है।

लक्ष्मीवचन चौबोला

ससि मुख सुन्दर आपको, क्यो है नाथ उदास।
चिन्ता राहु बन ग्रसन, आई तुमरे पास॥
आई तुमरे पास, नाथ यह कारण कहा भयो है।
कान्ति हीन छवि छीन,देख मम उर मे सोच छयो है।
मोयहीन जलहीन मीन लग, मेरो दुख नयो है।
कोटिन बृह्म सेस थके तव, भेद न काहू लह्यो है॥
जान चरणन की दासी, कौन कारण सुख रासी।
मोय यह ससय भारी।
हे भगवत आपकी माया प्रबल नचावन हारी॥

१२६—माजी श्री गिरिराज कुवरि —ये महाराजा रामसिंह की धर्म पत्नी तथा महाराज कृष्णसिंह की माता थी। आपने कृष्णसिंह के शैशव काल में राज्य हित तथा प्रजा हित के लिये जो कार्य किये वह भरतपुर के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से अकित रहेगे। स्त्री समज के कुरुचि पूर्ण गीतो को सुनकर आपके हृदय को वडी ठेस पहुँचती थी। शत सद्भावना से प्रेरित होकर आपने सन् १९०७ ई० में स्त्रियो के गाने योग्य सुन्दर गीतो का एक सग्रह 'ब्रजराज विलास' नाम से प्रकाशित कराया। इसके अतिरिक्त महिलाओ के दैनिक उपयोग में आने योग्य 'ब्रजराज पाकशास्त्र' नाम से एक और ग्रन्थ भी लिखा है। इनके गीतो के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं —

ऐरी तोहिं कहत लाज नहिं आवै, मोहि झूठो दोप लगावै।
श्रवनन सुन्यौ नयन नहिं देख्यौ, को नन्दलाल कहावै।
क्यो बिन काज परी हो पीछे क्यो नित मोहिं खिजावै।
श्वेत श्याम रातो कै पीरो कैसो वरण सुहावै।

इन बातन कछु हाथ न आवै नित उठि मोहि उड़ावै।
कित में रहत कौन कौ ढोटा कहा तू मोहि सुनावै।
को जानैं झूँठी साँची तेरी हाँसी मोहि न भावै।
जौ तू मन-मोहन सँग मेरी प्रीत पुनीत बतावै।
तौ ब्रजपति सों लगी लगनियाँ लागी ये कौन छुड़ावै ॥

कीरति ने ब्रज नार बुलाई
ताहि पठाई गोकुल नगरी, बुलबाये ब्रजराज कन्हाई।
चलत चलत इक सखी सयानी, नन्द महर के घर में आई।
कहत जशोदा सों ब्रज सुन्दर, कीरति ने बोले यदुराई।
महर हर्ष युत विलम न कीनौ, दिये तुरत गोविन्द पठाई।
ब्रजपति श्री बृषभानु के आये, गारी गाबत नारि सुहाई।

बस नाँय मेरी वीर बंगला छवाय देती ॥टेक॥
महर यशोदा ये पकर बुलाय लेती, श्री बृष भानु ते गांठ जुड़ाय देती ॥
बहन सुभद्रा ये पकर बुलाय लेती, श्रीदामा संग जोट मिलाय देती ॥
कुन्ती फूफी ये पकर बुलाय लेती, लाड़ली के फूफा सँग ब्याह कराय देती ॥

१२७—शंकरलाल— आप नगर निवासी प्रसिद्ध कवि रामलाल के भतीजे तथा हनुमंत के सुपुत्र थे। आपका जन्म असाढ़ सुदी ७ बुधवार संवत् १९३३ वि० को तथा निधन ज्येष्ठ सुदी ७ बुधवार सं० १९८३ वि० को हुआ। इनके रचित तीन ग्रन्थ हमें मिले है:—(१) हनुमन्त यश (२) राम कथा और (३) गान संग्रह। आप अपने समय के प्रतिष्ठित कवियों में गिने जाते थे। उदाहरण देखिए :—

हनुमान यश (कवित्त)

अति वल धाम तेज पुंज उपमा के जिन,
काम मद भंज इन्द्र हू के मान मारे हैं।
कहि "हनुमंत सुत" राम जू के प्यारे अति,
काज सिय सारे घने निश्चर विदारे हैं।
संकट निवारे निज दासन के त्रास हरे,
अधम उधारन अनेक दुष्ट मारे है।
गारे हैं गुमान मेघनाद पुनि रावन के,
ऐसे हनुमान सदा रक्षक हमारे हैं ॥

२४ अवतार वर्णन (छप्पय)

मच्छ कच्छ नरसिंह कोल द्विजराज राम बल ।
बावन कृष्ण सुबुद्ध कल्कि नाशक मलेच्छ दल ।
व्यास प्रभू हरि हंस जग्य हयग्रीव बखानो ।
मन्वंतर ध्रुव रिषभदेव धनवंतर मानो ।
कपिल देव सनकादिक बद्रिनाथ क्रीडा करन ।
हनुमत सुवन 'शंकर सुकवि' चतुर बीस लीजै शरण ।।

१२८—सत्यनारायन कविरत्न—इनका जन्म २४ फरवरी १८८० ई० तदनुसार माघ शुक्ला १३ सोमवार संवत् १९३६ वि० को सराय नामक ग्राम (आगरा) में हुआ था। कहते हैं जिस समय कविरत्न का जन्म हुआ, उस समय इनकी माता की दशा बड़ी करुणा जनक थी, और वह दीन हीन निस्सहाय अवस्था में इधर उधर अबोध बच्चे को लेकर भटकती फिरती थी। इनकी माता पढ़ी लिखी होने से अध्यापन कार्य करती थी। संयोगवश इसी गाँव के मंदिर के महन्त रघुवरदास का इनको आश्रय प्राप्त हो गया। रघुवरदास को पढ़ने लिखने का व्यसन था और इनके यहां हिन्दी की हस्तलिखित पुस्तकों का एक अच्छा संग्रह भी था। ऐसे साहित्यिक वातावरण में पालन पोषण होने के कारण सत्य-नारायण की काव्य से अभिरुचि होना स्वाभाविक था। अतः ये बाल्यावस्था से ही काव्य रचना करने लग गये। बचपन का ये काव्यांकुर आगे चल कर पल्लवित एवं पुष्पित होने लगा, यहाँ तक कि इनकी कविताएं इतनी उच्च कोटि की होने लगी कि तत्कालीन विद्वत् समाज मन मुग्ध होकर मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा करने लगा।

कविरत्न अध्ययन काल में ही भरतपुर आते जाते थे क्यों कि विरक्त मंदिर के महन्त जगन्नाथदास अधिकारी एवं मयाशंकर याज्ञिक से आपका अधिक सम्पर्क था। ये दोनों हिन्दी के माने हुए विद्वान् और काव्य प्रेमी थे। भरतपुर से प्रेम होने का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि इनको रसिया सुनने का बड़ा चाव था और भरतपुर में रसियों का बहुत प्रचार था। श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी ने इनकी जीवनी में लिखा है कि 'कविरत्न के आग्रह करने पर उनको एक बार हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, में अनेक रसिये सुनाए गए, जिनमें से उनको यह टेक बहुत पसंद आई- 'बछेरी डोलै पीहर में'। सत्यनारायन को केवल रसिया सुनने में ही आनंद नहीं आता था अपितु रचने में भी। तत्कालीन महाराज किशनसिंह के अधिकार प्राप्ति के अवसर पर आपने निम्न रसिया स्वयं रचकर सुनाया था —

वनि दुलहिन सी रही आज, भर्तपुर नागरिया ।
द्वार द्वार में लिखना काढ़े, जुर्‍यौ उछाह समाज ।
भर्तपुर नागरिया ।।

सत्यनारायन भरतपुर निवासी मयाशंकर याज्ञिक तथा अधिकारीजी का वड़ा सम्मान करते थे। मयाशंकर याज्ञिक के आग्रह से ही अपनी चिकित्सा के लिए सन् १९१३ ई० में आप भरतपुर पधारे, जहाँ वैद्य विहारीलाल तथा डाक्टर ओंकारसिंह परमार से स्वाँस रोग की चिकित्सा कराई। यें याज्ञिकजी का कितना आदर करते थे, इस सम्बन्ध में भवानीशंकर याज्ञिक लिखते हैं:--"पूज्य" काकाजी (मयाशंकर) उनके विवाह से सतुष्ट न थे, काकाजी ने कविरत्न के अन्य मित्रों को भी इस सम्वन्ध को तोड़ने के लिये बाध्य किया, परन्तु सब व्यर्थ हुआ। विवाह हो जाने के वाद वे श्री गिर्राज की परिक्रमा को हर पूर्णिमा को जाया करते थे। ये उनकी बीमारी की मनौती के लिये करना पडा था। काकाजी से मुंह छिपाते थे, परन्तु एक वार गोवर्धन से सत्यनारायन दीग पहुंचे। काकाजी उन दिनों वही नाजिम थे। मिलना पड़ा। उन्हें देखते ही लज्जा, पश्चाताप आदि के कारण कविरत्न एक दम रो पड़े"।

साहित्य मर्मज्ञ होने के कारण अधिकारी जगन्नाथदास के पास इनका विशेष आना जाना रहता था। इन्हीं अधिकारीजी से परामर्श के लिये इन्होंने अपनी 'हृदय तरंग' नामक पुस्तक भेजी थी, जिसे किसी ने इनके पास से उड़ा दिया।

अधिकारीजी के साथ प्रायः ये गोवरधन परिक्रमा के लिये जाया करते थे। एक बार आषाढ़ की पूर्णिमा को अधिकारीजी ने इनके साथ चलने का कार्यक्रम वना कर जाने से मना कर दिया। इस पर इन्होंने निम्नलिखित पद लिखा:—

तुम्हें शतशः धिक्कार ।
तिरस्कार के योग्य आप हो अब से सकल प्रकार ।।
इक्के को छुडवाया हमसे देकर धोखा भारी ।
प्रण पूरा न किया पुनि तुमने इसी योग्य अधिकारी ।।
देकर हमको धोखा ऐसा क्या फायदा उठाया ।
वहाँ ठहर क्या अंडा सेया कैसा चित भरमाया ।।
पुण्यतीर्थ को छोड़ वृथा ही कोरा क्लेश कमाया ।
चमचीचड चमगद्दड तुमने इसको वृथा सताया ।।
कारण लिखिये ठीक अगर हो क्षमा-प्राप्ति की आशा ।
नहिं तो रसिया गाते फिरिये लिये हाथ में ताशा ।।

उन्हीं दिनो भरतपुर मे प्राचीन हिन्दी पुस्तको की खोज हो रही थी, जिसमें आपने पूर्ण योग दिया। इन प्राचीन पुस्तको के अध्ययन से कविरत्न की कविता शक्ति बहुत अधिक बढ गई, जिसको उन्होंने कई वार स्वीकार भी किया है। इसी खोज मे महाकवि सोमनाथ कृत "माधव विनोद" पद्यात्मक नाटक के बीच के पृष्ट प्राप्त हुए जिन्हे देखकर इनको "मालती-माधव" लिखने की प्रेरणा मिली। यह ग्रन्थ भरतपुर मे ही लिखा गया। कठिन स्थलो के आने पर ये राज-पडित गिरधारीलाल से अर्थस्पष्ट कराया करते थे।

जिस प्रकार कविरत्न को भरतपुर और यहाँ के साहित्यिको से प्रेम था, उसी प्रकार हिन्दी का प्रचार एव प्रसार करने वाली हिन्दी साहित्य समिति से भी। यह सस्था सन् १९१२ ई० मे बनी थी और तब ही से इसके वार्षिक अधिवेशनो और कवि सम्मेलनो मे कविरत्न निरतर आते रहते थे और अपनी सुन्दर २ कृतियो द्वारा जनता को प्रफुल्लित किया करते थे। कुछ छन्द प्रस्तुत हैं —

भारती वन्दना

जै जै मगलमयी भारती, अखिल भुवन की वानी।
अनुपम अद्भुत अमल प्रभा, जिह सकल जगत छहरानी॥
ब्रह्म-विचार-सार मे नित रत, आदि-शक्ति महारानी।
विश्वव्यापिनी श्रुति- अलापिनी, सुखद, शुद्ध कल्यानी॥

ब्रह्मचारिनी, बीनधारिनी, दयामयी, शुभ-दैनी।
नवल कमलदल आसन राजत, नवल कमल दल नैनी॥
जगमगात मजुल मुखमडल, जगत पुनीत प्रकासा।
जासो विविध अविद्या तम को होत तुरन्त विनासा॥

ऐसी वरदे शक्ति मुक्ति दे, अहो शारदे माई।
करत विनय तुमसो हम सव यह स्वीकृत करु हरसाई॥
तुम ही हो मा! सकल भाति मो, या भारत की आशा।
प्रगटें हृदयभाव कहु-कैसे विन वानी विन भाषा॥

जासो भारति! भारत-जन की रसना सदा विराजो।
ऐसे दिये विसारि देवि! क्यो? मुदित दया निज साजो॥
जग के और और देसनि हित जैसी तुम सुखदाता।
जानि स्वजन भारत हूँ को निमि द्रवहु भारती माता॥

जवलों भारत देश विश्व में जीवित नित मन भावै ।
तबलों नाम भारती अविचल अजर अमर छवि पावै ॥
आवहु २ शीघ्र शारदे ! वृथा विलम्ब न कीजै ।
या भारत की दीन दशा लखि क्यों नहि हीय पसीजै ॥

बिगर्यो कछु न यहां सुनि अजहूँ, हरहु हियो अँधियारो ।
स्वागत २ जननि तिहारो पुन निज भवन संवारो ॥
सहृदय सुभग सरसता सब के हृदय माँहि सरसावो ।
सुमति–प्रभाकर की पुनीत प्रिय सुखद प्रभा परसावो ॥

हृदय २ मधि होइ प्रफुल्लित नवल कली अभिलाखें ।
मन मलिन्द नित गुञ्ज २ कर निज अभिमत रस चाखें ॥
नित जातीय समुन्नति हित में सकल सुजन अनुरागें ।
भेद भाव तजि निरखे शोभा निज २ निद्रा त्यागें ॥

कार्य्य कुशल हों सकल भांति हम निज कर्त्तव्य विचारें ।
वर्तें प्रेम परस्पर सब सों प्रेमभाव संचारें ।
परम सौख्यप्रद होइ देश यह ऐसी सुदया कार्ँ
तुव चरनन में निरत रहे मन सत्य रुचिर वर [illegible]

उपालम्भ

माधव आप सदा के कोरे ।
दीन दुखी जो तुमकों यांचत सो दानिन [illegible]
किन्तु वात यह, तुव स्वभाव वे नैकहु [illegible]
सुनि २ सुयश रावरो तुव ढिग आवनकों [illegible]
नाम धरै तुमकों जग मोहन ! मोह न [illegible]
करुणानिधि तुव हृदय न एकहु करुण [illegible]
लेत एक को देन दूसरेहि दानी [illegible]
ऐसो हेर फेर नित नूतन [illegible]

मत्त गयन्द कुवलिया के जो गेल प्राण हर लीने ।
वड़ी दया दरसाइ दयानिधि सो गजेन्द्र को दीने ॥
करि के निधन वालि रावण को राजपाट जो आयो ।
तह सुग्रीव बिभीषण को करि अति अहसान विठायो ॥
पौंडरीक को सर्वनास करि माल मता जो लीयो ।
ताको विप्र सुदामा के सिर कर सनेह 'मढि दीयो' ॥
ऐसी 'तूमा पलटी' के गुन नेति नेति' श्रुति गावैं ।
शेस महेस सुरेस गनेस्हु सहसा पार न पावैं ॥
इत माया अगाध सागर तुम डोवहु भारत नैया ।
रचि महाभारत कहूं लगावत अपु में भैया भैया ॥
या कारन जग मे प्रसिद्ध अति 'निउटी रकम' कहाओ ।
'वडे २ तुम मठा धुवारें' क्यों-; साँची गुलवाओ ॥

वेसाख

माधव तुमहुँ भये वेसाख ।
वुही ढाक के तीन पात है, करौ क्यो न कोउ लाख ॥
भक्त अभक्त एकसे निरखत, कहा होत गुन गायें ।
जैंमो खीर खवाये तुम को वैसोहि सीग दिखायें ॥
सवै धान वाईस पसेरी, निन तोलन सो काम ।
वलिहारी, नहिं विदित तुम्हे कछु ऊच नीच को नाम ॥
वे पैंदी के लोटा के सम, तव मति गति दरमावैं ।
यह कछु को कछु काज करत मे, तुमहिं लाज नहिं आव ॥
जगत-पिता कहवाय, भये अव ऐसे तुम वेपीर ।
दिन दिन दुगुन बढावत जो नित द्रोह–द्रोपदी–चीर ॥
जुगकर जोरि प्रार्थना ये ही निज माया धरि राखौ ।
सत्य दीन दुखियनु के हित को सदय हृदय अभिलाखो ॥

१२६–गगाप्रसाद — ये जाति के ब्राह्मण तथा डीग के निवासी थे। इनके पिता का नाम गनेशीलाल था। आपका जन्म सम्वत् १९३४ वि० मे हुआ। इनकी रचनाओ मे 'विनयपच्चीसी' तथा कुछ फुटकर कवित्त देखने मे आये है। उदाहरण प्रस्तुत है —

दोहा

बूढ़त ते गजराज कों, छिन में लियौ उवार।
मो अनाथ की बेर कों, क्यों कर रखी अबार॥

सवैया

ग्राह ग्रस्यौ गजकों जल में, बल वा गज कौ कछु काम न आयौ।
बूढ़त बेर भयौ अति कष्ट, तबै मन तो पद-पद्म में लायौ।
टेर सुनी गज की यदुनन्दन, आतुर ह्वै अति जाय बचायौ।
'गंग' की बेर न काहे सुनों, हरि ऐतो बिलम्ब है काहे लगायो॥

कवित्त

लाज रखि हिन्दी की, हिन्द-पति दीनानाथ,
तेरौ प्रण सदां ते रह्यौ दीन हितकारी है।
जितनी हू भाषा हों प्रचलित जगत माहि,
हिन्दी ही भासा सब भाषन सरदारी है।
इहिके अधार पर भाषा देस देसन की,
पहेलै ही ब्रह्मा निज मुखन उचारी है।
'गंग द्विज' भाखें चारों बेद भरे साखे,
हमतो है हिन्द के अरु हिन्दी हमारी है॥

१३०—बैद्य दैवीप्रकाश अवस्थी:—इनका जन्म सम्वत् १९४०वि० के आस पास डीग में हुआ था। ये आयुर्वेद के विद्वान् और राजकीय औषधालय, भरतपुर, में प्रधान वैद्य थे। अनुसन्धान-कार्य में अभिरुचि होने के कारण, भरतपुर के प्राचीन कवियों के जीवन-वृत्त खोजने में आपने बड़ा योग दिया। अवस्थीजी को काव्य से विशेष रुचि थी और 'मथरेश' उपनाम से कविता करते थे। इनकी रचनाओं के उदाहरण देखिये:—

कवित्त

भारत में बृद्ध कुरु वृद्ध क्रुद्ध जुद्ध जुरयौ,
लयकें सरासन बाढ बानन की भारी है।
अर्जुन के रोकें रुक्यौ तेज बल न वाबा कौ,
खिसियानौ रथी जानि रिसियानौ मुरारी है।
चक्र गहे हाथ पट-पीत फहरात पाछे,
भीषण ह्वै भीषम पै सु धायौ गिरधारी है।

शान्तनु कुमार देखि हर्षि कर जोड भाख्यौ,
भक्त प्रण राख्यौ भक्त वत्सल वलिहारी है।

असद खान ग्राह नें कोल को गयन्द घेरयौ,
टेरयौ श्री सुजान तानें आरत उचारी है।
दीन की गुहार सुनि करुणा निधान कोप्यौ,
रोप्यौ रण चड जाय चड्यौमी मभारी है।
असद की अनी कनी घनी वनी ठनी तहाँ,
गनीन सो कनी कनी करिकें विदारी है।
फते को बचाय फते पाई खानजादो हन्य,
धन्य वदनेश नन्द तेरी वलिहारी है॥

शारदीय सीजन के शुरू होने पहिले ही,
शहर मे आन पडी फीवर की छावनी।
जुल्म जोर ज्वर केसे मजलूम पुरवासी,
अस्थि शेष हूये हुईं सूरत डरावनी।
तिल्ली औ जिगर ने भी मौका पा अटैक किया,
जिसमे पिटीसी पीली तनकी प्रभा बनी।
शासक मलेरिया के शासन से शासित हो,
किसकी है ताब कहै शरद सुहावनी॥

भरतपुर की नारी वृद्धा युवा बारी सव,
दर्श को उमाही छाई छत्तन चौवारे की।
होसी २ हसनी सी ग्रीवन उठाय ऊ ची,
ललचोहे लोचनन जोहे वाट प्यारे की।
आई है सवारी जब सम्मुख सहर्ष उठी,
केती वढी आगे केती दौरी ओर द्वारे की।
उभकि भरोका केती भुकि भुकि भाँक भाँक,
भिभकी सी भाकी करें व्रज रख वारे की॥

मत का मदपीकर मत बनो-मत- वाले,
छोडो प्रान्तीयता को भी इसी में बुर्द वारी है।
मौके को देखी समभ से भी काम लेना सीखो,
बहुत कुछ-खो चुके और खोने मे ख्वारी है।

फूट का सिर फोड़ के एकता का सहारा लो,
एक स्वर से कहदो मादरे हिन्द प्यारी है।
बेटे हैं उसके हम शेर से पैंतीस कोटि,
राष्ट्र भाषा हिन्दवी है कौम हिन्दी हमारी है॥

भूलि निज गौरव क्यों धूल में पड़े हो मित्र,
ऐसी क्या खुमारी सारी सुध बुध बिसारी है।
पड़ा देखि तुमको हा ठोकर दे विश्व सारा,
आगे से हटा के तुम्हें बढ़ गया अगारी है।
अब तो उठि अपने अस्तित्वका प्रमाण दो,
पैंतीस क्रोड़ कंठों की गर्ज्जन से प्रचारी है।
हम हैं महान हिन्दी हिन्द है हमारा देश,
विश्वभर से वरिष्ठ भाषा हिन्दी हमारी है॥

डंका दै असांक्त चढ्यौ दिल्ली गढ़ बांकापर,
लाल दरवाज्यौ तोड़ पैठौ मंझारी है।
हाट बाट घाट घर सबही लुटाय लीन्हे,
जोर समसेर के सो जोर कर भारी है।
भागे खानजादे मीरजादे शाहजादे छोड़,
होड़सी पड़ी है देखें भागै को अगारी है।
शाह कों अछत राखि लूटी बादशाही खूब,
सूरज महान सान तेरी बलिहारी है॥

मरट्ठन के ठट्ठन झपट्टन झट्ट चढ्यौ,
है कैं हरावल अम्बरेश के अगारी है।
अरिकौ अराव्यौ हेरि हरि सौ सुजान टूट्यौ,
मोरच्यौ मल्हारे ही सों लीनों बलधारी है।
घेरि दल दक्खन कौ लक्खन विदारि डारे,
कोसन लों रेदि रेदि कीनी खूब ख्वारी है।
कच्छ कुल रच्छ कच्छपेश कह्यौ काच्छपी में,
तुझ सा न सूर सूजा दूजा बलहारी है॥

आया उधर से दल अल्पत अफगानी का

पानीपत पावनसू मोरचा बनाके डटे,
बैठे रण विज्ञ वात मोचें अभियान की।
नाच उठी भारत की भावी सदाशिव सीर्ष,
औंधी हुई बुद्धी उस जनल महान की।
होती न यो हीनदशा हिन्दी हिन्द हिन्दुवो की,
मानना जो भाऊ कही सम्मति सुजान की ॥

१३१–बलदेव प्रसाद –आप जाति के ब्राह्मण और झाँसी जिलान्तर्गत मऊ-रानीपुर ग्राम के निवासी थे। आरम्भ मे ये झाँसी मे कानूनगो पद पर काय करते थे, किन्तु उच्च पदाधिकारियो से मत भेद होने के कारण अपने पद म त्यागपत्र देकर भरतपुर चले आए और सातुरुक ग्राम (तं० कुम्हेर) मे राज्यकीय पाठशाला मे अध्यापन कार्य करने लगे। ये बाल ब्रह्मचारी और स्वभाव के बडे अक्खड थे। हिन्दू आचार विचार मे आपकी पूर्ण निष्ठा थी और विद्यार्थियो मे किसी प्रकार की दक्षिणा या उपहार लेना अनुचित समझते थे। यद्यपि ये भगवान राम को अपना इष्ट मानते थे, किन्तु फिर भी कृष्ण विषयक साहित्य सृजन करने मे अधिक अभिरुचि थी। बलदेवप्रसाद अपने समय के ख्यातिप्राप्त कवि थे और हिन्दी संस्कृत तथा उर्दू पर समान अधिकार रखते थे। इनके ३ ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं –(१) विज्ञान भास्कर –यह महाभारत का रामायण-शैली पर हिन्दी मे पद्यानुवाद है। इसकी भाषा बहुत मँजी हुई और व्याकरण सम्मत है। इसका बहुत कुछ भाग सातुरुक निवासी प० नवनीतलाल चतुर्वेदी के पास अभी तक सुरक्षित है और शेष बलदेवप्रसाद के वशज कडेरलाल भौंढेले के पास है जो मऊ-रानीपुर झासी मे रहते हैं –(२) पीयूष प्रवाह —यह एक प्रकाशित खण्ड काव्य है जिसमे भगवान राम की भक्ति का सुन्दर ढग से निरूपण किया गया है –(३) प० बलदेव प्रसाद ने संस्कृत के प्रसिद्ध कवि जयदेव कृत गीत गोविन्द का भी हिन्दी में पद्यानुवाद किया है, जो इनके वशजो के पास अभी तक सुरक्षित बताया जाता है। इनकी रचनाओ के उदाहरण देखिये —

कवित्त

नख गग धार भ्राजै तल सरसै विराजै,
सु यमुना आयु राजै ओघ अघ हारी को।
भूमि अति सुहावन सुजस बर पावन,
सुर मुनि हर्षावन भक्ति मुक्ति कारी को।

स्वारथ सुख दानि और परमारथ खानि,
लोक तय मुकट विश्राम दैन हारी की।
परम पद नसैनी है सुभग्र त्रिवेनी,
वलदेव पद वृष्टि श्रीमान् धनुष धारी को ॥

जाकौं शम्भु उमा सादर निशि वासर जपैं,
शारद शेष नारद नित्य ही गुना करै।
मरा के जपे वाल्मीक अजर अमर भये,
जाकौं महत्व सनकादि सदा सुना करै।
जाकौं कह् अजामिल गणिका गज उद्धरे,
कलियुग के पतित अधको हुना करै।
वदत 'बलदेव' श्रीमान् धनुषधारीजी,
राम नाम मुक्त जीह् हंसिनी चुगा करै ॥

सवैया

हों अघ पुंज तू पाप प्रहारनि, हौं अति दीन दयालु भवानी।
मो सौ न और कहूँ कोउ निर्गुण, जगदम्वा करुणा गुण खानी ॥
याचक बलदेव आयौ है द्वार, और उदार न है तव सानी।
राम चरण रति याचक दै न करु विलम्ब गंग महारानी ॥

सागर तीर खड़े कपि वीर, अतिहि अधीर न धीर रह्यौ है।
देखि दुखी पति भालु कह्यौ तुम राम काज सब तार लह्यौ है ॥
शरीर विसाल भयौ विकराल कौतुक भूधर जाय गह्यौ है।
'बलदेव कूद चले हनुमान कच्छय कोल न मार सह्यौ है ॥

१३२—हीरालाल:—इनका जन्म कामां निवासी पं० सूरजलाल के यहां संवत् १६४२ वि० में हुआ। इनके केवल फुटकर छन्द पाये जाते है। उदाहरण प्रस्तुत है:—

हाल हम गाते कामा का।
कर विमल कुण्ड स्नान, कटै अघ या नर जामा का ॥
कामा नगरी सुघड़ बसाई, जहाँ खेलें कुमर कन्हाई।
जिनन दुख हरा सुदामा का, हाल हम गाते कामा का ॥

एक पेश नहीं पड़े किसी की, जब सिर पर आती गर्दिश।
बात बात में घर बाहर में, लड़वाती जन जन से गर्दिश।

हास मे सुधा सी और चपलासी उजास मे है,
लास अरु विलास मे तो खासी मेनका सी है।
शील मे उमा सी रग रूप मे रमा सी चारु,
काव्य रचना मे तो सहायक शारदा सी है।
सुकवि 'दिनेश' जाकी मूर्ति के उपासी हैं,
वह मन-मन्दिर की उपास्य देवता सी है।
इन्दु की कलासी सिन्धु मथि कै निकासी हरि,
मेरे जान ये तो इन्दु मथि के निकासी है॥

नेत्र और कृपाण का लेप

दोनो ही पानी दार दोनो ही की तीखी मार,
दोनो ही धार धर कटीली करी जाती है।
दोनो ही करती खून खूब ये हजारो ही का,
दोनो ही असर अपने मौके पै दिखाती है।
कहत 'दिनेश' दोनो कौंध जाती बिजली सी,
दोनो चोट करके आर पार हो जाती हैं।
मेरे जानि दोनो मे अन्तर इतना ही यार,
असि चूक जाती आखें काम कर जाती हैं॥

जवाहरसिंह की दिल्ली पर चढाई

बब्बर के वश मे हुए शाह मोहम्मद जू,
ऐसे हूँ जब्बर कै चढाई निज बरात हो।
दिल्ली दुलहिन एक लहिमा मे ब्याह लई,
जाको दहेज यहा अब तक लखात हो।
सूजा सपूत वीर जाहर है जवाहर तू
बाप पै ते बाकी रहे नेगन चुकात हो।
प्यासी रणचडी की प्यास के बुझान हेतु,
मानो तेज पानी की द्विधार बरसात हो॥

सवैया

कलधौति सी कान्ति लसै तन की, अधरान सुधा सुषमा अपनाई।
मृदु बैनन औ ऋज नैनन ने, सरलाई विहाय गही कुटलाई।
कच भारहू कौं न सम्हार सके, कुच भार कमान लौं देत लफाई।
करि कचन कामिनी को सिगरो, मनु पीन उरोजन लीन चुराई॥

तन की द्युति देखि चपै चपला, तिहि सौरभ सौ जलजात लजाई।
जिहि रूप अनूपम कों लखि कें, रति रूपहु में दरशात फिकाई।
कर ऊपर आनन कों धरिकें, तिय सोच रही प्रिय की निठुराई।
विकसे अरविन्द में चन्द मनों, अस सोय रह्यौ अब लों अलसाई॥

कवित्त

प्रजा प्राण गाहक हो जो पै बलाहक तुम,
नाहक आसमान में वितान से तने रहो।
जीवन खीच लेते मित्र द्वारा बहुकरों से ही,
देते न बूंद निज स्वारथ में सने रहो।
स्वांति वारि वर्षा बिन मरेंगे मनस्वी खग,
चाहे सिन्धु सम्पति सब तुम्हारे ही कने रहो।
मघवा के इशारे से ऐसे उच्च आसन पै,
तुम इस कुशासन से कब तक बने रहो॥

प्रकरण ५

वर्तमान-काल

साहित्य वाचस्पति गोकुलचन्द दीक्षित —सम्वत् १९६६ वि० मे श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के स्थापित होते ही यहाँ के हिन्दी प्रचार एवम् प्रसार कार्य ने एक नया मोड लिया और भाव तथा भाषा दोनो मे आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगा। समिति के प्रधान मंत्री जगन्नाथदास अधिकारी और राज्य पदाधिकारी मयाशंकर याज्ञिक के प्रयत्नो के फलस्वरूप साहित्य सृजन का कार्य द्रुति गति से अग्रसर होने लगा। यदि एक ओर प्राचीन हस्त लिखित पुस्तको की खोज होने लगी तो दूसरी ओर 'भरतपुर पत्र' जैसी पत्रिका को जन्म देकर गद्य प्रसार कार्य भी प्रारंभ कर दिया गया। अधिकारी जगन्नाथदास प्रकाण्ड पण्डित, दूरदर्शी, समाज सुधारक और राष्ट्रवादी होने के साथ २ बडे काव्य प्रेमी और हिन्दी प्रचारक भी थे। यह इन्ही के सत्संग का फल था कि तत्कालीन भरतपुर नरेश किशनसिंह ने हिन्दी को राज्य भाषा घोषित कर प्रत्येक राज्य कर्मचारी को उसका पढना अनिवार्य कर दिया। इस प्रकार राजा और प्रजा दोनो से प्रोत्साहन पाकर हिन्दी का विकास तीव्र गति से होने लगा।

अपने आश्रयदाताओ के वीर रसात्मक चरितकाव्य तथा जन-साधारण को आकर्षित करने वाले शृंगार और भक्ति के फुटकर छन्द लिखने की जो परम्परा महाकवि सोमनाथ, सूदन और राम-काल से क्रमश चली आ रही थी, उसमे राष्ट्रीय विचार धारा का बहुत अभाव था। इसका विकास वर्तमान काल मे ही हुआ। अब वीर, शृंगार और भक्ति के पदो के साथ २ राष्ट्रीय उद्बोधन के पद्य भी बनने लगे, परिणाम स्वरूप ब्रजभाषा के स्थान पर धीरे २ खडी बोली का परिचलन होने लगा। गोकुलचन्द दीक्षित ऐसे ही संक्रमण काल मे उत्पन्न हुए थे। उनका खडी और ब्रजभाषा दोनो पर समान अधिकार था। जिस प्रकार वे सुन्दर कविताओ द्वारा जनता का मनोरंजन करते थे उसी प्रकार गम्भीर और विचार युक्त लेखो द्वारा समाज मे ज्ञान की अभिवृद्धि भी। हिन्दी

प्रचार के लिये आपने कई पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया और [illegible] के मच से रस-दरवार, कवि-दरवार और कवि सम्मेलन आदि को [illegible] कर जनता में हिन्दी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने का भागीरथ प्रयत्न किया।

गोकुलचन्द दीक्षित का जन्म इटावा जिले के लखना नामक [illegible] सम्वत् १९४४ वि० मार्ग शीर्ष शुक्ला ११ को हुआ था। बचपन से [illegible] वंचित होने के कारण इनका पालन पोषण इनकी ताई ने किया। [illegible] स्टेशन मास्टर थे, अतः उनको अधिकतर घर से वाहर रहना पड़ता था। [illegible] इनका शैशव मातृ-पितृ सुख से वंचित होकर नीरस एवम् कष्टमय [illegible] आपकी प्रारंभिक शिक्षा आपके पितामह प० लालमणि दीक्षित के [illegible] हुई, परन्तु किन्ही कारणों से इनका पाठशाला जाना वन्द हो गया [illegible] ही शिक्षा प्राप्त करने लगे। थोड़े दिनो के पश्चात् इनको इटावा [illegible] प्राप्त हुआ, जहाँ इन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके पिता [illegible] होने के कारण, इनको भी रेलवे में ही नोकरी कराना चाहते थे, [illegible] को यह वात रुचिकर प्रतीत न हुई और ये भरतपुर चले आये।

यह युग आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार तथा [illegible] संयोगवश दीक्षितजी एक आर्य समाजी साधु के सम्पर्क में आये [illegible] समाजी वन गये। इन्ही साधू से इन्होने संस्कृत का अध्ययन [illegible] दिनों के अनन्तर इस्लाम धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उर्दू [illegible] अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। इन्ही दिनों आपको भरतपुर [illegible] नोकरी मिल गई जिससे यहीं स्थायी रूप से रहने [illegible] विचारों के पोषक होने के कारण सन् १९३० मे आपको गिरफ्तार [illegible] और इनके लगभग १०००० पुस्तकों के संग्रह को पुलिस द्वारा नष्ट [illegible] गया। निदान सन् १९३१ में इन्हे राजकीय सेवा से मुक्त [illegible] पड़ा। परिणाम स्वरूप आपको आर्थिक कठिनाइयों का सामना [illegible] विद्या व्यसनी होने के कारण साहित्य सृजन में संलग्न रहे। [illegible] 'मंजुल' लिखते हैं:—

> कविता-कुमुदनि मुदभरत, नव रस [illegible]
> 'चन्द्र' नाम धरि चन्द्र लौं लसौ [illegible]

काव्य सृजन के अतिरिक्त ये [illegible]
तथा शोध पूर्ण कार्यो में निरन्तर लगे
हुई हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं

इतिहास) (२) बयाने का इतिहास (३) नार यात्री (४) शृगार बिलासनी (देव) (५) दर्शनानन्द ग्रन्थ सग्रह (६) षड दर्शन सम्पति (७) वैशेषिक दर्शन (८) मीमासा दर्शन (९) धर्मवीर प० लेखराम (जीवनी) (१०) भारत सजीवनी (११) भगवती शिक्षा समुच्चय (१२) विदुर नीति (१३) बिहारी सतसई की टीका (चित्र काव्य)। इनकी कविता का उदाहरण देखिए –

कवित्त

नपथ नभ निहारो लाल अवली सुमेघ चारु,
बिजुली चमकि निकट निसा आई है।
चकित चोट बूदतें काम बेकली करत,
घुरवाये निसाने केकी "चन्द्र" बैन भाई है।
रवि ढकि तिमिर छपाकर मलीन कर,
आपु ही वली वन के अधेर पन छाई है।
तरप लखि आउ प्यारे ऐकली नवल बैस
ननद गै माय सग लीन सुधि नमाई है॥

१३६–किशोरीलाल –ये जाति के अग्रवाल वैश्य और भरतपुर के हास्यरस के प्रसिद्ध कवि गिरिराज प्रसाद 'मित्र' के अग्रज थे। इनका जन्म श्रावण शुक्ला १ सवत् १९४५ को हुआ था, अत इनका कविता-काल सम्वत् १९६२ से आरभ होताहै। इनकी कोई पुस्तक तो नही मिलती, पर फुटकर कवित्त अवश्य पाये जाते है। आपकी कविता अधिकतर भक्तिपरक तथा उपदेशात्मक होती थी। भाषा और भाव दानो की दृष्टि से इनकी रचनाए उत्तम है। उदाहरण देखिये —

दान घाटी वर्णन (कवित्त)

दारा देवतान की धर धर मनुज देह
आवे जहाँ मोहन विराजे बीच घाटी मे।
भगत 'किशोर' सग गोपिन के गोरस लै,
षोडस वर्षीय कला सोलह सौ छाटी मे।
मोहन चरावें गैया सग सोहैं वल भैया,
ल लै साथ ग्वाल बाल मागें दान हाटी मे।
फूलन की टाटी मे कै दान रस हाटी बीच,
मोक्ष हू को मोक्ष मिलै ऐसी दान-घाटी मे॥

पावस वर्णन (कवित्त)

कज्जल बरन अंग भूत बीर केकी कीर,
त्रिविधि समीर स्वान बाहन सजायौ है।
भनत 'किशोर' नव अंकुर त्रिशूल सौहै,
खप्पर तलाब डौरू दादुर गुन गायौ है।
धनुष त्रिपुंड कच्छा सूखौ घन सौभित है,
नूपुरन घोर मोर शोरन मचायौ है।
करत सुगन्ध मधुपान करै प्यारे अति,
पाबस न होय क्षेत्रपाल बनि आयौ है॥

कोई लाजबान कोई कइयक बिधान पढे,
कोई अभिमान कोई ग्यान ना तजत है।
कोई बाग बाबरी तलाब कूप धर्म-शाला,
कोई ग्रह-नेह के सनेह सरसत हैं।
भनत 'किशोर' केते राज काज डूब रहे,
केते योग सिद्ध के उपाय दरसत हैं।
कहा धन धामें धर लेउगे सरा में,
भये जीरन जरा में तौऊ रामें ना भजत हैं॥

बरदे दरखास्त से मेरी लगी, करके दया भक्ति हिये भरदे।
भरदे पुनि ज्ञान की ज्योति घनी, बस पूरन आस मेरी करदे॥
करदे मम मंगल काज सुपूरन, पापन केर बिथा हरदे।
हरदे दुःख द्वन्दन देवि अबै, तू 'किशोरहिं' मातु अभै बरदै॥

१३७—पन्नीलाल:—ये जाति के अग्रवाल वैश्य और भरतपुर राज्यान्तर्गत कामवन के निवासी थे। इनका जन्म वैशाख शु० १२ सं० १९५० वि० को हुआ था। आपका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नही हो सका है, केवल फुटकर कविताएं प्राप्त हुई है। इनकी कविताओ का विषय 'होरी' है। उदाहरण देखिए:—

दोहा

रंग मटकिया हाथ ले, खड़ी बराबर बाम।
होरी खेलें परस्पर, हिल मिल राधेश्याम॥

झूलना छन्द

होरी में कर जोरी फोरी रंग की कमोरी, गोरी बैंया हूँ,
मरोरी, मुख मल दई मुरारी है।

तक मारी पिचकारी भर प्यारी में डारी, फारी सारी,
खीच किनारी नारी भागी हिम्मत हारी है ॥
बाला नई नवेली, बोली होली छेड होली चोली,
तडकी श्याम ग्रमोली होली देगी श्याम तुम्हारी है ।
जोडी लिये संग दग मृदंग मोचंग चंग संगियन,
मे संग रंग मेनन विहारी है ॥

दोहा

नई चूंदरिया रंग मे, रंग दई नंद के छैल ।
हम रसिया पगिया रंगै, या ग्रगिया के गैल ॥

१३८—प्यारेलाल —ये जाति के ग्रग्रवाल वैश्य ग्रौर डीग निवासी लाला घनीराम के पुत्र हैं। इनका जन्म सम्वत् १९५० वि० मे हुआ। इनके पद बहुत ही सरल, सरस ग्रौर भाव पूर्ण हैं। कुछ ग्रवतरण देखिए —

उमडो है देश प्रेम को सागर ।
नव जीवन नव नेह दिखावत, नव युग करन उजागर ।
जाग जाग प्रिय नागरी, कहै ग्रजेश नव नागर ।
हिन्द वासनी, मृदुल हासनी, हिन्दी सब गुन ग्रागर ।
तृष्ण ताप हर, प्यारे हिय की, प्याय पियूष भर गागर ।
उमडो है देश प्रेम को सागर ॥

सवैया

सौम्य सुधा सरसावन को ससर्ग समान मिला ही रहै ।
हम हस के हिलोरे लेत हिया नित हेत को ग्रोर हिला ही रहै ।
रतिराज की मौज मनायवे को मन एक से एक मिला ही रहै ।
नित ग्रापसी प्रेम के पातन मे उर प्रेम-प्रसून खिला ही रहै ॥

कवित्त

ग्रद्भुत ग्राभासे ग्रलौकिक तमासे जाके,
देत है दिखाय छटा जोवन नवीन की ।
दिल दोय एक कर पास करै दूरन को,
देत है सुधार प्रीति भव के भवीन की ।
हारि भखमारि विद्वान हू विचार रहे,
ग्राशा निराशा भई खासा ग्रवीन की ।
प्रणयी के पीछे जो प्राण ना पयान करे,
कौन परिभाषा ऐसे प्रेम परवीन की ॥

सवैया

चहुँ ओर निहारत दीसे नहीं कछु गुंजत काहे पै आन अली है।
निसि-कंत की ज्योति में ज्योति मिली जहं प्रेम के रंग में रंग रली है।
आई अहा ये सुगंध कहाँ सों सुरैन खिली कहा कंज कली है।
नद नन्द कौ नाम लियौ जवही तव जान परी वृषभान-लली है॥

१३९—हरिकृष्ण 'कमलेश':—ये डीग के निवासी और जाति के ब्राह्मण हैं। इनके पिता पं० घासीराम डीग के प्रसिद्ध मिश्रों में थे। 'कमलेशजी' का जन्म सं० १९५० वि० में हुआ। साहित्य प्रेमी होने के कारण आपने हिन्दी की अत्यन्त सराहनीय सेवाएं की हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार एवम् प्रसार के लिए आपने डीग में हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना कराई, जहाँ समय २ पर साहित्यिक आयोजन होते रहते हैं। आप अधिकारी जगन्नाथदास के समय से ही कविता करते चले आ रहे हैं। सत्यनारायन कविरत्न और आपको रचना शैली में वहुत कुछ समानता पाई जाती है। 'कमलेशजी' एक उच्च कोटि के कवि हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। आपकी रचनाएं बड़ी ही सरस, मधुर तथा हृदय-स्पर्शनी होती है। सफल कवि होने के साथ २ आप कुशल-हस्त वैद्य भी हैं। इनकी रचना के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

प्रेम

लगन लगाई।
विनु जाने आपुही अचानक निजकर कुबुधि विसाई।
जानत ही जिन नेह लगायौ निसि दिन जात सताई,
लोक लाज कुल की कछु वात न या मग यही भलाई।
कछु जादू के जाल जड़ीसी कै कछु भूल भुलाई,
तन मन स्वाभिमान सुधिविसरी मोहन-मंत्र लुभाई।
माधव की मधुरी मुरली धुनि सहजें हिये समाई,
निज जीवन पिय-ऊपर वारौ रूप सुधा छकि पाई।
मगन रहत पीतम रस राची प्रेम-मन्त्र मन लाई,
वारि दई हरि की छवि ऊपर त्रिभुवनकी ठकुराई।

मुरलिया

मुरलिया मोहन मंत्र भरी,
जमुना कूल कदम तर वाजत हरि के अधर धरी।
गोकुल की कुल वधुन जाहि सुन दोउ कुल गाज परी,
प्रेम-महानद मांहि विलानी लाज जहाज भरी।

सप्त सुरन सो रनत प्रणव धुनि मुनि जन ध्यान हरी,
लहरत हरि की मद्दर पवन कन कन मो सुधा झरी।
वस रस ही सरवस श्रुति मुखरित ज्ञान गरूर गरी,
जोग जज्ञ, तप जाप, नियम यम विधिहू निसार धरी।
जा वस सरवस दै व्रज गोपी प्रेम पुनीत धुरी,
धन्य भई जेहि चरन कमल पै डोलत मुकति ढरी॥

१४०—रामचन्द्र विद्यार्थी—आपका जन्म ज्येष्ठ कृष्णा ५ सम्वत् १९५२ वि० को प० कल्लाराम के यहा हुआ। सस्कृत का अध्ययन करने के पश्चात् आपने भरतपुर के प्रसिद्ध वैद्य बिहारीलाल से वैद्यक सीखी और वही आपके जीवन यापन का साधन बन गई। श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, मे होने वाले कवि-सम्मेलनो से आपको काव्य सृजन की प्रेरणा मिली। इनका व्रजभाषा और सस्कृत दोनो पर समान अधिकार था और दोनो मे ही सुन्दर रचनाएँ करते थे। आपकी भाषा बडी ही सरल, सरस और हृदय स्पर्शनी है, उसमे हर प्रकार के भावो को व्यक्त करने की अद्भुत शक्ति है। आपकी दो पुस्तकें (गगा गुण मजरी और गाधी स्तोत्रम्) प्रकाशित हो चुकी हैं, 'गाधी सत्यकम्' नामक तीसरी पुस्तक अभी तक अप्रकाशित है। उदाहरण देखिए—

सवैया

सीस पगा न उपाहन पाद मे, अग मे खादिहिको अपनायगो।
राजऽरु पाट तिया धन धाम, औ वैभव भगुर पाठ पढायगो।
द्वापर दूध अजा को तज्यो, कलि मे वह मोहन के मन भायगो।
है निपरे सिपरे मन की, धउरे पट को हियरे मे समायगो॥

इक तो भव सागर दुस्तर है ता जीरन नौका चलैगी ही क्या।
कलि काल कराल परयो मगरा, मग मे मुख फारि रह्यो नहिं क्या।
नहिं 'चन्द्र' प्रकाश अधेरी निशा, विपयोरी हवा प्रतिकूल न क्या।
गहिलै पद पकज माधव के, मति! अन्त समै तू करैगी ही क्या॥

जिहि भोगन ही को प्रधान गिनै अध बीच ही ते तिन छीन गती।
तनु रोग ग्रसै मन बुद्धि नसै, तरसै सुख को वह हीन मती।
कहुँ दैव के कोप सो द्रव्य नस्यो, सुख के बदले मिलै दुःख अती।
नर मूढ! तू काल को ग्रास बन्यो, तजि वासना लै भजि मोक्ष पती॥

१४१—गिरिराज प्रसाद 'मित्र':—इनका जन्म आश्विन कृष्णा ७ सम्वत् १९५७ को भरतपुर निवासी नारायनलाल के यहाँ हुआ। आप अग्रवाल वैश्य हैं और व्यापार द्वारा जीविकोपार्जन करते हैं। भरतपुर के प्रसिद्ध कवि पंडित गोकुलचन्द दीक्षित इनके स्वीकृत काव्य गुरू बतलाये जाते है। 'मित्रजी' बड़े ही विनोदी जीव है और अद्भुत फक्कडपन से जीवन यापन करते है। आपकी रचनाओं में जन्मजात कवि की कविताओं का सा स्वाभाविक प्रवाह मिलता है। हास्य रस पर पूर्ण अधिकार होने के कारण इनकी कविताए वड़े चाव से सुनी जाती है पत्तर खोलने से लेकर उच्च कोटि की भक्ति एवम् शृंगार परक कविताएँ भी आप स्वाभाविक रूप से बना लेते है। वीभत्स रस की कविताओं में भी इनके हास्य का पुट अनोखी जान डाल देता है। सँ० १९७८ से लेकर आजतक 'मित्रजी' ने सैकड़ों कवित्त, सवैये, छप्पय और कुंडलियों की रचना की है। आपकी दो पुस्तकें 'धडेका धड़ाका' और 'कमला माला शतक' मुद्रित हो चुकी हैं; 'नारान्तक बध' नामक तीसरी पुस्तक अभी अप्रकाशित है। इनकी कविताओं के उदाहरण लीजिए:—

ऋतुराज में दीवान का रूपक (कवित्त)

आज गई बागन अनौखी छवि देखी तहां,
ऋतुराज साज के नवीन युग लायौ है।
वृक्षन की लौनी लता सुखद समीर प्यारी,
मोरन कौ नाच आज चित्त में समायौ है।
'गिरिराज' बानी कोकिलान की सुहानी,
सुनि अंग अंग मेरे में अनंग सरसायौ है।
सीस कौ सुहाग पायौ मेंहदी औ गुलाल लिये,
होरी कौ दिवान ये बसंत बन आयौ है॥

ग्रीष्म वर्णन

चन्दन कपूर सों पुताये घर द्वार सारे,
छाय दीने चारों ओर खस के छवीना है।
ताहू पे गुलाब जल छिरकात बार बार,
दीखै दुख दाई तोऊ जेठ कौ महीना है।
'गिरिराज' भूखकौ तो केवल ही नाम रह्यौ,
पानी की न प्यास बुझै देह भई भीना है।
वायु कौ न काम सब जिय कौ आराम गयौ,
छूटै नाँहि अग मुखै ना पसीना है॥

शरद वर्णन

मत्त मदमाती सरिताकौ ना रह्यौ है मद,
रही नाँहि मारग मे कीच की निशानी है ।
मेघन की गर्जन है न दामिनि की दमकन है,
दादुर मडली की सुनि आवत न बानी है ।
झिल्ली झनकारें नाँहि मोर हू पुकारें नाँहि,
कूक कोकिलान की जहाँन सौं विलानी है ।
दूर भई 'गिरिराज' चचलता पावस की,
कढि आये श्वेत बार रही ना जवानी है ॥

हेमत वर्णन

जूता होय पाँवन मे रुई को पजामा होय
कोट टोपा रुई के हो कृपा भगवन्त की ।
सौर होय गद्दा होय ओढिवे विछाइवे कूँ,
अग्नि कौ अगीठा होय बैठक एकान्त की ।
गुड होय तिल होय गम गर्म बरे होय,
नारि हो अनोखी प्यारे कन्त गुनवन्त की ।
'गिरिराज' बाजरे की खीचरी मे घीउ होय,
ऋतु का उखारे पूछ शिशिर हिमन्त की॥

अन्योक्ति

सुवन समान स्वान हमने था पाला एक,
खुश होते थे जिसे मलकर न्हिलाने मे ।
गोदी मे उठा के चिपटाते कभी चूमते थे,
सुख पाते थे लस्सी दूध के पिलाने मे ।
रबडी मलाई खोवा खुरचन मगाई खाँड,
स्वप्न में न राखी कमी जिसके खिलाने मे ।
देखा 'गिरिराज' आज अजब तमाशा मित्र,
काटने को आता वही आँख के मिलाने मे ॥

हास्य

मारे हैं मच्छरों के दल के दल 'गिरिराज'
चैंटियो के व्यूहन के व्यूह हनि डारे हैं ।
केंचुओ के कटक कटीले काटि डारे सब,
खैंचि खैंचि मक्खियो के पखरे उखारे हैं ।

गजब गिजाइन पै गरजि परे हैं टूट,
मारि मारि दुश्मनों के हौंसले बिगारे हैं।
झींगुरों पै झपट झिली न झट भागे भीरु,
वीर हम बाँके ! जग जौहर हमारे है॥

दूर यदि हमसे रहोगी एक इंच प्यारी,
हमको भी दस इंच हट के ही पाओगी।
तोड़ कर नेही सो सनेह ना लहोगी लाहु,
'गिरिराज' करके गुमान पछिताओगी।
खिल उठती है कली पाकर हमारा संग,
मस्त मधुकर है फेरि चाह कर चाहौगी।
ऐठी ही रहौ तो एंठ तुमको धरैगी एंठ,
हमको कलपाओगी न आप कल पाओगी॥

सीस सिखा नहिं होगी भलै,
पर सुन्दर माँग बराबर होगी।
चाहत पाग की होगी नहीं,
नहिं टोपी की ख्वाहिस चित्त में होगी।
प्याली शराब की होगी जरूर,
औ पाकिट कैंची सों खाली न होगी।
शान निराली न होगी कभी,
गर मूंछ की पूंछ कटाली न होगी॥

१४२—रघुवरदयाल:—ये डीग निवासी दामोदरलाल के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका जन्म संवत् १९५८ वि० में हुआ था। इन्होंने तीन पुस्तकें लिखी हैं:—(१) श्री कृष्ण जन्म, (२) श्रवणकुमार और (३) लाखन की महतारी। इनके ख्याल, झूलना, लावनी और गजल आदि वहुत सुन्दर बन पड़े हैं। उदाहरण देखिए:—

धर वेश छैल पनहारी, जल भरन चले वनवारी ॥ टेक
एक दिना उठ प्रात श्याम नें, ऐसौ मतौ उपायौ है।
नख शिख ते शृंगार बनाकर, नवल नारि वन आयौ है॥
रतन जटित इंडुरी सिर सोहै, कंचन की धर झारी।
धर वेश छैल पनहारी जल भरन चले बनवारी॥

मेरी टेर सुनो गिरधारी, रोवै द्रुपद सुता सुकमारी ॥ टेक
पापी दुसासन पाप कमायो, सभा बीच मोय खैंच के लायो।
अब चाहत करन उघारी, मेरी टेर सुनो गिरधारी॥
पाँचो पति ने मौन गह्यो है, काहू के बल नाँय रह्यो हैं।
तुम ही को लाज मुरारी, मेरी टेर सुनो गिरधारी॥
मेरी लाज के आप रखैया, कष्ट हरो हे कृष्ण कन्हैया।
धाओ वेग वनवारी, मेरी टेर सुनो गिरधारी॥
तू नारायन है औ जग तारन,'रघुवर' जन के काज सम्हारन।
आइये गरुड सवारी मेरी टेर सुनो गिरधारी॥

१४३—रामप्रिया माथुर—आपका जन्म सन् १९०१ मे दीग के सम्भ्रान्त कायस्थ कुल मे हुआ था। आपके पिता सुप्रसिद्ध इतिहासकार मुशी ज्वालासहाय थे जिन्होंने राजस्थान एवम् भरतपुर राज्य का शोध पूर्ण इतिहास लिखा है। पर्दे की प्रथा होने के कारण आपकी शिक्षा घर पर अपने पिता तथा भाई डा० काशीप्रसाद की देख रेख मे हुई। इनका विवाह भी एक प्रसिद्ध कुल मे हुआ। इनके पति धौलपुर निवासी डा० दीनदयाल बडे ही साहित्य प्रेमी हैं और उन्ही की प्रेरणा के फलस्वरूप इनकी काव्य प्रतिभा प्रस्फूटित हुई। इनकी भाषा सरल मधुर और प्रसाद पूर्ण है। इनकी रचनाओ से इनकी सहृदयता, रचना कौशल और भाषा पर अधिकार अच्छी तरह प्रमाणित होता है। इनको समस्या पूर्तियो पर कई बार पदक भी मिले हैं। साहित्यानुराग के साथ २ आपको समाज सुधार में भी विशेष रुचि है। ये भरतपुर राज्य मे 'व्रज जया प्रतिनिधि समिति' की सदस्या भी रह चुकी हैं। स्त्री समाज को जागृत करने के लिये आपने सन् १९५० में धौलपुर मे 'महिला-विद्या-मदिर' की स्थापना की, जहाँ सैकडा वालिकाएँ शिक्षा-प्राप्त करती हैं। इनकी रचना के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

नारी के प्रति

किस चिन्ता मे डूबी हो तुम, सोच रही हो क्या मन मे।
निर्निमेष नयनो से किस को खोज रही हो क्षण क्षण में॥
कहाँ सुमागलीक प्रतिभा की, छटा छिपा ली जीवन में।
मानव जीवन मर्यादा जो, श्रेष्ठ रही प्रतिपालन में॥
छीन लिया अस्तित्व तुम्हारा, नकली रग चढाया है।
अब जाना-मायावी-जग ने, तुमको वहुत सताया है॥

जिस स्वतंत्र भू पर प्रतिपालित, था ये समुचित आदेश।
महाशक्ति के करगत ही है, विश्व शान्ति का शुभ सन्देश ॥
करो मान उस नारि वर्ग का, वो है महा शक्ति का वेश।
हुआ नहीं करता कदापि उस, शुद्ध शक्ति का भी निःशेष ॥
वेदों ने इस परम्परागत, गुण का सुयश सुनाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको वहुत सताया है ॥

दुर्गा वन लक्ष्मी रानी ने, किया सुशोभित रण आँगन।
पद्मा पवित्र पतीव्रत को ही, समझी थी निज जीवन धन ॥
मीरा की क्या कहूँ कहानी, अमर हुई वो योगिन वन।
मत विसराओ उस गौरव को, करौ शीघ्र फिर आवाहन ॥
उदासीनता, कायरता ने, नीचा सदा दिखाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको वहुत सताया है ॥

क्या कहती हो ? राह नहीं है, बाधाएं हैं अकथ अनेक।
किन्तु नहीं साहस दृढ़ता से, करो क्रान्ति का भी अभिषेक ॥
कुछ परवाह नहीं जो आवे, कठिन वबंड एक से एक।
जमी रहो उत्सर्ग भाव से, किन्तु तजो मत विमल विवेक ॥
डर तव तुमको क्या है, तुमने निज कर्तव्य निभाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको वहुत सताया है ॥

क्रान्ति उठेगी प्रासादों से, जहाँ बिलासिता करती नृत्य।
जहां नारि के संग निरंकुश, निर्दयता का होता कृत्य ॥
क्रान्ति उठेगी अस्तित्वों का, जहाँ मिटाया है शुचि सत्य।
रहा न जिनका वेद निहित निज, अधिकारों का भी अधिपत्य ॥
क्रान्ति जननि है, अमर शान्ति की, सोता जगत जगाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको वहुत सताया है ॥

राम वियोग

हहरि हिराने से हेरित अहेरिन में,
तीरन मे कौन तीर राम के पंवारे हैं।
त्यागि तृन नीर भे अतिशय अधीर कृश,

औध वान वासी मृग जीव तिन्हैं "राम प्रिया"
सूने से दिखात अब, सरजू किनारे हैं॥

औध ही विलोक अब, पावत न चित्त थिति,
विकल वदन सो, वियोगन के मारे हैं।
सूने स्वर्ण धाम सब, राम विन 'राम प्रिया'
नरक निवास ज्यौं निराट अधियारे हैं।
मनुजन की कौन कहै, जीव और जन्तु सब,
औधि औधि आवन की आस निरवारे हैं।
कोऊ बिलखाए कोऊ धीरज बधाय करै,
कोऊ जप जोग जाय सरजू किनारे हैं॥

केकि कठ नाद वह, बाँसुरी निनाद जानि,
नाचती हैं गावती हैं सग मे सुमीता हैं।
ठाव ठाव देखती हैं, मायु को सरूप वह,
आपु ही के नेम और, प्रेम मे पुनीता हैं।
देखि देखि स्याम रग, क्रीडति हैं यमुना मे,
नीर मे अधीर हो, डोलती विनीता हैं।
ऊधो कहै माधो जू, गोपिन के प्रेम तले,
कहा है विराग और, कौन चीज गीता है॥

गेह को सनेह त्याग दीन्हौं अरु देह को हु,
मन में निहारी मजु मूरति की चिन्ता है।
जमुना दुकूलनि पर भेंटति हैं धाय धाय,
तरु सौं तमालन सौं, अतिशय विनीता हैं।
लेहु स्याम नेहु स्याम, टेरती सम्हारती है,
दौननि मे हाथ दधि, और नवनीता हैं।
गोपिन के नेम प्रेम आगे, हरि ऊधो कहै,
कहा है विराग और कौन चीज गीता है॥

१४४—रावत चतुर्भुजदास साहित्याचार्य—आपका जन्म एक प्रतिष्ठित चतुर्वेदी कुल मे सवत् १९६०वि०मे हुआ है। इनके पिता का नाम श्रीराधामोहन चतुर्वेदी था। ये बडे ही हस मुख और सरल प्रकृति के हैं। शैशव सेही आपकी अभिरुचि काव्य सृजन की ओर थी परन्तु इसका प्रस्फुटन

विशेष रूपेण युवा काल में ही हुआ। आप ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों पर समान अधिकार रखते है और पद्य तथा गद्य दोनों में ही लिखते रहते हैं। इनकी रचनाओं में भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों में सामंजस्य पाया जाता है, भाषा भावानुकूल वदलती रहती है। इन्होने विविध विषयों पर अब तक लगभग ५१ पुस्तके लिखी है, जिनमे से अधिकाँश मुद्रित हो चुकी है। आपने भरतपुर स्थित राजकीय अद्भुतालय के अध्यक्ष पद पर रहते हुए हिन्दी की असाधारण सेवाए की है। इस अद्भुतालय की सर्वतोमुखी उन्नति का श्रेय भी आपही को है। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

नैन मतवारे हैं (कवित्त)

अति अनियारे जग-जीवन के मोहबे कों,
कछु कछु झुके मुरे परम पियारे है।
लोकन सराहे वस जग कर लाये ऐसे,
नेह के झुलाये श्याम स्वेत रतनारे हैं।
'चतुर्भुज' परम प्रवीन मीन खंजन से,
अंजन लगाये दृग दृगन उजारे हैं।
मोहन के मत्र तंत्र जगत जगायवे के,
सुन्दर सलौने लौने नैन मतवारे है॥

ललक उठे है लोल लोचन निहार वडे,
परम प्रवीन कैधौ रति के समारे है।
कारे कजरारे मारे मदन महीपजू के,
दृग अनयारे सव लोकनते न्यारे है।
'चतुर्भुज' चतुर कटीले नैन सैन वारे,
नेहके नवीन प्रिय प्रीतम के प्यारे हैं।
जग उजियारे कामदेव के दुलारे,
प्रेम-वारि देन हारे नैन मत वारे है॥

सवैया

कोमल पात सरोज समान यह प्रेम को नेम निवाहनों है।
रस में निसिवासर बास करै तऊ ऊंचो प्रवीन दिखावनो है।
दास चतुर्भुज प्रीति पतंग में चित्त की डोरि चढ़ावनो है।
पूछो कहा प्रिय प्रेम को पंथ कराल मराल सो धावनो है॥

मातु रही समझाय सतीसुन है गुनवंत वही शुभ नारी।
जो हर भांति सों प्रेम करै पति नेम धरै घरनी घर वारी।

नारी को देव कह्यो पति है परवीन भली यह जान दुलारी।
नारि स्वतन्त्र न हैं कबहू परतन्त्र पिता पति पूत सभारी॥

(पानाजलि से)

पान मन का होता है बढ़ कर हीरे से।
मर्मान्तिक पीड़ा मिटती जिसके मिलने से।
जितना जितना मूल्य बढाते हैं उसका हम।
उतनी ही उन्नति करते गौरव बढने से॥

(आत्मोल्लास से)

यह मृत्तिका का पात्र जो फूटा प्रेम ललित ना पावोगी।
खाली सपरो से क्या फिर तुम अपना दिल बहलाओगी।
टुकडे टुकडे बिखरेंगे जो फैलेगे हर जगह यहाँ।
और तुम्हारे प्रेम मिलन की बात कहेंगे यहा वहाँ॥

(सुमन सवैया से)

ना तुम हो कुछ भी प्रभुजी पर छोड तुम्हे कछु नाहि हमारो।
हो तुम नाहि यहैं जगमे पर लेत सदा जग तोर सहारो।
रगहु नाहि न रूप विभो पुन फर हमे तुम खूब निहारो।
मो मन है भ्रम नाथ यही सब रग रगो रहे लोक तिहारो॥

(चतुर्भुज सतसई से)

ओछे घट उछरें बहुत, भरे न बोलें बोल।
नीच कीच पायन खुदत, अमल कमल सिर डोल॥
ढूढो जाय बजार मैं, तीन बार मैं खूब।
मगत ना इतिवार है, बुद्धि बिलानी ऊब॥
जब तक चिनगारी नहीं, चमकैगी तुम माँहि।
तब तक तकते रहोगे, मर्दा और की छाँहि॥

१४५—नन्दकुमार—कवि भूषण प० नन्दकुमार का जन्म कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा सम्वत् १९६० वि० मे एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम विश्वम्भर नाथ था। आप अपनी गार्हस्थ्य परिस्थिति के कारण मैट्रिक परीक्षा नही दे सके और राजकीय मुद्रण-विभाग मे सुलेखक का कार्य करने लगे। शनै २ कठिन अध्यवसाय से आप मैनेजर के पद पर पहुँच गए। राजस्थान बनने पर और भरतपुर से प्रेस हट जाने पर ये जनरल इलेक्शन विभाग मे रोल्स इचार्ज नियुक्त हुए। उस कार्य के समाप्त हो जाने पर इन्होने स्वेच्छा पूर्वक

राजकीय सेवा से अवकाश ग्रहण कर लिया। इसके अनन्तर ब्रह्म-निष्ठ १०८ मोहनदास महाराज से सन्यास की दीक्षा ग्रहण कर ये बाबा गोल मोल के आश्रम में निवास करने लगे और गुरुमुख दास कहलाने लगे। आपका अधिकाँश जीवन साहित्य समाज-सेवा में व्यतीत हुआ।

व्रज भाषा तथा खड़ी भाषा पर समान अधिकार होने से इन्होने दोनों ही में रचनाएं की है। भरतपुर राज्य से प्रकाशित होने वाले भारत-बीर पत्र के प्रकाशन में इनका पूर्ण योग रहा। आपका गद्य परिष्कृत तथा अलङ्कारिक होता था। ये रामचरित मानस के अनुपम विद्वान थे और साथ ही श्री हिन्दी-साहित्य समिति के अनन्य भक्त भी। आपकी बहुमुखी प्रतिभा साहित्य के अनेक अंगों की पूर्ति में पूर्ण रूप से सफल हुई है। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें सती मोह, पाञ्चाली-पुकार तथा रम्भा शुक-सम्वाद विशेष ओजस्वी एवम् हृदय-ग्राही छन्दों मे लिखे गये है। इनकी रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है।

पाञ्चाली-पुकार से (छप्पय)

मम भक्तों की लाज, कहो किसके कब नापी।
अघ-घट अपना पूर्ण, किया करते है पापी।
जो मेरा हो चुका, लाज की फिर क्या चिन्ता।
इस रहस्य को जान, तजौ सारी दुश्चिन्ता।
सब संशय मन से दो हटा, देखो जो कुछ हो रहा।
इदमिथ्या जानों इसे, गूढ़ ज्ञान तुमको कहा॥

केवट सम्वाद से (मत्त गयन्द सवैया)

नाव चढ़ाय चल्यौ हरषाय, समोद लियौ पतवार उठाई।
गावत राग सुप्रेम भर्यौ, छबि-छाक छक्यौ न उमंग समाई।
माँगत दैव सों बारहि बार अपार विभो यह पाथ बनाई।
खेवत नाव रहों इहि भाँति, रहैं असवार सदा रघुराई।
छाहं करें घन शीतल मन्द, सुगन्ध समीर वहै सुखदाई।
गंग उमंग भरी अवलीन सों श्रीपति पाद पखारन धाई।
कोटिन नैन किये मिसि मीनन, रूप पियूष पियैं न अघाई।
धन्य हिये धर ते पद-पंकज, आजु भई जिनसो प्रगटाई॥

शान्ति-पथ-पथिक से (रोला)

लखि अशान्ति के चक्र चढ़ा, यह विश्व चकाया।
द्वन्द दंड कर धारि नचाती इसको माया।
द्दष्टा बना विलोक रहा माया-पति क्रीड़ा।
शान्त एक रस से हर्ष रंचक नहिं व्रीड़ा।

तब यह शुद्ध विचार तुरत ही मनमे आया।
शास्त्रो मे वह अश और अगो मे गाया।
फिर रसाल की डार आक फल क्यो कर फूला।
इतने ही से छोड अविद्या भागी तूला॥

मतैक्य से

कर्मोपासन ज्ञान साख्य योगऽरु पशुपति मत।
वैष्णवादि जो मार्ग सभी है निज निज थल शत।
रुचि विभिन्नता करहिं भिन्न गुरुमुख दरसावत।
सबहि ज्ञान मे मिलहिं सबहि पद परम दिखावत।
जो जिहि रुचि अनुकूल हो सो पथ ताको श्रेष्ठ है।
न तु सब सालिग्राम हैं ना कोउ लघु ना जेष्ठ है॥

सर सरिता नद नारि कूप अगणित जल साधन।
सरल चलै कै कुटिल अशुचि हो या अति पावन।
जल निधि जल को अधिष्ठान श्रुति सतत गायो।
सो तासों ही निकस ताहि मे जात समायो।
त्यो जग अरु जग मतनको अधिष्ठान भगवान है।
सब तिहि तक पहुँचात हैं गुरुमुख सर्व महान है॥

श्री राधिका नख शिख से पद तल वर्णन (सवैया)

छीन करै छबि सो छबिकी छबि छीन छपा करकी छपिया है।
जाप करैं जिनको निशि बासर कोटिन ही इनके जपिया हैं।
चाह भरे नित चाहि जिन्है पग तीन त्रिलोकन के नपिया हैं।
कीरति नन्दिनी के पग की थपिया कवि-कीरति की थपिया हैं॥

लक वर्णन

हाँ जु कहौं न लखात कहूँ अरु ना जो कहो बड लागै कलक है।
वेदहु भेद न पाय सकै नहि शास्त्र हु ध्यान छुटै मन शक है।
भू नभ लौ बिन टेक सदा तन छेंक रहै दुविधा न निशक है।
ब्रह्म समान अराधिका सी यह राधिका की बर सूक्षम लक है॥

तिल वर्णन

कै जल जात के पात सुहात पराग छक्यो अलि बैठ्यो ललाम है।
कै बर हाटक पीठ निसक निवास कियो यह सालिगराम है।
कै सत औ रज के त्रिगुणी करिबे तम चिन्ह यहै अभिराम है।
कै प्रति रोम लली के बसै प्रगट्यो तिल रूप वही घनश्याम है॥

वैनी वर्णन

कै भर चोप चली चित में वर पंकज पै चढ़ि कें अलि सौनी ।
पीय पियूष किधौं शशि पै चढ़ि लोर रही अहिनी अलसौनी ।
धार कलिन्द सुता की किधौं जन के अघ ओघन जूहन छैनी ।
दैनी महा मुद मंगल की वृषभान लली की किधौ वर वैनी ॥

१४६—सांवलप्रसाद चतुर्वेदी:—आपका जन्म आश्विन शुक्ला ५ संवत् १९६१ वि० को ग्राम अभौर्रा (भरतपुर) में प० अजयराम चतुर्वेदी के यहां हुआ। एक प्रतिभाशाली कवि होने के साथ २ आप निस्वार्थ जन सेवक एवम् लब्धप्रतिष्ठित नेता भी हैं। ये राष्ट्रीय आन्दोलनों में दर्जनों वार जेल जा चुके है और भरतपुर राज्य के आन्दोलन में वर्छे और भाले तक सहे है । महिला शिक्षा प्रसार में आपकी बड़ी अभिरुचि है। आजकल आप महिला विद्यापीठ भुसावर के अवैतनिक मंत्री है! काव्य के प्रति अनुराग तो आपमें बचपन से ही पाया जाता है, किन्तु काव्य सृजन की प्रेरणा सन् १९३९ से अकुरित हुई, जब आप देश स्वातन्त्र के लिए कारागृह की कठोर प्राचीरों में बन्दी थे। चतुर्वेदीजी एक कुशल, ओजस्वी एवम् प्रतिभागाली वक्ता भी हैं। गद्य और पद्य दोनो पर आपका समान अधिकार है। आपने अनेक पुस्तके लिखी है, जिनमें से (१) रण बांकुरा सूरजमल, (२) कृष्ण श्याम गायन और (३) समाज के शिकार मुद्रित हो चुकी हैं। आप वड़े ही सरस, भावुक और निपुण कवि है। इनकी कविता ओजपूर्ण और मर्मस्पर्षनी होती हैं। इन्होने अपनी रचनाओं में 'श्याम' उपनाम अंकित किया है। आपकी कृतियों के कतिपय उदाहरण उद्धृत किये जाते है,—

॥ जन श्रुति ॥

जब कि बात दुनियाँ में फैली खटकी सबकी आँखों में,
प्रेम कहानी कवि जन गाते अब क्या डरना लाखों में।
अब क्यों आँख चुराते प्रियतम ! किया प्रेम फिर डरना क्या,
प्रेम पंथ के पथिकों को है प्रश्न मरन जीवन का क्या ।
पागल दुनियाँ कुछ भी कहले करले अपनी मन मानी,
लेकिन कवि वर सदा लिखेगे प्रेम—कहानी रस सानी ।
लज्जा लंगर तोड़ डाल दी नैया अब भव सागर में,
कर में बल्ली आशा की विश्वास महा नट नागर में ।
या तो पार लगेगा बेड़ा या विलीन हो जायेंगे,
एकी चित्त निरोध वृती हो शान्ति इसी में पायेंगे ।

जीवन की रक्षा केवल जीवन देकर के हो जाती,
अपनापन खोये विन खोई वस्तु कभी ना मिल पाती ॥

॥ अभिलाषा ॥

प्रिय प्राण का पछी मेरा छोड स्वर्ण सम यह पंजर,
उड जावेगा महा शून्य मे तुम न वहाना दृग-निर्झर ।
निज नयनो की अश्रु सुरसरि को कर हृदय-देश मे वन्द,
महा नीलिमा मे प्रिय ! मुझको उड जाने देना स्वच्छन्द ।
ले विषाद की सघन कालिमा कोई न आवे मेरे पास,
सुन न सकूँ मैं करुण गीत-ध्वनि हिय मे होकर व्यथित उदास ।
तुम केवल वस तुम रहना प्रिय कानो मे कहना कुछ वात
निज कर-कोर स्पर्श से पुलकितकरती रहना मेरा गात ॥

॥ कवि मे अपील ॥

हम सोते है टकराती विप्लव की लहरे दीवारो से,
हे कवि जाग्रत करदो हम को अपने शब्दो की मारो मे ॥
अव निर्झर के कलरव अलिकुल के मर मर शब्दो मे वदले ।
वल वीरो की हुँकार सुनाओ दानवता का दिलदहले ॥
जव से यह भूषण हीन हुआ, भारत तवसे तकदीर फिरी ;
इस महावीर के हाथो से, उस दिन मे ही शमशीर गिरी ॥

पाँचाल वही वगाल वही, पर गत गौरव का ज्ञान नही ।
है पाटलीपुत्र महान वही, पर चन्द्र गुप्त की शान नही ॥
मद्रास वही मैसूर वही, पर वह टीपू सुलतान नही ।
है राजस्थान वही लेकिन, अव रजपूती अभिमान नही ॥
गायक अतीत की गाथाओ को गादो जीवन ज्योति जगे ।
मुरदो का मन भी मत्त वने, औ प्राणो की ममता दूर भगे ॥

श्रीराम कृष्ण के युक्त प्रान्त को निज मर्यादा सूझ पडे ।
बुन्देल खण्ड आल्हा उदल का जीवन रण मे जूझ पडे ॥
गुजरात हो उठे सजग बचाले निज असि धारा का पानी ।
महिलाओ मे से निकल पडें कितनी झासी की रानी ॥
हे युग निर्माता तुम अपनी वीणा मे भैरव राग भरो ।
हृदयो मे भीषण आग भरो मानवता का अनुराग भरो ॥

१४७—कुम्भनलाल 'कुलशेखर':—आपका जन्म भरतपुर निवासी पं० कन्हैयालाल के यहाँ भाद्रपद कृष्ण ८ सम्वत् १९६१ को हुआ था। इनका उपनाम 'कुलशेखर' है और इसी नाम से भरतपुर में विख्यात है। कवि 'कुलशेखर' कवि मुरली मनोहर के प्रिय शिष्यों में से हैं जिनकी प्रेरणा से सं० १९८१ से आप काव्य सृजन करने लगे। आपने ८ पुस्तकों की रचना की है, जिनके नाम इस प्रकार हैः—(१) शृंगार सरोज, (२) बीर विलास, (३) विनय शतक, (४) अमृत ध्वनि-चालीसा, (५) पाकिस्तान विध्वसक चालीसा, (६) बसन्त व होली शतक, (७) अद्भुत कहानी और (८) पिंगलसार प्रकाश, इन रचनाओं के पढ़ने से ज्ञात होता है कि आपका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार है। इनके वर्णनों में सजीवता और शैली में रोचकता पाई जाती है। वैसे तो आपने अनेक विषयों पर सुन्दर रचनाएँ की है, परन्तु बीर और शृंगार दो रसों पर आपकी कविताएँ बहुत सुन्दर बन पड़ी है और उन्हो के कारण आपकी चारों ओर ख्याति फैली हुई है। आपकी भाषा परिष्कृत, परिमार्जित, व्यवस्थित और भावोपयुक्त है। निस्सन्देह 'कवि कुलशेखर' एक अभ्यस्त और निपुण कवि है। आपकी कविता के उदाहरण देखिएः—

बाँसुरी (सवैया)

पगड़ी सिर सोहत कुण्डल श्रौन, रह्यौ पटुका कटि गाँसुरिया।
हरि चन्दन भाल दृगंजनदै, नित राखत गोधन पाँसुरिया।
'कुल शेखर' माल सरोजन की, लटकै उर पै मृदु हाँसुरिया।
नट नागरिया गुन आगरिया, अधरा चढ पौढत बाँसुरिया॥

वेणी

अति भोर उठी अलसात तिया,
नव चन्द्र मुखी मुख धोय रही।
रसनायक भायक के बिछुरे,
मनमें कछु चिन्तित होय रही।
लट छूट परी कुच ऊपर सों,
'कुल शेखर' की मति जोय रही।
शिव के शिर मानहु प्रेम भरी,
सुख पाय सु व्यालिनि सोय रही॥

वसन्त (कुंडलिया)

बसन बसन्ती देख कें, जान्यौ बिरह वसन्त।
बस न कंत सों है अली, जानें कहाँ बसन्त।

जाने कहाँ वसन्त अत विरमाये कौने।
मैं बैठी मन मार रहै कोकिल नहिं मौने।
'कवि कुल शेखर' कहै सखी वह है गुनवती।
जा घर करै अनद पिया कस बसन बसती॥

वर्षा-बहार

उमडि उमडि चहुँ दिस जल भर भर,
जल धर फिरत घिरत छिति वन वन।
लहर लहर लहरत झुक झुक द्रुम,
पवन चलत तन लगत सवन सन।
'कवि कुल शेखर' चमक लखि चहकत,
कुसुम कलिन चटकत मन धन धन।
झहर झहर बद बद झर लगवत,
दनन दनन दन तडित तडक घन॥

॥ कंस बध ॥

नटवर हलधर वीर वर, महाबली सामरत्थ।
'कुल शेषर' कंसहि हनन हल मूसल लिय हत्थ।
हत्थद्धर शुभ चक्र वक्र पर कान्ति झलक्कत।
टिट्ठ पग्ग सिर बक्र भृकुटिहि हुव्व हलक्कत।
युगुलभ्भ्रातहि भव्भय भ्रातहि उर क्रुद्धद्धर।
तीरस्सम चल वीरग्गन लग्गि कुद्यौ नटवर॥

॥ नरसिंह अवतार ॥

हरन कष्ट निज भक्त को दुष्टद्दलन समग्र।
'कुल शेषर' कढि खम्भ ते, गज्जत तज्जत अग्र।
अग्गप्पग धरि जिह्व तपक्कत भज्जक्कर गहि।
कट्टत दन्तन फट्टत अन्त पटक्कत पुनि महि।
टिड्ढ भ्रकुट्टहि तक्क अरिज्जन कम्पत्थर थर।
तत्तडाक चिक्कार असुर मार्यो जय नर हर॥

जवाहरसिंह का युद्ध कौशल (छप्पय)

गगन धुंधरित धूम धाम बहु धरा धसक्के।
धीर तजे रन धीर वीर सुन शब्द मसक्के।
भुन्नत कोप कृपानु भानु जिमि ग्रीषम को है।
तह विफरो नर नाह जवाहर नाहर सो है।

'कवि कुल शेषर' रण मत्तहू, दुहुकर में तरवार हैं।
नृप महाकाल वन कर रह्यौ वार बार पर बार है॥

॥ दिल्ली विजय ॥

प्रबल प्रतापी सूर सूजा कौ सपूत सिह,
लूट लई जानै राजधानी हिन्द भर की।
कर की कृपान ते छिनाय लीने छत्र जिन,
भारे हैं गुमान प्रथा पाली वीर वर को।
कहै 'कुल शेषर' समस्त शत्रु सैन घिरी,
ठाडी चहुँ ओर जट्ट सेना वॉं बवर की।
कोल्हू मांहि तिल्ली पिलै त्योंही पेर दिल्ली दई,
हल्ला एक ही में सारी बादशाही सर की॥

होते जो न प्रणबीर प्रबल प्रताप सिह,
मान से गुमानी कौं गुमान कौन हरतो।
हिन्दुन कें उपबीत चोटी कहूँ पाते नही,
सबल शिबाजी जो न शत्रुन सों अरतो।
कहै 'कुल शेषर' समस्त हिन्द बासी लोग,
यवन कहाते और निबाजी हौन परतो।
उद्धत प्रचण्ड बल बण्डन के मान खण्डन,
होते ना जबाहर तो और कौन करतौ॥

१४८—छोटेलाल ब्रह्मभट्ट:—आपका जन्म भरतपुर निवासी खुन्नीलाल के यहां भाद्र पद कृष्णा ११ सवत् १९६२ को हुआ। आपकी काव्य रुचि जाग्रत करने में श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का वहुत बड़ा हाथ है। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व होने वाले कवि सम्मेलनो से आपको काव्य सृजन की प्रेरणा मिली। आपका कविता काल सं० १९९० से आरम्भ होता है। इनकी कविता में ओज के साथ प्रवाह का अच्छा सामञ्जस्य पाया जाता है।

भैरव स्तुति (कवित्त)

मंडित उमंड बलबंड सुत चडिका कौ,
राजत ब्रह्मंड पै प्रचंड भर पूरिया।
खंड-खंड खडग सों मलेच्छ-दल देत दंड,
गार के घमंड गर्व गर्जत गरूरिया।

'छोटे कवि' सेवक की आरत अवाज पाय,
धीरज धरायवे को धावत जम्हरिया।
वाकुरा विकट वरदायक वटुकनाथ,
चमकत शुचार सीस भूरी लटूरिया॥

हनुमन प्रतिज्ञा

स्वामी धीर धारो उर काहे घवरावत हो,
औषधि के लैन को छलांग मार जाउगो।
बूँटी की कहा है वात धरा मो उखार भट्ट,
द्रोनागिरि लाय पट्ट पास मे गिराऊँगो।
आज्ञा सिर धारूँ औ उवारूँ प्राण लक्ष्मण के,
'छोटे कवि' आऊ वेगि देर ना लगाऊगो।
सत्य मुख भाखूं काम एतो जो न करू नाथ,
तो मैं मात अजनी को सुत ना कहाऊगो॥

क्रुद्धित हो लक माँहि कूद हो निशक है कें,
पाजी घननादै रस युद्ध को चखाऊगो।
भारूगो घमड तन फार कर डारो खड,
प्रवल प्रचड दड मारकें नसाऊगो।
'छोटे कवि' झपट झडाक दस-कन्धर के,
दस शीश बीसो भुजा तोरकें गिराऊगो।
सत्य मुख भाखूं काम एतो जो न करू नाथ,
तो मैं मात अजनी को सुत ना कहाऊगो॥

नीयत पै मावित वद नीयत विसार देउ,
छोड देउ दूसरो की चीज गपनावनी।
आठो याम नित्य ही दयाल रहो दीनन पै,
काहू समय काहू को न त्रास दिखरावनी।
'छोटे कवि' कहै मुख भाखो ना विष के वैन,
सवही सो वात कहो हिय हरषावनी।
तजके गुमान ध्यान लाओ परमेश्वर सो,
मानुष की देही ये न वार २ पावनी॥

१४९—प्रभुदयाल "दयालु"—कविवर 'दयालु' का जन्म फाल्गुण कृष्ण १ सम्वत् १९६३ वि० को भरतपुर निवासी प० रामचन्द्र के यहा हुआ था। श्री

हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के विभिन्न कवि सम्मेलनों तथा अन्यान्य संस्थाओं के साहित्यिक समारोहों से आपको काव्य-सृजन की प्रेरणा मिली, जिसके फल स्वरूप आप सरस, भावुक और निपुण कवि हो गए। आपकी कविता बड़ी सरल तथा हृदयस्पर्शनी होती है। इनकी भाषा मधुर और प्रसाद पूर्ण है और कल्पना विषय के अनुकूल और सुन्दर कोटि की है। मातृभाषा हिन्दी की निश्छल सेवा करना ही आपके जीवन का ध्येय है। आजकल आप श्री हिन्दी साहित्य समिति, के पुस्तकालयाध्यक्ष के पद का भार सम्हाले हुए हैं। प्राचीन कवियों के जीवन वृत की खोज में आपका सराहनीय योग प्राप्त हुआ। आपकी कतिपय सरस रचनाएं निम्नलिखित हैं:—

अखियाँ (सवैया)

सित कंज सी चारु विलोकन ते, विधि के सम सृष्टि उपायौ करैं।
हरि के सम प्रेम-पियूष सों पोष, 'दयालु' सुनीति जिवायो करैं।
लखिकैं करतूत कराल बनी, हरके सम भार नसायौ करैं।
त्रिगुणी त्रय रंग रंगी अखियाँ, त्रय देव कौ रूप लखायौ करैं॥

रस रास बिलास में मोरनीसी, नच चाहक-चित्त चुरायौ करैं।
लड़तीं अडतीं अति सूरसी ह्वै, मृदु चित्त में ये गढ़ जायौ करैं।
बहु भाव भरी बहु रूपिनी सी, नटती नटनीसी लखायौ करैं।
करुणा की भिखारिनि ये अखियां, पाषाण हिये पिघलाऔ करैं॥

वसन्त वर्णन (कवित्त)

विविधि विटप नव पल्लव प्रसून युत,
सैनिक सो सीम दावी दिग औ दिगन्त की।
त्रिविधि समीर तीर छोड़त मनोज वीर,
कहरैं वियोगिन वानी वोले हा हंत की।
कोकिला न कूके ये चलत बन्दूके बहु,
कमल पराग नही गैस है ये अंतकी।
राखौरी वियोगिन तन गाढे या जतन सों,
जीवन कों आई बन वाहनी वसत की॥

व्रज रखवारे की

बींसवी सदी में नृपति श्री कृष्णसिंह,
ह्वै कें प्रतापी राखी लाज जन्म धारे की।

वाढकी कराल डाढ व्रजको गहन लगी,
　　विललानी प्रजा ज्यो शमन-गण मारेकी ।
भनत 'दयालु' ता समय भूप कृष्ण भये,
　　स्वय वढाई वहु धाम वल अपारे की ।
व्रज कौं वचायो दुख दारिद वहायो सव,
　　याद ये रहैगी वात व्रज रखवारे की ॥

भक्ति परक (सवैया)

नैनन ते न लखे भगवान, न वैनन ते गुन गान को गायो ।
कानन ते न सुनी हरि कीरति, पायन सों जनि तीरथ धायो ।
देखन ते न भयो हिय हर्ष, न हाथन ते दीवोहु सुहायो ।
आवत जात वरावर है, जग देह धरे को कहा फल पायो ॥

प्रताप की कृपाण-कीर्ति (कवित्त)

खुलते ही खोल खलवली मची खलक वीच,
　　झपें पलक देख कर झलक आँग करकी ।
विद्युत प्रभासी भासी खासी वर पानिप सो,
　　चलै चचला सी माल गृधक ही हरकी ।
भनत 'दयालु' सुनी कालकी सहोदरा सी,
　　वैरिन को स्वर्ग दा सरनी समर की ।
एहो वर प्रताप तेरी वर्छी विजय रूपणी सी,
　　नीकी पतवारसी ही नौका युद्ध-सरकी ॥

१५०—राधारमण शर्मा "मोहन" —आपका जन्म माघ कृष्णा ३ सम्वत् १६६६ को प० श्यामलाल वाशिष्ठ के यहाँ हुआ । आपके पिता को कविता मे वडा प्रेम था । वे समय समय पर सुन्दर रचनाए किया करते थे । अत आपको काव्य-प्रेम पैतृक विरासत मे मिला । सच तो यह है कि काव्य रचना की प्रेरणा आपको सम्वत् १६६४ से श्री हिन्दी-साहित्य समिति के कवि-सम्मेलनो से मिली । आपने किसी ग्रन्थ की रचना तो नही की है, किन्तु शृङ्गार रस के फुटकर कवित्त और सवैये लिखे हैं । आपका सवैया कहने का ढग इतना सरस है कि श्रोताओं को सुनने की इच्छा वनी ही रहती है । आपकी भाषा शुद्ध व्रज-भाषा है, अलङ्कारो के स्वाभाविक प्रयोग ने रचनाओं को और भी अधिक चमत्कृत कर दिया है । आपकी सरस रचनाएँ अनेक वार कवि सम्मेलनो मे प्रथम पुरस्कार से

पुरस्कृत हो चुकी हैं। आपकी जीविका का मुख्य साधन वैद्यक है। इनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

गणेश-बन्दना (कवित्त)

गावैं तौ गावें कौन गुन गन गजानन के,
आनन हजार हू थकित भये सेस के।
देस के बिदेस के सुरेस की सभाके सबै,
प्रथम मनावें ऐसे तनय महेस के।
'मोहन' पढ़े है वेद भेदन अनेक भाँति,
सबसों वढ़े हैं सुख करन हमेस के।
ज्ञान के गढे है रिद्धि सिद्धिन मढ़े है मेरे,
चित्तमें चढ़े है चारु चरन गनेस के।।

शारदा-बन्दना

सलिल अमल मध्य पाण्डु पुण्डरीकन पै,
राजत सयानी मानी आदि शक्ति माया है।
चार भुज चारु जामे परम नबीना बीना,
पुस्तक औ माला चौथे अभय सुहाया है।
ब्रह्मा की सुता है और कविन बिधाता विश्व,
प्रेम युत ध्याया जासु आसु फल पाया है।
'मोहन' सुकवि उर अजिर बिराजौ आय,
तेरे गुण-गान का हुलास हिय छाया है।।

सुषमा मयी अहीरनी सवैया

सुचि नूपुर मंत्र निनादन सों, दुख-दुन्दन व्यूह विदीरनी तू।
मृदु-हास हुलास विलास भरी, गुन जोवन रूप जखीरनी तू।
'कवि मोहन' के मन के बन की, निरद्वन्द विहारिनि कीरनी तू।
जग-नायकै चेरौ बनाय लियौ, अरी वाहरी वाह अहीरनी तू।।

श्री राधिका महिमा

सरसावनी सुक्ख-समूहन की, दुख द्वन्दन व्यूहन चूरनी तू।
हरसावनी मोहन के मन की, जनकी सब इच्छन पूरनी तू।
'कवि मोहन' रूप सुधा मद सो, मन मोहन कौ मद भूरनी तू।
जगनायक की अधिनायक है, घनश्याम की मत्त मयूरनी तू।।

शिव-रूप भारत (कवित्त)

शोभित है भाल पै हिमाचल त्रिपुंड सम,
स्वेत हिम-आभा मानों चन्द्र चटकारो है।

शुचि तिरवैनी रूप गल उपवीत राजै,
मध्य विंध्यमाला कटि मेखलाहि प्यारो है।
बायें अग शक्ति गौरी एकता विराजै गोद,
दाये मे गनपत जवाहर दुलारो है।
'मोहन' सुकवि ऐसो अभय वरद चढ्यो,
छाजै शिव रूप शुभ्र भाग्न हमारो है॥

पंकज के प्रति उत्प्रेक्षा

सभी जानते हैं तेरा जन्म नीच कीच मे है
सभ्यता के नाते तुम्हें पकज पुकारते।
गाओ गुन कवियो के मान्यता दिलाई तुम्हें,
पुष्प सरताज बने जिनके अधार ते।
छाओं न गम्र क्रूर कठिन करो ना कर्म
धम को न त्यागो अरे भागो अपकार ते।
रवि की मिताई ते न होयगी भलाई कछू,
बच ना सकोगे मीत मीत के तुषार ते॥

मतवारे नैन

चतुर चुटीले चमकीले औ चुभीले चारु,
चाव चढे चचल चलाक चटकारे हैं।
लालची लुभीले लोल ललित लजीले लाल,
लाडले लडाके लहरी लोक लाज वारे हैं।
'मोहन' सुकवि सदा सरस सजीले सुखी,
समुचित शान्ति दा सयाने सुख सारे हैं।
मत्र मोहनी मे मानो महत मनोज्ञ एरी,
मैन मनवारे तेरे नैन मतवारे हैं॥

सवैया

शुचि रावरे प्रेम पयोनिधि की वह लोल अमोल हिलोरिनी है।
सब काम किलोल कलान भरी नग नागर मान मरोरनी है।
'कबि मोहन' विश्व विमोहनि है जन की मन आश बटोरनी है।
व्रज चन्द्र हो आप भले अरु वो मुख चन्द्र की चारु चकोरनी है॥

कुन्द कली कचनार कनेर कुमोदिनि सी कुसुमाकर सी।
कामद काम दुधा कमना कुल कल्पलता करुणाकर सी।

कोमल कंज मुखी कर कंज कविन्द कहैं कमला कर सी।
कोविद केलि कलान कढ़ी कमनीय कलत्र कलाधर सी ॥

१५१—नानिगराम:—ये जाति के ब्राह्मण और पं० शिवलाल के आत्मज हैं। इनका जन्म सवत् १९६६ वि० में हुआ। ये हिन्दी साहित्य समिति के पुराने कर्मचारी है। समिति के कवि सम्मेलनो में भाग लेने के कारण इनको काव्य सृजन की प्रेरणा मिली। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत है:—

निभाइये जू (सवैया)

अलि कै अपनो मन श्री पति के पद पद्म पुनीत लुभाइये जू।
वहि पीत पटा छवि छोरन की छहरानि में नैन चुभाइये जू।
सुख है जग में कवि नानिग कितौ जेहि लागि हियो भरमाइये जू।
कर लीने मनोरथ पूरे सबै अब आनंद कंद निभाइये जू ॥

बरसाय रही

छाय रही घिर के ये घटा महि मंडल पै घहराय रही।
डारत बूंद नही नभ सों निशि वासर त्रास दिखाय रही।
नानिग राम महान तपावत ताप कृपि कुम्हिलाय रही।
क्यों घनश्याम-सुधा-धर सों विष की वर्षा बरसाय रही ॥

१५२—जयशंकर चतुर्वेदी "जय":—आपका जन्म बयाना (भरतपुर) मे १७ मार्च सन् १९११ को हुआ। ये पं० भोजराज के सुपुत्र है। आपकी काव्य रचना की ओर प्रवृत्ति सन् ३२ से हुई। आपके चाचा शोभाराम चतुर्वेदी आपको समय समय पर काव्य सृजन की प्रेरणा देते रहते थे। पहले पहल इनकी तुकवन्दियों में हास्य-प्रधान रचनाए होती थी। शनैः २ विचारों मे परिवर्तन हुआ और ये सामयिक गम्भीर विषयों पर भी रचनाएं करने लगे। आप में निर्भीकता के साथ साथ एक मस्त मनमौजी पन है। भगवती विजया की तरग में आप कैसे भी गम्भीर वातावरण में हास्य रस का रग बाँध देते हैं। आपकी सुमधुर रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है:—

लाला की भैंस (कवित्त)

हुड़क उठी लाला ने भैंस एक मोल लई,
चिकनी चट्ट मोटी चारु चाल छवि न्यारी है।
बोंकि बोंकि बबकै सुनै जो स्वर बेंडका तो,
दुहने में करै गाफल बिचारी है।

यातें घृत दूध दही का विधि निकारें 'जय',
यही सोच भागी मति गई आज मारी है।
कहँ जाय लोगन सो दूध की न बात करो
गोबर करै भारी याते भैंस हमे प्यारी है॥
तारी जाय घरते लोग तागी दै हमी करें,
देखन मे याके एक आफत यह भारी है।
भारी घर वारी को उराहनो मिलै है 'जय',
भैंस को विचारी देत रोज रोज गारी है।
जाने ना अनारी दिन द्वै क मे हमारे यहाँ,
ईंधन कंट्रोल होय आँगिन अगारी है।
यासो कहो वासो नेंक गुस्सा कम खर्च करो,
गोबर करै भारी यासो भैंस हमे प्यारी है।

भगडी की अभिलाषा

मेरी तपस्या पर प्रसन्न जो हुए हो नाथ!,
दीजै वरदान खूब मौज मे छनी रहे।
शक्ति हू शरीर मे अपार होय दीन बन्धु!,
थारी इमरतीहू की आगे ही धरी रहे।
भूख दिन दूनी और रात चौगुनी ही होय,
पुआ पै पुअन की लगी पूरी झरी रहे।
ऐसी अभिलाष मेरी पूरी करो दीनानाथ,
ओडेसे सकोरा मे रबडी हू भरी रहै॥

भोजन प्रतियोगिता—विजयी

होड बदी लाला ने खाने की हमारे साथ,
बैठ गये खोलके मिठाई के पिटारे हैं॥
गरम इमरती कलाकन्द सुफेनी आदि,
चमचम रसगुल्ला खीर मोहन निकारे हैं।
मठरी मलाई मेवावाटी औ मक्खन बडे,
दहीवडे बडे बडे व्यजन हू न्यारे है।
विजया भवानी की कृपासो सब चाट गये,
दुहूँ भाँति लाला होड हारे विचारे हैं॥

लालाजी के पेट मे हवेली का निर्माण

कीचड सी गाढी भाँग गारे को जु काम करे,
चवनी कलाकन्द की ईंट बनी सात है।

कर कर चिनाई भीत ऊंची सी बनाई 'जय'
साँक कौ पटाबौ दै पूरी करी छात है।
गरम इमरती के झरोखे चहुँ ओर दिये,
जाली लगाबन हेतु पुआ ओर घात है।
भंगड़ी महाराज नेक मनमें बिचार करौ,
पेट में तुम्हारे ये हवेली चिनी जात है॥

गीत

कौन अपना है, पाराया कौन है ?
आजका युग-पात्र तो छल से भरा, वह घृणित अचार से कब कब डरा।
अब दुहाई न्याय की है वचना, साधु जीवन हायरे ! सपना बना।
चकितसा मानब विचारा मौन है ॥ कौन अपना……
नित्य परिवर्तन यहाँ का खेल है, नियति का उसमें अनौखा मेल है।
विवशता यद्यपि, तथापि विबेक है, और दृढता का सहारा एक है॥
भर रहा दस सेर जीता धौन है ॥ कौन अपना……
स्वप्न का आलोक चिर होता नही, गत हुआ फिर प्राप्त क्या होता कहीं।
सृजन चिर आलोक करना धर्म है, विज्ञ साधक का यही तो कर्म है॥
साधना की एक आशा मौन है ॥ कौन अपना……
दूर चलना है बड़ी मंजिल कडी, राहमें कंटक बनी माया अड़ी।
है न जल बिश्राम भोजन हर घड़ी, शीत, वर्षा घाम की सिर पर झड़ी॥
तदपि राही बीर ! वीर अविकल गौन है ॥ कौन अपना……

१५३—चम्पालाल 'मंजुल':—आपका जन्म लगभग १९११ ई० में भरतपुर के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। संयोगवश शैशव में ही इन्हें विद्याकला के केन्द्र छत्रपुर जाने का सुयोग मिल गया। छत्रपुर के तत्कालीन नरेश श्री विश्वनाथसिह जू देव के उदार आश्रय में रहकर इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। वैसे तो साहित्य के प्रति इनकी शैशव से ही अभिरुचि थी, किन्तु पं० श्यामबिहारी मिश्र (दीवान), पं० शुकदेवबिहारी मिश्र (दीवान), प० हरिप्रसाद (वियोगी हरि), प्रसिद्ध आलोचक लाला भगवानदीन तथा बाबू गुलाबराय एम० ए० आदि साहित्य मनीषियों का सम्पर्क पाकर वह साहित्यिक अभिरुचि अधिक बलवती हो गई। आपने तीन ग्रन्थों की रचना की है, जिनके नाम इस प्रकार हैः—(१) काव्येन्दु (२) अन्योक्ति माधुरी तथा (३) मंजुल शतक। इन पुस्तकों के अतिरिक्त शृङ्गार, वीर तथा भक्ति के सैकड़ों सरस सवैये और कवित्त है। (१) काव्येन्दु:—नायका भेद का ग्रन्थ है। इसे देखकर सन् १९३० में खजुराहो

नामक ऐतिहासिक स्थल पर एक बंगाली बहुल विद्वत् मंडल के सभापति श्री १०८ गोस्वामी दामोदरलाल षड्दर्शनाचार्य ने इनको 'कवि शेखर' की उपाधि प्रदान की। इसी अवसर पर जयपुर नरेश ने स्वर्ण पदक देकर इन्हें सम्मानित भी किया। (२) मंजुल शतक —एक ही समस्या पर विविध विषयों के १२७ सरस दोहों का एक संग्रह है। इसमें समस्या पूर्ति की चरम साधना स्पृहणीय है। इस पर स्वाध्याय सदन सोलन में स्वाध्याय के संस्थापक अमृत वागभट्टाचार्य द्वारा आपको १२५) का पुरस्कार मिला है। (३) अन्योक्ति माधुरी —इसमें २०० कुण्डलियों का संग्रह पुष्पों तथा अन्य वस्तुओं पर अन्योक्तियों के रूप में हुआ है। इसकी प्रत्येक अन्योक्ति चुटीली और प्रभावोत्पादक है। कवि की काव्य साधना का प्रौढ रूप इसमें पूर्णतया परिलक्षित होता है। भाडे की टैक्सी, ट्राम तथा ट्रक आदि अनेकों आधुनिक वस्तुओं की अन्योक्तियों द्वारा कवि इनमें अपने विनोदी स्वभाव का पूर्णरूपेण परिचय देता है।

कविवर मंजुल' एक रससिद्ध कवि हैं, आपकी शृङ्गारिक रचनाएँ अनुपम तल्लीनता लिये हुए हैं। अलंकारों की स्वाभाविक छटा विशेष चमत्कारिक है। आपके सवैयों के कहने का सरस ढंग श्रोताओं पर अपनी अमिट छाप छोड जाता है। मुक्तक कविता में जो स्वाभाविकता और सौन्दर्य होना चाहिये वह मंजुल कवि के दोहों में परम उत्कर्ष को पहुँच चुका है। इनके दोहों को पढने में हृदय कलिका थोडी देर के लिये खिले बिना नहीं रहती और मुख में सहसा वाह वाह निकल पडती है। इनकी भाषा सशक्त और भावानुकूल है। कल्पना की समाहार शक्ति के साथ साथ आपकी भाषा में समास शक्ति भी पाई जाती है, जिस कारण उनके मुक्तक बहुत ही सुन्दर एवं सफल बन पडे हैं। कहीं कहीं तो वे रस के छोटे २ छींटे में प्रतीत होते हैं। कविवर मंजुल का ब्रज भाषा और खडी बोली दोनों पर समान अधिकार है। इनकी भाषा में श्रोकर्म दोष कहीं भी दिखलाई नहीं पडता। ये वास्तव में एक उत्कृष्ट कवि हैं। इनकी सरस रचनाओं के उदाहरण देखिए —

कान्येन्दु में-ज्ञात नव योवना-लक्षण (दोहा)
यौवन आगम निज बदन, जान परत है जाय।
ताहि 'ज्ञात नव योवना' कह मंजुल कविराय ॥

यथा उदाहरण (सवैया)
दृग अंजन रंजन कैं मुख चन्द को, घूँघट ओट लुरान लगी।
कुच नूतन कंचुकि माँहि कसैं, विहँसैं मन मोद बढान लगी।
'कवि मंजुल' चाल भई गरुई, रति वात सुनें अनखान लगी।
लरकाई के खेल विहाय चली, दिन द्वै कहि तें सकुचान लगी ॥

यथा उदाहरण (दोहा)

चाले की चरचा चलत, चली लली सकुचाय।
अलि ओटक सुनि सुनि अमित, आनंद उर न समाय॥

कुलटा लक्षण

बहु पुरुसन सो हित करै, कामवती जो वाम।
तासों कुलटा कहत है, 'मंजुल' कवि मति धाम॥

यथा उदाहरण (सवैया)

मदमत्त गयंदन की गति सों, हरुवें हरुवें पग धारिये ना।
बिचकाय के आंगुरो आनन सों, पट घूंघट कों निरवारिये ना।
'कवि मजुल' भोंह सरासन सों, दृग तीच्छन तीर निकारिये ना।
चिक चीरकें चन्दमुखी, हँसके, अबिलोक बटोहिन मारिये ना॥

यथा उदाहरण (दोहा)

चितवत चहुं दिशि चलतमग, घूंघट पट निनवार।
नगर छैल लाखन हने, तरुनि नैन शर मार॥

मजुल शतक से-प्रेम वर्णन

ऊधौ ! कोउ कैसे सुनें, इतै जोग की वात।
प्रेम-प्रभा सों ज्ञान-तम, छिन छिन में छिन जात॥
हटकें हूँ माने न यह, मेरौ मन मृग-जात।
नेह वधिक मृदु गान सुनि, छिन छिन में छिन जात॥
हरि छबि-निधि लहरन परत, चलत नेह की वात।
लगर लाज-जहाज कौ, छिन छिन में छिन जात॥
हिय विहंग कुल कान के, उपबन उड़ नहिं पात।
नेह-वाज की झपट सो, छिन छिन में छिन जात॥

रूप वर्णन

झाँकि झाँकि खिरकी तरुनि, फिरकी लो फिर जात।
मनहुँ तड़ित घनसो निकसि, छिन छिन मे छिन जात॥
मन पट क्यों अंकित रहै, लोक वेद की वात।
तिय सुसमा सरि सलिल सों, छिन छिन में छिन जात॥

नेत्र वर्णन

दृग दोउ चितचोरी करत, पर कुच पकरे जात।
चोरन ढिंग वस साहु सुख, छिन छिन में छिन जात॥
नैन भेदिया चपल चल, उर-पुर पैठत जात।
गूढ भेद मन-नृपति कौ, छिन छिन में छिन जात॥

नैन-नकव जन उर-सदन, भेदत दुरि दिन रात।
धीर, धरम-धन वरन को, छिन छिन मे छिन जात॥

बेसर बखान

बेसर अधरन दुलि करत रसवारी दिन रात।
तउ अधरा रस सजन सो, छिन छिन मे छिन जात॥
उर बिधाय नित मुकत ह, पर उर बिध जिध जात।
बेसर सग लह सुजन गुन, छिन छिन मे छिन जात॥

विविध

अभिनव उबमौहि उरज, उघरि करें उतपात।
या सो कचुलि मिसि मुकति, छिन छिन मे छिन जात॥
कटि गुरुता इमि कुचन सो, बर बस चोरी जात।
मनहुँ ठगन सो कृपन धन छिन छिन मे छिन जात॥
पायजेब पायन परसि, पाय जेब इतरात।
पै धुनि गुन विपरीत सो छिन छिन मे छिन जात॥
झलकत जोबन झलक तन, सिसुता भाजी जात।
जिमि सुराज लहि लोक दुख, छिन छिन मे छिन जात॥
बुध जन ढिग बस इन्दिरा, नैन न ठिक ठहरात।
जिमि सुकविन सो मूढ नृप, छिन छिन मे छिन जात॥
जो कृपा न नेकहु करे, वहे कृपनि कहात।
रिपु मुख दुति वा दुति मिलत, छिन छिन मे छिन जात॥
मेरो तेरी करत ही, है आयो परभात।
हरि भजवे की बावरे !, छिन छिन मे छिन जात॥

अन्योक्ति माधुरी (कुडलिया)

एरे चातक चपल चल वाही नेह निकेत।
जहाँ सदा विहरत रहै, घन दामिनी समेत॥
घन दामिनी समेत, सतत रस-प्रभा पसारे।
स्वाँति नखत के बिना, स्वाँति घट अविरल ढारै।
'मञ्जुल जीवन जगै, पाय जीवन जिहि नेरे।
मान सिखावन मोर, चपल चल चातक एरे॥
यह भारे की टैक्सी, नहि अनुगामिन कार।
रे पथी ! कैसे कर, यासो मजिल पार॥
यासो मजिल पार करन की क्यो हठ ठानै।
ठौर ठौर पै ठहर नये पथी उर आनै।

कह "कवि मञ्जुल" चलै न इत कछु गुन वारे की।
बिन धन करै न प्रीत टैक्सी यह भारे की॥
जैयो ब्रज कमायवे, अरे बनिक वा देस।
रहै न टोटे कौ जहाँ, रंचक हू परवेस।
रंचक हू परवेस पाय, सत लोगन माही।
बेचहू मोल अमोल माल जेतौ तो पाहीं।
"मञ्जुल" विभव बढ़ाय, सतत साँचौ सुख पैयो।
बहुरि न आवागमन होय, ब्रनके इमि जैयो॥

रे चन्दन! तेरौ कहा, आदर करे किरात।
देत सदा सठ दुसह दुख, काट काट तुअ गात।
काट काट तुअ गात, बेच कौड़िन में आवे।
काठ काठ सब एक, भेद कछु समझु न पावें।
कह 'कवि मंजुल' रहै न, नित घिरि घेरि बिपति घन।
देखि दिनन कौ फेर, अरे चुप रह रे चन्दन॥

आवत पाबस ही बढ्यौ, गुलाबाँस तो बंस।
रे छलिया छल रूप धरि, छले सुमन अवतंस॥
छले सुमन अवतंस, प्रसंसित रहे न कोई।
अपनी आत्र दिखाय, आब सबही की खोई।
'मजुल' वैभव हेरि हेरि, हिय में हरसावत।
अरे! बोल कित जाय, बहुरि सरदागम आवत॥

अभिलाषा (सवैया)

क्षण एक भी प्रेम की साधना मे, न वियोग का अन्तर आता रहै।
चिर सिञ्चित 'मजुल' भावना का, तरु फूला फला सरसाता रहै।
शुचि भक्ति से जीवन जाग्रत हो, इस जीवन का फल पाता रहै।
मन-भृङ्ग सदा हृदयेश्वर के, पद-पङ्कज पै मडराता रहै॥

किसी जन्म में भूल न भूलूँ तुम्हें, जन जान दया दरसाते रहो।
'कवि मंजुल' नेह की लौनी लता, उर अन्तर में उपजाते रहो।
चरणों से वियोग न हो क्षण को, इतना उर धीर धराते रहो।
उस पंथ की धूल बनाना मुझे, जिस पंथ से प्रीतम आते रहो॥

१५४—शिवचरणलाल:— आपका जन्म १२ जून १९१२ ई० में भरतपुर निवासी पं० मुकुन्दराम के यहाँ हुआ। आप यहां के प्रसिद्ध कवि कुलशेखर

के शिष्य है। आपका उपनाम "महेश" है। इनका बृजभाषा पर स्पृहणीय अधिकार है। शृङ्गार रस के कवित्त और सवैयो मे आपकी भाषा की सजावट अत्यन्त ही सरस एव सुन्दर होती है। भावो का चित्रण एक सरस सजीवता उत्पन्न करता है। शब्दालङ्कारो का प्रयोग तो बडे ही सुन्दर एवम् चमत्कृत ढग से हुआ है, सभी रचनाए अति मधुर एव हृदयस्पर्शी है। इनकी रचनाश्रो मे भाषा शाकर्य का दोष देखने मे नहीं आता। आपकी सरस रचनाओ के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

नैन-वर्णन (सवैया)

तब नैनन नैन स्नेह कियौ, अब नैनन नैन दुरावत हैं।
निस-बासर नैन रहे टक लाग, न नैन कहूँ लखि पावत हैं।
इन नैनन चैन परै न 'महेश' सु मोहन को अकुलावत हैं।
विलखावत हैं कलपावत हैं, नित आँसुन सो भरि आवत हैं॥

मद हसै तिरछौंही चितै, चलि चाल गयन्दन के मुख मोरै।
खजन गजन सी अखिया लखि छैलन के मन मैन मरोरै।
नूपुर की झनकार करै, इतरात 'महेश' चली अनि भोरै।
सैन चलाय नचावत लक यो, कामिन के चित कामिन चोरै॥

शुक्लाभिसारिका (कवित्त)

चोकन चकित चली चाँदनी मे चन्दमुखी,
चितै चितै चारो ओर चोरीसी करत जात।
पायन के रग रगराती रगे रग भूमि,
अरुनाई अग मुख अबुज दरत जात।
भूषन चमक चारु चाँदी से चमकै चीर,
मुरकि 'महेश' मन मोहने हरत जात।
हीरन के हार हिय ढुरत अमद द्युति,
बारन ते मुक्ता हजारन झरत जात॥

कृष्णाभिसारिका

श्याम सरस सारी तैसी कचुकी सम्हारी कारी,
मृग मद लेपन सो अग छवि छुपि जात।
भूषन दमक दुति दाब पट अम्बरी सो,
खरकन पात त्यो उलूकन डरत जात।
सौरभ सुगध पाय अबली अलि-वृन्दन की
घेरत सिमट छाया छत्र सी करत जात।

कीरति कुमरि कारे करत मनोरथन,
मुदित 'महेश' कारे कान्ह सो मिलन जात ॥

मॉग-वर्णन

बैनी पीठ ढुरत लुरत यों नितम्बन पै,
कचन मिला पै मनु पन्नगी सुहाई है।
मनिन जटिन मजु बदनी यों राजै भाल,
राहु के डरन चौकी चन्द्रमा लगाई है।
सुकवि 'महेश' नील कचुकी उरोजन पै,
सम्पुट सरोज पै मनोज छवि छाई है।
पाटिन के बीच मॉग सेंदुर यों सोभित है,
मानो भानुजा मे धार सारदा सुहाई है ॥

फाग-वर्णन

डारैगी कमोरी भरि केसर सुरग रंग,
धमक धमार गाय सोर चहुँ पारैगी।
पारैगी सुपाटी सीस भाल मे लगाय वेंदी,
अजन अजाय तन चूंदरी सुधारैंगी।
धारैगी सुकचुकी सम्हार कटि लहगा कसि,
रावरे 'महेश' गुन गौरव बगारैगी।
मारैगी गुमान मूठि मलिके गुलाल लाल,
देखत ही लाल तोहि लाल कर डारैगी ॥

बसन्त पचमी मे नटी का रूपक

फूले फूल कलित दुकूल बहु रगन के,
गुजरत भौर त्यों मजीर भनकंत की।
त्रिविध समीर बीन बॉसुरी सितार बाजै,
होत कल गान कोकिलान किलकंतकी।
सुकवि 'महेश' चॉटी चातक मृदग देत,
भूमे आम बौर सो लचक लौनो लंक की।
आनन गुलाब औ सुबास मई सौरभ सो,
नाचत नटीलों आवै पचमी बसंत की ॥'

१५५—रावजी यदुराजसिंह:—आपका जन्म रावराजा रघुनाथसिंह के यहा २९ नवम्बर सन् १९१३ ई० को हुआ। आपको काव्य प्रतिभा विरासत रूप मे मिली क्यों कि आपके पिता रावराजा रघुनाथसिह के यहां अनेक कवियों का

आवागमन बना रहता था तथा अनेको कवियो को आपसे स्थायी वृत्तिया भी मिलती थी। उनके सत्सग का प्रभाव आपके शिशु हृदय मे कविरूप मे आविर्भूत हो गया। प्राचीन कवियो के काव्य-ग्रन्थो का इन्होंने गम्भीरतम अध्ययन किया है। उसी के परिणाम-स्वरूप इनकी सर्वाधिक रचनाएँ व्रजभाषा प्रधान हैं। आपकी रचनाओ का एक मात्र लक्ष्य श्रीराधाकृष्ण की मधुर लीलाओ का वर्णन है। आपकी शृङ्गार रस सम्बन्धी रचनाएँ अत्यधिक श्रुति मधुर हैं। कवियो के सम्पर्क से पिङ्गल का ज्ञान भी आपको प्रचुर मात्रा मे है, इसी कारण पिङ्गल की दृष्टि से इनकी रचनाएँ दोष-मुक्त हैं। इन्होंने अपनी रचनाओ मे 'रसिक छैल' उपनाम रक्खा है। आपका व्रज-भाषा तथा खडी बोली दोनो पर समान अधिकार है। अनुप्रासो की स्वाभाविक एव सरस छटा श्रोताओ के हृदय-पटल पर एक अमिट छाप छोड जाती है। इन्होंने राधाकृष्ण सम्बन्धी अनेको छोटी बडी लीलाए लिखी हैं, इनके अतिरिक्त फुटकर कवित्त और सवैया भी प्रचुर मात्रा मे लिखे हैं। रसास्वादन के लिये आपकी रचनाओ के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

वसन्त-वर्णन (घनाक्षरी)

पीरे आभूसन औ वसन्ती ही वसन नीके,
पीरो ही मृदग लै वसन्त राग गावैरी ।
पीरो सुरगी रग कनक पिचकारि डारि,
पीरोही गुलाल उडि अकास बीच छावैरी ।
'रसिक छैल' पीरी सेज चढिकैं पिया प्यारो,
पीरी परी मोहि आहि हृदय लगावैरी ।
काम-जुर जारैं तन तपन बुझावैं सखी,
ऐसे हो साज तब वसन्त मन भावैरी ॥

रूप-वर्णन

चचल चितौन सो चटाक चित चोर चोर,
चन्द्रमुखी चोखी चन्द्रहास सी चलावती ।
हेर हेर हँसन सु हियरा हिरानो हाय,
हटक हठीली हाथ होठन हलावती ।
रसिक छैल" राजै रगीली रली रूप रासि,
रीझे रिझवारन को रोकत रलावती ।
जगमग जोति जुरी जोवन के जोर जाकी,
जर जर कीनो जग जरन जलावती ॥

लक्षिता—नायिका

सरकी भाल वेंदी नैन कैसे उनीदे आज,
छत है कपोल बढ़ी लालिमा अधर की।
धरकी है छाती कुच कोर कढ़ी आँगी खुली,
काँपत है गात महदी छूटी क्यों कर की।
करकीं हरी चूरी फिरें अति घबरानी सी,
ढीले सिगार सेज साजी किन सुघर की।
घरकी न सुधि बुधि रही है "रसिक छैल",
रात कित जागी लट खूट गई सरकी॥

ग्रीष्म की आवश्यकता

शीतल पवन चालै चन्दन विजन हालै,
कंठ बीच मुक्त—माल टाटी नये खसकी।
बरफ कौ पानी पुष्प—सेज सुखदानी अति,
दासी हू सुजानी करे बात प्रेम जसकी।
"रसिक छैल" गधन सुवासित भई गैल,
ऊंचे महल तिनपै जोति खिली ससिकी।
अतर गुलाब कौ सिंचाव चहुँ ओर चाय,
चारु ऐसे हों साज सुघर नारि भरी रसकी॥

विरहनी ब्रजाङ्गना (सवैया)

हरिसें कहियो विनती हमरी, सब अंग जरें विरहाझरसें।
झर सें इत मेह छहै दुखिया, मन 'छैल' न प्रीत करैं परसें।
पर सें मन मूरत को तुमरी, इक नेह लहैं अपने वरसें।
वरसें कव प्रेम-घटा हम पै लगि अंक हमें जियमें हरसें॥

कविकी अभिलाषा

अपना पथ है दोही क्षण का, मै किससे क्या पहचान करू ?
जिनसे मेरा कुछ काम नहीं, वे काम पूछते है मेरा।
जिनको नहि अपना नाम याद, वे नाम पूछते हैं मेरा।
फिर उनको परिचय देकर के क्यों परिचयका अपमान करू ?

जिस जीवन मे साहित्य नही, उस जीवन मे क्या रक्खा है ?
जिस जीवन मे हृदय राग नही, उस जीवन मे क्या रक्खा है ?
फिर ऐसे नीरस जीवन पर, मैं क्यो मन मे अभिमान करूँ ?
प्रभु से है विनय यही मेरी, जब अन्त समय मेरा आवे।
कवि वृन्द सदा कुछ कहता हो और शान्ति चतुर्दिक छाजावे।
हो गुंजित स्वर मे 'कौल' से अम्बर, ऐसे मे मैं प्रस्थान करूँ॥

१५६–मदनलाल गुप्त "अग्र"—आप भरतपुर निवासी लाला कैलाशचन्द बजाज के आत्मज और जाति के अग्रवाल वैश्य है। इन्होने हिन्दी भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की है। इनका जन्म भादो सुदी ५ सवत् १९७० को हुआ, और आपका कविता-काल स० १९८६ से आरम्भ होता है। आप एक कर्मठ व्यक्ति है और अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार समझते है। समिति के नवीन भवन के निर्माण मे आपका स्पृहणीय योग रहा है। इनकी बाल्यकाल से ही हिन्दी साहित्य समिति और हिन्दी के प्रति विशेष अनुराग है। गत तीन वर्षो मे आप समिति के प्रधान मत्री पद पर कार्य कर रहे है और इससे पूर्व उप-मत्री तथा उप-प्रधान पदो पर भी काम कर चुके है। आपकी कविता के प्रति बडी अभिरुचि है। आपकी अनेक सरस रचनाए समय २ पर मातृभूमि, लोक-जीवन, माहेश्वरी, हिन्दू-पच, जाटवीर, अग्रवाल और मनिस आदि पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रही है। आपकी रचनाओ के उदाहरण देखिए—

पत राखन हारो

कुरु राज सभा बिच द्रौपदि की, पट खैच सको न दुशासन हारो।
तज वाहन पायन धाय परो, छिन मे गज को सब सकट टारो।
मृगराज दुबाय सको न जबै, सिस कौतुक छूगरि गो गिर धारो।
नद नन्दन सो नहि 'अग्र' ! लखो, जग दीनन की पत राखन हारो॥

कृतघ्न मधुकर

परम रम्य आराम जिसे ह भ्रमर न तू तजता दिन रैन।
रग-बिरगे मधुरस पीकर पुष्पो पर करता है चैन॥
सुन्दर बन कर बैठा है गाती बना फिरे मन वाला सा।
दिखता है छल छिद्र हीन क्या ? भोला भाला भाला सा॥
किन्तु न तेरे भावो मे है लेश मात्र सच्चाई का।
कौने कौने मे बसता है तेरी कालापनाई का॥

वही वाटिका होगी इक दिन वही सरोवर शीतल नीर ।
किन्तु भूलकर भी क्या ? मधुकर फटकोगे तुम उसके तीर ॥
प्यार तभी तक है वस जव तक, मधु मकरन्द सहित है फूल ।
अरे स्वार्थी ! और कृतघ्नी, तेरी इस बुद्धि पर धूल ॥
इतने पर जो तुम्हें वैठने देते उन बृक्षों को धन्य ।
पास बिठाने योग्य नहीं है वरना तू है नीच जघन्य ॥

१५७—श्रीनिवास ब्रह्मचारी:—आपका जन्म दीग (जिला भरतपुर) के प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में २८ दिसम्बर सन् १९१४ को हुआ। अपने पूर्वजों की भाँति आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करके आप सन् १९३५ से अब तक निरंतर जनता की सेवा करते चले आ रहे है। सन् १९४१ से इनको अभिरुचि कविता पढ़ने एवम् लिखने की ओर अग्रसर होने लगी। प्रारभ से ही आपका झुकाव वीर रस की कविताओ की ओर अधिक रहा है। ब्रह्मचारीजो वड़े सरस और भावुक कवि हैं। इनकी भाषा भावानुकूल मधुर एवम् सरल है। उदाहरण देखिए:—

॥ विषमता ॥

यह विषम वेल फूली जगमें, प्रति दिन ही फलती जाती है।
दीनों के वक्षस्थल पर ये, काँटों का जाल विछाती है ॥१॥

उत वैभव शाली भवन वने, रुचि पचि कर अधिक सजाये हैं।
सोने के कलश शिखर पर धर शशि मडल भी शर्माये हैं ॥
फटिक शिला के चौक वने, वहु रंगन सो भर वाये है।
है स्वर्ग स्थल इस मृत्यु लोक में, जग मग जोति जगाये है ॥
इनमें रहने वालों को नहि. फिर याद किसी की आती है। यह विषम वेल ॥१॥

इत वनी झोंपड़ी छोटी सी, मिट्टी के ढेलों पर छाई।
एक केड़ी मेड़ी हथगढ़ सी, टूटी है इसमें चरपाई ॥
इसमें मिट्टी का दीप जले, नहि मिटे अधेरा दुखदाई।
एक भूखे नगे मानव को येही ढक लेती है भाई ॥
युग युग कीं विषम अवस्था का सच्चा इतिहास बताती है ।यह विषम॥२॥

उतमें भारी हैं कारवार, अरबों खरवों का माल रहै।
मील और गोदामों का, धरती पर फैला जाल रहै ॥
उड़ते इनके ही वायुयान, कारों का कारोवार रहै।
मानव कहलाने का केवल, इनको ही अधिकार रहै ॥
इतना अपार वैभव पाकर, नीयत चोरी मे जाती है। यह विषम वेल ॥३॥

१५६–शिवदत्त शर्मा एम० ए० –आपका जन्म भरतपुर राज्यान्तर्गत नगर कस्बे मे एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल मे ३० जनवरी सन् १६१८ ई० को हुआ। आपने आगरा विश्व विद्यालय से एम० ए० तथा एल० एल० बी० की परीक्षाए उत्तीर्ण की और इनके पश्चात् साहित्य सम्मेलन प्रयाग मे साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त की। आपकी बाल्य-काल मे ही काव्य के प्रति बडी अभिरुचि है। विद्याध्ययन के अनन्तर यह अभिरुचि और भी अधिक बलवती होती चली गई। प्रौढ एवम् बाल साहित्य द्वारा तो आपने हिन्दी की सेवा की ही है किन्तु विकास साहित्य की श्री वृद्धि करके आपने अपनी अप्रतिम प्रतिभा का विशेष परिचय दिया है। आपके लेख, समालोचनाएँ कहानिया, गद्यगीत तथा कविताए सरस्वती, साधना, कमला, साहित्य सदेश और बानर आदि मासिक पत्रो मे प्रकाशित होते रहते हैं। आपकी लिखी हुई चार पुस्तकें प्रकाशित भी हो चुकी हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं —(१) बृजेन्द्र वैभव, (२) यमुने, (३) जै चम्बल, और (४) राजस्थान लहर। शर्माजी गद्य और पद्य दोनो पर समान अधिकार रखते है। परिष्कृत एवम् परिमार्जित होने के साथ २ आपकी भाषा सर्वत्र भावानुकूल है। नि सन्देह आप एक कुशल, अभ्यस्त एवम् प्रतिभा–सम्पन्न कवि हैं। आपकी रचनाओ के देखने में प्रतीत होता है कि अतीत मे आपकी विचार धारा प्रगतिवादी साहित्य की ओर भी प्रवाहित हुई थी। 'मजदूर' नामक कविता आपके इसी दृष्टि कोण की प्रतीक है। आपकी सरस रचनाओ के उदाहरण प्रस्तुत हैं —

बस एक गीत

बस एक गीत, बस एक गीत !
लिख दो कवि भरकर अपना उर।
यह व्यथित व्यथा क्रन्दन आतुर।
जिसमे प्राणो की हार–जीत॥
बस एक गीत, बस एक गीत !
खुल जाँय ग्र थियाँ उलझन की।
बँध जाँय परस्पर जन जन की।
भोली भाली भावनातीत॥
बस एक गीत, बस एक गीत !
कोई न किसी से द्वेष करे।
विकृत अपना उद्देश्य करे।
होवे पुनीत निज मनोतीत॥
बस एक गीत, बस एक गीत !

वृजभाषा—मंजरी

(१)

उषा सुन्दरी ने दियौ, नव शिशु रवि उपजाय
गाय गीत विहगावली, मुकता लता लुटाय

(२)

मधुबाला कलि प्रिया ने, प्यालौ धरयौ भराय
दूरागत थाम्यौ अमित, रवि पिय पिय पिय जाय

(३)

भरत जोत जागरन की, करत अनय विध्वंस
उतरत आवत अवनि पर, सुर गंगा कौ हंस

(४)

मीत भए केलिक विहग, गा मधु मधु संगीत
को सुनिहै अब विटप वर, यह पतझर कौ गीत

(५)

लुट्यौ विपिन सिंगार यह, छुट्यौ बसंत विहार
विन पालें पालें परयौ, अलि कलि के पतझार

(६)

बसन छुटाए छोह तें, परची तपनि अटूट
ग्रीषम कुल ललतान की, लीन्ही लाजहु लूट

(७)

इतरावत काके बलन, काम अनय चहुं कोद
ग्रीषम ! सूरज सखाहू, छिपिहै वदरी गोद

(८)

कैसे गाऊं और का हौ हारी हरबार
पीतम तेरेइ तार में, अरुझे तन्त्री तार

(९)

किमि चाल्यौ ? कर ना कंप्यौ, 'नाँही' लिखत निशंक
गयौ न डस क्यौं कागदै, अरी लेखनी डंक

(१०)

अत्याचार हिमंत कौ, सकी न प्रकृति बिलोक
डार्यौ परदा कुहर कौ, छयौ धुंआ सो सोक

(११)

का उजियारौ लै करूं, जीय जरावन हार
अंधियारौ घनश्याम की, सुरत करावन हार

थी रत्नदीप की ज्वालशिखा सी
तृष्णा जलती माझ प्रान
वह रीझ गया अप्सरा रूपसी
रंभा का लावण्य देख
भाया न उसे जग मे कुछ भी
खिच गई भुवन मे ,वही रेख

भर आह समुज्वल प्राङ्गण मे
वह रहा घूमता विकल प्राण
मलयानिल मे से आता था
रभा तन का ही गंध-घ्राण
तब सालस लालस हो अधीर
वह चला खोजने उसे, भूल
रे भूल गया वह सकल विश्व
सुधि ततु पकड ज्यो गया भूल ॥

रभा संध्या मे चली, देख चमत्कृत भूमि,
पवन विलोडित लडखडा गिरा आज था झूम।
वह सौंदर्य कि ज्वालामुखि की तृष्णा सुन्दर
नील गगन की पृष्ठ भूमि पर स्वर्णिम मनहर।
भुवन मोहिनी रूप सोभिनी चली अचानक
सृष्टि काव्य का सूक्ष्म रुप वह मधुर कथानक,
देखा त्रिभुवन अंकह स्वास ले झूमा झूमा
यौवन की वह अपरिमेय गाथा ले सूना।
किया रूप निर्माण विधाता ने सुख भरने
किंतु स्वय वह दाह बना, ज्वाला सी भरने
पुण्डरीक के साथ उगी दो कल्हर कलियाँ
स्वर्ण मृणाल झूलते धीरे भर नव छवियाँ,
रक्त कमल ये पुलक रहे, पल्लव चलदल थे
झीने श्वेत वसन मे सुन्दरि अंग मचलते,
बोला नूपुर एक सृष्टि ने शीश झुकाया
मुस्काई पल एक कि सबने वन्दन गाया
स्वय काम ने झुक चरणो मे लाली रग दी
रति ने उस लावण्यमयी मे लज्जा भर दी।

तब कॉपी वह सृष्टि मेघ में सौदामिनि सी
त्रिभुवन कसका देख देख कर चिर मोहिनिसी,
मुस्काई जब दशन प्रभा से, ज्योति सिक्त सी
कुंद कुंद बन गई सृष्टि सत्ता विमुक्त सी।
जिधर नयन चल गये हुआ जड जंगम सहसा
पग धरते ही काम हो गया मूर्छित अकुला
वाणी हुई अवाक् कि विधिना सर्जन भूला
यमने रोकी मृत्यु, फूल जीवन का फूला।
सिधु तरंगिन हुआ श्वास पर उठते गिरते,
कुच युग की स्पर्धा मे उर्म्मिजाल से उठते
अगजग व्यापी गंध घ्राण पर तृप्त नही था
जला रहा था रूप, किंतु वह दृप्त नही था।
किंतु रूप वह देखकर नल कूवर नत शीश
छिपा नही अपनी सका मनमे उठती टीश।

१६१–विश्वबन्धु शास्त्री.–आपका जन्म २५ अप्रैल सन् १९२४ को अलीगढ़ जिले के उखलाना नामक ग्राम मे हुआ। आपके पिता का नाम श्री चुन्नीलाल आर्य था। इन्होंने श्री विरजानन्द साधु आश्रम अलीगढ़, गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन तथा वाराणसी विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर इन्होंने पंजाब और भरतपुर के कई विद्यालयो में आचार्य पद पर कार्य किया। सन् १९४९ मे आप भरतपुर पधारे और तब से अब तक यही पर निवास कर रहे है। आपने लगभग २०० रचनाएँ सृजन की है, जो सभी सामाजिक अथवा राष्ट्रीय विषयों पर है। आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुयायी होने के कारण आप विभिन्न प्रान्तो में आर्य समाज का प्रचार करते रहते रहते है। शास्त्रीजी उच्च कोटि के कवि, वक्ता एवम् दार्शनिक है। आपके तर्क युक्त ओजस्वी भाषण बडे ही सारगर्भित एवम् अतीव प्रभावोत्पादक होते है। अभ्यस्त और निपुण कवि होने के कारण आपका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार है। आपकी सरस रचनाओं के उदाहरण देखिए—

॥ मै तू और वह ॥

मै अधिक पास, वह अधिक दूर, दोनो तू मै ही लीयमान।
मै अनातीत का रूप और वह भूतकाल, तू वर्तमान।
तू के युग में सत्ता मै वह 'तू' मे हम दोनों भासमान।
है सृष्टि पूर्व्व 'मैं' और अन्त'वह'मध्य तत्व 'तू' का विधान।

मै का स्तर, इन्द्रिय से अगम्य, वह का स्वरूप शून्यायमान।
तू के घेरे मे आ दोनो, दोनो ही हो जाते-प्रमाण।
मैं वन जाता 'तू'-'तू वह' तव, 'वह' सर्व्वगम्य है 'अह' रूप।
वह वन जाता 'तू' 'तू मैं' तब, 'मैं' सूक्ष्म भूत 'वह' का स्वरूप।
'मैं वह मे' 'वह मैं' मे आकर, दोनो हो जाते साम्यप्राण।
है अनिर्वाच्य सर्व्वोच्च गान।

दिवाली

दिवाली मनाने चले हो, सुखी-गीत-गाने चले हो।
घरो को सजाने चले हो, सुधा-घर बसाने चले हो॥
नही ध्यान तुमको किसी का,
नही ज्ञान तुमको किसी का।
नही मान तुमको किसी का,
नही भान तुमको किसो का।
दिवाली मनाने चले हो, सुखी-गीत गाने चले हो।
घरो को सजाने चले हो, सुधा-घर बसाने चले हो॥
गगन छत्त जिनकी निराली,
तनी चाँदनी तार वाली।
दिशाएँ चतुष्कोण जिनकी,
शयन-सेज है भूमि खाली।
उन्हे यह दिखाने चले हो उन्हे यह सिखाने चले हो।
उन्हे लक्ष्य करके हसी का, अहा! मुस्कराने चले हो॥
न तन टक सकें ये विचारे,
न मन रख सकें ये दुलारे।
न इनकी कोई शेष इच्छा,
स्व-इच्छा मे स्वयमेव हारे।
उन्हे तुम मनाने चले हो, उन्हें तुम चिढाने चले हो।
बढाने को दुख दर्द उनका, उन्हे तुम दुखाने चले हो॥
तडपते हैं बच्चे ठिठुर कर
काट देते हैं दिन तो सिकुडकर।
भूख से पीठ मे पेट सटकर,
हो गये एक, दोनो सिमटकर।
तुम उन्हें तडपडाते चले हो, तुम उन्हें फाड खाने चाले हो।
सिसकती मनुजता को सचमुच, घात कर, आज ढाने चले हो॥

नही क्या चिरन्तन के शिशु ये,
न शूकर या कूकर से पशु ये।
न सौहार्द्द इनसे तुम्हारा—
भक्ति में वह सके नाँहि अंसुये।
धन दिये पर वहाने चले हो, घर में लक्ष्मी वुलाने चले हो।
लक्ष्मि-स्वामी श्रमिक को न जाना, व्यर्थ में जगमगाने चले हो॥

चमक है पुम्हारे घरों पर,
चमक है तुम्हारे दरों पर।
चमकते है चेहरे तुम्हारे,
चमक नारि के जेवरों पर॥
क्रूरता को मनाने चले हो, शूरता को भगाने चले हो।
हड्डियाँ ऋषि दधीची की देखो,आज तुम आजमाने चले हो॥

जान कर आँख मूंदो न भाई,
आ रही क्रान्ति, देखो न आई।
दियों की नई रोशनी में—
न दे तल-अंधेरा दिखाई।

अन्तरात्मा सताने चले हो, धर्म-ढाँचा मिटाने चले हो।
नेह भर मृतिका दीपकों मे, नेह दिल से भुलाने चले हो॥
दिवाली मनाने चले हो, सुखी-गीत गाने चले हो।
घरों को सजाने चले हो, सुधा-घर बसाने चले हो॥

१६२—तुलसीराम चतुर्वेदी:—आपका जन्म वैशाख कृष्णा २ सम्वत् १९८२ को भरतपुर में हुआ। यहाँ के प्रसिद्ध कवि जयशंकर चतुर्वेदी के आप कनिष्ट भ्राता है। १९४३ में स्थानीय कालेज से एफ० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप दिल्ली चले गये और वहां अर्जन और अध्ययन दोनों साथ साथ करने लगे। प्रारम्भ में आपने रिजर्व वेंक में और तत्पश्चात् राशनिग विभाग में काम किया। इसी बीच आपने पंजाव विश्वविद्यालय से क्रमशः प्रभाकर एवं वी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्ही दिनों आप पत्रकारिता के क्षेत्र में आगये। 'विश्वमित्र' दैनिक नई दिल्ली में काम करते हुए आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से १९५२ में हिन्दी एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी समय दिल्ली में नया दैनिक पत्र "जन सत्ता" आरम्भ हुआ और आप उसके सम्पादकीय विभाग में चले गये। छात्र-जीवन में ही साहित्यिकों के सम्पर्क के कारण साहित्य की ओर आपकी

विशेष रुचि हो गई थी। आपके सहपाठी स्वर्गीय इन्दुभूषण शर्मा के साथ आपकी साहित्य साधना अनवरत रूप से चलती रहती थी।

प्रधान रूप से तो आप राष्ट्रीय कविताएँ किया करते हैं, किन्तु भरतपुर के शृंगार रस के प्रसिद्ध कवि चम्पालाल 'मजुल' के शिष्य होने के कारण शृंगारिक रचनाएँ भी बडे चाव से करते हैं। आपके कोकिल कण्ठ से सवैयों की कल-कूक बडी प्यारी लगती है। स्वयं मजुलजी, जिन्होंने प्रारम्भ में उन्हें सवैया कहना सिखाया कभी कभी उनसे सवैया सुनते सुनते मग्न होकर कह उठते हैं—"उस्ताद तुलसीराम, तुमकू सवैया कहबो सिखायो तो हमने पर अब ऐसी मन में आवै है कि तुमसे हम सीख लय"। इनकी कृतियों के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

मानव (सवैया)

जिसने कभी वन्दिनी मा की स्वतन्त्रता नाथ का प्याला लिया न पिया।
जिसने अधिकार की साधना में, अधिकार का त्याग किया न किया।
'तुलसी' जिसने कभी डूबते को, तिनके का सहारा दिया न दिया।
वह मानव मानवता के लिए, किसी देश में आकर जिया न जिया॥

गायक

जिसने रस हीन हृदय को कभी, रस धार से पूर्ण किया न किया।
जिसने शिथिलाङ्ग में रागिनी से, नव रक्त-प्रवाह किया न किया।
"तुलसी" जिसने मुर्दा बने देश को, जीवन दान दिया न दिया।
उस गायक ने स्वर साधना में, प्रतियोग किसी से किया न किया॥

वारिद

जिसने जल-हीन सरो में तृषातुर, मीन का त्राण किया न किया।
सदा जोहते बाट किसान के खेत का, सिञ्चित जाके किया न किया।
जिसने नभ में घिर के कवि को, कविता का प्रसाद दिया न दिया।
उस वारिद ने बन-दानी महा, कभी किञ्चित दान दिया न दिया॥

'मरु के उर में सोई सरिता'

मरु के उर में सोई सरिता, झर झर कल कल रव क्या जाने?
जो अपने जीवन भर के सब, अरमान कुचलता मान रहा।
जिसका जीवन असफलता में, गति मय होते निष्प्राण रहा।
जिसके परिणाम निराशा, वह आशा आलिङ्गन क्या जाने?
जिसने शैशव से यौवन तक, पीड़ाओं का जग देखा हो।
जिसके ललाट में लिखी एक विकृत अभाव की रेखा हो।
वह जिसने दुख मय जग देखा वैभव सम्मृति को क्या जाने?

जिस उर-वीणा के छिन्न हुए, सब तार भिन्न सब ताल हुए।
सब तारो के अपनी डफली, अपने अपने ही राग हुए।
उस टूटी वीणा का कोई, फिर झंकृत करना क्या जाने ?
कितनी बरसाते आती है, घन घोर घुमड़ घिर आते हैं।
अवनी तल पर कितने घन-दल, जल वर्षायें कर जाते है।
नक्षत्र स्वांति के बिना किन्तु, चातक जल-वर्षण क्या जाने ?
जिसके जीवन का श्री गणेश, अभिशाप और चिन्ताएं हों।
जिसके वक्षस्थल पर लटकी, दुर्बलता की मालाऐं हों।
क्रन्दन जिसका सगीत बने, वह प्रणय-रागनी क्या जाने ?

शिवाजी की समाधि

अनि सफल साधना की प्रतीक, यह किसकी अमिट निशानी है ?
किस यश: काय की पत्थर के, अक्षर से लिखी कहानी है ?
प्रासादो के बल-वैभव से, जिसका वैभव गौरव महान,
वह कौन आज रच रहा यहां, विश्वम्भर का अन्तिम बिधान ?
कितनी चिर निद्रा मे सोया, ले सका न अबतक अगड़ाई।
रे जग के कवि क्या समझेगा, उसके अन्तर की गहराई।
यौवन उत्ताल तरगे ले, जब एक दिवस था फूट पड़ा।
यह महाराष्ट्र का राष्ट्र पथिक सब तोड़ नियंत्रण छूट पड़ा।
अनियत्रित अविचल आतुर ये, जिस ओर गया जग झूम उठा।
मद मस्त हुआ मतवाला सा, अभिलाषाका मुख चूम उठा।
उसके इंगित पर एक एक, मरहठ्ठा पठ्ठा झूम गया।
वीरों ने अपने खडगों से, लिख दिया एक इतिहास नया।
लिख दिया कि बीरों के दिचार, साम्राज्य नष्ट कर देते हैं।
लिख दिया सँगठन से मनुष्य, सब शक्ति प्राप्त कर लेते हैं।
लिख दिया कि कटक चुनने पर, फूलों के कुंज विकसाते है।
लिखदिया कि संकट सहने पर, सुख-सौरभ स्वय विहसाते हैं।
लिख दिया कि मानव के प्रयास, निष्फल न कभी हो सकते है।
लिख दिया कि वीरों के प्रहार, असफल न कभी हो सकते है।
लिख दिया कि मन की कमजोरी, कायरता का पहला पद है।

१६३—इन्दु भूषण 'इन्दु' ... के सूर्यद्विज ब्राह्मण और
कुम्भनलाल के आत्मज है। इन ... कृष्णा ८ संवत् १६८

भरतपुर मे हुआ। बाल्य काल से ही इनको काव्य सृजन के प्रति विशेष रुचि थी। ये बडे प्रतिभा सम्पन्न और होनहार कवि थे, किंतु कराल काल ने इन्हे अल्पायु मे ही ग्रस लिया। इनकी सरस रचना प्रस्तुत है —

समस्या सुजान की

कोपते कढत काटे, क्रूर दुष्ट झुडन को।
कौशल दिखाय रण, रक्षा करे मान की।
काट काट रुडन को मुडन उडावे नभ।
भीत भये भाजे अरि चिन्ता करे जानकी।
देखकर कौतुक ले जुग्गिन समाज सग।
आई रण चण्डी प्यासी शत्रु रक्त पान की।
थर थर काँपी जाहि लखि के पठान सेन।
काल जीभ तुल्य खडग ऐसी हो सुजान की॥

कवित्त

कोऊ तो रहै है मस्त पढन लिखन माहि,
कोऊ निज गृहस्थ के काज मे ग्रस्यो रहै।
जात है बगीची कोऊ होत ही प्रभात नित्य,
कोऊ निज देवन की पूजा मे धस्यो रहै।
कोऊ नर उठत ही चाय दूध पान करे,
बिस्कुट मलाई कोउ खान मे फस्यो रहै।
मेरे जान सर्व श्रेष्ठ वही है विश्व माहि,
जाके डर भग युत मोदक बस्यो रहै॥

जन्म भूमि

भारत मेरी जन्म भूमि है मै इसका उत्थान करूगा।
विस्मृति सागर मे विलुप्त गौरव का फिर निर्माण करूगा।
मैं हूँ प्रचड सी अग्नि शिखा दुश्मन स्वाहा करने वाली।
दानवता के उच्छेदन हित जग मुझको ही कहता काली।
मै शकर का वह क्रोधानल जन जिसको लख त्रासित होते।
मै परशु राम का परशु प्रबल जिससे नरपति दासित होते।
अपनी प्रलयकर विभूति से रिपु समूह का मान हरू गा।
हुआ अन्त हा राष्ट्र हितो का स्वार्थ पूर्ति का फाग मचा है।
पाशवता की मूर्त्ति बने पर मानवता का स्वाग रचा है।
सिंहो की सन्तान किन्तु स्वानो का सा व्यवहार लिया है।

रोटी के कतिपय टुकड़ों पर देश द्रोह स्वीकार किया है।
मृतवत् सिहों में फिर से नव जीवन का सचार करूंगा।
काम उपासक वने शस्त्र-पूजक जो कभी कहाते थे।
अपने अतुल पराक्रम से जो शत्रु हृदय दहलाते थे।
डूव रहे निज वासनाओं के परिपूरण में वीर यहाँ है।
नही जानते पराधीन को यह विलास अधिकार कहाँ है।
प्रणय केलि रत प्रेमी मन को प्रलय राग से आज भरूंगा।
मैने सीखा है शलभों से देश हितों पर जल मरना।
पराधीन मां की वेदी पर अपने को स्वाहा करना।
हूँ गुलाम मै मुझे आज सन्तोष शान्ति की चाह नही है।
माँ वन्दी है मौन रहूँ मैं क्या पुत्रों का धर्म यही है।
वीणा के सोये तारों में फिर से मै झंकार भरूंगा।
गीता का वह कर्म योग मुझको कर्मण्य वनायेगा।
असुर विनासक राम रूप मुझको प्रकाश दिखलायेगा।
राणा और शिवा की गाथा अमित शक्ति देंगी तनमें।
गुरुओं का वलिदान भरेगा अमर ज्योति मेरे मन में।
सचय कर इस विकट शक्ति का वन्दी जन स्वाधीन करूंगा।
आवो रण का हुआ आज आह्वान अरे वीरो आवो।
आवो माँ की है पुकार इसका चिर उपकार चुकावो।
स्वातन्त्र्य दीप पर तुच्छ कीट सम स्वाहा करदो निज तन को।
दासताओं की शृंखलाओं से मुक्त करो वन्दी जन को।
मुक्ति दिलाकर जननी का जगती मे गौरव मान करूंगा।

१६४—सम्पूर्णदत्त मिश्र एम० ए०:—आपका जन्म सम्वत् १९८४ में पं० गोपाललाल मिश्र के यहाँ भरतपुर में हुआ। 'होनहार विरवान के होत चीकने पात' वाली कहावत के अनुसार आप बाल्यकाल से ही कुशाग्रबुद्धि है। कुछ विशिष्ट मंत्रों के जप से तथा भगवती त्रिपुर सुन्दरी की उपासना से आप में कवित्व शक्ति जागी। फलस्वरूप आपने सस्कृत में काव्य रचना आरभ कर दी।

२५ वर्ष की आयु में आपने 'ऋतूल्लास' नाम का एक संस्कृत काव्य लिखा। इसको पड़ते समय अनेक मर्मज्ञों को महाकवि कालिदास के मिठास की स्मृति हो आती है। सन् १९५९ ई० में उत्तर प्रदेश सरकार ने संस्कृत के लिये सारे देश से जिन बारह ग्रन्थकारों को पुरस्कृत किया उनमें राजस्थान से आपको 'ऋतूल्लास' के लिये पुरस्कार मिला। श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य ने 'ऋतूल्लास' से

प्रसन्न होकर आपको 'कवि पुण्डरीकम्' पदवी से पुरस्कृत किया। ३१ वर्ष की आयु मे आपने सस्कृत मे 'सूक्तिपचामृतम्' नाम का एक दूसरा काव्य लिखा। आप सस्कृत और अग्रेजी दोनो के एम० ए० है। आप इगलिश मे भी कविताएँ लिखते हैं। इस समय आप बसेडी गाँव मे इगलिश के कार्यवाहक सीनियर टीचर हैं। आपके सस्कृत विषयक भाषण और सस्कृत गीत 'आल इण्डिया रेडियो' जयपुर, से १९५३ ई० से प्रसारित होते आ रहे हैं। व्रज भाषा और खडी बोली दोनो पर आपका समान अधिकार है। अपने सुधासिक्त सुमधुर कठ से आप कविता सुनाने का ऐसा समा बाँध देते है कि किसी का मन तनिक भी ऊबने नही पाता। आपकीभाषा शैली बहुत ही रोचक, सरल तथा प्रसाद-गुण पूर्ण है, भाषा विषयानुकूल परिवर्तित होती जाती है। दाशनिक भावो के गहन एव गभीर विषय की अभिव्यक्ति गभीर भाषा मे ही हुई हैं। आपकी रचनाओ के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं —

सवैया

सुचिता के अलीक नगारन कौं सुनि कें कब लौं सचु पाइये जू ?
कथनी करनी की असगति सौ कब लौ पुनि ना उकनाइये जू ?
इन कैतव की करतूतन पै कब लौं नहिं कोप जनाइये जू ?
दुरनीति परे इन मीतन सौ कब लौं निज नेह निभाइये जू ?

बहु देखि चुके, नहिं सेस कछू, अब तौ तुरतै जगि जाइये जू।
इनकी मति कीरति की बतियाँ मति ना कितऊ पतियाइये जू।
कहि देउ न खोलि कै एकु दिना मन मे कछु सक न लाइये जू।
हम तौ तुम कौं न निभायगे जू तुम हू, हम कौं न निभावये जू॥

परिवार के पेट मे पाहन दै पुनि केतिक हू पढि जाइये जू।
गुन मान गुरू जन के उर मे बरु केतिक हू चढि जाइये जू।
नहिं जो लौं किन्हैं अधिकारिन के पदपकन मे गढि जाइये जू।
नहिं न्याव की आस बिसास कछू कहु का विरने पै निभाइये जू॥

निज हानि घनेरी उठाइक हौ समुझी गति लोगन की बतियान मे।
मुख ते कछु और बघारि रहे कछु औरहि धारि रहे छतियान मे।
पुनि खाइ कें धोके पै धोके सरासर सोर सरयौ सिगरे दुखियान मे।
मिस न्याव के घाव करें मुखिया ये परेखे बसे रिस की अखियान मे॥

दीखत ये जो बडे रे गुनी गनिका सग बास करें बगियान मे।
दीखत ये जो बडेरे धनी धन कौं बक ब्याज रही छतियान मे।

दीखत ये जो दिलद्री दुखी दवते रहि स्वारथ की कंखियान में।
पापी पराजय रास करै वस तापस की रिस की अंखियान में॥

परिणाम

जव रात घूमने जाता मैं, जव रात घुमाने जाता मैं।

(१)

शारद हिम कर की आभा में, कोठी को जगती पाता मैं।
कुछ कम्पित सी पुष्पित वल्ली, चुप चाप सहारा लिये हुए।
शशि का प्रसाद पा जाने को, निज तन्तु करों को किये हुए।
जव लेती थी अगड़ाई सी, मैं खड़ा हो गया छाया में।
ना जाने क्या क्या सोच गया, उस मोहकता की माया में।
पर छोड़ा वहा निवास नही, अव, तोड़ चुका हूँ नाता मै।

(२)

अच्छा तो लो, फिर सुन ही लो, मैं उसे छोड़ आगे वढ़ता।
भावों के सुखद सरोवर में, जी भर कर उतराता चढता।
यह कौन धमक कर धीमे से, कानों में कहती चुप रहना।
मैं जो कुछ तुम्हें सिखाती हूँ, उसको सव से मत कह देना।
उस प्रकृति-नटी की भङ्गी पर, वोलो क्या भेट चढ़ता मै ?

(३)

चांदनी पटक दी चन्दा ने, पत्तों ने गोदी में ले ली।
क्या बुरा किया बेचारों ने, जो रच पच कर सिर पर झेली।
पर चञ्चल को सन्तोष कहां, रहने का एक उरस्तल में।
मै गोरी हूँ ये काले हैं अङ्कित कर चली धरा तल में।
तव कितनों की विधि लेखा पर, वहते आँसू पी जाता मै।
नर के एकान्त समर्थन में, नारी को गाली देने का।
मेरा कोई कर्तव्य नही, ना मैं इसमें रस लेने का।
पर पेड़ों के नीचे पड क्या, चांदनी नही दिखलाती है।
उन्नत पुरुषों की भी कैसे, नारी सीमा वन जाती है।
वैसे, ऐसे प्राकृत–वन्धन, से, कभी नही चकराता मै।

(४)

माना पत्ते काले न सही, पर कालों से क्या कुछ कम है।
इतना तो मान सकोगे ही, वे नही चन्द्रिका के सम हैं।
जव हम वालाओं के सम्मुख, लावण्य चकित रह जाते है।
क्या दोष कौमुदी का पत्ते, काली छाया दिखलाते है।
ऐसे सर्गो की संगति में, कुछ सार समझ मुसकाता मैं।

(५)

हारा मा बैठ अधेरे मे, बेलो की कुञ्जो के नीचे ।
मैं सोचा करता टीले से, मानस के तार तनिक खीचे ।
यौवन, माधुर्य, मनोहरता, युग युग पर्यन्त चले जाते ।
उद्यान, चादनी, सुन्दरिया, नित नये पुराने हो जाते ।
इम वैयक्तिक नश्वरता पर, वम मोच मोच रह जाता मैं ।

१६५—राधाकृष्ण गुप्त 'कृष्ण' — आपका जन्म श्रावण शुक्ला ३ सम्वत् १९८५ वि० मे लाला मदनलाल के यहाँ भरतपुर मे हुआ। भरतपुर हाई स्कूल से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर आप कवि भूषण प० नन्दकुमार के शिष्य हो गए । आपकी काव्य-रचना का आरम्भ विभिन्न कवि-सम्मेलनो की समस्या पूर्ति से हुआ । इन्होंने केवल 'रस परिचय' नाम का एक (छन्दोवद्ध) ग्रन्थ लिखा है, जिसमे रसाङ्गो की पूर्ण व्याख्या की गई है। इसके अतिरिक्त आपकी अनेक रचनाए कवित्त तथा सवैयो के रूप मे, सर्व साधारण के मनोरजन की सामग्री बनी हुई हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं मे शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग किया है । वर्तमान खडी बोली मे भी आपकी अनेको रचनाए हैं। इनकी भाषा शैली की एक मुख्य विशेषता यह है कि इनकी प्रत्येक रचना भाषा-शाङ्कर्य दोष से मुक्त है। आपकी सरस रचनाओ के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

गणपति वन्दना (छप्पय)

जै मोदक प्रिय चन्द्र भाल, जै मगल दायक ।
जै गणपति गण ईश, गौरि-नन्दन सब लायक ।
वक्र तुड जै जै त्रिनेत्र, शुचि एक दन्त जय ।
लम्बोदर गज वदन मदन रिधि सिद्ध कत जय ।
जै आदि देव 'कवि कृष्ण' कह खण्ड परसु-मुख चन्द जय ।
जै जनन सकल सकट हरन, भुवन भरन आनन्द जय ॥

भक्त की अभिलाषा (कवित्त)

वृन्दावन वीथिन मे बासुरी बजात कहूँ,
द्वारे नन्दराय नन्द-गाम मिल जायगे ।
बरसाने भूप-वृषभानु के सुभौन कै तो,
मथुरा कै गोकुल सुधाम मिल जायँगे ।
'कृष्ण कवि' कालिन्दी-कूल के कदम्ब तरं
लला लली ललित ललाम मिल जायगे ।

ब्रज धाम धाम की परिक्रमा दियें जा प्यारे,
काहू चक्कर में श्यामा श्याम मिल जायंगे ॥

रसना को भगवद् भजन की प्रेरणा (सवैया)

उड़ि जाय है जानें न जाने कवै, तनते यह यह प्रान घड़ी भरके।
'कवि कृष्ण' जु कीरति पुन्यन की, सु करी न करी करनी करके।
पुनि जन्म जरूर मिलै न मिलै, महि पै विधि के वस में परके।
विष है जग के रस री रसना ! रट तो रट नाम हरी हर के ॥

प्रिय के प्रति उलाहना

सुख भाग लिखे न कवों इनके, अंसुवा दिन रैन झरेके झरे रहैं।
'कवि कृष्ण जू' कल्पना के कल-सिन्धु में अग तरंग तरेके तरे रहैं।
चख चारहु होंत वियोग के चित्र विचित्र विचार अरेके अरे रहैं।
प्रिय लाख मिलौ मिलिवौ है कहा, हिय के अभिलाख भरेके भरे रहै ॥

नेत्र-वर्णन (कवित्त)

शीतलता शशि की लै रवि की लै ओप और,
चंचलता चंचला की चोर चारु ढारे है।
मंजुल तर कंज की मेल मृदु मादकता,
पेल प्रेम सागर सकेलि सज सवारे है।
'कृष्ण कवि' कृपान पै करारी कर सान कोर
वोर के त्रिवेनी में तिरंग निरधारे है।
प्याले भर सुधाके पुनि मैन के मसाले भर,
विधि ने वनाये युग नैन मतवारे है ॥

चन्द्र

चन्द्र ! तज तुझको तृषित चकोर,
लखा कव तकता परकी ओर।
परुषता तेरी किन्तु निहार,
सदा देखा चुगता अंगार।
द्रवित होना तो इससे दूर,
रहा तू अपने मद में चूर।
यही कारण है अहो मयंक
लगा ये अविचल तुझे कलंक ॥

१६६—रमेशचन्द्र चतुर्वेदी:—आपका जन्म कुम्हेर तहसील के अन्तर्गत ग्राम साँतरुक में श्री नवनीतलाल चतुर्वेदी के यहाँ श्रावण कृष्णा३ सम्वत् १९८६

मे हुआ। आपको शैशव से ही सगीत-मय वातावरण मिला था क्योकि आपके पितामह प० नवलकिशोर भगवद् भक्त, सत्सगी तथा गायन वादन-कला मे, अत्यधिक दक्ष थे। इस वातावरण का कवि के हृदय पर ऐसा प्रभाव पडा कि साहित्य एवम् सगीत के प्रति उसके हृदय मे अगाध अभिरुचि उत्पन्न हो गई। सर्व प्रथम आपकी रचनाओ का श्री गणेश ब्रज-भाषा से होता है, परन्तु युग के प्रवाह मे प्रवाहित होकर आप खडी बोली मे कविता करने लगे। अध्यापक होने के कारण, आप सरल किन्तु स्वाभिमानी कवि हैं। कवि-हृदय होने के नाते आप निर्भीक भी उच्च कोटि के हैं। कविताओ का विषय वर्णन इतना स्वाभाविक है कि सत्य साकार हो उठता है। आप राष्ट्रीय विचार धारा के गीतो के लिये अधिक विख्यात् है उदाहरणं देखिए —

बसन्त

(१)

गाने को गा दूगा गायन, नूतन बसन्त आवाहन मे।
कैसे उल्लास भरू लेकिन, मैं अपने निर्धन जन मन मे।
पीली चादर को ओढ प्रिये!, आ पहुँचा है मधु-मय बसन्त।
पर उनके हृदयो से पूछो, जिनके विदेश मे बसें कत।
काश्मीर से आई थी, चिट्ठी, पाचे को आऊगा।
पर हाय आज भी जा न सका, अब कैसे मु ह दिखलाऊ गा।
कितनी बुद बुदें होती होगी, उस सेनानी जन के मन मे।
कैसे उल्लास भरू, लेकिन-मै अपने निर्धन जन मन मे।

(२)

जब आ पहुँचे ऋतु-राज स्वय, सरसो क्यो पीला रग हुआ।
किसके वियोग मे बतला दे प्रेयसि! ये तेरा ढग हुआ।
ओ आम्र मजरी! बतला दे तू इतना क्यो इठलाती है?
क्यो झूम झूम कर मुझको भी, प्रियतम की याद दिलाती है।
कोयल के स्वर क्यों गू ज रहे हैं, दूर वहाँ निजन बन मे।
कैसे उल्लास भरु लेकिन, मैं अपने निर्धन जन मन मे।

(३)

जो मागी दुनियाँ मे सरसो, वो कर लाते मधु-मय बसन्त।
उन दुखियारे कृपको के दुख, का-आज नही है आदि अन्त।
नगे भूखे मानव तन ने-जब सहन किया भीपण हिमन्त।
उन कृपको की झोपडियो मे, बारह महिने रहता बसन्त।
है बसन्त भी उनके मन मे, जो आज सुखी हैं जीवन मे।
कैसे उल्लास भरू? लेकिन-मैं, अपने निधन जन मन मे।

(४)

कैसे मनती विजया दशमी, कैसे मनता रक्षा-बन्धन ?
कैसा होता वैभव-विलास, कैसा होता सुख-मय जीवन ?
हम भूल चुके है दीवाली, हम भूल चुके हैं अब वसन्त।
श्रमिकों की आहों से जलकर, आने वाली होली अनन्त।
जो आग लगा देगी भीषण, शोषक शासक के मन मन में।
कैसे उल्लास भरू ? लेकिन, मैं अपने निर्धन जन मन में।

अध्यापक

यह करुण-कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है।

(१)

है फटी पन्हैयाँ पांवों में, मैलीसी पहने धोती है।
है ओछक बडा सा कुरता, पिचकी सी पहने टोपी है।
माथे पर आटा दाल बधा, जनु विश्व-व्यथा का भार लिए।
मर मर के भी जो इस जग में, जीने का ही अधिकार लिए।
पंचास मील गांव से दूर, अरु वेतन भी मिलता पचास।
वह चला जा रहा सन्यासी, लेता लम्बे लम्बे उसास।
रिमझिम रिमझिम बरसात लगी, टूटा छाता पग फिसल गया।
घोंटू के वल गिर पड़ा पट्ट, अरु आटा सारा विखर गया।
कैसी बीती अध्यापक पर, यह कहते दिल दहलाता है।
यह करुण कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है।

(२)

वन गए आज शिक्षा-मंत्री, संसार कह उठा वाह वाह।
सम्मान युक्त वहता आता, वल-वैभव का अविरल प्रवाह।
पर भिख मगे अध्यापक को, क्यों कर जग देवै धन्यवाद।
क्यों कर हो इसका अभिवादन, क्यों कर हो इसका साधुवाद।
यह शिक्षक तो बिलकुल असभ्य, यह पागल भूखा नंगा है।
जग वलि-वेदी पर प्राण दान, तक देकर भी भिख मगा है।
देखो शिक्षक का उर टटोल, कितने अरमान लपेटे हैं।
जग को अपना सब कुछ देकर, इसने अभिशाप समेटे है।
हमसे पढ़कर अ आ इ ई, अब हम पर हुकम चलाता है।
यह करुण-कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है।

(३)

लेती है रिश्वत रोज पुलिस, डाक्टर भी मौज उड़ाते है।
रेलवे के टी० टी० गार्ड सभी, रिश्वत का पैसा खाते है।

महकमे माल के चपरासी भी, रोज रुपये घर लाते है ।
दुनियाँ तो यहाँ तक कहती है, मत्री भी रिश्वत खाते है ।
पर हाय भिखारी–अध्यापक, जब डंडा-चौथ मनाते हैं ।
शिक्षा-विभाग के अधिकारी, तब कैसी ग्रांख दिखाते है ?
यदि दीन दुखी अध्यापक को, जनता श्रद्धा से करे दान ।
उस पर भी है प्रति-बन्ध कडा, यह कैसा है उलटा विधान ।
जिन्दगी मौत के भूले मे, अध्यापक दिवस बिताता है ।
यह करुण-कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है ।

(४)

यदि शिक्षक अपनी दुख-गाथा, अधिकारी तक पहुँचाते है ।
तो बदले मे उन दुखियो से, अप-शब्द कह दिये जाते हैं ।
छै छै महिने मे दें वेतन, फिर भी अहसान जताते हैं ।
दुनियाँ के ठुकराये शिक्षक, तब मन ममोस रह जाते हैं ।
यह निष्क्रिय सरकारी ढाचा, एक दिन अवश्य ही टूटेगा ।
इस असतोष का पुत्र कभी, विप्लव बन करके फूटेगा ।
अरे स्वार्थ की मूर्ति शासको जडें तुम्हारी हिलती है ।
जब मनें तुम्हारी दीवाली, तब यहाँ होलियाँ जलती हैं ।
सोचो समझो अपने मन में, अध्यापक से कुछ नाता है ।
यह करुण–कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है ?

१६७–छुट्टनलाल 'सेवक' –आपका जन्म अगहन वदी ६ सवत् १६८७ वि० को हुआ । आप आशुकवि कुलशेखर के शिष्यो मे से हैं। प्राकृतिक उपमानो से युक्त रूपको द्वारा आप कवित्तो मे एक मधुर भाव क्रम उपस्थित कर देते है । आपकी भाषा प्राचीन परिपाटी की टकसाली ब्रज-भाषा है, किन्तु किसी किसी स्थल पर खडी बोली की झलक भी देखने को मिलती है । आपकी रचनाओ मे से कतिपय छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं —

वसन्त और गणेश का रूपक (कवित्त)

पीरे पीरे फूलन को माथे पै मुकट राजै,
लाल लाल फूलन के कुण्डल सुहाये है ।
सेत सेत फूलन के ऊपर, चमर छत्र,
सेत ही सु फूलन के दत्त दरसाये हैं ।
फूलन के हार गल- 'सेवक' सम्हारत हैं, -
सुमन वसन्ती वस्त्र भूषन बनाये है ।

कोकिल कपोत कीर विरद सुनावत है,
आज रितुराज गन राज बन आये है ॥

बसन्त पंचमी में नटी का रूपक

फूल वसन्तिन की चुंदरी,
करि घांघरि फूल गुलाबन भाई।
भूपन पीतहि फूलन केर,
सुहावत नाचत मोद महाई।
भौर मृदग बजावत है,
मिल कोकिल कीरन ताल लगाई।
'सेवक' साज नटी नव सी,
यह आज वसन्त की पंचमी आई ॥

शरद यामिनी के कृष्ण-रास का वर्णन

मधुर सुरन कान्ह बांसुरी बजाई सुनि,
व्रज वनितान वृन्द कानन सिधारे हैं।
फरस विछे है स्वच्छ चांदनी के ठौर ठौर,
वीणा भेरि साथ तहाँ बाजत नगारे है।
'सेवक' सम्हारत हे काज सव दौर दौर,
दोय दोय गोपी बीच आप रूप धारे है।
शारद निशा में लखि रास तहाँ मेरे भूमें,
आनद मगन भये नैन मतवारे है ॥

भगवान राम के रूप का वर्णन

हीरन जटित सोहै माथे पै मुकट मंजु,
आनन की ओप कोटि काम हू लजाई है।
एक कर धनु दूजौ अभय प्रदान करै,
पीठ कौ तूनीर सदा भक्तन सहाई है।
सिंहासन राजे राम साथ सिय मातजी के,
नख सिख सिंगार सब सुघर सुहाई है।
'सेवक' सुख दाता औ त्राता भव-सागर के,
मेरे मन ऐसी प्रभु मूरत समाई है ॥

१६८—गोपालप्रसाद 'मुद्गल':—आपका जन्म २ जुलाई सन् १६३१ को भरतपुर जिलान्तर्गत डीग कस्वे में पं० रघुनाथप्रसाद के यहाँ हुआ। अपने पिता के अनुरूप आप भी सरल स्वभाव और परिश्रम शील हैं। डीग हाई स्कूल से

हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर आप शरणार्थी वालको को शिक्षा देने के लिये प्राथमिकशाला छत्ता (दीग) मे अध्यापक नियुक्त हुए। तभी से अध्यापन कार्य कर रहे हैं और साथ में विद्याध्ययन भी। हिन्दी की एम० ए० परीक्षा तथा वी० ऐड की ट्रेनिग करने के पश्चात् आपको वैर की उच्चतर माध्यमिक शाला में वरिष्ट अध्यापक के रूप मे नियुक्त किया गया है।

मुद्गलजी को वचपन से ही काव्य के प्रति विशेप अभिरुचि है। आपकी सर्व प्रथम कविता 'भारत भू की भव्य पताका प्रमुदित होकर लहराए' १५ अगस्त सन् १९४७ को लिखी गई। इस कविता की प्रशसा से कवि हृदय को प्रोत्साहन मिला और वे सुन्दर रचनाएँ करने लगे। यद्यपि मुख्यतया आप शृगार रस के ही कवि माने जाते हैं किन्तु आजकल सामाजिक समस्याओ को लेकर भी आप लिखने लगे है। आपकी रचनाएँ वहुत सरल सरस और प्रभावोत्पादक होती हैं। कविताओ के अतिरिक्त आपने कई नाटक भी लिखे हैं जिनमे 'प्रायश्चित' 'दहेज' तथा 'निर्दोष' अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। कवि और नाटककार होने के साथ २ आप निवन्ध और कहानी लेखक भी हैं। व्रज-भाषा और खडी वोली दोनो पर ही आपका समान अधिकार है। आपकी कविताओ के उदाहरण देखिए —

कवित्त

आवैरी अनन्द तेरे अगना के माहि आज,
तोहू तो हे सग सखि काहू को न भावैरी।
भावैरी मोहे तेरो सोच सखि छाँडिय अब,
चातक सी ह्वै के रट काहे कू लगावैरी।
गावैगी सवेरे ही सवेरे काग मुडरी पै,
वाँह कर ऊची अजमालै उडि जावैरी।
जावैरी न खालो साँचो सगुन है प्रभाती को,
धीर घर आली आन हारो आज आवैरी ॥

सखी

आवैरी अनग अग अगन के माहि जव
पिय विन सग सखि काहू को न भावैरी।
भावैरी इकन्त नहि सूझै कोऊ पन्थ अन्त,
कन्त ढिग मेरो मन दौरि २ जावैरी।
जावैरी न लैवे तू तो वातन वनावै वडी
आज कल कहिके मोहे काहे कलपावैरी।

पावैरी न जीते मोय सखि समझाऊं तोय,
जो वे औधि बीते आनहारो नाँहि आवैरी ॥

गीत

घन जाओ विरहन मत जारो रे।
डर मारो घर नाँय घरवारो रे.॥

(१)

काहे घिर २ आत मेरो जिया घवरात
पिय विन दिन रात नैन नीर बरसात
तापै तू हू डरपात वन कारो रे। घन जाओ……॥१॥
कजरारे कर शोर मत कानन तू फोर
कहूँ तोते कर जोर नैंक मानो कही मोर
जाओ देश जहं पियारी को पियारो रे। घन जाओ……॥२॥
तेरी बुंदियन मार मोकूं हुई दुसवार
तापै शीतल बयार और बीजुरी प्रहार
अब तुम्ही कहो कैसे हो गुजारो रे। घन जाओ……॥३॥
इक सी में काँपै गात दूजे मदन सतात
तीजै रैन डस खात चौथे तूहूँ घुमडात
जान इकली विरहन मत मारो रे। घन जाओ……॥४॥
घन पिय ढिग जाओ डार बूंद समझाओ
पिय विरहन बुलाओ काहू विधि दै आओ
संग लाओ गुण गाऊं मै तिहारो रे। घन जाओ……॥५॥

कवि से

गा कवि युग के गीत पुरातन फिर गा लेना।
गाओ अवनि के गीत, गगन के फिर गा लेना।
जब मानवता की रक्षा को चपला सी खड़ग बुलाती है।
तब क्या स्वर लहरी तान और पायल झनकारें भाती हैं।
अब सुरा सुन्दरी पानें को शृंगारी छन्द न भाते हैं।
क्योंकि होली के गीत दिवाली को नही गाये जाते है।
अब हीरा पन्ना शाल दुशाला गिलम गलीचों के मत गा।
अब गा मानव के गीत मदन के फिर गा लेना।
गा कवि युग के गीत पुरातन फिर गा लेना।
गाओ अवनि के गीत अमन के फिर गा खेना ॥१॥

कैनेडी की विजय पर

ढलते सूरज को कौन झुकाता है माथा
आते सूरज को सभी सलामी देते हैं
लाख नयन चुम्बन करते उस व्याकुल का
जब सहमे २ वह टोली का आती है,
पर उठ जाने पर रंग गुलाबी गालों का
कोई भी नजर न उस पर चंवर डुलाती है।
गिरते हुओं की कौन खुशामद करता है
उठती रेखों की सभी गवाही देते है।
ढलते सूरज ॥१॥

१६९—गोपेश शरण शर्मा—इनका जन्म भरतपुर (राजस्थान) के एक सूर्य्यद्विज परिवार मे आषाढ शुक्ला २ (रथ-यात्रा) सम्वत् १९८६ विक्रमी को हुआ। इनके पिता प० गोपाल शरण शर्मा पेंशनर है तथा भरतपुर के एक प्रसिद्ध कवि एव शायर हैं। ये सन् १९५३ ई० मे महारानी श्री जया कालिज, भरतपुर मे बी० ए० की परीक्षा पास करने के उपरान्त अध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। अब ये एम० ए० बी० एड हैं तथा हिन्दी के सीनियर टीचर है।

अपने पिता के कवि एव शायर होने के कारण उनके सत्सग से इनके अन्दर बाल्य-काल से ही साहित्य प्रेम और विशेष कर कविता का अकुर प्रस्फुटित होने लगा। विद्यार्थी जीवन में अनुकूल वातावरण मिलने के कारण उसका पोषण होता रहा। फलस्वरूप ८ वीं कक्षा से ही कुछ-कुछ लिखना प्रारम्भ कर दिया। वातावरण के अनुरूप अधिकांश फुटकर कविताएँ खडी बोली मे ही लिखी, यद्यपि समस्या पूर्ति के सबध मे यदा-कदा व्रज भाषा मे भी कतिपय कवित्तो की रचना की। कवि होने के साथ साथ आप एक कुशल वक्ता एव लेखक भी हैं। उदाहरण देखिए—

अब चांद अपना हो रहा है!

चांद चौकीदार ने सूरज सुलाया व्योम मे जब,
कुपित होकर के कुमुदिनी सो गई दे पत्र घूंघट।
निशा की नीरव घडी मे रश्मि कर से उठा कर फिर,
कर लिया मुख सामने, आये हृदय मे भाव घिर-घिर।
कुमुदिनी का क्रोध सारा शीघ्र सपना हो रहा है,
लहर को सकेत है—अब चांद अपना हो रहा है।
शून्यता वश जब हृदय की, गगन का मुख नील जाना,

उदधि ने निज अंक का बालक दिया कर्तव्य माना ।
पर अमा की निशा को शिशु को छिपाया व्योम ने जब,
जलधि उर होकर सशंकित धड़कने फिर-फिर लगा तब ।
पूर्णिमा को इन्दु का जब मुसकराना हो रहा है,
ऊर्मि कर उठते मचल अब चाँद अपना हो रहा है ।
प्रेम की पीडा समझने को-ज़लन को जानने को,
धधकते उर से विरह की वह विकलता मानने को ।
चोंच मे लेकर चकोरी जब लगी अंगार चुगने,
शुभ्र शीतल सी छटा की लग गई तब आस करने ।
विहंसते निर्मल निशाकर का निकलना हो रहा है,
तब चकोरी ने कहा अब चाँद अपना हो रहा है ।
नेह की बाते निराली चन्द्र आकर्षित हुआ है,
तन धरा पर मन गगन का मीत बन पुलकित हुआ है ।
बुद्धिवादी मानवों की विज्ञता विज्ञान से मिल,
सरसता को सोखती सी, शुष्कता के साथ हिल-मिल ।
चल पडी उड़कर गगन को शब्द कितना हो रहा है,
हम हुए उसके, कहा अब चाँद अपना हो रहा है ।
ठीक है तुम चाँद को अपना बना कर ही रहोगे,
प्राप्त करने में उसे जो यातना होंगी, सहोगे ।
पर धरा पर तुम कलको को कही लेकर न आना,
ज्योत्स्ना आई स्वयं तुम कालिमा को ले न आना ।
देखना स्थल वही जिनसे चमकना हो रहा है,
स्वच्छ मन करके दिखाना-चाँद अपना हो रहा है ।।

विकास

अज्ञान निशा हो दूर जागरण जाग पड़ा
स्वतन्त्र्य सूर्य प्रकटित स्वदेश उठ हुआ खडा
दासत्व शृंखला शिथिल, सुलभ निःश्वास जगे
जगमगी भूमि भारत, सशंक सब शोक भगे
अधिनियम-नियम निज बने चेतना जाग उठी
लो ! प्रजातन्त्र प्रत्यक्ष वेदना भाग उठी
हिमगिरि के निर्झर झर-झर कर, हो मुक्त झरे
वह उठी नदी इठला-इठला उन्माद भरे
धन-धान्य सजग हो उठा-उठा श्रम मानव का

विकसित स्वदेश परयूप घुटा दम दानव का
निस्साधनता हो दूर जुटे उठ सब साधन
बन गये श्रमिक कृषकों के क्रन्दन आराधन
वह प्रकृति नटी अपना यौवन उन्माद लिये
खुल पडी देश के लिये मधुर संवाद लिये
श्रमिको के कल हल, कल पाकर किलकार बढे
अँगडाई फसल, भू के अकुर उठे गढे
उच्छृङ्खलता नदियों की रोकी बाधो ने
सिंचन अनुकूल किया विद्युत् दी बाँधो ने
विद्युत् कण द्रुत गति लिये चले विद्युत् देने
उन गाँवो को निश अधकार जो थे पहने
ग्रामो की कुटिया अब भवनो मे बदल उठी
डावर की सडके धूसर पथ पर पिघल उठी
'तमसो मा ज्योतिर्गमयो' का सदेश लिये
शिक्षक स्वदेश के अपना सद् उपदेश लिये
चल पडे चेतना ग्राम ग्राम को देने को
भोली जनता से, क्या विकास है ? कहने को
जो सोये हो भारत वासी अब तो जागो
अरविन्द समान खिलो-उठलो, आलस त्यागो

१७०—रामबाबू वर्मा —इनका जन्म कार्तिक शुक्ला ५ सवत् १९८६ वि० को भरतपुर मे श्री शिवचरनलाल स्वर्णकार के यहाँ हुआ। ये अधिक पढे लिखे तो नही हैं, किन्तु कवियो के ससग मे रहने से कविता की ओर रुचि हो गई। इनके काव्य गुरु श्री कुम्भनलाल 'कुल शेखर' हैं। आपकी रचनाओ मे भाषा और रस का धारावाही प्रवाह मिलता है। ये 'रघुराय' उपनाम से कविता करते है। इनकी रचना के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं —

मानवता

अब क्षीर नीर की भाति सभी भाई मिल मेल करो मन मे।
फिर शब्द सूत बाधो सब का मन-मुक्ता बिखरे कन २ मे।
उर अन्तर के कपाट खोलो सब पाप पु ज को क्षार करो।
निज द्वेष भाव का भेद त्याग सब समता का व्यवहार करो।
'रघुराय' सभी सामर्थ बान बन जन समाज कल्याण करो।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो॥

कवित्त

चूमत रहत सिंधु कंज मंजु चरनन,
कों सुकीर्ति गान गगन बुलिन्दी है।
हृदय विशाल औ उदार दुग्ध धार सदां,
सर्व सुख देनी नित्य गंग औ कलिन्दी है।
'रघुराय' जेते जीव मनुज दनुज देव,
गर्व सों सकल सृष्टि कहत कविन्दी है।
हिमगिर अमन्द शीश मुकट विराजत है,
भारत मां भाल पर विंदी सम हिन्दी है।।

सवैया

मानुपता जन के मन हो जनता सब भांति सुशील लखावै।
शाँति सदां उर वास करै सब के मन मोद अपार दिखावै।
द्वेष न हो जग में 'रघुराय' न चिंतित हों नहिं कोई दुख्यावै।
होय सुराज्य तवै परि पूर्ण जवै दिन देखन कों यह आवै।।

घनाक्षरी

मान मरयादा मैंड़ टूट जाती रामविन, गुरू विन गूढ़ ज्ञान भूरि कौन भरतो।
सिन्धु के मथैया देव दानव विकल होते, शंभु जो न होते विष पान कौन करतौ।
वूढ जाते व्रज के पुरंदर प्रकोप समै, कान्ह जो न होते भूमि भार कौन हरतौ।
'रघुराय' सृष्टि के समूह सव नष्ट होते शेष जो न होते तौ धरा को कौन धरतौ।।

सवैया

सुख वन्त शुशील सुहाग वती सजनी सब साज सजे सरसी।
हिय हार हजारन हीरन के हथ फूलन हेम छटा बरसी।
'रघुराय', ललाट लसै विंदिया दमकै दुति दामिनि सी दरसी।
रति रंभहु रूप लजात वधू विकसी परिपूर्ण कला धरसी।।

"तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो"
सोने का समय व्यतीत हुआ मैं आज जगाने आया हूँ।
माँ के लालों की किस्मत की यहाँ व्यथा सुनाने आया हूँ।।
सीधे सच्चों का काम कहाँ जहाँ दगा फरेवी छाई हो।
लूटा खोंसी गुंडे वाजी सब के मन माँहि समाई हो।।
मानव मानव का रक्त चूसना पाप श्रोत को वाद करो।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो।।

जो कभी स्वर्ग थी भारत भू वह आज नर्क दिखलाती है ।
सोने चाँदी के टुकडो पर यहाँ इज्जत बेची जाती है ॥
ऊँची मीनारे एक ओर नहि झोपडियाँ रहने को है ।
अम्बर अम्बर मम एक ओर नहि वस्त्र शीत सहने को हैं ॥
मानव के निमल जीवन पर मन दानवता के वार करो ।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो ॥
माया के वशीभूत होकर क्यो दीन जनो को रुला रहे ।
दया धर्म की आड लगा क्यो स्वर्ण–मत्य को जला रहे ॥
स्वामी के नाते सेवक पर तुम नाना जुल्म ढहाओ ना ।
अपना अस्तित्व जमाने को मनमाना कम कराओ ना ॥
रक्षक के नाते भक्षक बन जन जन से मन खिलवाड करो ।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो ॥

१७१–हरिश्चन्द्र'हरीश' –तरुण पीढी के उदीयमान कवि 'हरीश' का जन्म नगला कल्यानपुर के प० ईशवरीप्रसाद के यहाँ कार्तिक कृष्णा १, सम्वत् १६८६ मे हुआ । प्राथमिक शिक्षा (हिन्दी, उर्दू, सगीत) स्वर्गीय पडित वीर नारायण के देख रेख मे घर ही पर हुई । पडित जी ग्रामीण जिकडी भजन आदि बनाया करते थे, अत सन् ४७ से आपको भी जिकडी भजन बनाने का चसका लग गया । कौलेज जीवन मे आपकी काव्य-प्रतिभा का सस्कार और निखर उठा । अनेको कवि सम्मेलनो मे भाग लेकर आपकी ख्याति को एक विशेष सम्मान की प्राप्ति हुई । आपने एम० ए० तथा साहित्य रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण करके शिक्षा विभाग मे नौकरी कर ली थी, किन्तु खेद की बात है कि आप भगवती सरस्वती की सरस रचनाओ के सुरभित सुमनो से समुचित अर्चना करने से पहले ही ससार से प्रयाण कर गए । स्थानीय कवि समाज को आपका अभाव सदैव ही खटकता रहेगा ।

आपने सर्व प्रथम व्रज-भाषा मे रचना आरम्भ की, किन्तु युग के प्रवाह के साथ खडी बोली मे भी रचना करने लगे । आप कवित्त और सवैया भी बनाते थे जिनको बडे सरस एव प्रभावोत्पादक ढग से सुनाते थे । आपकी रचनाओ मे कला पक्ष और भाव पक्ष दोनो का निवाह बडे ही आकर्षक ढग से हुआ है । जीवन के पिछले प्रहर मे आप महाकवि 'निराला' के परम भक्त हो गये थे और उन्ही की रचना शैली अपनाली थी । आपकी रचनाओ मे दार्शनिक गाम्भीर्य के साथ २ सरलता भी प्रचुर मात्रा मे विद्यमान हैं और प्रसाद गुण का सर्वत्र प्राधान्य परिलक्षित होता है । इनके प्रेम-पीडा की कसक श्रोताओ को भी कसका देती थी –

प्राण ! तुम आओ
आगया नीम में बौर, प्राण ! तुम आओ।
टहनी टहनी के अधरों पर,
है मुसकाहट छाई।
सोये सोये पात पात ने,
ली उठकर अगडाई।
हरे भरे यौवन को छूकर, महक उठी पुरवाई।
झूमें भौरों के झौर, प्राण ! तुम आओ।
अवा-जमुनी ने पहनी,
चिकनी असमानी सारी।
और कठ में उनके,
कोकिल ने भरदी किलकारी।
लो पलाश जल गया, न बुझ पायेगी यह चिनगारी।
बरसे रस-मधु के दौर, 'प्राण ! तुम आओ।
आज नहा कर नभ-गंगा मे,
निखर गई ताराए।
मद , मद मुसकान,
नील अचल मे बिखरी जाएं।
जिन्हे लूटने चला पवन, पर पांव नही पड़ पाए।
सूनी है मन की ठौर, प्राण ! तुम आओ।
उधर छोकरे की खुशबू में,
अग जग डूबा जाता।
पर जाने क्यो उससे,
मेरा मनवा ऊवा जाता।
वड़े भाग से अरी वावरी, आज महूरत आया।
हो जाय न यों ही भोर, प्राण ! तुम आओ।

बरसात

बादल हुए कि और ही रगत वदल गई।
उट्ठा वो शोर मोर का,
बदली को चूमने।
पुर बाई आई नीम की–
बाँहों मे झूमने।
राहों खेतों के दाह को,
सहलाने लगी छांह।

बादल घिरे कि और ही रंगत बदल गई।
दो बूंद क्या पडी,
मैं अमृत मे नहा गया।
गद गद खडा रहा,
न इधर ही उधर गया।
किरणों से रहा कब गया,
घटा का घूंघट उठा।
बहाने को मेरे साथ वे, मारुत मचल गई।
बादल हुए कि और ही रंगत बदल गई।
दादुर उछल पडे–
कि हमे गाने भी तो दो।
झींगुर मचल पडे–
कि हमे जाने भी तो दो।
अंकुर भी क्या फूटे,
मिट्टी के अरमा निकल पडे।
दो ही दिनो मे सृष्टि की सूरत बदल गई।
बादल हुए कि और ही रंगत बदल गई।
तरु तरु ने पात पात ने,
पाया नया जीवन।
निखरे धरा के गात धुल,
छाया नया जीवन।
जागा किसान, श्रमका–
नव उल्लास जग उठा।
हर खेत की हर बयार की, किस्मत बदल गई।
बादल हुए कि और ही रंगत बदल गई।

प्रकाश के नेता

जब हम कर चन्दा सोयेगा,
जब हस कर सूरज जागेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा,
बोलो प्रकाश के नेताओ।
जब मधुर जीत के गीत–,
दिशायें गायेंगी दिल खोलकर।

कलियों के घूंघट उठा,
डालियाँ देखेंगी हिल डोलकर।

उड़ झूम झूम कर भंवर,
बजायेंगे बीणा नव रस भरी।
सुन कोयलिया की तान–
हिय का कन–कन भर भर आयेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो मधु-ऋतु की लतिकाओ !

बादल बरसा कर प्यार,
बुझायेंगे जब धरती की तपन।
बोलेंगे पपिया मोर–
नयन हरयावल में होंगे मगन।
ऐटम के शीतल प्राण,
खिलायेंगे खुशबू को गोद में।

सौ शरदों तक बिस्तार–
मोद के जीवन का हो जायेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो सावन की सरिताओं !
हिम कर न बढ़ा पायेगा,
सरसों की सारी की ओर जब।
दिन कर न कहा जायेगा,
तिनकों के रतनों का चोर जब।
फसलें अम्बर की ओर,
न फैलायेंगी अपने हाथ जब।

तूफानों के आगे—,
फूलों का माथ नहीं झुक पायेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो, जन भाग्य विधाताओं ?

रुबाइयाँ

भृङ्ग का गुंजन कली पर जा अड़ा है।
शलभ का क्रन्दन शिखा पर जा चढ़ा है।
कौन अपने प्राण को छोड़े अकेला

क्या बडी बदली को, जो छू स्वर्ग को।
आंधियाँ पर, बिजलियाँ देती गिरा।
है बडी वह दूब, जो मिट्टी पै रह।
उखे, उजडे मनको, कर देती हरा।

क्या देखता है, कोयल है काली,
तू उसके सुर की बहार को देख।
क्या देखता है, सागर है खारी,
तू उसके मोती की धार को देख।

क्या देखता है है जेब खाली,
है देह खाली, है भाग खाली।

हो आंख तो तू इस आदमी के, आदमियत के दुलार को देख।
दुख विषमता का भगे, सुख मे पगे दुनियाँ।
कर्म मे अपने लगे-उत्साह से दुनियाँ।
भर चुकी लय खूब, वीणा-वादिनी तू अब-
एक सुर ऐसा उठा, जिससे जगे दुनियाँ।

१७२-दीनदयाल गोयल 'सुधाकर'—आपका जन्म भरतपुर मे एक माध्यमिक स्थिति के परिवार मे पहली जनवरी सन् १९३३ को हुआ। आपके पिता का नाम किशनलाल गोयल है। तेरहवी कक्षा पास कर आप अध्यापक हो गये और उसी अध्यापन काय मे आपने एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। आप इस समय 'राजकीय बहुउद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भरतपुर' मे अध्यापक के पद पर काय कर रहे हैं। आपको बचपन से ही अंताक्षरी एवम् व्यंगात्मक काव्य से अधिक रुचि है। आपकी भाषा सरल, सरस और मधुर है। उदाहरण देखिए —

समस्या-'निर्माण करो'

हे इस युग के भगवान, हमारा भी तो कुछ उपकार करो।
दो दिला नोकरी लडके को, कुछ थोडा सा एहसान करो॥
हम बहुत दूर से आये हैं, तुम से सब कुछ आशा लेकर।
तुम बहुत गरीबनिवाज प्रभो, लिखा अखबारो के ऊपर॥
केवल इतना ही नहो प्रभो, दो चार चिट्ठियाँ लाये हैं।
तुम निकट हमारे सबन्धी, हम पता लगा यह लाये हैं॥

मेरी चाचीं की भुआ कीं, लड़की की जो दौरानी है ।
उसके भी कुटुम्ब की लडकी, तुम्हरे कुटुम्ब में व्याहीं है ॥
नाते में जीजा लगते हो, कुछ साले का तो ख्याल करो ।
गर कोई खाली जगह नहीं, दो चार नई निर्माण करो ॥

सका—एक दिन माइन्ड में यह बात आई,
क्यों नारी ने दो चोटी है लटकाई ?
समाधान—हिन्दुओं का देश भारत वर्ष है ।
सिर पै चोटी रखना ही हमारा धर्म है ॥
चोटी हमारी जान थी ईमान थी ।
विश्व न्यौछावर करें यह हिन्दुओं की आन थी ॥
लेकिन—अंगरेजी फैसन का हम पर था भूत सवार हुआ ।
चोटी मिलवाई वालों में सब आन बान का काम हुआ ॥
लेकिन भारत की नारी यह कब सह सकती थी ।
चोटी का अपमान भला कब कर सकती थी ॥
इसी लिये उसने प्रतिभा रखने को नर की ।
अपनी संतति में यह रीति चलाई ।
और नारि ने दो चोटी है यों लटकाई ॥
एक नर की एक अपनी ?

अमर प्रीति

प्रीति अमर बन गई शमां की और शलभ की

चली उसासें सदेशा देने प्रियतम को ।
चली बदलिया निशि की व्याकुलता कहने को ॥
किसी वियोगिन की आंखों से अश्रु टपकते ।
आशा प्लावित नेत्र वरसने को थे कहते ॥
वरसी बदली रोक न पायी व्यथा हृदय की ।
धार एक बन गई अश्रु की और और अश्रु की ॥
व्यथा अमर बन गई अश्रु की और हृदय की ।
प्रीति अमर बन गई अश्रु की और हृदय की ॥

अरे दूर हो शलभ निकट नहिं आना मेरे ।
मिल कर मुझसे प्राण जलाना अपने मेरे ॥

तुम चकोर की तरह देखते रहो चाँद को ।
रजनी की ही तरह निभाते रहो प्रीति को ।।
पर परवाना धाया चाह लिये मिलने की ।
मिलन राख बन गई प्रेम की और प्रीति की ।।
राख अमर बन गई शमा की और शलभ की ।
प्रीति अमर बन गई, शमां की और शलभ की ।।

१७३—गौरीशकर 'मयक' —'मयक' नाम से सबोधित श्री गौरीशकर का जन्म भरतपुर के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार मे १४ जून, १६३४ ई० को हुआ। महान् आर्थिक सकट से अविराम सघर्ष करते हुये, आपने भरतपुर के महारानी श्रीजया कालेज से बी० कौम परीक्षा उत्तीर्ण की। आपको बाल्यावस्था से ही काव्य सृजन की रुचि है। आपकी भाषा व शैली सुगम, सरस, प्रवाहमयी एव हृदयाकर्षक है। आप करुण एव हास्य रस के जाने माने कवि हैं। उदाहरण देखिए —

हिन्दी

हिंदी-भाषा हिन्द राष्ट्र की,
नई नवेली दुलहन है।
करो सुमगल आरती ।।
अँगरेजी उर्दू सौतें है।
कहती इसका रँग काला है ।।
भारत के घर का काम ।
कभी नही इससे चलने वाला है ।।
गूँगी सी श्रद्धावत भावों को ।
मुखर नही कर सकती है ।।
लँगडी सी, राकिट युग गति के ।
भी साथ नही चल सकती है ।।
कोई नही समझ सकता ।
अतर मे भरी क्लिस्टता ।।
फिर भी सौत हमे डसने को ।
नागिन सी फुफकारती ।।

— गणतत्र दिवस —

जनता का शासन, जनता के लिये कि जनता द्वारा ।
जब जाता जहाँ चलाया, जाता गणतत्र पुकारा ।।

छब्बीस जनवरी जिसको, हमने गण शासन पाया ।
भारत के कवियों द्वारा, युग युग जायेगा गाया ॥
आजादी की वेदी पर, अगणित वलिदान हुए जब ।
हमने स्वतत्रता पाई, हमको गणतंत्र मिला तब ॥
उस दिन से सभी वने हैं, हम अपने भाग्य विधाता ।
सुख दुख उन्नति अवनति के हम खुद ही उत्तर दाता ॥

गणतंत्र दिवस

अज्ञान अशिक्षा से उठ, दायित्व सभी पहिचाने ।
व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊंचे. हम राष्ट्र हितों को माने ॥
उपजाये अन्न अधिक हम, औद्योगिक वस्तु वनाये ।
अरवो का माल विदेशी, हा ! क्यो प्रति वर्ष मगायें ॥
व्यक्तिगत किया अनुप्राणित, जब राष्ट्र हितों से होगी ।
वस होगी तभी स्वरक्षित, नव आजादी की डौगी ॥
दल के दल दल से बचकर, सब कार्य करें सहकारी ।
तो क्षण में हल हो जाये, ये विकट समस्या सारी ॥
यदि जाति धर्म गुट बंदी, भाषायी भेद भुलादें ।
अरु विजयी विश्व तिरंगा, जन गन मन मे लहरादें ॥
तो सत्य अहिसा सेवा, से शॉति शीघ्र आयेगी ।
नेहरू की चिर अभिलाषा, भी पूरी हो जायेगी ॥

विकास की एक कल्पना

अमरीका चाहे धन से, रशिया का गला दबाना ।
औ रशिया चाह रहा है, निज साम्यवाद फैलाना ॥
व्यापारी चाह रहे हैं, इन दोनों का लड़वाना ।
विना युद्ध के कैसे, हो ओवर लोड खजाना ॥
ना जाने कभी किधर से, कोई राकेट चल जाये ।
और उस दिन ही यह दुनियॉ, भव-सागर से तर जाये ॥

१७४—शक्तिस्वरूप त्रिवेदी एम० ए०:—आपका जन्म पं० नत्थीलाल त्रिबेदी के यहाँ सं० १९९३ मैं हुआ । पं० नत्थीलाल त्रिवेदी के यहॉ जन्म ग्रहण किया। आप कवि और लेखक दोनो एक साथ है। आपके पिता नत्थीलाल स्वयं कवि है; अत: आपको काव्य-कला के प्रति अभिरुचि विरासत के रूप में प्राप्त हुई। श्री हिन्दी साहित्य समिति एवम् स्थानीय कालेज द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलनों से आपकी काव्य सृजन शक्ति अधिक पुष्पित एवं पल्लवित हुई । आपका स्पृहणीय

जैन परिवार मे २१ अप्रैल सन् १९८० को हुआ। आपके पिता प्यारेलाल गुप्ता स्थानीय सैशन जज के यहाँ पेशकार हैं। मैट्रिक परीक्षा के अनन्तर आपने विशारद और शास्त्री परीक्षाए उत्तीर्ण की हैं। कमलेश जैन प्रतिभा सम्पन्न कवियित्री हैं। इनके कविता-पाठ का ढंग बहुत सुन्दर है आपको रचनाओ पर कई वार पुरस्कार भी मिले हैं। उदाहरण देखिए —

सहकार करो सहयोग करो।

जब अनावृष्टि हो जाती हो, आत्मा किसान की जाती हो।
मुन्नी नन्ही रो जाती हो, रोते-रोते सो जाती हो।
तब पीडित तापित मानव का–
सन्ताप हरो, उपकार करो ॥ सहकार०
जब धू धू करती दोपहरी, जब जग लेता निद्रा गहरी।
बस जगता है किसान प्रहरी, संकट सुन-सुन आत्मा सिहरी।
तब उसके खून-पसीने का–
कुछ तो मन मे आभार भरो॥
मिल, निश-दिन जो कि चलाता हो, जो देह स्वकीय गलाता हो।
मर-पच कर दिवस विताता हो, मिल-मालिक सतत मनाता हो।
शिशु-सब रज टुकरी को तरसे,
उस सब का जय-जय कार करो॥
जग का भोला शिशु सा प्राणी, भोला सा मन, भोली वाणी।
दाने मे प्राण प्रतिष्ठा की, यह दान रूप या नादानी।
जब वह भूखा, जग खाता तब
उसका कुछ तो उपचार करो॥
यह धरती सबको भरती है यह सब बच्चों पर मरती है।
यह सबको सब कुछ करती है, फिर क्यो सन्तति दुख भरती है ?
राहो पर पड़े ठिठुरतो से–
कुछ कपडो का व्यापार करो॥
अपनी आहे खा जीते हो अपने शोणित को पीते हो।
दो टूक हृदय को सीते हो भरते-भरते भी रीते हो।
उस व्यथित-श्रमित शोषित जन के–
श्रम-कण से निज अभिसार करो।
श्रम का फल श्रमिक नही पाते कुछ लोग उन्हे खाये जाते
फिर भी गवार ही कहलाते, सान्त्वना प्राप्त कर सकुचाते।

व्यक्तित्व एवम् कविता कहने का ढंग अत्यधिक प्रभावोत्पादक है। आपने कोई ग्रन्थ तो नही लिखा किन्तु फुटकर रचनाएं बहुत की हैं। आपकी समस्त रचनाएं खड़ी बोली में है। नवीन शैली में प्रेमपरक रचनाएं अधिक श्रुति-मधुर है। वर्णन-शैली में दार्शनिक-गाम्भीर्य का अभाव होते हुए भी आपकी रचनाएं सरस है। आपका 'भू-दान' पर लिखा हुआ निबन्ध राजस्थान सरकार द्वारा पुरष्कृत हो चुका है। दो रचनाएं उदाहरण रूप में प्रस्तुत है:—

प्रेम गीत

मत प्यार मेरा ठुकराओ।

तुमने मन में प्यार बसा कर, एक नया संसार बसाया,
मधुर बना जीवन बेला को, नैनों से अमृत छलकाया,
जीवन में सुधा बहा कर अब, विष काहे बरसाओ॥ मत०
क्यूं जीवन को उलझन मय, ये बना गई मधु-हाला,
अधरों में भरा हुआ है, तेरे आसव का प्याला,
तुम बनकर साकीबाला, दीवाना मुझे बनाओं॥ मत०
तेरे सपनो मे आकर, अपने गीतो को गाऊं,
तुम थिरक थिरक कर नांचो, मै मन की ताल बजाऊं,
मै साज बना हूँ तेरा तुम रागिनी बन जाओ॥ मत०

क्यूं जग को गीत सुनाऊं ?

अपने अंतर की ज्वाला को, अवसादों की मधुहालों को,
जग से लेने खुशियाँ मोल, बोल क्यूं उसकी भेट चढाऊं॥ क्यू०
अवसाद मेरे अपने तो है, है अपनी आहों की गहराई,
फिर दो क्षण को बन मत्त अरे, क्यूं जग की भाषा में इठलाऊं॥ क्यू०
पथ दर्शाता मेरे ये पत्ते है, ये कोयल काली है,
इनकी बांसती का मधु ले, मै जीवन अर्घ्य चढ़ाऊं॥ क्यूं०
क्यूं बेकल है जग के पीछे, तेरा जीवन है अनमोल,
ये सांसे दो चार घड़ी है, जिन पर तू भरमाया,
माया के निष्ठुर झौके ने मन का दीप बुझाया,
आहुति देकर प्रेम रूप की अंतर के पट खोल॥ क्यूं०
रात अधेरी ने जीवन में अंधकार फैलाया,
ज्योति अर्न्तध्यान हो गई, भाई मन को छाया,
विषम साधना हुई न पूरी, रही हिलोरें डोल॥ क्यूं०

१७५—कमलेश जैन:—कमलेश जैन का जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त

ये हैं दधीचि के अस्थि शेष,
इनको प्राणो से प्यार करो॥

१७६—मोतीलाल अरोडा—आपका जन्म भरतपुर के एक प्रतिष्ठित खत्री परिवार मे स० १९७२ वि० को हुआ। आप यहा के प्रसिद्ध व्यापारी लाला रामस्वरूप वजाज के आत्मज हैं। आप आगरा कालेज के एफ० एस-सी० कक्षा तक विद्यार्थी रहे हैं। इनको वचपन से ही हिन्दी और हिन्दी साहित्य समिति से विशेष प्रेम है। समिति के नवीन भवन निर्माण मे आपने अनिवचनीय सहयोग दिया है। आप गत तीन वर्ष से समिति के उपप्रधान पद पर कार्य कर रहे हैं। विनोदी एवम् सरस स्वभाव के होने के कारण आपकी कविताए हास्य-रस प्रधान होती हैं। आप 'पत्नीवाद' के अनुयायी हैं और अपनी मधुर रचनाओ द्वारा उसका प्रचार भी करते रहते हैं। 'मगलानद' उपनाम से इन्होने 'पत्नी स्तोत्र' नामक पुस्तक लिखी है। आपकी सरस रचना के उदाहरण प्रस्तुत है —

गृह वाधा सारी मिट जाये धन धान्य भरा फिर घर होगा।
मनको सुख शान्ति मिल जाये तो गम होगा न फिकर होगा॥
खुद कामो मे जो लग जाये, फिर कभी न दर्द मर होगा।
जव देवीजी ही खुश होगी, तव किस साले का डर होगा॥

इक नगर पिता का कहना है, भ्रष्टाचारी वह नर होगा।
जो पत्नी भक्ती से विमुख है, राष्ट्र को क्या हित कर होगा॥
गीता प्रेमी भी कहते हैं, यह गीता का उपदेश सुनो।
जो पत्नी की सेवा करता है, उसे क्यो न भक्त निष्काम गिनो॥

पत्नी भक्ती का इसी लिये, घर २ प्रचार करना होगा।
पत्नीव्रत का अवलम्बन कर, अपना सुधार करना होगा॥
समाज मे पैदा हुआ दोष उसका विकार हरना होगा।
जो उन्नत राष्ट्र बनाना है निर्माण चरित्र करना होगा॥

पत्नी भक्ति के साधन से, क्या चीज नही नर पा सकता।
कितना यह सुलभ उपाय मिला, जो घर को स्वर्ग बना सकता॥
जो ऐसा सुगम तरीका भी, ना अमल मे अपने ला सकता।
वह मूर्ख नही तो फिर क्या, गृह लक्ष्मी जो न मना सकता॥

———

१७७—बृजेन्द्रविहारी:—आपका जन्म १३ अगस्त सन् १९३९ को भरतपुर निवासी पं० घनश्यामलाल के यहाँ हुआ। आपने स्थानीय कालेज से बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की है। हिन्दी साहित्य समिति के कवि-सम्मेलनों में भाग लेने के परिणाम स्वरूप आप सुन्दर रचनाएँ लिखने लगे हैं। आप प्रगतिशील कवि और सफल गीतकार है। आपकी रचनाएं सरस और प्रभावोत्पादक होती है। उदाहरण देखिए:—

चीन के नाम

(१)

हर द्वारे पर हाहाकार मचाता क्यों
सोने सी मिट्टी मे जहर मिलाता क्यों
अंगड़ाते आंचल मे धूल सजाता क्यों

(२)

मेरा तेरा मानवता का नाता है
क्यों आगी रखकर उसको भड़काता है
अरे जिन्दगी का क्यों मोल घटाता है

(३)

अगर इसी स्वर में तुम गाये जाओगे
हर घर को शमशान बनाये जाओगे
फूलों पर अंगार बिछाये जाओगे

(४)

गीतों के हरबोल बनेगे गोलियां
जो लूटी साजन घर जाती डोलियां
पुछती गईं अगर माथे की रोलियाँ

(५)

तो धरती का हर बेटा लड़ जायेगा
ऊंचा अम्बर धरती मे गढ़ जायेगा
हर खारा मोती ऐटम बन जायेगा

(६)

इसीलिये मत छेड़ो हंसती फुलवाड़ी
साजन के घर को जाती ब्याहुल लाड़ी
मत खीचो तुम रेखायें तिरछी आड़ी

(१७)

आज कहाँ हिन्दी, चीनी भाई भाई
पचशील के नेताओ के हमराही
मानवता के हामी ओ चाउ एन लाई

(८)

मत सोचो बगिया वीरान बना दोगे
धरती पर तुमसे इन्सान बसा लोगे
तिब्बत भारत को शमशान बना दोगे

(६)

तिब्बत पर हर 'वार' की आवाज है
मेरी मा के प्यार की आवाज है
मुझको नेहरू मे वेद पर नाज है

(१०)

हर पठार कश्मीरी केशर क्यारी है
नेफा की हर बस्ती दिल्ली प्यारी है
हम भाई भाई माँ एक हमारी है

(११)

ज्वार-बाजरे की दुलहिन सी बलियो को
घू घट मे मुसकाती कोमल कलियो को
सत्य अहिंसा से मुखरित इन गलियो को

(१२)

भारत लोहू-लुहान नही होने देगा
मरघट का सामान नही होने देगा
परदेशी ईमान नही होने देगा

(१३)

कंचन चंघा ज्वाला मुखी बनाओ ना
तिस्ता की लहरो मे ज्वार उठाओ ना
दुनिया मे बारूदी जाल बिछाओ ना

(१४)

अभी देश मे फटी दरारें बाकी हैं
अधियारे की बन्द किवारे बाकी है
परदेशी पतझार बहारे बाकी हैं

(१५)

मत छेड़ो चुपचाप हिमालय रहने दो
बढ़ता हुआ कारवां पथ पर बहने दो
तुम्हें बुद्ध का बेटा घर घर कहने दो

(१६)

अगर उठा तूफान दवाना मुश्किल है
हर दिल के अंगार बुझाना मुश्किल है
धरती का शृंगार बचाना मुश्किल है

(१७)

मत सोचो तुम मेरा द्वार जला दोगे
चीनी मिट्टी पर त्यौहार मना लोगे
अपनी मां के घावों को सहला लोगे

(१८)

मेरी तेरी मां की धड़कन एक है
घुटती सांसों की उत्पीड़न एक है
मांओं की चादर की चिलमन एक है

(१९)

सुन लो नही सांस की कीमत घट जाए
दुनिया की किस्मत खीमों में बट जाए
बारूदी बांहों में मौत सिमट जाए

(२०)

मुझे ख्याल है कुछ सिन्दूरी मांगों का
मेरे तेरे बीच पुराने धागों का
दो युद्धों मे धधकी विषमय आगो का

(२१)

इसीलिये तेरे घर भेज रहा पाती
लूट न जाए जिससे मानवता की थाती
जल न जाए धरती की दूध भरी छाती

———